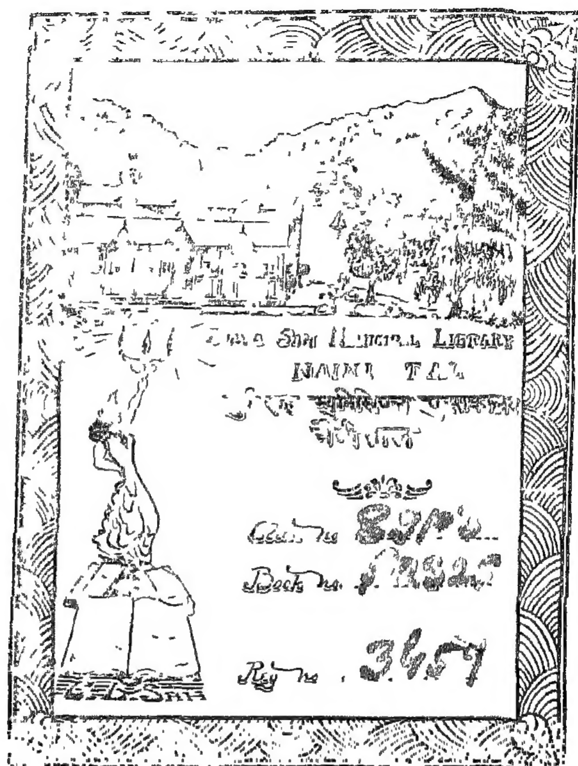

LIBRARY
NAINI TAL
Class no
Book no
Reg no

संघर्ष • • •

'संघर्ष' मलयालम भाषा और साहित्य के प्रख्यात लेखक और इतिहासवेत्ता सरदार के० एम० पणिक्कर के सुप्रसिद्ध उपन्यास 'केरलसिंहम्' का हिन्दी-अनुवाद है। अनुवादक हैं श्री कृष्ण मेनोन।

यह उपन्यास मुख्यतः पपशिश राजा केरल वर्मा और कर्नल वेलेजली के मध्य हुए युद्ध की घटना को आधार बनाकर ही लिखा गया है, अतः इसे न तो इतिहास ही कहा जा सकता है और न जीवनी ही। इतिहास और जीवनी के सम्मिश्रण से विद्वान् लेखक ने कथा के सूत्र को इस प्रकार ग्रथित किया है कि यह केरल वर्मा द्वारा अपने प्रदेश की जनता और उसके स्वातन्त्र्य के लिये किये गए संघर्ष का उज्ज्वल उदाहरण प्रस्तुत करने वाला स्वच्छ दर्पण बन गया है। इस दर्पण में जहां पाठक वहां की जनता के हृदय में होने वाले अन्तर्द्वन्द्व की झांकी पायेंगे, वहां इस उपन्यास के नायक केरल वर्मा और उसके सहायकों के उदात्त चरित्र को भी प्रतिच्छायित देखेंगे।

यह आश्चर्य की बात है कि ऐतिहासिक रस से पूर्णतः सराबोर होने पर भी इसमें रोचकता का अंश कम नहीं हुआ।

सारांशतः भाषा, भाव, चरित्र-चित्रण तथा शब्द-संयोजन आदि सभी दृष्टियों से यह अभूतपूर्व बन पड़ा है। हिन्दी-प्रेमी पाठकों को केरल संस्कृति और प्रदेश के उन्नायक के पावन चरित्र पर प्रकाश डालने वाले इस उपन्यास को अवश्य ही पढ़ना चाहिए।

संघर्ष

लेखक

सरदार के० एम० पणिक्कर

अनुवादक

के० कृष्णा मेनोन



राजपाल एण्ड सन्ज़
कश्मीरी गेट, दिल्ली-६

प्रकाशक

राजपाल एण्ड सन्ज़,

कश्मीरी गेट,

दिल्ली

मूल्य : तीन रुपया

मुद्रक

हकूमतलाल

विश्वभारती प्रेस

पहाड़गंज, नई दिल्ली

निवेदन

सरदार के० एम० पणिक्कर की महत्त्वपूर्ण कला-कृति 'केरल सिंहम्' का अनुवाद लेकर मैं हिन्दी के सहृदय पाठकों के सामने उपस्थित हो रहा हूँ। राजनीतिक क्षेत्र में ही नहीं, साहित्यिक क्षेत्र में भी उनका स्थान महत्त्वपूर्ण है। उनकी बहुमुखी प्रतिभा से सभी परिचित हैं। इसलिए उनके संबंध में अधिक कहने की आवश्यकता नहीं।

मूल ग्रन्थ (मलयालम) से अनुवाद करते समय इसमें कुछ त्रुटियां हुई होंगी, लेकिन अपनी ओर से मैंने मूल ग्रन्थ के आशय का जैसे का तैसा अनुवाद करने की भरसक कोशिश की है।

श्री के० एम० पणिक्कर ने इस अनुवाद को प्रकाशित करने की अनुमति देकर मुझे अनुग्रहीत किया है। यदि मुझे दक्षिण भारत के माननीय और अनुभवी हिन्दी प्रचारक श्री ए० चन्द्रहासन तथा मलयालम के आदरणीय महाकवि श्री जी० शंकर कुरुप से प्रोत्साहन और सहायता न प्राप्त होती तो मेरा यह परिश्रम सफल न होता। अतः इन तीनों महाशयों की कृपा के लिये चिर-कृतज्ञ हूँ। अस्तु।

ट्रिच्चूर, तिरुवांकूर-कोचीन

—के० कृष्ण मेनोन

समर्पण

श्री ए० चन्द्रहासन

के कर-कमलों में

अनुवादक की ओर से सादर

संघर्ष

: १ :

कोट्टयम से पानूर जाने वाली पगडंडी उस समय डाकुओं, कंपनी वालों और पद-च्युत राजाओं के उपद्रवों के कारण जनता के काम में बहुत कम आती थी। जब कभी जरूरत पड़ती तो अमीर लोग भी अनुचरों के बिना उधर से न जाते। पगडंडी के दोनों ओर के बाग बिना मालिकों की देख-रेख और सैनिकों के निवास के, झाड़-झंखाड़ से भरपूर थे। अतः डाकू आदि जन-द्रोहियों को वहाँ स्वतन्त्रता से रहने की सुविधा होती थी। कंपनी वालों और कोट्टयम के राजा के आपसी झगड़ों के कारण उस समय उन जगहों पर रहना तक कठिन हो गया था।

उस दिन, जब से हमारी यह कहानी शुरू होती है, सूरज के अस्त होने में दो-तीन घड़ी बाकी थीं। एक युवक (जिसके अभी तक न दाढ़ी और मूँछ नहीं निकली थीं) और एक युवती (जिसकी आयु अठारह वर्ष से ज्यादा न थी) उस पगडंडी से यात्रा कर रहे थे। वे बहुत थके-माँदे थे; वे कदम बढ़ाने में भी अशक्त हो गए थे। युवक की कमर में छुरा था और हाथ में खंग। ये दोनों घोषणा कर रहे थे कि वह एक नायर है। उस युवक की शारीरिक पुष्टि उम्र से बढ़कर थी, इसमें कोई सन्देह नहीं। सोलह वर्षों वाला होने पर भी वह आगे-पीछे देखकर और पत्तों का हिलना तक समझ लेने की सावधानी से आगे बढ़ रहा था।

उसके साथ चलने वाली युवती ने उस समय के वेश-विधान के अनुसार धोती और उत्तरीय पहने हुए थे। किसी बड़े दुःख के कारण उसके मुख पर प्रसन्नता का अभाव था और दर्द के निशान साफ तौर पर दिखाई दे रहे थे। फिर भी कोई भी समझ सकता था कि वह युवती कुलीन और लावण्यमयी है, मानो केरलीय सौंदर्य की मूर्तिमान प्रतीक हो।

आपस में कुछ बोले बिना ही वे चले जा रहे थे। थोड़ी देर के बाद दर्द-भरी आवाज में उस युवती ने कहा—"मैं एक कदम भी और आगे

नहीं बढ़ सकती। भूख और प्यास के मारे बहुत थक गई हूँ।"

"ज्यादा-से-ज्यादा छः मील ही अभी और बाकी हैं।" युवक ने सांत्वना दी—"देर करने से रात हो जायगी। यहाँ कहीं कोई घर भी दिखाई नहीं पड़ता। हाय! देवी! भगवती पोर्कली! मैं क्या करूँ?··· ···अच्छा, बहन! मेरा हाथ पकड़ लो!"

"मुझसे कुछ नहीं हो सकता।" युवती ने कहा—"मुझमें एक कदम भी और बढ़ाने की शक्ति नहीं है। मैं इस सड़क के किनारे बैठ जाऊँ। तुम जल्दी जाओ और कुछ सहारा लेकर आ सको तो आ जाओ!"

"बहन को इस सड़क पर अकेली छोड़कर कैसे जाऊँ, किसी सहायक के बिना इस खुली सड़क पर तुम कैसे बैठ सकती हो? हम थोड़ी देर तक यहाँ विश्राम करें। भगवती की कृपा से कुछ उपाय जरूर निकल आयगा।"

वे दोनों उस पगडंडी के किनारे एक पेड़ के नीचे बैठ गए। भूख और प्यास से तथा दिन-भर अविराम चलने के कारण वह युवती बहुत थक गई थी, इसलिए पेड़ की जड़ पर सिर रखकर वह थोड़ी ही देर में सो गई।

अपना कर्तव्य न समझकर वह युवक बड़ी तकलीफ में पड़ गया। देर हो रही थी। उनके लक्ष्य पर पहुँच जाने के लिए अभी तीन मील चलना था। मार्ग तो दिन में भी कठिन लगता था, तो रात की दशा क्या होगी? हाथ में आए हुए लोगों को गुलाम बनाने की प्रथा उस समय जारी थी। अत्याचारी कुञ्जिक्कोय सरकार के आदमी इसके लिए गाँवों में घूम फिरकर रात के समय अथवा निर्जन स्थानों पर मिलने वाले लोगों को पकड़ ले जाया करते थे। सब लोग यह जानते भी थे। इसी बात ने हमारे युवक को भी चकित कर दिया। उसने निश्चय कर लिया कि किसी-न-किसी प्रकार रात होने के पहले ही, पगडंडी को छोड़कर किसी नायर-गृह में पहुँच जाना चाहिए। उसका अनुमान था कि मार्ग छोड़कर बाग के अन्दर घुसें तो नायर जमींदारों के घर जरूर दीखेंगे। बहन कुछ समय तक विश्राम करे। सूर्यास्त के लिए अभी देर है।

वह मन-ही-मन यह सोच ही रहा था कि दूर से दो आदमी आते दिखाई दिए। इसके पहले उसने कभी यात्रा नहीं की थी, अतः उसके मन में पहले

भय उत्पन्न हो गया। उसने दूर ही से देखा कि दोनों यात्री शस्त्रों से सुसज्जित हैं। इनकी आकृति, चलने का ढंग और चेहरे-मोहरे को देखकर युवक ने अनुमान किया कि वे कोई सत्ताधारी होंगे। यह समझने में भी उसे कोई कठिनाई नहीं हुई कि उनमें से एक स्वामी और दूसरा अनुचर होगा। पास आने पर देखा जायगा, इसी निश्चय से वह युवक अपनी तलवार हाथ में लेकर सावधान हो गया।

उन यात्रियों ने भी पगडंडी के एक ओर पेड़ के सहारे बैठकर सोने वाली युवती तथा पहरेदार के रूप में उसके पास बैठे युवक को देख लिया। उन्होंने समझा कि किसी विपत्ति के कारण ये यात्रा के बीच में ही यों रुक गए होंगे और इस मार्ग पर, जहाँ से होकर शक्तिशाली लोग भी निर्भय होकर यात्रा नहीं कर सकते, एवं नवयुवती और एक लड़का स्वेच्छा से विहार करने नहीं आए होंगे। दोनों यात्रियों में, जो स्वामी था वह आगे-आगे चल रहा था। उसके हाथ में तलवार थी और कमर में रिवाल्वर। वह गम्भीर दीखता था। युवक के पास आकर उसने कहा—"मालूम पड़ता है कि तुम किसी आपत्ति में पड़े हुए हो। यदि हमारी सहायता की आवश्यकता है तो निस्संकोच कहो।"

"आज सवेरे से हम चलते आ रहे हैं। मेरी यह बहन भूख और प्यास के मारे आगे बढ़ने में अशक्त हो गई और यहीं बैठ गई। देर होती जा रही है। अब तो भगवती श्रीपोर्कली का ही सहारा है।"

भगवती श्रीपोर्कली का नाम सुनते ही उन यात्रियों के मुख भक्ति से खिल उठे। उनमें से स्वामी ने कहा—"कोरन, पास के बाग में जाकर चार ताजे नारियल तोड़ लाओ!"

"मालिक!" कोरन बोला—"बाग के स्वामी से अनुमति लिये बिना नारियल तोड़ने से कोई विपत्ति तो नहीं आ जायगी।"

"ऐसा न समझो।" स्वामी ने कहा—"यह सब जगह तो राजासाहब की अधीनता में हैं न, यह सोचकर कि भगवती श्रीपोर्कली के अभिषेक के लिए है, जल्दी जाकर ले आ!"

ऐसा जवाब सुनकर अनुचर निस्संकोच होकर पगडंडी के किनारे वाले

बाग में घुसा। चार ताजे नारियल लेकर वह जल्दी वापस आ गया। उसने कमर से चाकू लेकर दो नारियलों का मुँह काटा और फिर उन्हें युवक को दे दिया।

मुरझाए हुए फूल की तरह थककर सोती हुई बहन को धीरे-से जगाकर उस युवक ने एक नारियल उसको दिया। चारों ओर दृष्टि डाले बिना ही उद्विग्न होकर उस युवती ने उस ताजे नारियल का अमृत समान मीठा पानी पिया। ताजे नारियल के पानी की तरह थकावट मिटाने वाली कौन-सी चीज ईश्वर ने मनुष्य को दी है ? उसकी शीतलता शरीर में फैल गई और उसने स्फूर्ति अनुभव की। मन्त्र-शक्ति के कारण मृत्यु से बच जाने पर जो आश्चर्य होता है वैसे आश्चर्य से उसने चारों ओर देखा। उसके सामने एक नवयुवक खड़ा था—जो सुकुमार होने पर भी शक्तिमान था, शस्त्रधारी होने पर भी जिसके मुख से दया टपक रही थी, जो आकृति से गम्भीर था और जिसमें पौरुष मूर्तिमान हो गया था। या तो अपनी बुरी दशा के विचार से, या इस प्रकार खुले मार्ग पर लेट जाने से जो अपमान हुआ है उसकी चिंता से अथवा कभी-कभी नर-नारी में पहली भेंट के समय पाए जाने वाले भाव-भेद के कारण, जरा घबराकर उसने सिर नीचा कर लिया। वह उठने का प्रयास ही कर रही थी कि इतने में पहले यात्री ने कहा—"खूब विश्राम कर लो। अँधेरा होने से पूर्व ठीक जगह पर मैं ही पहुँचा दूँगा।"

"हमें अब तीन-चार मील और चलना है।" उस युवती के भाई ने जवाब दिया—"इसलिए अधिक विलम्ब होने के पहले हमको जाने दें।"

"अच्छा" पहले यात्री ने पूछा—"तुम दोनों इस मार्ग पर कैसे आ गए देखने से तो ऐसा प्रतीत होता है कि तुम लोग पालकी पर अनुचरों के साथ यात्रा करने लायक हो।"

युवक ने एक दुःखजनक बात सुनाई। गत रात को उनके घर में, जो कंटेरी नामक गाँव में था, कुछ शस्त्रधारियों ने घुसकर उपद्रव किया था और उनके दो बड़े भाइयों को तलवार की भेंट करके सब-कुछ लूट लिया था। उसके बाद उन्होंने घर में आग लगा दी। किसी-न-किसी प्रकार भभकती आग से बचकर वे दोनों निकल भागे।

स्वामी का चेहरा क्रोध से लाल हो गया। "कोट्टयम के इतने नजदीक तक चढ़कर लोगों ने आक्रमण करना शुरू कर दिया है ? अच्छा, क्या तुमने सुना कि किसने ऐसी शैतानी की ?"

"सुना है कि कुरु प्रदेश के राजा के आदमियों ने ही यह हरकत की है। महसूल वसूल करने के लिए वे कंटेरी आए थे। मेरे भाई राजा साहब के सेवक थे, अतः उनमें तर्क-वितर्क भी हुआ। इसीसे मैं अनुमान करता हूँ।"

"कुछ लोगों का कहना है कि कैनेरी अम्पू नायर ने ही यह सब कराया था।"—युवक की बहन ने कहा।

शिकायत के स्वर में युवक ने कहा—"बहन, राजा साहब के आदमियों पर यों ही क्यों इलजाम लगाती हो ? अम्पूबाबू ऐसा कभी न करेंगे।"

"मैंने चाची को कहते सुना था।"—युवती ने कहा।

"चाची कहेंगी; वे तो कुरु प्रदेश के राजा के पक्ष में हैं। हमारे साथ अम्पूबाबू के रूठ जाने का कोई कारण नहीं।"

"अच्छा," स्वामी ने कहा—"तुम कैनेरी अम्पू को जानते हो न ? तुम कैसे कह सकते हो कि उसने यह सब नहीं कराया ?"

"यह कभी नहीं हो सकता।" युवक ने दृढ़ता से कहा—"भैया कहा करते थे कि अम्पूबाबू राजा साहब का दाहिना हाथ है। अलावा इसके, कोई कुछ कहे, फिर भी हम सब—अम्पू नायर पर दोष लगाने वाली मेरी यह बहन भी—राजा साहब के पक्ष में हैं।"

"मैंने तो एक सुनी हुई बात कही है, बस इतना ही।"—युवती ने कहा।

"अम्पू आग न लगाने वाला तो नहीं है; कितने ही घरों में उसने आग लगा दी है! लेकिन अंपू ने यह नहीं किया, बेशक। उस समय अम्पू वहाँ कहीं भी न था।" स्वामी ने कहा।

"क्या अम्पू बाबू को आप जानते है ?" युवक ने पूछा।

"हाँ अच्छी तरह जानता हूँ।" उसने जवाब दिया।

"भैया कहते थे" युवक ने कहा—"कि ऐसे बहादुर और योग्य व्यक्ति का तो मिलना भी मुश्किल है। उनसे जाकर मिलने तथा लड़ाई के मैदान में उनके पास खड़े होकर लड़ने-भिड़ने की मेरी बड़ी इच्छा है। क्या आप मुझे भी

वहाँ ले जा सकते हैं ?"

स्वामी ने जरा मुस्कराकर जवाब दिया—"तू अभी बच्चा है। जंगल में जाकर और पहाड़ों पर चढ़कर तू अम्पू के साथ कैसे लड़ सकता है ? तेरा अभ्यास ही पूरा नहीं हुआ। दूसरी बात यह है कि अब पुरानी पद्धति की लड़ाई नहीं रही। हाथ में तलवार और ढाल लेकर पंक्ति में खड़े होने से अब काम नहीं चलेगा। तुझे वनों, पहाड़ों और गढ़ों में छिपकर लड़ना पड़ेगा। भोजन और निद्रा के बिना शत्रु का सामना करना पड़ेगा। क्या तुझसे यह सब संभव है ?"

"उसकी चिंता न करो।" युवक ने कहा—"मेरी शिक्षा पूर्ण हो गई है। जहाँ राजा साहब और अम्पू बाबू हैं वहाँ मेरे लिए भी जगह नहीं है क्या ?"

"कैसी बातें करता है ?" युवती ने भाई से कहा—"तुझे तो मुझे छोड़ने की जल्दी है।"

"बहन, बुरा न मानना ! जब राजा साहब की सेवा करने की बात आती है तब क्या ऐसा सोचना उचित है ? कैनेरी में कोई दूसरा आदमी नहीं। सिर्फ माक्कम देवी और उनकी बहनें हैं न ?"

"अब अपने संकट का कारण मैंने बता ही दिया।" युवती की आवाज दुःखपूर्ण थी—"तूने ठीक ही कहा है। राजा साहब के अस्तित्व पर हमारा भी अस्तित्व निर्भर है। इसलिए मुझे मामा के पास भेजकर तू राजा साहब की सेवा करने चला जा !"

"अब तो तुम दोनों की सम्मति हो गई है।" स्वामी ने कहा—"इसलिए तुमको अम्पू नायर के पास पहुँचा देने का काम मैं स्वयं ले लेता हूँ। समय बीत रहा है। थकावट दूर हो गई हो तो अब देर न करो। तुम्हें कहाँ जाना है ?"

"हमारे नाते का एक मामा चन्त्रोत बाबू का कारिंदा है। जाने के लिए और कोई जगह नहीं है, इसलिए बहन को वहाँ ही ठहराने का इरादा है।" कम्म् ने कहा।

"मैं भी उधर से जाता हूँ।" स्वामी ने कहा—"वहीं रात बिताऊँगा। चन्त्रोत नम्प्यार से मिलने की इच्छा है। अच्छा, अब चलना चाहिए।"

दोनों भाई-बहन चलने लगे। पहले की तरह उनके मन में यह खेद नहीं

था कि दुनिया में उनका कोई सहारा नहीं। पयशी के प्रताप और कीर्ति को सोचकर उस युवक का हृदय आनन्द से भर आता था। केरल की आजादी के लिए अपना सब-कुछ छोड़कर और सब प्रकार के संकट झेलकर लड़ने वाले उस वीर पुरुष की याद आते ही वह फूला न समाया। उसने एक-एक करके मन में उन बहादुरों का हिसाब लगाया जो राजा को नेता मानकर ईश्वर के समान उनकी पूजा करते थे। वह भी निकट भविष्य में उनमें से एक हो जायगा और यश प्राप्त कर सकेगा। यह खयाल आते ही संतोष से वह अपने-आपको भूल गया। भाइयों की मृत्यु, घर का जल जाना या उन दोनों भाई-बहनों का निराधार हो जाना उस समय उसे याद न आया। उसका एक-मात्र विचार साहसपूर्ण कामों के द्वारा प्रशस्ति प्राप्त करके अपना रास्ता साफ करने का था।

युवती मन-ही-मन यह सोच रही थी कि यह महाशय कौन हैं, जिन्होंने उसकी और उसके भाई की रक्षा की है? अगर वह न आता तो वे दोनों रास्ते पर पड़े-पड़े मृत्यु का सामना करते या इससे भी बदतर जीवन बिताने को बाध्य होते। उसका व्यायाम से सुदृढ़ शरीर, उसकी गम्भीरता, उसके मुख की ज्योति, उसका पौरुष—इन सबसे उस युवती को बहुत जल्दी मालूम हो गया कि वह एक साधारण व्यक्ति नहीं है। उसने अनुमान किया कि वह राजा साहब के दल का है। क्योंकि उसे उस व्यक्ति की बातों से ऐसा लगता था कि वह अवश्य ही अम्पू नायर का कोई मित्र है। इसने चन्त्रोत बाबू से मिलने की इच्छा प्रकट की है। इसलिए यह एक साधारण व्यक्ति तो नहीं, बल्कि किसी सामंत-कुल का होगा। और एक बार उसको अच्छी तरह देखकर उसका रूप अपने मन में प्रतिष्ठित करने के लिए उण्णिनङ्ङा ने उसकी तरफ मुँह फेरा तो मालूम हो गया कि वह भी उत्सुकता से उसकी तरफ ही देख रहा है। उसने तुरन्त आँखें नीची करके अपने भाई से कहा—"कम्मू, तुम कल मुझे छोड़कर इनके साथ चले जाओगे। फिर मैं क्या करूँगी? क्या मेरा हमेशा मामी के साथ रहना ठीक है?"

"बहन," कम्मू ने सान्त्वना के स्वर में कहा—"चिन्ता न करो। यदि मैं अम्पू बाबू के आश्रय में रहूँ तो वे हमारी सुविधा और सुरक्षा के लिए सब कुछ करेंगे न? यहाँ उनके कई मित्र और विश्वास-पात्र हैं। अगर मैं श्रद्धा

के साथ उनकी सेवा करूँ तो वे हमारी उपेक्षा नहीं करेंगे ।

"उन पर तुम्हारा इतना विश्वास होनेके लिए उन्होंने क्या किया था ?" स्वामी ने पूछा ।

इस प्रश्न का उत्तर देने वाला कम्मू न था, उसकी बहन थी—"पूछते हैं कि अम्पू बाबू ने क्या किया था ? यह सारी दुनिया जानती है । इस देश में राजा साहब के आदमियों में किसी को यदि किसी ने कुछ सताया तो पीड़ित के रक्षक तथा पीड़क को दण्ड देने वाले वे ही हैं, क्या यह हम हजारों बार नहीं देख चुके ?"

किसी ने नहीं देखा कि पूछने वाले की आँखों में आनन्द के अश्रु भर आए थे ।

बातों-ही-बातों में वे दो मील चले आए थे । संध्या होने लगी थी । वे सब जानते थे कि उण्णिनङ्ङा को (उस युवती का नाम) चलने में तकलीफ हो रही है । उसके पैर व्यग्रता से आगे बढ़ रहे थे । एक बात निश्चित हो गई थी; संध्या के पहले चन्त्रोत पहुँच जाने का उनका परिश्रम सफल नहीं हो सकता । यह सोचकर कम्मू और उण्णिनङ्ङा दोनों भयभीत नहीं हुए ।

थकावट से दुर्बल उण्णिनङ्ङा हतोत्साह न हो इस विचार से वे सब धीरे-धीरे चल रहे थे । वे मार्ग के उस मोड़ पर आए थे जहाँ से चन्त्रोत जाने का रास्ता शुरू हो जाता था । तब सूर्यास्त के बाद दो घड़ी बीत चुकी थी । वहाँ तक का मार्ग समतल होने के कारण यात्रा कष्टदायी नहीं थी । पर मार्ग से एक चौथाई मील की दूरी पर एक खेत के उस पार चन्त्रोत का घर स्थित था । अँधेरी रात में खेत के तंग मार्ग से चलना सरल काम नहीं था । पर बत्ती और दीपक के लिए ठहर जाना सम्भव नहीं था, अतः वे आगे बढ़े । सबसे आगे शस्त्रधारी अनुचर, उसके पीछे कम्मू, फिर उण्णिनङ्ङा और सबसे पीछे स्वामी, जो उस संघ का नेता बन चुका था, इस प्रकार की थी उनकी यात्रा । थोड़ी दूर चलने पर "हाय ! मेरे पैर में एक काँटा चुभ गया" कहकर युवती ने भाई के कन्धे पर हाथ रखा । वह एक टाँग उठाकर खड़ी हो गई । चुभे हुए काँटे को निकाले बिना चलना सम्भव नहीं था । अँधेरी रात होने के कारण उसे निकालना भी कठिन था ।

"क्यों कम्मू ? यहाँ से दो कदम और आगे बढ़ाने से हम लक्ष्य पर पहुँच जायेंगे।" उस शक्तिमान व्यक्ति ने उण्णिनङ्ङा को दोनों हाथों में उठा लिया और कोरन को आज्ञा दी—"जल्दी चलो !"

उण्णिनङ्ङा के मना करने पर भी उसने उस पर कुछ ध्यान न दिया। जल्दी-जल्दी वे खेत की उस सीढ़ी पर आ पहुँचे, जहाँ से चढ़कर वे चन्त्रोत-गृह में प्रवेश कर सकते थे।

"आ पहुँचे ! अब तो चुप हो जाओ।" उस आदमी के ये प्रेमपूर्ण शब्द उण्णिनङ्ङा के कानों के लिए अमृत के समान थे। उसको अब तक पुरुष के स्पर्श का अनुभव नहीं हुआ था। ऐसी कन्या को अन्य व्यक्ति के शरीर पर निस्सहाय होकर यों लेटे रहने में पहले बड़ा संकट हुआ था, लेकिन धीरे-धीरे वह दूर हो गया।

कोरन के पीछे-पीछे चलकर वे सीढ़ियों पर से चलते गए और अन्त में घर के सामने पहुँचे। उस समय गृह-पति दो-तीन सेवकों के साथ विशाल चबूतरे पर बैठकर बातें कर रहे थे। कुछ अपरिचितों को आते देखकर आपसी बातचीत बन्द करके वे उनको पहुँचाने के लिए उनकी ओर ध्यान से देखने लगे। चन्त्रोत नम्प्यार के आश्चर्य की सीमा नहीं थी। वे राजनीतिज्ञ थे और शासन-सम्बन्धी मामलों में अच्छा अनुभव प्राप्त कर चुके थे। इसलिए उन्होंने आँखों के संकेत से अपने सेवकों को वहाँ से हटा दिया। उनके दूर हो जाने पर उन्होंने पूछा—"क्यों अम्पू ? कैसे आए ? राजा साहब कुशल से तो हैं न ? ये सब कौन हैं ?"

यह सम्बोधन सुनकर उण्णिनङ्ङा और कम्मू चकित रह गए।

"सारी बातें थोड़ी देर में सुनाऊँगा। यह लड़की बहुत थक गई है। इसके पैर में एक काँटा भी चुभ गया है। ये दोनों यहाँ के एक कारिन्दे के भानजे हैं।"

नम्प्यार ने फौरन एक नौकर को बुलाकर लड़की और उसके भाई का उपचार करने तथा उन्हें कारिन्दे के यहाँ पहुँचा देने की आज्ञा दी।

"आओ, अन्दर चलें, विस्तार से बातें करेंगे।" कहकर चन्त्रोत नम्प्यार ने अम्पू नायर का हाथ पकड़ा और उसे अन्दर ले गए।

: २ :

चन्त्रोत कुटुम्ब इरुव देश में शासन का कार्य करने वाले सामन्त घरानों में से एक था। उनसे प्रबल धनवान् और पूज्य व्यक्ति उत्तर केरल में और भी थे, परन्तु इसमें सन्देह नहीं कि बड़प्पन में इरुव देश के नम्प्यारों की बराबरी करने वाला कोई नहीं था। वे इसमें गौरव अनुभव करते थे कि हम किसी राजा के सामने अपना सिर नहीं नवाते और किसी के तावेदार बनकर शासन नहीं करते। अनेक राजा उनके ऊपर हुकूमत करने का दावा करते थे, पर वे किसी के काबू में न आते थे और दान के रूप में दूसरों की दी हुई पदवियों को भी स्वीकार नहीं करते थे।

उस समय इरुव देश के अमीरों में चन्त्रोत नम्प्यार की ही प्रधानता थी। उनका नाम कुञ्जिक्कण्णन था। उनकी उम्र करीब पचपन साल की थी। उनका माँसल शरीर, उनकी तोंद, उनकी ऊपर चढ़ी हुई अधखुली आँखें—ये सब उनकी विलास-प्रियता की सूचना दे रहे थे। सचमुच कुञ्जिक्कण्णन नम्प्यार को लड़ाई–कुश्ती में कुछ मजा भी न आता था। हैदरअली की चढ़ाई के समय वे बच्चे थे। मय्यषी में चन्त्रोत वाली संपत्ति की देख-रेख करके फरासियों की अधीनता में रहते थे। हैदर की मृत्यु के बाद टीपू ने केरल में जो हलचल मचाई उससे भी कुञ्जिक्कण्णन नम्प्यार की कुछ हानि न हुई। इरुव देश के नम्प्यारों को टीपू से होने वाले उपद्रव कुछ कम न थे और साथ-ही-साथ चन्त्रोत के बाबुओं की भी नाक में दम था, तो भी मय्यषी में पत्नी के साथ रहने वाले कुञ्जिक्कण्णन नम्प्यार से अपने दिन सुख से बिताते रहे। सिर्फ चार वर्ष पहले वे कुटुम्ब-पति के पद पर आरोहण करके चन्त्रोत आकर रहने लगे थे।

मय्यषी के लम्बे जीवन के कारण नम्प्यार साधारण केरलीय सामन्त से बहुत-कुछ उपरत थे। फरासीसी भाषा का ज्ञान, कभी-कभी योरुपियों का सहवास, बचपन में उनकी जीवन-चर्या की ओर उत्पन्न तत्परता आदि से नम्प्यार अपने राज्य में ही नहीं बल्कि सारे भारतवर्ष में होने वाले परिवर्तनों की सच्ची हालत प्राय: समझ सकते थे। लोगों ने मान लिया कि जब से अधिकार पाकर नम्प्यार चन्त्रोत रहने लगे थे तब से पाश्चात्य शान-शौकत के

पीछे उनका जो पागलपन था वह बहुत-कुछ घट गया है। अपने पद और हैसियत के अनुसार ही वे अपने कार्य करते। इतना ही नहीं जब कम्पनी वाले राज्य को काबू में लाकर हुकूमत करने लगे तो कुञ्जिक्कण्णन नम्प्यार का व्यावहारिक तथा यूरोपीय भाषाओं का ज्ञान इरुव देश के नम्प्यारों को बड़ा सहायक बन गया। कम्पनी वालों के साथ जो-जो व्यवहार होते थे उन सबके लिए उस देश के सामन्त उनसे सलाह लेते थे। यह समझकर नलश्शेरी का सुपरवाइजर भी उनका आदर करता था। लेकिन यह कहना कठिन है कि वह मन से नम्प्यार को चाहता था और शासन-सम्बन्धी मामलों में उन पर यकीन करता था। सुपरवाइजर ने समझ रखा था कि नम्प्यार की शत्रुता से कम्पनी की हानि हो सकती है। इसलिए वह उनकी इज्जत करने के लिए मजबूर हो गया तथा दूसरे सामन्तों के ऊपर कम्पनी की समझ में उनका जो असर था सिर्फ उसका आदर करके उनके साथ प्रेम का बर्ताव करता था।

ज्योंही नम्प्यार ने समझ लिया कि कैनेरी का अम्पू नायर ही अपना अतिथि है त्यों ही उनको मालूम हो गया कि कुछ जरूरी काम अवश्य होगा। अतः उस राज-पुरुष को वे अन्दर ले गए। राजा की कुशल पूछने के बाद उन्होंने पूछा—"क्यों, लड़ाई जोर पकड़ना चाहती है न ?"

"मालूम होता है कि कम्पनी वालों ने ऐसी ठान ली है।" अम्पू नायर ने कहा—"वे शान्तिमय जीवन नहीं चाहते। उनका खयाल है कि सबको उनके शासन के आगे सिर झुकाना चाहिए; आपस के प्रेममय जीवन से वे खुश होने वाले नहीं।"

"ठीक है। यह भी समझ रखो कि जब तक यहाँ कम्पनी का अस्तित्व रहे तब तक यहाँ के लोग शासन का कार्य नहीं कर सकेंगे। चाहे राजा हो या सामन्त, चाहे उच्च वर्ग के हों या नीच वर्ग के, उनके सामने सबको अपने घुटने टेकने पड़ेंगे।"

"अच्छा," अम्पू ने कहा—"वे ऐसा करके दिखाएँ। जब तक हमारे राजा के शरीर में प्राण हैं, तब तक इस देश में यह नहीं हो सकता। इस प्रकार हुकूमत करने के लिए उनमें शक्ति कहाँ ?"

"ठीक है, राजा साहब हार मानने वाले नहीं, वे बहादुर हैं; पर केरल

हार खायगा। अंग्रेज शक्तिहीन है ऐसा न समझो। ठीक ही है कि तल-इशेरी में उनकी कोई बड़ी सेना नहीं। लेकिन दुनिया-भर में उनकी शक्ति बढ़ती जा रही है। भारतवर्ष का ज्यादातर हिस्सा उनकी अधीनता में हो चुका।"

"उनकी शक्ति के साथ-साथ यह भी देखें कि गोरी सेना वयनाड के पहाड़ों पर चढ़कर कैसे विचर सकती है? क्या आप स्मरण करते हैं कि वहाँ टीपू की सेना का कहाँ तक नाश हो गया था?"

"दोनों की सेना का खूब नाश होगा।" नम्प्यार ने कहा—"जब तक राजा साहब जिन्दा रहेंगे तब तक लड़ाई जारी रहेगी। लेकिन यह तो सुल्तान का जमाना नहीं है। इनकी सेना अनगिनत है; तोपें और जहाज असंख्य हैं, न घटने वाला धन है। विदूर टापुओं से सैनिक आयेंगे और धीरे-धीरे एक-एक करके सभी राज्यों को काबू में करेंगे।"

"इसलिए क्या आपकी सलाह है कि उनके आगे हमें सिर झुकाना चाहिए?"—अम्पू ने पूछा।

"ऐसा न समझो! आज राजा साहब के सिवा केरल के गौरव की रक्षा करने वाला दूसरा कोई भी नहीं। अगर वे हार मानेंगे तो केरल की लक्ष्मी का सर्वनाश हो जायगा और हम सबको हमेशा के लिए अपमानित होना पड़ेगा। राजा साहब शत्रु के आगे सिर झुकाएँ तो फिर हम अपना सिर उठा-कर कैसे खड़े हो सकेंगे?"

"हम सबकी सबसे बड़ी आशा यही है। नीलेश्वर से लेकर यहाँ तक मैंने यात्रा की। कोई भी ऐसी सलाह नहीं देता कि राजा साहब हार मानें। राजा साहब की दृढ़ता पर सबको विश्वास है। फिर हम किस प्रकार पराजित हो जायँगे?"

"राजा साहब पराजित नहीं होंगे।" नम्प्यार ने दृढ़ता से कहा—"पर इन कम्पनी वालों को एक का जीवन निस्सार है। राजा साहब की मृत्यु के बाद केरल की आजादी कौन कायम रखेगा?"

"आपका कहना यही है कि राजा साहब की मृत्यु के बाद हम तो जिन्दा नहीं रहेंगे। हमारे भाग्य में जो बदा होगा, वही होगा। जब तक शरीर में खड़े

होने का बल है, जब तक साँस चल रही है, तब तक आजादी की हवा खायँगे, यही हमारा निश्चय है ।"

"अच्छा, बताइये कि यहाँ आने की कृपा क्यों की ?"—नम्प्यार ने बात बदली ।

"आपसे दिल खोलकर कहूँ यदि कम्पनी वालों का सेनापति लड़ाई को जोर से चलाना चाहता है तो आप-जैसे व्यक्तियों की सहायता के बिना हम क्या कर सकेंगे ?"

इस सीधे प्रश्न ने नम्प्यार के मुख पर कोई असर न डाला। वे धीरे से बोले—"मैं बता चुका हूँ कि इस मामले में मेरी क्या राय है। कहने की आवश्यकता नहीं कि मैं किस पक्ष में हूँ। लेकिन तलश्शेरी दुर्ग की अधीनता में रहने वाले हम क्या कर सकते हैं ?"

"यह बात राजा साहब को अज्ञात नहीं। वे नहीं कहते कि आप सीधे ढंग से मदद करें। बेकार हमारे आदमियों का नाश क्यों करें ?"

"फिर मैं कौन-सी मदद करूँ ?" नम्प्यार ने पूछा—"धन से हो, तो राजा साहब से कहना कि यहाँ का सारा धन उन्हीं का है।"

"अब वहाँ धन से कुछ न चलेगा ; भविष्य में तो कुछ हो सकता है। तब कहाँ-कहाँ जाकर माँगना चाहिए, यह हुजूर अच्छी तरह जानते हैं।"

"आदमी और धन की जरूरत नहीं है, तो फिर क्या चाहिए ?"

"अभी बता दूँ।" अम्पू ने कहा —"हमारे पास धनुष और तलवार हैं। उनसे हम बहुत-कुछ कर सकते हैं। खासकर वनों में धनुष और बाण खूब काम आयँगे। पर कम-से-कम चार-पाँच सौ बन्दूकों और जरूरत भर की गोलियों के बिना कम्पनी वालों की सेना का सामना कैसे कर सकते हैं ? ऐसी सामग्री तलश्शेरी से ही पाने की सम्भावना है। उसे वहाँ से हटाने के लिए आपकी सहायता की आवश्यकता है।"

"यहाँ तक पहुँचा दें तो फिर मैं सब इन्तजाम करूँगा। यदि तलश्शेरी में ही हमारे आदमी को सौंप दें तो करीब सब-का-सब मैं ही यहाँ ले आऊँगा। हर हफ्ते मुझे किसी-न-किसी कार्य के लिए सुपरवाइजर से मिलने जाना होता है।"

"आपकी यह प्रतिज्ञा बड़े महत्त्व की है।" कृतज्ञता से धड़कते हृदय से अम्पू ने कहा—"कहने की आवश्यकता नहीं कि कम्पनी वालों का सन्देह हो जाय तो उसका क्या परिणाम होगा।"

"तुम जैसे व्यक्ति जब अपने प्राण अर्पण करने को भी तैयार रहते हों तब हमसे इतना भी नहीं हो सकेगा तो वह लज्जा की बात है। वह कार्य मैं अपने ऊपर लिये लेता हूँ।"

'और एक बात भी है। हमारी जरूरत-भर की चीजें तलश्शेरी से नहीं मिलेंगी। कोई दूसरा चारा भी है ? सुना है, मय्ययी पर आपका बड़ा प्रभाव है।"

"समझ गया।" सिर हिलाकर नम्प्यार ने कहा—"देखा जायगा।"

"मुझे आपसे एक दूसरी बात भी कहनी है। लेकिन आपने इतनी सहानुभूति प्रकट की है, अतः कहने में संकोच होता है। खूब सोचने पर भी दूसरा व्यक्ति दिखाई नहीं पड़ता। मैं क्या करूँ ?"

"कहो तो। मुझसे जो हो सकेगा सब करने को तैयार हूँ।"

"इसलिए कहता हूँ, आप तलश्शेरी के इतने सामने हैं।" अम्पू ने कहा—"वहाँ जो-जो बातें हो रही हैं उन्हें समझने के लिए पहले कुछ इन्तजाम करना है। शत्रुओं की मन्त्रणाओं और तैयारियों की जानकारी रखना लड़ाई के लिए जरूरी है। वहाँ से आदमी द्वारा सीधा पता लेना सम्भव नहीं। इसके लिए भी आपकी मदद की आवश्यकता है।"

"तलश्शेरी में तुम्हारा जो आदमी है क्या वह विश्वास-पात्र है ?" नम्प्यार ने अम्पू की आँखों में दृष्टि डालकर पूछा।

"आप इसे खूब पहचानते हैं और मुझे मालूम है कि दोनों एक-दूसरे को चाहते भी हैं।"

"वह कौन है ? मुझे स्मरण नहीं आता।"

"आपसे कहने में संकोच नहीं करता। वही व्यक्ति है अलीमूसा मक्कार।"

"तो वह काम भी मैं स्वयं लेता हूँ।

बहुत देर तक उनकी बातचीत होती रही। उसके बाद रात को मजेदार

खाना खाकर जब वे विदा होने लगे तो अम्पू नायर ने कहा—"तब कल सवेरे मुझे जाना है। मैं नहीं जानता कि मेरे जाने के पहले आप जायँगे कि नहीं। इसलिए अभी जाने की अनुमति दीजिए!"

"तुम कहाँ जाओगे, यह मैं नहीं पूछता।"—नम्प्यार ने कहा—"लेकिन कल सवेरे मैं भी सुपरवाइजर से मिलने तलश्शेरी जाता हूँ। सूर्योदय के बाद ही चला जाऊँगा।

"मैं भी वहीं जाता हूँ।" अम्पू ने कहा—"आप तलश्शेरी जाने वाले हैं तो क्या मुझे भी एक अनुचर बनाकर ले जाने में कुछ तकलीफ होगी? ले चलें तो बड़ा एहसान होगा।"

"मेरे साथ छः शिविका-वाहक और दस अनुचर आते हैं। अनुचरों के साथ हो जाने से तुम्हें कुछ नुकसान न हो तो चले आओ। वहाँ जाने से तुम्हें किसी ने रोका तो नहीं।"

"ठीक है, मगर मेरी इच्छा है कि मैं तलश्शेरी में हूँ, यह बात किसी को ज्ञात न हो।"

× × ×

अपनी इच्छा के अनुसार कार्य की समाप्ति हो जाने पर भी बिस्तरे पर लेटे हुए अम्पू नायर को नींद नहीं आई। आँखें खोलते-मूँदते समय उसके सामने उण्णिनङ्ङा का थका भयभीत चेहरा दिखाई दे रहा था। खूब परिश्रम करने पर भी वह वीर पुरुष उस चित्र को अपने हृदय से दूर नहीं हटा सका। उसको प्रतीत हुआ कि उण्णिनङ्ङा के मुख पर क्रमशः कुछ परिवर्तन हो रहा है। पहले का सूखा मुख प्रसन्न होने लगा। वह उसके हृदय-मुकर में कटाक्ष और हाव-भाव से मनोहर दिखाई दिया। अम्पू ने देखा कि उस मुख पर भय के चिह्नों की जगह विश्वास और प्रेम आकर जम गए हैं। ये सब उसके हृदय को अत्यन्त आनन्द प्रदान करने वाले दृश्य लगते थे। फिर भी इस खयाल से कि राजा साहब के मामलों से मन विचलित न हो, नम्प्यार से होने वाली उस बातचीत और अपनी भावी कार्य-प्रणालियों के सम्बन्ध में सोचने-विचारने का परिश्रम करने लगा। लेकिन वह भी विफल हो गया। विचारों के बीच में, वह फूल की माला की तरह

अपने शरीर पर लिपटी रहने वाली उस युवती का स्पर्श-सुख अपने मन से अनुभव कर रहा था।

रात के अंतिम पहर होते-होते अम्पू नायर झपकी लेने लगा। मगर पहाड़ों और जंगलों में निद्रा और भोजन के बिना जीवन बिताने के लिए अभ्यस्त उस योद्धा को मुर्गे के बोलने के साथ-साथ जाग उठने में कोई कठिनाई न हुई। सबेरे के कर्मानुष्ठान के बाद जब वह घर के चबूतरे पर आया तो कम्मू भी वहाँ हाजिर था।

"क्यों कम्मू ?" अम्पू ने पूछा—"कल की यात्रा की थकावट नींद से दूर हो गई है न ? राजा साहब के पास जाने को तैयार हो गए हो क्या ?"

"आपको न पहचानकर हमने कल क्या-क्या न कहा !" अपनी बेवकूफी प्रकट करते हुए कम्मू ने कहा—"यह शंका भी प्रकट की थी कि हमारे घर पर आग लगाने वाले आप हैं ! इसलिए अब भी बहन को खेद हो रहा है।"

"उसमें क्या है ? केवल इतना कहा था कि दूसरे लोग ऐसा सन्देह भी करते हैं। इसमें खेद करने की कोई बात नहीं। राजा साहब के पास जाने के लिए क्या तुम्हें बहन की अनुमति मिली है ? तुम चले जाओगे तो उसकी मदद के लिए यहाँ कोई न होगा।"

"उसने कहा कि आपके साथ कहीं भी जाने में उसे कुछ एतराज नहीं; इसलिए आज ही मुझे साथ ले जाने की प्रार्थना है।"

"यह नहीं हो सकता।" अम्पू ने धीरे कहा— "मुझे और भी कई स्थानों पर जाना है। ठीक तौर से कहा नहीं जा सकता कि राजा साहब के पास कब पहुँच सकूँ। इसलिए कुछ दिन तक तुम यहीं ठहरो !"

इस आज्ञा के विरोध में कम्मू ने कुछ नहीं कहा। लेकिन अम्पू नायर को मालूम हो गया कि कम्मू का मन इस निश्चय से विक्षुब्ध हो गया है और उसे सीमातीत निराशा भी हुई है। कुछ विचार करने के बाद उसने कहा—"तुम्हें यह पसन्द नहीं है तो कुछ दूसरा कार्य करूँ। थोड़े दिन के लिए तुम कैनेरी में रहो। राजा साहब के पास पहुँचने पर ही मैं तुम्हारे पास आदमी भेज दूँगा।"

तुरन्त तलवार लेकर युद्ध-क्षेत्र में पहुँचने की इच्छा रखने वाले कम्मू को

इस आज्ञा से भी खुश न हुई तो भी इस विचार से कि कैनेरी का निवास भी राजा साहब की सेवा करने के समान है, उसे कुछ सान्त्वना हुई।

उसके मन की बात ताड़कर अम्पू नायर ने फिर कहा—"अब कैनेरी में केवल स्त्रियाँ रहती हैं। कदाचित् राजा साहब के नाते के नाम पर दुश्मन वहाँ पर भी अत्याचार करने आयेंगे। इसके विरुद्ध आत्म-रक्षा का इन्तजाम करना जरूरी है। तब तक वहाँ किसी विश्वास-पात्र का रहना अनिवार्य हो गया है। इसलिए वहाँ तुम्हारी मौजूदगी से राजा साहब खुश हो जायँगे। अच्छा, क्या तुम्हें पूरी शस्त्र-शिक्षा मिली है ?"

"जी, कुछ-कुछ।"

"तो आज ही कैनेरी चले जाओ !"

अम्पू नायर ने एक नौकर को बुलाकर तुरन्त एक ताड़-पत्र लाने की आज्ञा दी। ताड़-पत्र मिलने पर उसने अपनी बहन के नाम यों लिखा—"यह आदमी कुछ दिन वहाँ ठहरे। बहुत जल्दी बुला लूँगा।" उसने पत्र कम्मू को सौंप दिया।

"जब चाहो, रवाना हो जाओ ! तुम्हें वहाँ अपनी सतर्कता और चतुरता दिखाने का अवसर मिलेगा।"

"रवाना होने के लिए सिर्फ बहन से विदा लेने की देरी है।"—कम्मू ने जवाब दिया। पत्र लेकर वह कारिन्दे के घर लौट गया।

अम्पू नायर अपने कर्तव्यों का विचार करके उस घर के बरामदे में ही बैठा रहा। नौकरों से उसे मालूम हो गया कि नम्प्यार नित्य-कर्मानुष्ठान में लगे रहते हैं तथा स्नान और पूजा के बाद बाहर आने में अभी देर है। अम्पू नायर का खयाल था कि नम्प्यार के साथ तलश्शेरी जाने से कई बातें दूसरों को अज्ञात रहेंगी। जिस नये सेनापति को लोग महा पराक्रमी कहते हैं उसकी मन्त्रणाएँ क्या-क्या हैं ? कम्पनी वाले क्या-क्या सैनिक-तैयारियाँ कर रहे हैं ? बम्बई से कितने सैनिक आये हैं ? देश के रहने वालों में कौन-कौन उनके पक्ष में इकट्ठे हो गए हैं ? यह बात सबको विदित थी कि कुरु प्रदेश के राजा विभीषण बनकर इनकी शरण आये थे। निस्सन्देह उनसे कुछ नुकसान नहीं हो सकता। लेकिन कुछ दूसरे सामन्तों को धमकियाँ देकर तथा कुछ दूसरों को

दान-नीति से सन्तुष्ट करके अपनाते हैं, ऐसी किंवदंति हो रही थी। इन सबका ठीक-ठीक पता लगा लेने के लिए राजा ने अम्पू को भेजा था। उसे मालूम हो गया कि राजा साहब के दल के दो-तीन प्रामाणिक व्यक्ति अंग्रेजों से दोस्ती करने लगे हैं। उसकी वास्तविकता जानना भी आवश्यक था।

ऐसे विचारों में डूबा रहता था कि कम्मू फिर भी उसके सामने हाज़िर हो गया। थोड़ी दूर पर उण्णिनङ्ङा भी खड़ी थी।

"पाँव का दर्द दूर हो गया है न ?" अम्पू ने उससे पूछा।

"काँटे को निकालने पर दर्द दूर हुआ।" उण्णिनङ्ङा के कण्ठ से मधुर आवाज निकली।

फिर थोड़ी देर तक कोई कुछ न बोला।

उण्णिनङ्ङा ने कहा—"यह मेरा एक-मात्र सहारा है। इसे मैं आपको सौंपे देती हूँ। फिर जैसी भगवती श्री पोर्कली की इच्छा!" उसका कण्ठ अवरुद्ध हो गया।

"मैं कम्मू की देख-रेख करूँगा।" अम्पू ने धीरज दिलाया—"उसकी चिन्ता न करें। जो लोग राजा साहब के साथ रहते हैं, वे सब एक ही घर वाले जैसे रहते हैं। मेरा कोई सहोदर नहीं है, अतः कम्मू आज से मेरा सहोदर हो गया।"

उण्णिनङ्ङा की आँखें डबडबा आईं। "आपको न पहचानकर मैंने कल बहुत-कुछ कह डाला। कृपया माफ कीजिए! अपनी इन बातों को याद करके मुझे खेद हो रहा है।"

"खैर, तुमने खेद करने के लिए कौन-सी बात की है ? राजा साहब के आदमियों पर तुम लोगों के मन में बड़ा विश्वास और भक्ति है, यह समझकर मैं बड़ा खुश हूँ।"

"अब यहाँ कब चले आयेंगे ?" तनिक सिर झुकाकर और तिरछी नजर से देखकर युवती ने प्रश्न किया।

"राजा साहब के कार्यों में जकड़े रहने वाले क्या कह सकते हैं ? ईश्वर करे, जल्दी-से जल्दी आकर मिलने का मौका आ जाय।"

एक नौकर ने आकर अम्पू को सूचना दी कि नम्प्यार यात्रा की तैयारी

करके बाहर आ रहे हैं।

"तब तुम जाओ! कम्मू, तुम भी जल्दी यात्रा करने की तैयारी करो!" अम्पू नायर उन दोनों को विदा करके नम्प्यार की प्रतीक्षा में खड़ा रहा।

उण्णिनङ्ङा ने आँखें बन्द करके अपने भाई, राजा साहब और अम्पू नायर की भलाई के लिए श्री पार्कली देवी से प्रार्थना की और वहाँ से चली गई।

: ३ :

उस समय परशुराम की इस भूमि में निकृष्ट ग्रह का आधिपत्य हो रहा था। तिरुवितांकूर क्रमशः अंग्रेजी सत्ता को मानने लगा था। वही हालत कोचीन की भी थी। पर कोचीन के उत्तर प्रदेशों मे भी अराजकता नग्न रूप से दिन-रात ताण्डव नृत्य कर रही थी। जब से हैदरअली अपनी म्लेच्छ सेना के साथ पालघाट की घाटी से होकर केरल पर चढ़ाई करने आया था तब से इस देश में शान्ति, शान्तिमय जीवन, ऐश्वर्य, कुटुम्ब के आपसी सम्बन्ध आदि का अस्तित्व टूट गया था। हैदर के अत्याचारों को रोक न सकने के कारण सामूतिरी[1] आदि राजा तथा अन्य कई सामन्त महल, खजाने आदि छोड़कर तिरुवितांकूर की तरफ भाग गए थे। जो लोग दूसरे देशों की शरण में न आ सके वे सब जंगल में जाकर छिपे रहे। कई लोगों ने इस्लाम को अपनाकर आत्म-रक्षा की।

केरल की प्रजा मैसूरी सेना को सदा तंग करती रही। सुलतान टीपू ने घोषणा कर दी कि केरल के रहने वाले शैतान के वर्ग के हैं, किसी नायर को मिल जाय तो उस पर गोली मारनी चाहिए, केरल पर आक्रमण करने से मैसूर को नुकसान ही हुआ है आदि। उस समय के केरलियों को कितने ही संकटों का सामना करना पड़ता था। इस बात का सबसे बड़ा सबूत यह घोषणा ही है। वास्तव में केरल का उस समय का इतिहास अराजकता का प्रामाणिक रूप है।

१. मलाबार का प्रधान शासक, जिसकी राजधानी कोयिक्कोड थी।

"अगर राजा का सुशासन न हो तो शक्तिमान शक्तिहीनों की सम्पत्ति हर लेंगे, उनका प्रतिरोध करें तो मार डालेंगे; दुनिया में कहीं कोई भी यह नहीं कह सकेगा कि 'यह मेरा है !'—पत्नी न होगी, संतान न होगी, अन्न या घर न होगा; चारों ओर नाश-ही नाश दिखाई पड़ेगा। राजा के अभाव में दुष्ट लोग जनता के वस्त्राभूषण, मान, तरह-तरह के रत्न आदि लूट लेंगे; व्यभिचार दण्डनीय नहीं माना जायगा; कृषि और व्यापार का अन्त हो जायगा और धर्म का पतन होगा।"

'शान्ति पर्व' में भीष्म ने इस प्रकार अराजकता के दोषों का वर्णन किया है। उस समय के केरल पर यह अक्षरशः लागू हो रहा था।

टीपू और उसके प्रतिपुरुषों के कुशासन के कारण केरलियों को असंख्य कठिनाइयों का सामना करना पड़ा था। परन्तु स्वातन्त्र्य-प्रिय नायर लोग सीमा-रहित कष्टों को सहकर उस मैसूरी बाघ से लड़ते ही रहे। लेकिन राजाओं और सामन्तों के भाग जाने के कारण आजादी की इस लड़ाई में भी अराजकता फैल गई। सामूतिरी के राज्य में या चिरक्कल में दुश्मनों का सामना करने वाले नायरों को ठीक तौर से एकत्रित करके युद्ध कराने के लिए कोई राजा या नेता नहीं था। सिर्फ कोट्टयम देश के लोग सच्चे नेतृत्व में टीपू से लड़ सके। दूसरे राजाओं और सामन्तों की तरह कोट्टयम के राजा भी तिरुवितांकूर की तरफ भाग गए। पर वहाँ के चौथे राजकुमार केरल वर्मा ने उच्च स्वर में घोषणा की कि यह भीरुओं की नीति है और वे अपने देश, प्रजा और केरलियों के गौरव की रक्षा करने का निश्चय करके वहीं रहने लगे। उस समय उनकी उम्र इक्कीस वर्ष की थी। ऐसे धीर पुरुष के सेनापतित्व में कोट्टयम, वयनाड आदि देशों के नायरों ने मैसूर-सत्ता के विध्वंस करने का निश्चय किया। पयशी महल, जो केरल वर्मा का निवास-स्थान था, स्वतन्त्र केरल की राजधानी हो गया।

टीपू ने चारों नीतियों का प्रयोग तो किया, पर वह उन महान् राजा को आकर्षित न कर सका। पयशी के शैतान के बच्चे का सर्वनाश करने के लिए उस रावण ने सुसज्जित सेना के साथ सुसज्जित सेनापतियों को भेज दिया। समुद्र की भयानक लहरों की तरह जब वह सेना देश में आकर फैल गई तो

जंगल को एक-मात्र अवलम्ब मानकर वे पुरलीश्वर पुरली के पहाड़ों और वयनाड के घोर काननों की शरण में आए। मैसूर की सेना डेरा डालकर रहने लगती तो राजा साहब के आदमी न जाने कहाँ से आकर गाँव में पहुँचते, सेना के एक-एक संघ का नाश करते, उसकी रसद लूट लेते, डेरों में आग लगाते तथा लौट जाते। इस प्रकार टीपू की सत्ता का धिक्कार तथा उसके अधिकार का विध्वंस करके केरल की आजादी का झण्डा ऊँचा करते हुए ही केरल वर्मा पिछले दस वर्ष से असाधारण धीरता के साथ लड़ते रहे।

उस समय एक अन्य शत्रु के साथ टीपू की मुठभेड़ हुई। बंगाल, मद्रास आदि देशों के सत्ताधारी अंग्रेजी कम्पनी वालों से वह रूठ गया। कार्नवालिस नामक लाट-मुख्य के सेनापतित्व म टीपू से लड़ने के लिए कम्पनी वालों ने एक बड़ी सेना तैयार की है, ऐसी वार्ता केरल में फैल रही थी। तलश्शेरी शहर में कम्पनी वालों का एक छोटा किला था और उनके व्यापार की रक्षा के लिए एक छोटी सेना सज्जित थी। उनका विचार था कि टीपू पर पूरब से आक्रमण करना ही नहीं, बल्कि केरल द्वारा फरासीसियों के साथ उनका जो नाता है उसे तोड़ना तथा पश्चिम से भी उस पर हमला करना चाहिए। कम्पनी के अधिकारियों ने अपने इस परिश्रम में केरल के राजाओं की मदद माँगी। उन्होंने उन राजाओं को समझाया कि अगर आप लोग टीपू को हटाने में सहायता करेंगे तो हम अपने हिस्से के देशों में आप लोगों की प्रतिष्ठा करेंगे, क्योंकि हमें राज्य का लोभ नहीं, सिर्फ व्यापार करने की इच्छा-मात्र है। सामूतिरी आदि राजा हर प्रकार से कम्पनी की मदद करने केरल को रवाना हुए।

मैसूर के बाघ को निर्वासित करने के लिए केरल वर्मा ने जो मदद की है, वह पच्चीस वर्षों से विदेश में रहने वाले राजाओं से होने वाली सहायता से कहीं अधिक थी। इतने प्रबल मित्रों को पाने पर राजा साहब बहुत खुश हुए। उनका प्रताप, जनता पर उनका प्रभाव, उनकी बहादुरी और युद्ध-प्रवीणता—यह सब कम्पनी वालों को अच्छी तरह मालूम थी, अतः उन्होंने उनको अपना जिगरी दोस्त माना। लेकिन केरल वर्मा ने उनको सूचना दी कि हम दोनों का सम्बन्ध किसी समझौते द्वारा निश्चित करना चाहिए, नहीं

तो आप लोगों की सहायता के लिए मैं प्रस्तुत नहीं हो सकता। इसलिए अन्त में एक राजीनामा लिखा गया और दोनों दल एक-दूसरे की मदद करने को बाध्य कर दिए गए। उसके अनुसार पारस्परिक सहायता करके टीपू से लड़ने तथा उससे केरल को वापस लेने पर कोट्टयम वंश के परम्परागत देशों को राजा साहब की इच्छानुसार कार्य करने के लिए लौटा देने का निश्चय हुआ।

लड़ाई खत्म होने पर राजा साहब को कम्पनी वालों का पूर्ण स्वभाव विदित हो गया। केरल का राज्याधिकार टीपू ने कम्पनी के लिए छोड़ दिया है—मैसूर और लाट-मुख्य के बीच के समझौते का सारांश यही था। उनका यह करार था कि राज्याधिकार पहले की तरह देशी राजाओं के लिए छोड़ दिया जायगा। फलत: वे विजय के उन्माद में भूल गए। उन्होंने देशी राजाओं को बता दिया कि केरल का राजत्व कम्पनी वालों पर ही निर्भर है।

इस निश्चय का विरोध करने की शक्ति सामूतिरी आदि राजाओं में नहीं थी। अंग्रेजों ने समझ रखा था, केरल भारत का सबसे सम्पन्न देश है। उनके व्यापार के लिए काली मिर्च आदि बहुमूल्य चीजें केरल में ही उत्पन्न होती थीं। इन चीजों का व्यापार मुट्ठी में लाने के लिए उन्होंने पोर्चुगीज तथा डेच से कितने ही घमासान युद्ध किये थे। अब जब कि वही देश उनके हाथ में आया है तो उसे कुछ कोरे कागज के टुकड़ों के आधार पर उन राजाओं के लिए छोड़ दें? उन राजाओं के लिए—जिनमें टीपू का सामना करने तक की ताकत नहीं थी? कम्पनी वालों का ऐसा उद्देश्य ही नहीं था। उन्होंने तनिक भी हिचकिचाहट के विना घोषणा कर दी कि टीपू से जीते हुए देश अंग्रेजों की अधीनता और अधिकार में विलीन हो गए हैं।

लेकिन उस अधिकार को बनाए रखने के लिए सेना, महसूल वसूल करने के लिए नौकर, शान्ति, नीति तथा न्याय का पालन करने के लिए संस्थाएँ केरल में बिलकुल नहीं थीं। राज्याधिकार हमारा है इस घोषणा से उन्होंने अराजकता रूपी शैतान को स्वेच्छा से विचरने दिया। जब देश हाथ से निकलने लगा तो राजाओं को प्रजा की सुध न रही। अपना देश छोड़कर अन्य देशों मे बहुत दिनों तक रहने के बाद लौट आए हुए राजाओं और

उनके अनुयायियों का एक-मात्र विचार था कि अंग्रेजों के शासन के आरम्भ के पहले जितना हो सकता है, उतना धन एकत्रित करना चाहिए। कितने ही लोग स्वयं कारिन्दे और राजपुरुष बनकर शस्त्रधारी अनुचरों के साथ गाँव-गाँव में भ्रमण करते, उनके निवासियों के घर लूट लेते और उनके धन तथा धान्य का अपहरण करते। उनको देखने पर देशवासियों के मन में आता कि टीपू का आगमन इससे कहीं बेहतर है।

अंग्रेजों ने सीधे ढंग से कर वसूल करने का इन्तजाम नहीं किया था, इसलिए उसका अधिकार पाँच-पाँच वर्ष के करार पर उन्होंने देशी राजाओं को सौंप दिया। अंग्रेजों ने ऐसी कार्रवाई इसलिए की थी कि राजा लोग अब समझें कि अधिकार अपने ऊपर है। धीरे-धीरे जब इन्तजाम पूरा हो जायगा तो इन राजाओं को दूर हटाने में कुछ कठिनाई भी नहीं होगी। इस प्रकार के प्रबंध के मारे लोगों की नाक में दम हो रहा था।

उण्णिमूत्ता-जैसे प्रबल डाकू और कुञ्जिक्कोया-जैसे दुष्ट व्यक्ति, जो गुलामों का व्यापार करते थे, शहरों और गाँवों में अपनी-अपनी राक्षसीय वृत्तियों से लोगों को तंग करते रहते थे। मनादी करना कम्पनी वालों का काम था, इसके अलावा कुछ करने को शक्ति उनमें नहीं थी। आश्चर्य की बात नहीं कि केरल की दर्दनाक दशा, अराजकता के लक्षणों का जो वर्णन हो चुका है, उससे कहीं अधिक बदतर थी।

× × ×

केवल केरल वर्मा ने कम्पनी वालों से खुले तौर पर विरोध करने का निश्चय किया था। जब राजा ने समझा कि अंग्रेजों के साथ उन्होंने जो समझौता किया है उसका आदर करने के लिए कम्पनी वाले तैयार नहीं तो वे उनसे लड़ने को प्रस्तुत हुए। उनके परिश्रम से साबित हो गया कि कोट्टयम, वयनाड आदि देशों में कम्पनी की कुछ चल नहीं सकती। अपनी नीति के अनुसार उन्होंने कुरुंप्रदेश के राजा के साथ दोस्ती करके केरल वर्मा का मुकाबला करने की कोशिश की, पर उन देशों से महसूल के रूप में एक पैसा भी वसूल नहीं हुआ और एक आदमी भी उनके साथ नहीं हुआ। उस समय बम्बई-सरकार में भी लड़कर जीतने की सैनिक शक्ति नहीं थी। इसलिए उसने

निश्चय किया कि केरल वर्मा के साथ सन्धि करना ही अच्छा है। इसके लिए तलश्शेरी के सुपरवाइजर को आज्ञा दी गई।

राजा साहब ने फिर भी पयशी दुर्ग में राज्य किया। मगर कम्पनी वाले नहीं चाहते थे कि राजा शान्ति से दिन बिताए। अंग्रेजों का कारिन्दा बनकर कर वसूल करके उनको दे देना राजा को भी स्वीकृत न था। उनके साथ एक तात्कालिक सन्धि करना भी अंग्रेजों का गूढ़ उद्देश्य था। उस समय कम्पनी वाले टीपू से लड़ने की तैयारी कर रहे थे। मैसूर-शक्ति को जड़ से उखाड़ फेंकना उनका सनातन स्वप्न था। नये गवर्नर जनरल मार्णिगटन ने इस स्वप्न को यथार्थ करने का दृढ़ संकल्प किया। उनका निश्चय था कि टीपू पर कुटकू और वाँगलूर से होकर हमला करना चाहिए। यदि राजा साहब बिगड़ जाते हैं तो कुटकू से आक्रमण करना कठिन हो जायगा। इसलिए सबसे पहले उनको सन्तुष्ट करना जरूरी था, अतः खूब सोच-विचार करने के बाद अंग्रेज लोग राजा साहब के साथ समझौता करने को तैयार हो गए थे।

श्री रंगपट्टन की लड़ाई में टीपू की मृत्यु हो गई। उसके बाद मैसूर-राज्य अंग्रेजों के शासन में आ गया। अब उनको राजा साहब से कोई प्रयोजन न रहा। कुछ-न-कुछ कारण बनाकर वे राजा के मामलों में हाथ डालने लगे। उन्होंने कुतर्क निकाला कि जिस देश में राजा साहब राज्य करते थे वहाँ अन्य देशों की तरह अंग्रेजों का ही पूर्ण अधिकार था। दोनों में फिर भी लड़ाई होने लगी। ऐसे समय पर हमारी कहानी शुरू हो जाती है।

उस समय केरल वर्मा की आयु ४७ वर्ष की थी। वे एक निराले व्यक्ति थे। उनकी आकृति ऐसी थी मानो केरल का पौरुष मूर्तवत् हो गया हो। सब प्रकार की विपत्तियों को सहन करने लायक सुदृढ़ लम्बा शरीर, मोटा गठीला गला, ऊँचे कन्धे, खुली छाती, घुटनों तक बढ़ी हुई मूसल-जैसी भुजाएँ—ये सब उन वीर पुरुष के शरीर की शोभा बढ़ा रहे थे। उनका ऊपर चढ़ा हुआ विशाल ललाट, पौरुष का प्रकाश फैलाने वाली लम्बी-लम्बी आँखें और दृढ़ संकल्प तथा स्थिर प्रतिज्ञा के द्योतक पतले अधर उनके मुख को असाधारण गौरव दे रहे थे। लोगों के अन्दर घुसने वाली वे उज्ज्वल आँखें उस मुख की सबसे बड़ी विशेषता थीं। उन राज-पुंगव का रूप ऐसा था कि पहली दृष्टि

में ही लोगों में उनके प्रति भक्ति और आदर उत्पन्न हो जाते हैं।

केरल वर्मा की युद्ध-निपुणता, आज्ञा-शक्ति, धैर्य, प्रताप और नीति-कुशलता केरल में ही नहीं बल्कि विदेश में भी मशहूर हो गई थी। पच्चीस वर्ष से तरह-तरह की कठिनाइयों को सहन करके केरल की स्वातन्त्र्य-लक्ष्मी का पालन करने वाले राजा साहब को यदि केरलियों ने देवता माना तो इसमें आश्चर्य करने की कोई बात ही नहीं। पर केरल वर्मा से लोगों का जो आदर था उसका कारण ये सब गुण ही नहीं थे। दीनों पर उनकी दया निस्सीम थी। सब जानते थे कि जो लोग उनकी सेवा करते थे, उनकी रक्षा तथा मदद के लिए राजा साहब अपनी जान पर खेलने को भी हमेशा तैयार रहते थे। यह समझकर लुटेरे भी राजा साहब के दल के लोगों के घर ऋष्यमूकाद्रि की तरह छोड़ जाते थे। उनके आश्रय में आने वाला कोई भी हो, उसे शरण देने में वे कभी नहीं हिचकते थे। इन सबके अलावा उनकी एक और विशेषता थी कि चाहे लड़ाई के मैदान में हो, चाहे भयानक जंगलों में, अपने साथी साधारण सैनिक के साथ दुःखों और विपदाओं में भाग लेने में उन्हें आनन्द आता था। अगर वह काँटे और कंकर पर सोता तो उनके लिए भी वह पुष्प-शय्या के समान होता। तब केरल वर्मा को देवता मानकर लोगों ने उनकी पूजा की तो उसमें आश्चर्य नहीं।

कोट्टयम के राज-महल के परम्परागत पाण्डित्य तथा साहित्य-सेवा उनमें पराकाष्ठा पर पहुँच चुके थे। उस समय संगीत-शास्त्र और नृत्य-कला में उनकी बराबरी करने के लिए 'कुलशेखर पेरुमाल' के पदाधिकारी धर्मराजा राम राज बहादुर के सिवा दूसरा कोई नहीं था। 'कथकली'[1] के लिए उन्होंने लड़ाई के इसी जमाने में 'बक-वध' 'कालकेय-वध', 'कल्याण सौगन्धिक' आदि जो रचनाएँ की हैं वे अपने बृहत् गुणों के कारण कैरली के कंठाभूषण और केरलीय नृत्य-कला का बहुमूल्य रत्न-भण्डार बनकर शोभा दे रही हैं।

जब लड़ाई फिर भी शुरू हो गई तो गवर्नर जनरल ने महाप्रतापी तथा प्रसिद्ध आर्तर वेल्लस्ली को अंग्रेजी सेना का सेनापति नियुक्त किया। इस महा-

१. कथा + कली (खेल) = कथकली केरल की अपनी चीज है। इसमें नृत्त, नृत्य, संगीत, अभिनय और वाद्य का सम्मोहन सम्मेलन है।

पुरुष के तलश्शेरी म आने पर युद्ध की रीति ही बदल गई। फिर भी राजा साहब अपने दो भानजों और कुछ चुने हुए अनुयायियों के साथ पुरली पहाड़ पर ही चढ़ गए। पहाड़ पर का अपना स्थान निश्चित करने के पहले उन्होंने देश में कार्य चलाने के लिए पययम घर के चन्तू और महसूल वसूल करने तथा प्रजा की रक्षा करने के लिए कैतेरी के अम्पू को कार्यकर्त्ता बनाया था। अविञ्जक्काड की महादेवी ने भी राजा साहब का अनुगमन किया था।

जब लोगों ने सुना कि राजा साहब पयशी का राजमहल छोड़कर जंगल की ओर वापस चले गए हैं, तो उनमें बड़ी उत्कण्ठा फैल गई कि अब क्या होने वाला है? यह बात कम्पनी वालों ने भी सुनी। इसलिए वे अपना उद्देश्य प्रकट करने और उसे कार्यान्वित करने में लग गए।

: ४ :

अम्पू नायर का पता लेकर नैरी आने वाला कम्मारन नायर सन्ध्या के चार घड़ी पहले उस घर के समीप पहुँच गया। कैनेरी का घर सड़क के सामने नहीं था। सह्याद्रि की प्यारी सन्तान की तरह छोटी-छोटी पहाड़ियाँ, उपजाऊ खेतों और पहाड़ियों की तलहटियों में नारियल, सुपारी, कटहल आदि के पेड़ों से भरे बाग उस देश में साधारण रूप से दिखाई दे रहे थे। ऐसी जगहों पर साधारणतः खेतों के उस पार, पहाड़ों की तलहटियों में, नायर-गृह स्थित होते थे। कैनेरी के घर का भी वही हाल था। सड़क से खेत में घुसकर कुछ दूर चलने पर देवी का एक मन्दिर था और उसके उत्तर में एक बड़ा प्रासाद दिखाई दे रहा था। कुछ हटकर, पूरब दिशा में खेत के समीप दीखने वाला एक मकान उस समय नायरों के शस्त्राभ्यास के लिए बनाया गया था, अमीरों के प्रासादों में अखाड़ों की बड़ी जरूरत होती थी। घर के पीछे उत्तर दिशा में कुछ ऊँची पहाड़ियाँ थीं, मानों वे गृह-रक्षा के लिए बनाई गई हों। प्रासाद पूरब की ओर मुँह करके खड़ा था और उसके दक्षिण में खेत दिखाई पड़ते थे।

एक बड़ी चहारदीवारी से सुरक्षित कैनेरी-गृह इस प्रकार बनाया गया था कि किसी ओर से देखने पर भी सड़क पर चलने वाले उसे देख न पायें। सड़क के पास रहने वाले कुछ जुलाहों से मार्ग पूछकर कम्मू खेत पार करके कैनेरी-घर के प्राचीर के सामने आया तो अन्दर से एक सुरीला गाना अमृत और आनन्द की धाराएँ बहाकर उसका स्वागत कर रहा था :

"शरण तेरी सरसीरुह लोचन।
शरणागत-वत्सल जनार्दन॥"

कम्मू ने समझ लिया कि गाने वाली माक्कम देवी ही है। स्वर की मधुरिमा और गान-अभ्यास-निपुणता ने उसे थोड़ी देर तक निश्चेष्ट कर दिया। अन्त में जब उसको मालूम हो गया कि देवी अन्य कार्यों में लगी हुई नहीं हैं तो फाटक से अन्दर घुसकर आँगन में पहुँच गया।

पहले कहा जा चुका है कि राजा साहब पयशी का राजमहल छोड़कर जब फिर भी पुरली पर्वत पर रहने लगे तो अर्वि-जक्काड की महादेवी को साथ ले चले थे। माक्कम ने भी बहुत जोर दिया, पर राजा साहब ने ठान लिया था कि दूसरी महादेवी युवती माक्कम, जिसे शारीरिक दुःख सहने का अभ्यास नहीं था, घर पर ही रहे।

जब बड़ी महादेवी की बारी आई तब भी राजा साहब ने अपना विरोध प्रकट किया, पर वे उसे रोक न सके। जब-जब टीपू से वे लड़ते थे, तब-तब उनकी सेवा-शुश्रूषा करके वह सहधर्मिणी उनके साथ सभी संकटों को सहन करती थी। ऐसी पत्नी की प्रार्थना को अस्वीकार करने का धैर्य उनमें नहीं था। पर माक्कम की बात ऐसी न थी। वह युवती थी। संगीत और साहित्य में उसकी प्रवीणता को देखकर राजा साहब की धारणा थी कि वह सुकुमार प्रकृति की हैं। फिर उन्होंने सोचा कि वनवास में दो पत्नियों की उपस्थिति भी हानिकारक है। जो हो माक्कम देवी को कैनेरी लौटना पड़ा।

बाहर किसी की पद-चाप सुनकर माक्कम की बड़ी बहन उण्णिअम्मा ने नौकरों को जाकर देखने की आज्ञा दी।

उण्णिअम्मा गृह की स्वामिनी थी। उसका पति, पयम्प घर का चन्तू, राजासाहब के प्रधान कर्मचारियों में एक था। चन्तू, जो एक पान वाला बच्चा

बनकर राजासाहब के पास आया था, अपनी होशियारी और राजासाहब के स्नेह से धीरे-धीरे कर्मचारियों में प्रमुख बन गया था। उस जमाने में, जब कि टीपू से लड़ाई हो रही थी, चन्तू राजासाहब का दाहिना हाथ था। राजासाहब के जोर देने के कारण ही कुल, पद आदि कुछ न होने पर भी उसके साथ उण्णिअम्मा की शादी की अनुमति अम्पू तथा उस समय कैतेरी के अन्य पुरुषों ने दी थी।

चन्तू का राजासाहब बड़ा आदर करते थे। देश म भी उसका बड़ा मान था। इसलिए उण्णिअम्मा को बड़ा गौरव अनुभव हो रहा था। वह बहाना करती थी कि देश में होने वाले मामलों और राजासाहब की गूढ़ मन्त्रणाओं में उसका भी हाथ है। घर के दूसरे लोगों पर वह इस भावना का प्रभाव डालने की कोशिश भी करती थी। एक-दो वर्ष के बाद जब माक्कम महादेवी बन गई तो उसे अपनी पदवी की कुछ हानि-सी दीखने लगी थी। माक्कम से उसे जो ईर्ष्या थी, वह चुभने वाले शब्दों के रूप में बाहर आने लगी। बड़ी बहन की शत्रुता का क्या कारण है, यह माक्कम की समझ में नहीं आया। राजासाहब जब देश में भी रहते तो अपना ज्यादातर समय महादेवी पयशी में ही बिताती। इसलिए उण्णिअम्मा को उसके प्रति जो मात्सर्य था उसे प्रकट करने का मौका नहीं मिलता। राजासाहब के देश छोड़ने पर माक्कम घर लौट आई। अब उण्णिअम्मा को अपना अधिकार और ईर्ष्या प्रकट करने का अच्छा अवसर प्राप्त हो गया।

कैतेरी-गृह में उण्णिअम्मा, उसके दो बच्चे, माक्कम और उसकी स्वर्गीय बड़ी बहन की बेटी नीलुक्कुट्टी के सिवा और कोई न था। बचपन में ही नीलुक्कुट्टी की माता की मृत्यु हो जाने के कारण माक्कम की देख-रेख में वह लड़की पल गई। पयशी के वास के समय भी वह माक्कम के साथ ही रहती थी।

कैतेरी-कुटुम्ब के और भी सम्बन्धी होते थे, पर वे दूसरे घरों में रहते थे। उत्तर कैतेरी-गृह नामक शाखा में चार-पाँच पुरुष, सात-आठ स्त्रियाँ और उनके बाल-बच्चे होते थे। उनका मामा इक्कंटन नायर घर सँभाल रहा था। उसकी उम्र साठ से अधिक हो गई, पर उसकी बुद्धि अब भी तेज थी।

अकाल के उस जमाने में भी उसके पास खूब धन था। साठवें वर्ष की पूर्ति होने के बाद वह एक कम उम्र वाली स्त्री के साथ संबंध जोड़कर घर ले आया था। कहा जाता था कि वह मन्त्र-जन्त्र जानता है, आधी रात के समय श्मशान जाकर देवी की पूजा किया करता है और पाँच 'मकारों' में उसकी प्रीति होती है। एक बात तो सही थी। विलायती इक्कंटन नायर जब ह्विस्की और ब्रांडी का वर्णन करता तो मालूम होता कि दुग्ध-सागर के मन्थन के बाद पाये हुए अमृत खाने वाले देवताओं के अनुभव का वर्णन हो रहा हो।

स्वामिनी की आज्ञा के मुताबिक दासी बाहर आई। उसने कम्मू को देखकर कुछ विरसता से पूछा—"क्यों, कहाँ से आए हो ?"

"महादेवी को अम्पू नायर का खत देने आया हूँ।"

"तो यहाँ बैठो ! अन्दर जाकर कहूँ।"

तुरन्त उण्णिअम्मा, माक्कम और नीलुक्कुट्टी बाहर निकल आईं।

उन बहनों की आयु में बड़ा अन्तर न था। फिर भी माक्कम को पहचानने में कम्मू को कुछ कठिनाई न हुई। दोनों रूपसी थीं। पर उसको निश्चय हो गया था कि वह माक्कम नहीं हो सकती जो तरह-तरह के आभूषण पहने हुए है, जिसके अधर ताम्बूल-चर्वण से रक्तिम हो गए हैं और जिसने सोने के तारों वाला किनारेदार उत्तरीय छाती पर बाँधा हुआ है। इसके अलावा, उसकी संदेहयुक्त और अशान्त दृष्टि तथा मुख पर प्रतिबिम्बित अप्रसन्नता यह सूचित कर रही थी कि वह स्त्री माक्कम नहीं है। उसने अपने मन में माक्कम की एक मूर्ति देखी थी, उसे उसने माक्कम में ही पाया। शान्त भाव का स्फुरण होने पर भी स्वतः प्रसन्नमुख, शान्त दृष्टि, प्रोषित-पतिका के लायक अल्प-मात्र आभूषण, काजल-रहित नेत्र, आडम्बरहीन पर शुभ्र और कुलीनों के उचित वस्त्र—यह सब देखकर ही कम्मू आसानी से माक्कम महादेवी को पहचान सका था। युवक ने उसका अभिवादन किया और पत्र लेने के लिए बढ़े हुए उण्णिअम्मा के हाथ को न देख पाने का बहाना करके उसे महादेवी को ही दे दिया।

कम्मू ने नहीं समझा कि इस गलती से उसके लिए एक कट्टर दुश्मन का आविर्भाव हो गया है। उण्णिअम्मा का मख लाल हो गया, त्योरियाँ बदल

गई'—सिर्फ माक्कम ने यह देखा। उस ताड़-पत्र पर नजर डाले बिना ही उसने उसे उण्णिअम्मा की ओर बढ़ाया।

"नहीं," उण्णिअम्मा ने विरोध किया—"तू ही पढ़ ले ! राजा साहब की कोई बात लिखी होगी।"

"ऐसा ही हो, तो भी क्या हर्ज ? आपसे छिपाने को हमारे लिए कौन-सी बात है ?"

"कैसी बातें करती हो ?" उण्णिअम्मा ने पूछा—"क्या तुम सबका ऐसा भाव है ? आखिर मैं कौन हूँ ? कहीं से चली आई हूँ न ? भैया ने भी तेरे नाम नहीं लिखा ? तेरी बात तू ही देख ले !" कहकर उण्णिअम्मा क्रुद्ध होकर अन्दर चली गई।

माक्कम ने पत्र पढ़कर पूछा—"भैया कुशल से तो हैं ?"

"जी, कुशल से हैं।" कम्मू ने कहा।

"तुम्हें यहाँ ठहराने को लिखा है। कुछ नुकसान तो नहीं, पर यहाँ तुम्हें क्या करना है, यही सन्देह है।"

"शायद पहरे के लिए मुझे भेजा होगा। यहाँ सिर्फ स्त्रियाँ रहती हैं न ?"

यह सुनकर माक्कम मुस्कराई—"अच्छा, यदि भैया को कैतेरी में भी पहरे की जरूरत सूझी तो बात कुछ बिगड़ गई होगी। मेरा विश्वास है कि जब तक भगवती श्रीपोर्कली की कृपा है तब तक हमारे ऊपर ऐसा कोई संकट नहीं आ सकता।"

"मेरे कहने में गलती हो तो माफ कीजिए !" विनीत होकर कम्मू ने कहा—"जब तक स्वामी बुला नहीं लेंगे तब तक आपकी आज्ञा का पालन करके जीवन बिताऊँ। इसके सिवा मैं क्या करूँ ?"

"पत्र से मालूम होता है कि तुम्हारी शस्त्र-शिक्षा पूरी हो गई है। ऐसा हो तो अखाड़े में अभ्यास की पूर्ति न होने वालों को शिक्षा दे सकते हैं।"

"ठीक है। मैं अखाड़े में काम करूँगा।"

"सिवाय धनुष और तलवार के, क्या बन्दूक चलाना भी तुम्हें आता है ?" माक्कम ने पूछा।

"अच्छी तरह तो नहीं, पर निशाने पर गोली मार सकता हूँ।"

"वह मैं भी सीखना चाहती हूँ। पहाड़ पर पधारने के पहले मुझे एक छोटा रिवाल्वर उपहार में दिया था। उन्होंने कहा था—"अब इससे ज्यादा फायदा है, इसलिए अपने पास रखो।' लेकिन कैसे इसका उपयोग किया जाय, यह बता देने की फुरसत न मिली। ईश्वर जाने आगे चलकर मिलें या नहीं।" अंतिम वाक्य में प्रकट अधीरता को जल्दी दूर करके उसने कहा—"तो मैं उसे ले आऊँ।" महादेवी अन्दर चली गई।

पल-भर में कम्मू के मन में चिंताओं की एक बाढ़-सी आ गई। 'कैसी कुलीनता, कैसा विनय, कैसे प्रेम-भरे शब्द, कैसी गम्भीरता!'— उस युवक के आश्चर्य की सीमा न रही। अम्पू नायर ने कहा था कि तुम कैतेरी जाकर रहो, तब कम्मू पूर्ण रूप से सन्तुष्ट नहीं था। पर महादेवी के साथ बातचीत होने पर उसको लगा कि दास बनकर कैतेरी में रहना भी किस्मत की बात है।

रिवाल्वर लेकर महादेवी जल्दी बाहर आई। "मैं नहीं जानती कि इससे क्या करूँ। मय्यथी के एक बड़े साहब ने उनको भेंट दी थी।" माक्कम ने उसे कम्मू के हाथ में रख दिया। इसके पहले उसने ऐसा रिवाल्वर नहीं देखा था। वह छोटा था और इतना पतला था कि बच्चे भी उसका इस्तेमाल कर सकते थे। जब राजा साहब ने पहली बार उस शस्त्र को देखा, जो उनकी मुट्ठी में समा सकता था, तो उन्होंने उसे बच्चों का खिलौना समझा था। लेकिन उसको भेंट करने वाला फरासीसी सेना का एक ऊँचा पदाधिकारी था और उसने उस शस्त्र के सम्बन्ध में खूब बढ़ा-चढ़ाकर कहा भी था, इसलिए उन्होंने एक दूसरे गोरे को उसे दिखाया। उसने उसकी परीक्षा की और कहा कि ऐसा अचूक रिवाल्वर मिलना कठिन है, लेकिन राजा साहब-जैसे व्यक्ति के लिए वह कम वजनदार लगेगी।

पयशी का महल छोड़कर जाते समय राजा साहब ने यह शस्त्र माक्कम को दे दिया। उन्होंने किस उद्देश्य से अपनी प्रिया को एक ऐसा उपहार दिया होगा? यदि उनको पराजित होना या मृत्यु का सामना करना पड़े तो हो सकता है कि उनकी प्यारी महादेवी कैदखाने में डाली जायगी, गुलाम बनाकर बेची जायगी या अत्याचारियों के पंजे में फँसेगी। शायद उसके विरुद्ध उन्हें

यह उपाय सूझा होगा ! अथवा समय के फेर के अनुसार स्त्रियों के लिए भी हमेशा आत्म-रक्षा के उपायों की आवश्यकता का अनुभव हुआ है ? महादेवी को राजा साहब से ही खंग-प्रयोग की शिक्षा मिली थी, क्या उसकी पूर्ति के लिए उन्होंने यह शस्त्र भी उपहार में दिया होगा ? अन्त में माक्कम के मन में आया कि दीर्घदर्शी राजा साहब ने यह सब सोचा होगा।

लेकिन फायदा क्या है ? धनुष और तलवार के प्रयोग से वह खूब परिचित थी। पर उसे मालूम न था कि बन्दूक से गोली कैसे निकलती है। उसे लेकर उसने कई बार उलट-पुलटकर देखा, फिर भी उसके लिए वह एक खिलौना-मात्र रह जाने के कारण उसे बड़ा दुःख हुआ। जब कम्मू ने कहा कि मैं बन्दूक का भी प्रयोग कर सकता हूँ, तो महादेवी की उत्सुकता बढ़ गई।

कम्मू ने विनीत होकर बन्दूक हाथ में ले ली और उसे ध्यान से उलट-पुलटकर देखा, मालूम हो गया कि उसके अन्दर गोली नहीं है, तब दाहिने हाथ में उसे पकड़कर अँगूठे से उसके प्रयोग करने का तरीका बता दिया— "यहाँ कारतूस रखना चाहिए। उसके बाद इस प्रकार बन्द करना होता है। फिर गोली चलाने के लिए इस अँगूठे-जैसी चीज को खींचकर छोड़ देना काफी है।"

"गोली मेरे पास है।" माक्कम ने कहा—"तुम एक-दो बार गोली चलाकर दिखाना !" महादेवी की उत्सुकता बढ़ रही थी।

इस नये शस्त्र-सम्बन्धी सम्भाषण से वह वीर नारी अपनी बहन की चुभने वाली बातें तथा दूसरे सारे संकट को भूल चुकी थी। बहुमूल्य आभूषण मिलने पर जिस प्रकार एक कामिनी फूली नहीं समाती, या नया खिलौना पाने पर जिस प्रकार बच्चा खिल उठता है, उसी प्रकार वह प्रगल्भा आह्लादित हो उठी, मानो अपनी सब परिस्थिति भूल गई हो।

वह जल्दी जाकर पेटी से गोली निकाल लाई।

कम्मू ने बिना किसी संकोच के बन्दूक में कारतूस भरकर कहा—"इससे दूर तक गोली नहीं चला सकते। पास आने वालों को गोली मारकर गिरा सकते हैं। इसमें एक साथ छः बार गोलियाँ दागने की सुविधा है।" यों

कहकर वह आँगन में उतर आया ।

महादेवी ने भी उसका पीछा किया ।

तालाब के किनारे पर एक कटहल का पेड़ था। कम्मू ने उसका एक पत्ता उठा लिया और काठ पर उसे एक काँटे के सहारे स्थिर किया ।

"देखिए !" कहकर उसन हाथ बढ़ाकर ऐसी गोली मारी कि वह उस पत्ते के बीच में ही जाकर लग गई ।

"निशाने पर ही जा लगी ! मैं भी जरा कोशिश करूँ ।" महादेवी ने शस्त्र हाथ में लिया ।

बन्दूक की आवाज सुनकर उण्णिअम्मा घबरा गई । वह प्रासाद से बाहर आई तो देखा माक्कम हाथ में बन्दूक लियें मुस्करा रही है । ईर्ष्या और विद्वेष के मारे उसका चेहरा लाल हो गया । वह बड़बड़ाई कि एक अपरिचित युवक के साथ इस प्रकार प्रेम-भाव से बहन का आँगन में खड़ा होना अपने कुल, मान और पद के योग्य नहीं ।

माक्कम शस्त्राभ्यास की परीक्षा में उत्सुक थी । उसने कहा—"देखूँ कि मैं भी निशाने पर गोली चला सकती हूँ कि नहीं ।" कम्मू के निर्देश के अनुसार उसने गोली मारी। लक्ष्य से छः अंगुल की दूरी पर गोली जा लगी ।

"जिसने धनुष पर अभ्यास किया है, उसका लक्ष्य अचूक होगा । हाथ कुछ हिल गया होगा । हाथ फैलाकर कई बार अँगूठे से अभ्यास करें तो वह अचंचल रह जायगा ।"—कम्मू ने उपदेश दिया ।

"और एक बार देखूँ !" माक्कम ने फिर भी गोली मारी । अब की बार लक्ष्य के बहुत पास गोली लग गई । इसलिए उसे संतोष हुआ । बार-बार गोली चलाने से बन्दूक के अन्दर डाले हुए कारतूस खत्म हो गए । चौथी बार गोली लक्ष्य पर लग गई थी । तब माक्कम के चेहरे पर कृतार्थता-सूचक मुस्कराहट फैलने लगी ।

"अब वे पधारेंगे तो दिखा दूँगी कि मैं इस बन्दूक से क्या कर सकती हूँ । मैं कभी भुला न दूँगी कि किसने मुझे यह विद्या सिखा दी है ।"

"मैंने तो कुछ भी नहीं सिखाया, सिर्फ बन्दूक खोलकर दिखाई है ।"

"इसी प्रकार सिखाया जाता है। अखाड़े में शिक्षण का कार्य शुरू करने के पहले सामर्थ्य की परीक्षा हो चुकी है। अब तो सन्देह नहीं रहा। पुराने शिक्षकों के चले जाने से अखाड़ा अनाथ हो गया था, आज से वह फिर सनाथ हुआ है। अच्छा, उस तरफ जाकर कुछ खा-पीकर आओ!" भोजन-शाला की ओर इशारा करके उसने कहा।

कम्मू से यों कहकर वह बरामदे में लौट आई तो उसे उण्णिअम्मा की जबान की शक्ति मालूम हो गई। न जाने वह किससे कहती जाती कि मान प्रतिष्ठा और शील छोड़कर स्वेच्छा से इस प्रकार जिसको मिले उसके साथ हो जाना कुल की प्रशस्ति पर कालिख लगाना है, महादेवी की हैसियत से मनचाहे कुकर्मों में लग जाय तो पूछने वाला होगा ही। बहुत देर तक माक्कम बहाना करती रही कि उसने ये विष-भरे शब्द नहीं सुने। फिर भी उण्णिअम्मा अपने शब्द रूपी शरों का अन्त करने को प्रस्तुत नहीं हुई। यह देखकर माक्कम ने विनीत होकर कहा—"बहन! क्यों ऐसी बातें करती हैं? मैंने तो कुछ अपराध नहीं किया है।"

इन वाक्यों ने उण्णिअम्मा के गुस्से को बढ़ा दिया—"क्या तुम्हें लज्जा नहीं आती? उस आदमी के साथ—मालूम नहीं वह कहाँ से आया है—तुमने जो निर्लज्ज व्यवहार किया है उसे देखने की आँख दूसरों की नहीं होती? कुल की बदनामी के लिए उत्पन्न कुलटा!"

माक्कम इससे अधिक सुन न सकी। उसकी आँखें डबडबा आईं। कुछ कहे बिना वह अपने कमरे में चली गई।

: ५ :

पुरली पहाड़ कोट्टयम देश की रीढ़-जैसी पड़ी हुई एक पर्वत-पंक्ति है। हाथी, चीते, बाघ आदि खूँखार जानवरों से भरे उस पहाड़ पर भील-जैसी पहाड़ी जातियों के सिवा दूसरा कोई नहीं रहता था। ऊँचे-ऊँचे पेड़ अपनी शाखाओं और उपशाखाओं से उस पहाड़ पर के जंगलों में सूरज की

रोशनी को घुसने नहीं देते थे। घने झाड़-झंखाड़ों, लताओं और कुञ्जों के कारण वनचरों को भी इच्छानुसार विचरण करने की सुविधा नहीं होती थी। बरसात का मौसम आया था। पेड़-पौधे उपशाखाओं और पत्तों से भर गए। नयन और मन को लुभाने वाली प्रकृति आनन्द से नाच रही थी।

पुरली पहाड़ को कोट्टयम देश की दूसरी राजधानी बने पच्चीस साल बीत चुके। हैदर के समय केरल वर्मा पुरली की शरण में आए थे। तब उन्हें उसकी शरण-दान-शक्ति में पूरा विश्वास हो गया था। फिर भी जरूरत पड़ने पर वहाँ जाकर रहने के लिए उन्होंने दीर्घदर्शिता से जरूरी इन्तजाम भी किये थे। जंगल के बीच की कुछ जगह काट-छाँटकर वहाँ एक छोटा-सा मकान, एक देवी-मन्दिर, साथियों के लिए धर्मशालाएँ, शस्त्रों की सुरक्षा के लिए कुछ तहखाने आदि बनाए थे। वहाँ पहुँच जाने का मार्ग सिर्फ कुछ नेताओं और विश्वास-पात्र भीलों को ही मालूम था। उस समय जबकि राजा साहब अंग्रेजों के साथ सन्धि करके राज्य करते थे, खनने वाले कुछ विदेशियों को बुलाकर वहाँ कुछ सुरंग बनाई थीं तथा पास वाली गुफाओं के अन्दर कुछ काम कराया था, ऐसी जनश्रुति थी। उसकी सचाई राजा साहब, उनके भानजों, दो-तीन कर्मचारियों और भील के सरदार के सिवा किसी को मालूम नहीं थी।

उन नक्षत्र-तत्त्ववेत्ता का विश्वास था कि जन्म-पत्री के अनुसार कण्टक-शनि की पीड़ा के कारण उन्हें कानन-वास बदा है, इसलिए उन्होंने पुरली पहाड़ पर रहने का प्रबन्ध किया था। मुख्य कर्मचारियों को मालूम था कि वयनाड के अनेक दुर्गम जंगलों में ऐसी व्यवस्थाएँ की गई हैं। उन सब जगहों पर भीलों को पहरे के लिए बसाते थे, अतः राजा साहब का पूरा विश्वास था कि ऐसे स्थानों पर शत्रुओं का आक्रमण होना असम्भव है।

अंग्रेजों ने सोचा कि उनके डर से राजा साहब पयशी का राजमहल छोड़कर पहाड़ पर भाग गए हैं। पर सचमुच बात ऐसी न थी। उन्हें पहाड़ पर होने वाले युद्धों का अच्छा परिचय प्राप्त हुआ था, इसलिए उनका विचार था कि पहाड़ी प्रदेशों पर अड्डा जमाने से अंग्रेजों से लड़ने की अधिक सुविधा होगी, अतः उन्होंने ऐसी युक्ति स्वीकार की थी। कर्नल वेल्लस्ली और उसके सेनापति यह समझकर कि राजा साहब डरकर जंगलों में भाग छिप गए हैं,

आह्लादित हो उठे। उन्होंने सोचा कि कोट्टयम को काबू में लाने का यह अच्छा अवसर है। उसके लिए प्रथमतः उन्होंने यों घोषणा करने का निश्चय किया कि राजा साहब पद-भ्रष्ट कर दिए गए हैं और उनका सारा अधिकार कम्पनी ने अपने ऊपर ले लिया है। भविष्य में कोई भी 'पयशी राजा' नामधारी केरल वर्मा या उनके अनुचरों की किसी भी प्रकार सहायता न करे, इसके विरुद्ध यदि कोई उनकी सहायता करे तो कम्पनी उसको सख्त सजा देगी और जो अभी तक विद्रोह में लगे रहते थे वे कम्पनी को अपने हथियार और बन्दूकें सौंप दें तो कम्पनी उनको क्षमा कर देगी।

अंग्रेजों के पक्ष के कुछ देशवासियों ने उपदेश दिया, राजा साहब डरकर जंगल की तरफ भाग गए हैं। उचित सैनिक-शक्ति के प्रदर्शन के साथ मानंचेरी में एक ऐसी घोषणा की जाय तो लोग खुले तौर पर राजा साहब को छोड़कर कम्पनी की शरण आयेंगे। इस प्रकार कोट्टयम में अपनी सत्ता स्थापित करने के बाद पुरली पहाड़ को घेरने तथा राजा साहब को बन्दी बनाने में तकलीफ नहीं होगी। देश के रहने वालों को जीतकर राजा साहब को भेजी जाने वाली रसद को रोकने के पश्चात् कम्पनी के लड़ाकू सिपाही पुरली पहाड़ पर चारों ओर से चढ़ाई करें।

राजा साहब को गुप्तचर द्वारा इस सलाह का पूरा पता लग गया था। इसके लिए कम्पनी वालों की सैन्य-शक्ति कितनी है, किन-किन मार्गों से वे आक्रमण करना चाहते हैं आदि बातों को निश्चित रूप से समझने के लिए ही अपने विश्वास-पात्र अम्पू नायर को उन्होंने तलश्शेरी भेजा था। अम्पू अपने अन्वेषण के परिणाम की खबर उन्हें दे नहीं सका था।

उस दिन, जब मानंचेरी की घोषणा निकलने वाली थी, संध्या होने में अभी चार घड़ी बाकी थीं। राजा साहब अपने निवास-स्थान के पास वाले एक पेड़ के नीचे कम्बल बिछाकर उस पर बैठे हुए थे। उनके निकट घास पर उपवस्त्र बिछाकर अर्लात नम्पी भी बैठा था। कुछ फासले पर चार-पाँच प्रधान कर्मचारी विनय की मुद्रा में खड़े थे।

"कहते हैं कि कम्पनी वालों ने आज दोपहर को ढिंढोरा पिटवाकर घोषणा करने का निश्चय किया था।" राजा साहब ने कहा—"उसके सम्बन्ध

में अभी तक कुछ खबर नहीं आई।"

"वे आकर घोषणा पढ़कर लौटे होंगे।" नम्पी ने कहा—"उससे हमारा क्या बिगड़ता है? लोग निस्सन्देह उनका कहना नहीं मानेंगे।"

"कम्पनी वाले ढिंढोरा पिटवाएँ," कण्णवत नम्प्यार ने कहा—"मगर कोट्टयम के लोग उनकी एक भी न सुनेंगे। घोषणा करने जाने वालों को भी वे यों ही नहीं छोड़ेंगे।"

"मेरा भी यही सन्देह है।" चिंतित होकर राजा साहब ने कहा—"लोगों ने अंग्रेजों के सैनिकों से झगड़ा किया होगा। यदि ऐसा हुआ होगा तो बड़ी हानि की सम्भावना है। कहने की आवश्यकता नहीं कि बन्दूक वाले सिपाहियों का हाथ हिलाकर और पत्थर फेंककर सामना करने से क्या परिणाम होगा। हमने कहला भेजा था कि सब शान्त रहें।"

"कम्पनी वाले चाहते होंगे कि किसी-न-किसी प्रकार विजय मनाना चाहिए।" तलक्कल चन्तू ने कहा—"इसलिए दास की राय है कि कुछ-न-कुछ झगड़ा खड़ा करके वहाँ के लोगों पर आक्रमण किये बिना उनसे रहा नहीं जायगा।"

कुछ सोचकर राजा साहब ने कहा—"चन्तू का कहना सही है। कम्पनी वालों को जय-भेरी के तुमुल नाद के साथ कार्य शुरू करना पड़ता है, तभी तो उनको प्रजा से कुछ सहायता प्राप्त होगी इसके लिए वे मानंचेरी को ही रक्त-रञ्जित कर देंगे। तब तो वे मनादी कर सकते हैं कि केरल वर्मा में मानंचेरी की रक्षा करने की शक्ति नहीं। जो हो, भील अँधेरा होने के पहले जरूर आ जायेंगे।"

मानंचेरी में क्या हुआ है यह जानने के लिए वे सब व्यग्रता से प्रतीक्षा कर रहे थे। सभी प्रकार की अवस्थाओं में अचञ्चल दीखने वाले राजा साहब भी अबकी बार उस नाटक की नान्दी सुनने के लिए उत्कण्ठित हो उठे। वे मानंचेरी में होने वाली घटनाओं को समझने के लिए नियुक्त भीलों की प्रतीक्षा में वहाँ बैठे थे।

थोड़ी देर में एक व्यक्ति जंगल के कटे-छँटे मार्ग से जल्दी-जल्दी आता हुआ दिखाई दिया। सबको मालूम हो गया कि वह भील नहीं नायर है, क्योंकि

उसके हाथ में खंग था और कमर में छुरा। राजासाहब के नेत्र संकेत-मात्र की आज्ञा को मानकर कण्णवत नम्प्यार दूर से ही हाथ जोड़कर आगन्तुक के पास गया और पूछा कि आप कहाँ से आ रहे हैं और बात क्या है ?"

"अम्पू नायर के पास से आ रहा हूँ।" आगन्तुक ने कहा—"यहाँ समाचार पहुँचाने के लिए उन्होंने मुझे भेजा है।"

"वहाँ क्या हुआ ?"

"कम्पनी की सेना आज सवेरे मानंचेरी आई। ढिढोरा पिटवाकर लोगों को इकट्ठा करके हुक्मनामा पढ़ने लगे। पर पहली पंक्ति खत्म नहीं कर पाए थे कि इतने में बाबूजी ने पढ़ने वाले पर गोली मारकर उसका काम तमाम कर दिया। बाद के झगड़े में कम्पनी के सब-के-सब सैनिक मारे गए।" पूरी बात ध्यान से सुनने की सहिष्णुता कण्णवत नम्प्यार में न थी, अतः जल्दी जाकर उसने सुनी हुई बात राजा साहब से कही।

"अम्पू साधारण आदमी नहीं है।" राजा साहब की आवाज आनन्द-मिश्रित थी—"आश्चर्य की बात है कि उसने यह कैसे साधा! आगन्तुक को यहाँ बुलाओ!"

राजा साहब और वहाँ उपस्थित अन्य प्रतिष्ठित व्यक्तियों ने एक-एक करके मानंचेरी में घटी बातों का पूरा ज्ञान प्राप्त करने के लिए अभ्यागत से अनेक प्रश्न किये।

उसके जवाबों से प्रायः यों व्यक्त हो गया—

जब अंग्रेजी सेना मानंचेरी आई तो वहाँ के लोगों को पहले तो बड़ा डर लगता था। लेकिन अम्पू नायर ने अपने आदमियों को घर-घर भेजकर खबर कर दी कि सभी वयःप्राप्त व्यक्तियों को घोषणा सुनने आना अनिवार्य है। अंग्रेजी सेनापति कप्तान लारन्स ने ढिढोरा पिटवाना शुरू किया था कि इतने में मन्दिर के सामने वाले मैदान से झुण्ड बनाकर लोग निकलने लगे। उनमें अम्पू नायर के आदमी भी थे। समाचार मिलने के लिए राजा साहब के भेजे हुए भीलों को अम्पू नायर ने उस मार्ग पर छिपा दिया जहाँ से होकर अंग्रेजी सेना को लौटना था। जब सैनिक बन्दूक लिये कतार बाँधकर खड़े हो गए तो कप्तान साहब कुर्सी पर विराजमान हो गए।

उसके बाद घोषणा सुनाने की आज्ञा दी। वाचन शुरू हुआ तो अम्पू न, जो कि भीड़ से कुछ हटकर खड़ा रहा था, पढ़ने वाले को गोली से मार गिराया। कप्तान बन्दूक लेकर उठ बैठा; इतने में एक दूसरी गोली ने उसका भी अन्त कर डाला। सैनिक गोलियाँ चलाने लगे। प्रजा में से कई लोग मर गए, कई लोग घायल होकर गिर पड़े; फिर भी सेनापति के अभाव तथा स्वयं घिर जाने के कारण अंग्रेजी सैनिक एक-एक करके नायरों की कराल करवाल की भेंट हो गए। जो बचे थे, वे भाग गए। परन्तु उनको भी भीलों के तीरों का निशाना बनना पड़ा।

"भगवती श्री पोर्कली की कृपा ही है।" राजा साहब ने कहा—"छोटी बात, बड़ा परिणाम। सारा केरल इसे शुभ शकुन-सा मानेगा।"

"हुजूर का कहना सही है।" वेल्लूर एमन नायर ने कहा—"हमारे आदमियों के लिए यह विजय का तुमुल नाद है। संशयात्माओं का मन भी भर जायगा। संक्षेप में, अम्पू की कार्रवाई उचित हुई।"

कण्णवत नम्प्यार जरा चिंतित था। उसने कहा—"मगर आगे की परिपाटी पर खूब सोच-विचार करना चाहिए। कम्पनी ने वेंकाड और दिण्डी पहाड़ पर आदमियों को एकत्रित किया है। वयनाड में भी कई स्थानों पर उन्होंने डेरे डाले हैं। अब उन सब पर एक साथ आक्रमण करने पर ही हमारा परित्राण होगा।"

राजा साहब का स्वर गम्भीर हो गया—"हम उसकी व्यवस्था भी करते हैं। एटच्चेन कुंकन वयनाड की प्रजा का संरक्षण करेगा। हमारे आदमी वेंकाड के लोगों पर हमला करने जा चुके हैं। मगर दिण्डी पहाड़ की सेना से मुकाबला करने में कठिनाई है। उसका स्थान मजबूत होता है।" फिर एमन नायर की ओर फिरकर उन्होंने पूछा—"एमन क्या कहते हो?"

"दास की राय है कि शत्रु पर आक्रमण अन्त मे ही हो।"

"पयशी में पड़ी सेना का नाश करना सबसे प्रधान बात है।" कण्णवत नम्प्यार ने सलाह दी—"महल में म्लेच्छ सेना रहे, यह हमारे लिए लज्जा की बात है। इससे क्या वे हमारे पौरुष का उपहास नहीं करते? जब तक कम्पनी के आदमी पयशी और कोट्टयम में रहेंगे तब तक मेरे मन में शान्ति

न होगी ।"

यह सुनकर राजा साहब मुस्करा दिए । उन्होंने कहा—"शंकर के लिए 'एक काट के दो टुकड़े' वाला सिद्धांत लागू है । तू और अम्पू बराबर हैं । होशियारी हाथ में है, न कि दिमाग में । अगर हम पयशी को अपने काबू में रख सकते तो क्या उसे छोड़कर यहाँ चले आते ? अंग्रेजों की तोपों के सम्मुख जाकर मर मिटने से क्या फायदा ? अथवा अगर हम आज पयशी से उनके आदमियों को भगा दें तो वे कल तलश्शेरी से उससे भी बड़ी सेना भेज देंगे कि नहीं ? ऐसा न हो । मेरी राय में मानंचेरी में भी युद्ध नहीं करना चाहिए था । पहाड़ों पर अंग्रेजों को स्थान नहीं देना चाहिए । उनकी विविध स्थानों की सेनाओं को चकनाचूर करना आवश्यक है । वे फिर भी जंगलों में अपने आदमियों को लायें; हमें फिर भी उनका नाश करने में कठिनाई न होगी । इसके विपरीत गाँवों में जाकर लड़ने-भिड़ने से कोई फायदा नहीं ।"

सबने माना कि यही ठीक उपाय है । पर कण्णवत नम्प्यार तब भी नाखुश था ।

मानंचेरी से आए हुए नायर से राजा साहब ने पूछा—"अच्छा, अम्पू कहाँ चला गया ? हमारे भील कहाँ हैं ?"

"जाते समय कहते थे कि दिन बीतने पर आ जायँगे । आपको इसकी सूचना देने को कहा है । भीलों को भी साथ लिया है ।"

"मालूम नहीं कि अब क्या करना चाहता है । कुछ-न-कुछ बला सिर पर मढ़ेगा ही । इधर चला आता तो कुछ शान्ति मिलती ।"

अपने ऊपर सौंपे कर्तव्यों का पालन करते समय हद से कुछ आगे बढ़ना अम्पू का स्वभाव था । उसकी स्वामि-भक्ति तथा बहादुरी राजा साहब से छिपी नहीं थी । साथ ही अपने अनुभव से उन्हें यह भी मालूम था कि अम्पू नायर किसी भी खतरे की परवाह नहीं करता और बातों का पूरा निरीक्षण किये बिना कभी-कभी तात्कालिक लाभ के लिए काम करता । इसी वजह से उन्होंने ऐसा कहा था ।

उन्होंने फिर भी कहा—"ये सब समझते हैं कि यह पहले का-सा युद्ध है । पहले की लड़ाइयों में कम्पनी वालों को तकलीफ उठानी पड़ती थी ।

उनके पास आदमी की कमी थी, उनको अन्य प्रबल विरोधियों से लड़ना था। लेकिन अब परिस्थिति बदल गई है। इधर-उधर जाकर उनकी सेना का उपद्रव करने से कुछ फायदा नहीं। वेल्लस्ली, जो अंग्रेजी सेना का अधिपति बनकर आया है, टीपू से लड़कर महापराक्रमी साबित हो गया है। उन्होंने अब उसीको भेजा है। ऐसी अवस्था में समझना चाहिए कि उनका इन्तजाम कुछ कम न होगा।"

राजा साहब का कहना ठीक था। वे सब जानते थे कि आगे का युद्ध पिछली लड़ाइयों की तरह नहीं होगा। तलश्शेरी में क्या-क्या प्रबन्ध हो रहे हैं, यह कुछ-कुछ उनको भी मालूम था; अतः वे भी घबराये हुए थे। राजा साहब तब भी अचञ्चल रहे। ब्रिटिश सल्तनत की सारी शक्ति एक साथ आ धमके तो भी उन्होंने सिर झुकाने की न ठानी थी। उन्होंने दृढ़ संकल्प किया कि आगे चलकर खूब सोच-विचार करने के बाद ही काम करना चाहिए। वे बहुत देर तक चुपचाप बैठे। फिर कण्णवत नम्प्यार को पास बुलाकर कान में कुछ कहा।

कण्णवत नम्प्यार राजा साहब का प्रधान मन्त्री था। कण्णवत-कुटुम्ब उस समय उत्तर केरल के प्रसिद्ध अमीर घरानों में एक था। सम्पत्ति, जनता पर उनके प्रभाव और परम्परागत अधिकारों के कारण उस घर के लोग कण्णवत-देश पर एकछत्र होकर शासन करते, राजाओं के अधिकारों को कभी न मानते और प्रबल राजा भी उनके विरुद्ध कुछ करने का परिश्रम ही न करते। अपनी शक्ति से नहीं बल्कि रिश्तेदारों के बल से भी कण्णवत नम्प्यार तत्कालीन मामलों में एक स्वतन्त्र शक्ति की हैसियत से काम करता। इरुवनाट नम्प्यारों में कुछ लोग कण्णवत के बन्धु थे। कल्याड, वेङ्ङा आदि प्रतिष्ठित घरानों के व्यक्ति भी वर्षों से कण्णवत नम्प्यार के बन्धु थे। इस प्रकार सब तरह से महाप्रतापी कण्णवत शंकर नम्प्यार को राजा साहब ने अपना प्रधान मन्त्री बनाया था। लोगों ने कहा कि यह उनकी नीति-निपुणता की गवाही देता है।

शंकर नम्प्यार बचपन से ही राजा साहब के साथ लड़ाई करता फिरता था। राजा साहब पर उसकी बड़ी श्रद्धा थी और उनको उस पर भी बड़ा

विश्वास था। यह बात उनके दल के लोग ही नहीं जानते थे, प्रत्युत सारे केरल में मशहूर हो गया था। राजा साहब कहते थे कि वह अविवेकी है, कभी गलती कर बैठेगा, फिर भी सचमुच नम्प्यार दीर्घदर्शी सचिवोत्तम ही था।

सिर्फ एक बात पर राजा साहब जरा विचलित थे। उन्होंने कई बातों से समझ रखा था कि अम्पू नायर और नम्प्यार में कुछ मन-मुटाव होता है। इसका प्रधान कारण था कि अविवेकी अम्पू नम्प्यार की आज्ञा का उल्लंघन करके कभी स्वेच्छा से काम करता। अम्पू की बहन राजा साहब की प्यारी महादेवी है, इसी घमण्ड के कारण वह आज्ञा का उल्लंघन करता है—नम्प्यार का यही सन्देह था। अम्पू ने सोचा था कि नम्प्यार में उत्थान-शक्ति की कमी है, उसमें केवल पीछे बैठकर विचार करने की प्रतिभा है। जो हो एक बात साफ हो गई कि उन दोनों में इच्छित ममता नहीं होती।

राजा साहब और अमात्य दोनों कुछ देर तक परामर्श करते रहे। मनंचेरी अत्तन कुरुक्कल के साथ समझौते की बातचीत हो रही थी, अतः उनका विचार था कि उसको पूरा करने के बाद अंग्रेजों को ईंट का जवाब पत्थर से देने का निश्चय करना चाहिए। शंकर नम्प्यार ने सलाह दी कि तभी उत्तर केरल के अमीर नायर वर्ग की सारी शक्ति अंग्रेजों से रुष्ट होकर अलग खड़े होने से ही हमारे ऊपर न पड़कर तितर-बितर हो जायगी। इसलिए कल्याड वेड्डा आदि अमीरों को उत्तेजित करके उनके साथ मित्रता बढ़ानी चाहिए। इसके अलावा इधर-उधर स्वतन्त्र होकर सेना इकट्ठी करके अंग्रेजों से अप्रसन्न रहने वालों को अपनी ओर आकर्षित करके उनसे कम्पनी की सेना के यातायात तथा रसद इकट्ठा करने के प्रबन्धों पर विघ्न डलवाना भी चाहिए। इसी निर्णय पर पहुँचकर जरूरी कार्रवाई के लिए राजा साहब ने कण्णवत नम्प्यार को आज्ञा दी।

: ६ :

बारहों साल की लड़ाई से होती चली आने वाली पराजयों का किसी-न-किसी प्रकार विराम करना अंग्रेजों के लिए लाजिमी हो गया। यह उसके लिए सबसे अनुकूल अवसर भी था। दक्षिणा पथ में दशकंधर—प्रतापी सुलतान टीपू श्री रंगपट्टन की लड़ाई में दो वर्ष पहले मर गया था। मैसूर-देश कम्पनी के अधीन हो गया। मराठा साम्राज्य के नेता एक-दूसरे से झगड़कर दुर्बल हो गए थे। साम्राज्याधिपति पेशवा अंग्रेजों के आश्रय में आने तक को तैयार हो गया। गवर्नर-जनरल ने सिन्धिया, होल्कर आदि नेताओं का दमन करने का निश्चय तो कया, पर उसकी तैयारियाँ पूरी होने में कम-से-कम एक साल लग जायगा। ऐसी अवस्था में उन्होंने अपनी पूरी ताकत के साथ पयशी-राजा को दबाने का संकल्प किया।

गवर्नर-जनरल ने कर्नल ड्यू, मेजर कामरोण आदि सेनापतियों के अनुभवों से समझ रखा था कि साधारण आदमी से यह काम नहीं हो सकता। इसलिए उसने अपने भाई कर्नल आर्तर वेल्लस्ली को इस कार्य के लिए नियुक्त किया, जिसने टीपू से लड़कर अपनी निराली बुद्धिमत्ता का प्रदर्शन किया था। उस समय कर्नल वेल्लस्ली की आयु केवल बत्तीस साल की थी, फिर भी उस समय भी उसमें वही बुद्धिमानी तथा दूरदर्शिता विराजमान थी, जो आगे चलकर लोक-विजेता नेपोलियन को हराने में काम आई थी। सारे हिन्दुस्तान में यह जानी हुई बात था कि यह महापुरुष, जो बाद को वेल्लिंग्टन नाम से विश्व-विख्यात हो गया था, अपने भाई गवर्नर-जनरल वेल्लस्ली का दाहिना हाथ था।

कर्नल वेल्लस्ली की आकृति यूरोपीय अमीरों-जसी थी। उसमें अविवेक नाम-मात्र के लिए भी नहीं था। इतिहास कहता है कि वे मित भाषी और मितभोक्ता थे तथा उनमें अपार कष्ट-सहिष्णुता मौजूद थी। कहते हैं कि उन्होंने कोई भी अविवेकी करतूत नहीं की थी और उनके मुँह से एक भी अनावश्यक शब्द नहीं निकला था। यही व्यक्ति दुनिया का पहला महासेनापति तथा अंग्रेजी साम्राज्य का प्रधान राजनीतिज्ञ बनकर अनेक वर्षों तक जिन्दा रहा। ऐसे महान् व्यक्ति को केरल की सेना का अधिपति नियुक्त किया था। इससे अनुमान किया जा सकता है कि कम्पनी वाले पयशी-राजा

से कैसे डरते थे और उनसे संचालित स्वातन्त्र्य-समर को कितना महान् समझते थे।

वेल्लस्ली को केरल में आए करीब चार महीने बीत गए। देश से परिचित होने के पहले बरसात का मौसम आया, अतः राजा साहब के खिलाफ वे तुरन्त लड़ने को तैयार नहीं हुए। उन्होंने केरल की दशा समझ लेने तथा अगले युद्धों की परिपाटी निश्चित करने में सारा वर्षा-काल बिता दिया। कई बार उन्होंने नीलेश्वर से लेकर कोयिक्कोड तक भ्रमण करके देश की भौगोलिक दशा तथा अमीरों और साधारण लोगों की मानसिक दशा की जानकारी हासिल की।

चिङ्ङम का महीना आया। फिर भी तलश्शेरी में लड़ाई शुरू होने का कोई लक्षण दिखाई नहीं पड़ता था। बम्बई से गोरी सेना, देशी सेना, अश्व-सेना, बन्दूकें, और तोपें अधिक संख्या में तलश्शेरी की ओर बहती रहीं। इन सबका जमाव तो होता रहा, पर वेल्लस्ली ने लड़ाई शुरू करने का कोई उद्योग नहीं किया।

तलश्शेरी दुर्ग के सुपरवाइजर आदि राजपुरुष उत्कण्ठित हो उठे। उनमें कुछ लोगों ने लड़ाई तुरन्त शुरू करने की आवश्यकता पर जोर डाला। जवाब में उन्होंने सिर्फ यों कहा—"समय नहीं हुआ; ठीक समय पर देखा जायगा।"

किसी को मालूम नहीं था कि वेल्लस्ली क्या करना चाहते हैं। यद्यपि कोट्टयम और कूत्तुपरम्प में सैनिक-दलों को ठहराया था, फिर भी उन्होंने सेनापतियों को आज्ञा दी कि किसी पर हमला नहीं करना चाहिए। इतना ही नहीं, वयनाड आदि जगहों की अंग्रेजी सेना को उन्होंने हटा दिया। कोट्टयम और कूत्तुपरम्प के सिवा केवल मणत्तना में अंग्रेजी सेना खड़ी थी। वे अपने दोस्तों से खुल्लम-खुल्ला कहते कि मणत्तना से भी सेना को हटाने का निर्णय हो गया है।

इस बात से तलश्शेरी का सुपरवाइजर बेवर बहुत नाखुश हो गया। कम्पनी के व्यापार के लिए आवश्यक काली मिर्च केवल उन प्रदेशों से मिलती थी जहाँ सेना पड़ाव डाले पड़ी थी। जब कर्नल सेना को हटाने लगे,

तो मिर्च जमा करने में भी असुविधा होने लगी। सेना मणत्तना से भी हट जाय तो इस साल में तलश्शेरी की व्यापार-शालाएँ मिर्च के अभाव में खाली पड़ी रह जायँगी।

इसके सम्बन्ध में बम्बई-गवर्नर से प्रश्न उठे तो सेनापतियों के व्यापार-सम्बन्धी कार्य निस्सार होते हैं, ऐसा जवाब देने से उसकी नौकरी की हानि हो जायगी। सम्भव है, कम्पनी की बात में कुछ आना-कानी कर सके; आखिर एक ताकीद से कार्य खत्म हो जायगा। बेबर का दुःख इसमें नहीं था। बम्बई सरकार की जानकारी के बिना वह मय्ययी के फरासीसियों के साथ व्यक्तिगत रूप से व्यापार करता था, वह इस वर्ष न चलेगा। योरुप के दूसरे देशों के लोग यदि इस देश से मिर्च आदि खरीदते तो वह कम्पनी के नियम के विरुद्ध माना जाता था। टीपू से केरल अंग्रेजों के आधिपत्य में आया था, तभी से अन्य विदेशी यहाँ से मिर्च नहीं खरीद पाते थे। तलश्शेरी के सुपरवाइजर के लिए यह धन-प्राप्ति का एक मार्ग बन गया। मिर्च आदि विदेशों में भेजी जाने वाली चीजों को व्यक्तिगत रूप से खरीदता और मय्ययी से होकर दलाल द्वारा बढ़े-चढ़े मूल्य पर बेचता। इसके लिए लूई पेरेरा नामक दुभाषिया सुपरवाइजर की मदद करता था।

लूई पेरेरा ने एक पुराने सुपरवाइजर के नौकर की हैसियत से काम करना शुरू किया था। उस नारी-लंपट गोरे के कुकर्मों का प्रधान सहायक बनकर उसने उसको अपनी ओर आकृष्ट किया। सुपरवाइजर ने आखिर उसे अपने दुभाषियों में से एक बनाया। ठीक उसी जमाने म टीपू ने केरल देश को कम्पनी के लिए छोड़ दिया। कम्पनी के व्यापारी अफसरों के लालच और अन्याय लूई को उस समय अच्छी तरह मालूम हो गए थे। इसलिए वह छोटे अफसरों की मदद से मय्ययी के फरासीसियों को छिप-छिपकर मिर्च खरीदकर बेचने लगे। इससे उसने बहुत धन कमाया; पर नम्रता, व्यवहार आदि में कोई परिवर्तन दिखाई न दिया।

जब बेबर तलश्शेरी का सुपरवाइजर बना तो लूई पेरेरा का भाग्य-सितारा उच्च स्थान पर पहुँच गया। बेबर अविवाहित था। उसने पहले ही सुना था कि तलश्शेरी योरुपियों के लिए अप्सराओं से भरा स्वर्ग-लोक होता

है। उसके सम्बन्ध में लूई को केवल सूचना-मात्र देनी पड़ी थी। बेबर महाशय ने समझ लिया कि पेरेरा पहले दर्जे का दुभाषिया है। उसे व्यापार-सम्बन्धी मामलों में असाधारण ज्ञान होता है। पहले तो अनेक अप्सराएँ पेरेरा की प्रेरणा से सुपरवाइजर के मकान को स्वर्ग-लोक बना देती थीं, पर इस कहानी के आरम्भ से तीन वर्ष पहले से चिरुनक्कटी नामक एक उर्वशी दूसरों का बहिष्कार करके वहाँ रहने लगी थी।

छोटे अफसरों को खुश करके अविहित व्यापार करने वाला पेरेरा जब सुपरवाइजर की देख-रेख में आया तो इसे अपनी करनियों को गुप्त रखने की जरूरत न थी। कहते थे कि इस व्यापार में चिरुनक्कटी का भी हाथ था।

वेल्लस्ली की नई नीति इन लोगों के लिए एक बड़ी बाधा बन गई। उन्होंने जितना धन पेशगी लिया था, उसके लिए भी मिर्च मय्ययी पहुँचा देना कठिन हो गया। अब मणत्तना से भी सेना हट जाय तो उससे होने वाली हानि बेबर को अच्छी तरह समझाई गई। आखिर उसने सोचा कि वेल्लस्ली से मिलकर उनकी युद्ध-नीति की अप्रामाणिकता समझाने का समय आया है।

सुपरवाइजर के प्रासाद से कुछ फासले पर वेल्लस्ली रहते थे। मानंचेरी की लड़ाई के बाद दो दिन बीत गए। दोपहर होने को अभी दो-चार घड़ी बाकी हैं। बेबर पालकी में बैठकर कर्नल से मिलने आया। बाहर खड़े नौकर ने सुपरवाइजर को आते देखा तो कर्नल को खबर दी। शीघ्र अन्दर आने की अनुमति भी मिल गई।

वेल्लस्ली अपने कामों में लगे रहते थे। उत्तर केरल का एक बड़ा नक्शा दीवार पर लटक रहा था। उस पर लाल और नीली पेंसिल से कुछ निशान बनाकर वे अपने कार्य-क्रम पर सोच-विचार कर रहे थे। सेना के दो-तीन उपनायकों के सिवा कर्नल का दुभाषिया और दूसरा व्यक्ति, जो वेश-भूषा से नायर मालूम पड़ता था, उस कमरे में मौजूद थे।

वेल्लस्ली ने आदर से अभिवादन करके सुपरवाइजर का स्वागत किया और कहा—"कुछ-कुछ बातों में आपकी सलाह की जरूरत है, इसलिए मैं आपके पास आदमी भेजना चाहता था। अच्छा हुआ कि आप इधर ही चले आए।"

"दो दिन से मैं कुछ परामर्श के लिए यहाँ आने का विचार कर रहा हूँ। काम के धक्के के कारण अभी तक ऐसा न कर सका था।"

"हमारे परामर्श की बात संक्षेप में कहो।" कर्नल ने कहा—"मैंने केरल वर्मा के विरुद्ध तुरन्त सख्त कार्रवाई करने का निश्चय किया है। बरसात का मौसम भी बदल गया। अब देर करने की जरूरत नहीं।"

"हाँ, उसका अहंकार बढ़ रहा है। बहुत जल्दी मानंचेरी की पराजय का बदला न लें तो हमारे ऊपर लोगों का आदर बिलकुल घट जायगा। कर्नल, जब आपका लड़ने का ही विचार है तो परिणाम की शंका अनावश्यक है।"

"युद्ध की बातें फिर करें। मेरा मतलब वह नहीं। उस नक्शे पर कुछ लाल निशान देखे हैं? मैं पहले-पहल इन जगहों पर किले बनाना चाहता हूँ।"

"वह कहाँ-कहाँ हैं?"

"उस नक्शे पर देखें!"

सुपरवाइजर ने दीवार पर लटके नक्शे पर दृष्टि डाली। आश्चर्य से स्तब्ध होकर उसने कहा—"वयनाड और कोट्टयम के सभी मुख्य स्थान इसमें शामिल हैं। इतने अधिक दुर्ग बनाने के लिए पैसा कहाँ?"

"उसके लिए भी आपसे मिलना चाहता था। युद्ध के लिए पैसा इकट्ठा करना आपका कर्तव्य है। इरुवनाड का किला जल्दी बन जाय और दूसरे स्थानों के काम शुरू होने में भी विलम्ब न हो। कुल मिलाकर तात्कालिक जरूरी खर्च के लिए दो लाख मुहरें यहाँ सौंप देनी है।"

सुपरवाइजर दाँतों तले उँगली दबाकर रह गया—"यह क्या! दो लाख मुहर? लाखों की बात छोड़ दें; यहाँ तो मुश्किल से दो मुहर भी नहीं। खजाने में पैसा कहाँ से आये? कुछ व्यापार नहीं चलता। अब मणत्तना से सेना हट जाय तो फिर मिर्च का एक टुकड़ा भी व्यापार-शाला में दिखाई न पड़े।"

"ऐसा न कहें। मेरी युद्ध-नीति निश्चित हो चुकी। इसके लिए जरूरी पैसा मिलना ही चाहिए। यहाँ के खजाने में नहीं है तो मुझे कलकत्ता से मँगाना पड़ेगा।"

यह सुनकर सुपरवाइजर काँप उठा। वह जानता था कि अपने प्रिय भाई

के मन के खिलाफ गवर्नर-जनरल कुछ न करेगा। कर्नल की दुश्मनी से उसे अपनी नौकरी, तिजारत, बढ़ती आदि सब-कुछ खोना पड़ेगा। यह समझकर उसने नीति-कुशलता से काम करना चाहा। "लड़ाई के कार्य के लिए आप पैसा चाहते हैं तो उसका प्रबन्ध करना ही चाहिए। मैंने उसकी कठिनाई पर विचार करके कहा था, अन्यथा नहीं। मगर मैं एक बात पूछूँ। हम तो इतनी बड़ी सेना तैयार करते हैं। ऐसी हालत में जंगल में छिपे रहने वाले इस राजा को पराजित करने में कौन-सी कठिनाई है ? सुना है कि उसकी मदद के लिए एक हजार से अधिक आदमी नहीं हैं। बम्बई से आई हुई सेना और सामग्री से एक बड़ा साम्राज्य जीत सकते हैं।"

"कर्नल ड्यू ने भी ऐसा सोचा था।" जरा मुस्कराकर कर्नल ने कहा—"क्या नतीजा हुआ ? उस सेनापति के कितने सैनिक शेष रह गए हैं ? कितनी बन्दूकें और तोपें अब काम के लायक हैं ? मैं इस तरह का युद्ध नहीं करता, बुद्धिमानी से लड़ता हूँ।"

"मगर जंगल में घूमते-भटकते रहने वाले एक हजार लोगों को दबाने के लिए इतने बड़े प्रबन्ध की क्या आवश्यकता है ?"

"आपने गलत समझा है। वे हजार नहीं होते, एक होता है; वह है केरल वर्मा। उसको पराजित करने के लिए बुद्धिमानी से काम करना है। क्या आपका खयाल है कि उसके साथ केवल एक हजार आदमी हैं ?"

"इससे अधिक नहीं। प्रजा तो हमारे शासन में है।" सुपरवाइजर ने कहा।

कर्नल ने दुभाषिये की ओर घूमकर कहा—"इन्हें उन अमीरों का नाम पढ़कर सुना दो, जिनके विरुद्ध हम निकट भविष्य में कार्य करना चाहते हैं।"

दुभाषिया पढ़ने लगा—"कटत्तनार राजा, अविञ्ञाट नायर, पेरुवयिला नम्प्यार, चूयली नम्प्यार, इरुवनाट नम्प्यार, कल्यार वावू, एमन नायर…।"

सुपरवाइजर चकित हो गया—"ये सब तो कम्पनी के मित्र हैं ! ये कम्पनी को मिर्च बेचा करते हैं।"

कर्नल हँस पड़े। "ठीक, ठीक वे हमको मिर्च बेचा करते हैं और हमारा पैसा भी लिया करते हैं। क्या आपने सोचा है कि उस पैसे से वे क्या करते

हैं ? केरल वर्मा को इनसे मदद मिलती है। जंगल के रहने वालों के लिए ये ही रसद का प्रबन्ध करते हैं; बन्दूक और तोपें जमा करते हैं और हमारी मन्त्रणाओं को उन तक पहुँचा देते हैं। एक बात समझ लेना, इस देश की सारी प्रजा केरल वर्मा की तरफदार है। उसको डाटकर अलग करने के पहले युद्ध करने लगे तो हमारी सेना में कोई न बचेगा।"

"ये सब केरल वर्मा के सहायक है, इसका क्या प्रमाण है ?" सुपरवाइजर ने पूछा—"उनमें अनेक लोग हमारे पास आकर हमारी सहायता करते रहते हैं न ?"

"प्रमाण ? अच्छा, मैंने पहले ही इसकी शंका की थी। लेकिन अन्त भ इस व्यक्ति से आवश्यक प्रमाण मिल गया।" उस कमरे में बैठे नायर की ओर इशारा करके कर्नल ने जवाब दिया।

"अच्छा," उसने कहा—"इसलिए क्या करना चाहते हैं ?"

"कुछ निश्चित नहीं हुआ। एक बात पक्की हो गई है; आगे चलकर ऐसा न होने पाय। केरल वर्मा के सहायकों को दबाएँ तो वह आप ही चूर हो जायगा।"

"मगर व्यक्ति और पदवी को देखे बिना अविवेक करें तो सारी प्रजा में खलबली मच जायगी कि नहीं ? तब हमारे व्यापार का क्या होगा ?"

"व्यापार की बात मुझे मालूम नहीं। प्रजा की खलबली के सम्बन्ध में तो मैंने विचार किया है। तब उसका प्रतिविधान करूँगा।"

सुपरवाइजर ने समझ लिया कि कर्नल अपनी नीति और युद्ध-क्रम गोप्य रखना चाहते हैं और उसके सम्बन्ध में बातचीत करने से कुछ फायदा नहीं। आखिर बेबर ने संकल्प किया कि मणत्ताना की सेना को वापस बुलाने के उद्देश्य से कर्नल साहब को पीछे हटाने का एक और परिश्रम करना चाहिए। "आपकी युद्ध-रीति समझ लेने की जानकारी मुझमें नहीं; पर दबी जनता को फिर दबाना नये प्रकार की युद्ध-नीति है।"

"भाई, मैं कार्य-सिद्धि के लिए युद्ध करना चाहता हूँ, स्वर्ग-प्राप्ति के लिए नहीं। हमारे उद्देश्य-लाभ के उपायों में युद्ध केवल एक है। हमें यहाँ क्या करना चाहिए ? केरल को काबू में लाना तथा अपने विरोधियों का

नाश करना। उसके लिए बल चाहिए। मगर आप समझते होंगे कि युद्ध-क्षेत्र में दोनों दलों के लोग कतार में खड़े होकर एक-दूसरे को मार डालें तो उसका नाम लड़ाई है। लेकिन मेरी युद्ध-रीति ऐसी नहीं। मेरी समझ में केरल वर्मा की भी ऐसी रीति नहीं। हम दोनों एक-दूसरे की युद्ध-रीति जानते हैं। इस बात में आप कष्ट क्यों उठाते हैं?"

"आपका कहना सही होगा। लेकिन देखिए, हमारी सेना को यों पीछे हटाने से कितनी मान-हानि होगी। अब तो सिर्फ मणत्तना में हमारी सेना है। उसे भी हटाना चाहते हैं!"

"मैं आपका मतलब समझ गया, पर लाचार हूँ।"

कर्नल कुर्सी से उठ खड़े हुए। वेबर ने समझा कि वे उससे विदा लेना चाहते हैं, इसलिए तुरंत वहाँ से लौटे।

सुपरवाइजर के चले जाने पर वेल्लस्ली अपने निर्णय के मुताबिक आज्ञा देने लगे। सबसे पहले चुयली नम्प्यार को कैद करके तलश्शेरी लाने का हुक्म हुआ। उसके लिए फौरन एक सैनिक-दल नियुक्त किया गया। वयनाड के एमन नायर को बलपूर्वक पकड़कर श्रीरंगपट्टन ले जाने का दूसरा हुक्म भी निकल गया। वेल्लस्ली जानते थे कि यह आसानी से नहीं हो सकता। एमन नायर महाप्रतापी सामन्त था। सारा वयनाड उसकी आज्ञा मानता था। कर्नल को मालूम था कि सीधे ढंग से उसका सामना करके स्वजनों के बीच से उसे कैद करने का बल अब कम्पनी में नहीं है; इसलिए मित्रता का बहाना करके छल से कैद करना चाहिए। उसके लिए एक उपाय भी उन्होंने ढूँढ़ निकाला। एक सेनापति को सन्देश के साथ कटत्तनाड राजा के पास भेजा। सन्देश में लिखा गया था कि राजा का गूढ़ कार्य-संचालन कर्नल को ज्ञात हो गया है और अगर ऐसे कामों से तुरन्त मुक्त न हो जाय तो पोर्लातिरी-वंश का मूलोच्छेद किया जायगा।

कर्नल ऐसे कर्कश कार्यों में लीन थे कि मेजर होम्स नामक उपसेनापति ने कमरे में प्रवेश किया। उसकी मुख-मुद्रा गम्भीर थी मानो वह कुछ महान् कार्य के लिए आया हो। सिर उठाकर कर्नल ने उस पर प्रश्न-भरी दृष्टि डाली।

"खबर आई है कि केरल वर्मा ने सेना के साथ कुट्टियाडी घाटी पार की है। मणत्तना के पड़ाव पर वे आक्रमण करेंगे।" मेजर होम्स ने कहा।

"उस सेना को पहले ही वहाँ से हटा देना चाहिए था।" कर्नल ने कहा—"लेकिन अव कुछ उपाय नहीं। केरल वर्मा उस सेना का संहार करेगा, इसमें सन्देह नहीं। जो हो, उनकी सहायता के लिए तुम दो सौ सिपाहियों के साथ जल्दी रवाना हो जाओ!"

अपना एक सैनिक-दल शत्रुओं से घिर गया है, यह सुनकर भी वह वीर पुरुष विचलित न हुए। पराजय उनको निराश नहीं कर सकती थी। मेजर होम्स को जरूरी आज्ञा देने के बाद कर्नल फिर भी अपने काम में लगे रहे।

मेजर चला गया। तब वह नायर, जो उस कमरे में बैठा था, बोला—"कण्णवत नम्प्यार सेना सहित वयनाड में घुसा है, यह मैंने पहले कहा था। अब राजा साहब अपना स्थान छोड़कर कुट्टियाडी घाटी की तरफ बढ़े हैं। इस समय राजा साहब के पड़ाव वाले पहाड़ पर कोई बड़ा पहरा नहीं होगा। उस स्थान पर हमला करके उसे काबू में कर सकते हैं।"

"क्या कहा?"—और भी विस्तार से कहना चाहिए, इस अर्थ में कर्नल ने पूछा।

"पुरली पहाड़ पर राजा साहब द्वारा पड़ाव डालने आदि का पूरा-पूरा पता और राजा साहब के एकत्रित किये शस्त्र छीन लेने का उपाय आदि उसने विस्तार से कह सुनाया। कण्णवत नम्प्यार और राजा साहब वहाँ नहीं हैं, ऐसी दशा में पहरे के लिए केवल कुछ भील बाकी रह गए होंगे।" उसने वेल्लस्ली से कहा। कर्नल को विश्वास नहीं आया। उन्होंने सोचा कि अपनी युद्ध-सामग्री की रक्षा के जरूरी प्रबन्ध किये बिना केरल वर्मा दूसरे स्थानों पर चले नहीं जायँगे। जब उन्होंने अपना यह आशय प्रकट किया तो दुभाषिये के द्वारा नायर ने कहा—

'कर्नल सुनें। वह स्थान बड़ा सुरक्षित है। आप कितनी ही बड़ी सेना के साथ जायँ, फिर भी वह स्थान ढूँढ़ निकालने में और यदि ढूँढ़ भी निकाला जाय तो उस पर अधिकार जमाने में असमर्थ हो जायँगे। लेकिन वहाँ पहुँच

जाने के लिए गुप्त मार्ग होते हैं। ये मार्ग राजा साहब के पक्ष के केवल कुछ अति विश्वसनीय व्यक्तियों को ज्ञात हैं। हम वहाँ जाकर एक-दो दिन छिपे रहें तो उस स्थान को काबू लाने के अतिरिक्त नहीं बल्कि राजा साहब को कैद भी कर सकेंगे।"

"अच्छा, इस पर विचार किया जायगा। आज रात को मेरे भोजन के बाद यहाँ आइये। तब तय किया जायगा।"

यों कहकर कर्नल अन्दर चले गए।

: ७ :

कर्नल से विदा लेकर नायर अपने घर की तरफ जा रहा था। उसे खुशी हो रही थी कि अपनी इच्छा-प्राप्ति के लिए अब विलम्ब न होगा। उसको लगा कि राजा साहब पकड़े गए, ऐसा समझना चाहिए। अपना उद्देश्य विफल होने का कोई कारण उसे दिखाई न दिया। कर्नल अपनी बात के पक्के हैं इसमें सन्देह नहीं। इसलिए भविष्य में होने वाले अपने महा वैभव, पदवी आदि का विचार करके वह हवाई महल बना रहा था।

इस प्रकार उस शहर की वीथी से कुछ दूर जाकर वह एक प्रासाद के पीछे के रास्ते पर आ गया। सुपरवाइजर ने यही नया घर चिरुतक्कुट्टी के लिए बनवा दिया था। वह इमारत तलश्शेरी की मनोहर अट्टालिकाओं में से एक थी। सुपरवाइजर के साथ चिरुतक्कुट्टी का सम्बन्ध स्थायी हो गया तो तलश्शेरी में उसका स्थान जनता के आदर के योग्य नहीं था। फिर भी वह तात्कालिक श्रद्धा और इज्जत का पात्र जरूर बन गई थी। उसका कोई घर-बार नहीं था। दो-चार वर्ष पहले वह भटकती फिरती तलश्शेरी आई थी। ऐसी वह धीरे-धीरे एक महारानी की पदवी का अनुभव करने लगी। लोगों का कहना था कि उसके पास बेहद सम्पत्ति है। अंग्रेजों की पालकी में वह सवार था। पालकी-वाहक भी उन्हींके थे। कहा जाता है कि चिरुतक्कुट्टी-गृह में जैसे वस्त्र और आभूषण पहनते थे वैसे वस्त्राभूषण

उन दिनों केरल म कहीं भी नहीं थे।

लोगों का विश्वास था कि सब प्रकार की नवीन सामग्री के साथ जो प्रासाद सुपरवाइजर ने चिरुतक्कुट्टी को अपनी आवश्यकता के लिए बनवा दिया था, वह देवेन्द्र के प्रासाद से भी बाजी मार सकता है। राजा, महासामंत, श्रेष्ठ व्यापारी, बड़े-बड़े अमीर आदि भी उससे जाकर मिलते थे, ऐसी जन-श्रुति थी। कण्णूर की बेगम से अंग्रेजों ने दुश्मनी की थी तो वह प्रतापी नारी अपनी पालकी में आरूढ़ होकर चिरुतक्कुट्टी से जाकर मिली थी और अनेक बहुमूल्य उपहार भेंट करके उसे खुश किया था, यह भी सच है। सारे देश में मशहूर हो गया था कि अगर अंग्रेजों से कुछ फायदा उठाना हो तो उसका ठीक उपाय चिरुतक्कुट्टी को संतुष्ट करना है।

उस नायर ने सोचा कि एक बार इस सुन्दर प्रासाद की अधिष्ठात्री के दर्शन कर जाऊँ तो वह भविष्य की भलाई के लिए लाभदायक होगा। उसने उस प्रासाद को गौर से देखा। वहाँ के दृश्य ने उसे आश्चर्य-चकित कर दिया। घर के पिछली ओर दरवाजा खुल गया और कैनेरी अम्प् नायर बाहर सड़क पर उतरा। उसने चारों ओर दृष्टि फेरी तो उस नायर को भी देखा। दोनों ने एक-दूसरे को पहचान लिया। अम्पू नायर ने जरा सोचा, फिर जल्दी चिरुतक्कुट्टी के प्रासाद में वापस जाकर निस्संकोच हो घर के सामने वाली वीथी में घुसा और तेज चाल से चला गया।

ज्यों ही अम्पू नायर घर में घुसा त्यों ही वह नायर भी वेल्लस्ली के घर की तरफ जल्दी-जल्दी वापस चला गया। उसने कर्नल के दुभाषिये से मिलना चाहा। उसके आने पर नायर ने उससे कहा कि राजा साहब के धान कर्मचारियों में एक व्यक्ति एकाकी ही तलश्शेरी आया है, जिसने मानंचेरी जाकर अत्याचार किया था और मेरे साथ कम-से-कम चार आदमियों को भेज देंगे तो उसको पकड़ दूँगा। अन्त में कर्नल की आज्ञा के मुताबिक दस सिपाहियों को साथ लेकर वह नायर वहाँ से बाहर आया।

उसने अनुमान किया था कि अम्पू नायर शहर के प्रधान पथों से होकर यात्रा नहीं करेगा, अतः वह शीघ्र गति से सिपाहियों सहित तलश्शेरी से बाहर जाने वाली वीथी की तरफ मुड़ा। इस प्रकार वे शहर से बाहर

निकल आए। तब ढूँढ़ने पर मालूम हो गया कि अम्पू नायर किस रास्ते से चला गया है। किसी-किसी ने उनको बता दिया कि एक ऐसा व्यक्ति, जिसका वर्णन उन्होंने किया था, कभी जल्दी-जल्दी चलकर और कभी दौड़कर पानूर जाने वाली सड़क से जा रहा था। कम्पनी के आदमी भी उसी रास्ते से चलने लगे।

अम्पू नायर को मालूम हो गया कि कुछ लोग उसका पीछा कर रहे हैं। उसने सोचा, अब भाग जाना ही एक-मात्र उपाय है। लेकिन उसे अपने विरोधी की निपुणता तथा राज्य-परिचय की अच्छी जानकारी थी, इसलिए भाग जाना भी उतना आसान नहीं समझा। फिर भी श्री पोर्कली देवी का ध्यान करके वह शक्ति-भर शीघ्रता से दौड़ने लगा। उसने सोचा—मार्ग को छोड़कर बागों में घुसकर वृक्षों की आड़ में अपना पीछा करने वालों की आँख बचाकर कम्पनी की अधिकार-सीमा की जगहें पार करे तो बच जायगा। इस प्रकार बागों से होकर कुछ दूर चला तो मालूम हुआ कि प्राचीर आदि के कारण आगे बढ़ने में बाधा होगी। उसने अपनी बुद्धिहीनता को कोसा कि उसीके मारे इतनी देर तक यह विपथ-यात्रा हुई है। आखिर वह राज-पथ पर ही आ गया।

"वह जाता है!" कहते हुए कम्पनी के आदमी उसके पीछे दौड़े। दो-तीन बाण भी उसके नजदीक आ गिरे। शिकारियों से घिरे बाघ की तरह वह क्षुब्ध हो गया। अपनी सारी शक्ति लगाकर थकावट की परवाह न करके वह फिर भी दौड़ता रहा। कुछ आगे बढ़ने पर मार्ग कुछ मुड़ा हुआ दिखाई दिया। पीछा करने वाले उसे देख पाते थे, ऐसी दशा में वह बाग में घुस गया और सीधा दौड़कर एक वट-वृक्ष की आड़ में छिप गया।

अम्पू का पीछा करने वाले सिपाही शीघ्र गति से आगे बढ़ते ही रहे। उन्हें अम्पू की चाल मालूम नहीं थी। सीधे रास्ते पर आने पर भी कोई निशान न पाकर उनके नेता ने राहगीरों से पूछ-ताछ की। जवाब मिला कि उन्होंने ऐसे आदमी को मार्ग पर नहीं देखा। तब उस नेता ने सिपाहियों को दो-दो आदमियों के दलों में बाँटकर बागों में प्रवेश करके उसे तलाश करने भेजा।

अम्पू नायर ने सोचा था कि उसके विरोधी आगे बढ़ जायँ तो उनसे

बचकर वह तलश्शेरी का मार्ग ही पकड़ सकेगा । वह युक्ति सफल होने के पूर्व उसने उनमें से दो व्यक्तियों को उस बाग में घुसकर उसे खोजते देखा, जहाँ वह छिपा बैठा था । दो आदमियों को देखकर वह आश्वस्त हुआ और अपनी कमर में छिपी रिवाल्वर सँभाली । वे वट के पास पहुँच भी न सके थे कि एक साथ पुकार उठे—"यहाँ खड़ा है !" इतने में उनमें से एक आदमी गोली खाकर जमीन पर गिर पड़ा । दूसरे की घबराहट दूर होने के पहले वह अम्पू के खड्ग की भेंट हो गया ।

यह समझकर कि बन्दूक की आवाज सुनकर शत्रु शीघ्र आ पहुँचेंगे, अम्पू फिर भी तेजी से दौड़ने लगा ।

सूर्यास्त होने में करीब सात घड़ी बाकी थीं । विरोधियों के नेता का मन दुखने लगा । कर्नल के साथ उसने जिस बात का परामर्श किया था उसके उत्तर के लिए उसे रात को उनके पास जाना था । वह बात बड़ी जरूरी थी और उस पर उसका भविष्य अवलम्बित था । सन्ध्या के पहले तलश्शेरी लौट-कर आवश्यक हुक्म लेकर कार्य-सिद्धि के लिए तुरन्त यत्न करना चाहिए; उल्टे, एक निकम्मे कर्मचारी के पीछे दौड़कर परेशान होने से कुछ फायदा नहीं । उसने फौरन लौट जाने का भी विचार किया ।

वे पानूर प्रदेश में पहुँच गए । नायर ने निश्चय किया कि कम्पनी की अधिकार-सीमा के करीब अन्तिम छोर पर आ जाने के कारण अब अम्पू का मिल जाना आसान नहीं । उस समय थका-माँदा कर्मचारी चन्त्रोत के खेतों से चलता दिखाई दिया । विरोधी नेता का क्रोध भड़क उठा । खेत की मेंड़ से दौड़ न सकने के कारण अम्पू नायर सावधानी से चल रहा था । अपने अनुयायियों को कुछ-कुछ बताकर वह नायर भी खेत में घुसा । सीधे चन्त्रोत जाने से कम्पनी के आदमी वहाँ के बाबू से उपद्रव करेंगे, इसी डर से अम्पू क्षुद्र मार्ग के द्वारा एक खुले मैदान में आया और दौड़ने लगा । संयोगवश वह उण्णिनङ्ङा के सामने आ पड़ा । वह रात का भोजन बनाने के लिए घड़ा लेकर पानी लेने तालाब पर जा रही थी ।

"हाय ! बाबूजी !" वेदना-भरे स्वर में उसने कहा ।

"चुप रहो !" अम्पू ने संकेत करके कहा—"मुझे खोजते हुए लोग मेरे

पीछे-पीछे आ रहे हैं, जल्दी कहीं छिप जाना चाहिए।" अम्पू नायर ने हाँफते हुए इतना कह दिया।

उण्णिनङ्ङा की आँखों के सामने अँधेरा छा गया। उसका सिर चक्कर खा रहा था। अम्पू नायर के भाव और क्षीणता ने उसे चकित कर दिया। वह सिर्फ इतना कह सकी—"इधर से अन्दर चले जाइये! घर में कोई नहीं है। मामी और बच्चे चन्त्रोत गये हैं।"

अम्पू एक ही छलाँग में आँगन में पहुँच गया। उसे शंका हुई कि घर में छिप जाने पर शत्रु कहीं उसमें आग न लगा दे। 'जो हो, इसके अलावा कोई दूसरा चारा नहीं।' ऐसी चिन्ता से प्रेरित होकर वह घर के अन्दर घुस गया।

कम्पनी के आदमियों को खेत से चलने का अभ्यास नहीं था, इसलिए जब उन्होंने खेत पार किया तो उन्हें अम्पू कहीं दिखाई नहीं दिया था। वे तालाब से पानी भरकर लौटती हुई घड़े वाली युवती से मिले।

"कह छोकरी, इधर से किसी को जाते देखा है क्या तूने ?"

इसके जवाब में उण्णिनङ्ङा ने आवाज बुलन्द की—"हाय, बचाओ! बचाओ! चोर! डाकू!"

"उसे पकड़कर मुँह बाँध दे!"—नेता ने आज्ञा दी।

उसकी आवाज और पुकार सुनकर चन्त्रोत के कुछ लोग वहाँ आ पहुँचे।

"खतरा है, अब इधर से चले जाएँ; जो हाथ में आई है उसे छोड़ना भी नहीं चाहिए।"—उनके नेता ने आज्ञा दी।

उण्णिनङ्ङा को कंधे पर लेकर वे पुनः खेत में घुसे। चन्त्रोत के चार आदमी उनका पीछा करके खेत में उतरे, पर विरोधी नेता की रिवाल्वर से निकली गोलियों ने उन्हें उस परिश्रम से पीछे हटाया। वे बाबू को खबर देने के लिए चन्त्रोत-घर की तरफ लौटे।

अम्पू नायर घर में घुस गया, तो भी उसकी इच्छा बैठने की न हुई। घर के बाहरी ओर से वह भी चन्त्रोत की तरफ ही चला। इसलिए खेत के समीप वाली घटना उसे बाद को ही मालूम हुई। उसी के कारण उण्णिनङ्ङा पर इतनी घोर विपत्ति आ गई थी। यह सोचकर उसे बड़ा दुःख हुआ। उस

कन्या की दशा भेड़ियों के बीच फँसे मृग-छौने-जैसी हो गई थी, इसलिए उसने निश्चय किया कि सब प्रकार के कष्ट उठाने पर भी उण्णिनङ्ङा की रक्षा करना उसका फर्ज है। मगर राजा साहब का कार्य भी इससे बड़ी मुसीबत में था। राजा साहब बिना विलम्ब किये उन सब बातों का पता लगा लेना जरूरी समझते थे, जिनके सम्बन्ध में उसने तलश्शेरी से जानकारी हासिल की थी। पल-भर के विलम्ब में ही सारा खेल बिगड़ जायगा।

उसे इस विवशता से बचने का कोई उपाय न सूझा। अन्त में उसने बाबू से मिलकर सारी बात बता देने का निश्चय किया।

गुप्त रूप से बाबू से मिलने में अम्पू नायर को कुछ कठिनाई न हुई। खबर दी गई कि तलश्शेरी से एक आदमी आया है तो बाबू ने तुरन्त उसे अपने सामने लाने की आज्ञा दी। अम्पू नायर की सूरत और वेश को देखकर बाबू ने समझा कि बात कुछ असाधारण होगी। इसलिए कुशल-प्रश्न के बाद नम्प्यार बातें पूछने लगे। किस प्रकार वह मुसीबत में फँस गया और उससे कैसे बच सका, उण्णिनङ्ङा ने किस तरह की मदद की और उसको कौन पकड़ ले गया आदि की विस्तृत सूचना अम्पू ने नम्प्यार को दी।

"इसके लिए क्या उपाय है ?" नम्प्यार ने पूछा।

"उस कन्या को इस प्रकार उन लोगों के हाथों में छोड़ देना हम दोनों के गौरव को शोभा नहीं देता। मालूम नहीं कि वे दुष्ट उसे क्या-क्या कष्ट देंगे ? दासी बनाकर बेच डालने में भी वे संकोच न करेंगे।"

"तब क्या किया जाय ?"

"मेरी राय में अभी एक आदमी भेजकर तलश्शेरी के सुपरवाइजर को सूचना दें तो इस विपत्ति से छुटकारा पा सकेंगे। सुपरवाइजर के सामने अर्जी पेश करने से फायदा होगा। उसमें साफ-साफ लिखना चाहिए कि कम्पनी के आदमी चन्त्रोत-घर में प्रवेश करके वहाँ की आश्रिता कन्या को जबरदस्ती पकड़ ले गए हैं।"

"एक ऐसी अर्जी देने से क्या लाभ ?" नम्प्यार ने पूछा—"सुपरवाइजर की तलाशी के लिए कितने दिन लगेंगे ? यदि सिपाही कहेंगे कि दुश्मन की मदद करने के कारण ऐसा किया है, तो हम क्या कर सकते हैं ?"

"चिरुतक्कुट्टी उसका उपाय करेगी। सुपरवाइजर को अर्जी देने से काम पूरा नहीं होगा, उसे सभी बातों की सूचना भी देनी चाहिए।"

"क्या ? चिरुता तुम्हारी वशवर्तिनी है ?" आश्चर्य से नम्प्यार ने पूछा।

"हमारी वशवर्तिनी है या नहीं, यह व्यक्त रूप से नहीं कहा जा सकता। पर एक बात निश्चित रूप से कह सकता हूँ कि मेरी कार्य-सिद्धि के लिए काम करने में वह कभी नहीं हिचकेगी।" अम्पू नायर गम्भीर हो गया था।

"मैं रहस्य जानना नहीं चाहता। क्या दूसरों के कहने से चिरुता को यकीन आयगा ? उसका क्या उपाय है ?"

"उसके लिए मैं एक खत लिख दूँगा।"

ताड़-पत्र लेकर उसने लिखा—"किसी-न-किसी तरह उण्णिनङ्ङा को बचाना चाहिए। अन्य बातें यह पत्र-वाहक कहेगा।" उसने फिर पत्र नम्प्यार को सौंप दिया।

"शेष कार्य मैं करूँगा।" नम्प्यार ने कहा। अम्पू नायर को कुछ तसल्ली हुई। अम्पू ने राजा साहब के कार्य के लिए तुरन्त जाने की आज्ञा माँगी। वह बहुत थक गया था। इसलिए नम्प्यार ने जिद पकड़ ली कि रात में आवश्यक परिचारकों के साथ पालकी में यात्रा करो और परिचारकों को खबर न दी जायगी कि पालकी में कौन है। इसके अनुसार अम्पू नायर ने स्नान करके तिलक लगाया। उसने वेश बदला और एक महा सामन्त की तरह पालकी में आरूढ़ होकर विदा हो गया।

× × ×

निराश होकर लौटने वाले नायर और उसके साथी शाम होते-होते तलश्शेरी में पहुँचे। नायर ने दुभाषिये से मिलकर उसे सूचना दी। उसने कहा कि अम्पू दौड़कर एक मकान में छिप गया, वह मकान चन्त्रोत घर वालों का ही है, अम्पू को वहाँ से भी पकड़ न सके, क्योंकि वह सबकी आँख बचाकर निकल गया, इसके लिए एक स्त्री ने उसकी मदद की थी, वह इधर लाई गई है, जो इन सबके लिए साक्षी है आदि।

"यह सुनकर कर्नल क्या कहेंगे, मैं नहीं जानता। स्त्रियों और बच्चों

का उपद्रव करना वे बड़ा अपराध मानते हैं। ऐसे लोगों को कड़ी सजा देने में भी वे कभी नहीं हिचकते।" दुभाषिये ने कहा।

नायर असमंजस में पड़ गया। उसने भी सुना था कि शांत होने पर भी वे आज्ञा का उल्लंघन करने वाले को दबाने में कुछ उठा नहीं रखते। ऐसा हो तो अपनी यह करतूत उन्हें अच्छी न लगेगी, इतना ही नहीं वे अत्याचार करने के अपराध के लिए दण्ड भी देंगे। वह किंकर्तव्य विमूढ़ हो परेशानी का अनुभव करने लगा। उसने दुभाषिये से फिर पूछा कि उस स्त्री का क्या करना चाहिए। जवाब मिला कि विरोधियों की सहायता करने का अपराध लगाकर उसे सैनिकों के पहरे पर न रखकर सिविल जेल में डालना चाहिए, जिसका अधिकारी सुपरवाइजर है। नायर को यह अच्छा न लगा। उस दुष्ट ने सोचा कि कुञ्जिक्कोया को बेच दूँ तो खूब पैसा मिलेगा; इसलिए उसने पहले तो दुभाषिये के उपदेश का विरोध किया। पर उसने देखा कि कर्नल के क्रोध के विचार से भी दुभाषिया काँप उठता है। उसके फलस्वरूप नायर ने उस कैदी को सिविल-अधिकारियों को सौंप देना मञ्जूर किया।

कहने की आवश्यकता नहीं कि तालाब पर से अपहृत उण्णिनङ्ङा को अपनी यात्रा में विविध प्रकार के कष्ट तथा बेइज्जती का अनुभव करना पड़ा था। खेत पार करके कुछ दूर तक एक सिपाही उसे बलात् उठाकर ले गया था, पर उन्होंने देखा कि कोई उनका पीछा नहीं करता, अतः उस सिपाही ने उसे कन्धे से उतारा और अपने साथ पैदल चलने की आज्ञा दी—थककर जब वह मन्द गति से चलने लगती तो उनका नेता उसे बुरी-बुरी गालियाँ देता। फिर भी उसमें कुछ विकार न देखकर उसका क्रोध भड़क उठा और उस क्रूर ने उस पर दो-तीन मुक्के जमा दिये।

शरीर पर उसका प्रहार लगने पर भी न वह कन्या रोई, और न किसी दूसरे प्रकार से अपना दुःख प्रकट किया। सचमुच वह दुखी न थी। जब मार्ग में अम्पू नायर के साथ उसकी पहली मुलाकात हो गई थी तभी से उसके निर्मल चित्त में केवल उस वीर पुरुष का स्मरण ही शेष रह गया था। दया और पौरुष से चमकता हुआ अम्पू का चेहरा उसके मन-मुकुर में साफ दिखाई

देता। अम्पू के साथ चले जाने से अपने भाई पर भी उसे गुस्सा आ रहा था। फिर भी उसे संतोष होता कि इस कारण से अम्पू और उसमें कुछ नाता भी हो गया है। अतः अपने हृदय-नाथ के लिए ऐसी कठिनाइयाँ सहने में उसे अभिमान था। "चाहे जो हो, वे तो बच गए। मेरा क्या होगा, इसकी चिन्ता नहीं।"—यही उसका विचार था। उसका पूरा यकीन था कि अम्पू नायर उसकी रक्षा का प्रबन्ध अवश्य करेगा।

तलश्शेरी में पहुँचने पर नायर ने उसे फौजी कैदखाने में बन्द किया और दुभाषिये से मिलने चला। उसने पहले उण्णिनङ्ङा को अपने वश में कहीं रहस्य रूप से बसाने का इरादा किया था, लेकिन सिपाहियों ने नहीं माना। थोड़ी देर में उसे सिविल जेल के अधिकारियों को सौंप देने की आज्ञा लेकर दुभाषिया वहाँ हाजिर हो गया।

: ८ :

राजा साहब ने कुट्टियाडी की घाटी पार कर ली है, यह बात दावानल की तरह सारे देश में फैल चुकी थी। मानंचेरी की घटना से ही केरल देश में हलचल मच गई थी। उसके बाद राजा साहब का यह धैर्यपूर्ण उद्यम देखकर जनता और भी आह्लादित हो उठी। वेल्लस्ली के आने के बाद देश में लगातार घटने वाली घटनाओं से प्रजा भयभीत हो गई थी, पर ये दोनों बातें उसको अपनी आजादी पर यकीन दिलाने वाली तथा चित्त को दृढ़ करने वाली शक्तियाँ थीं। निश्चित हो गया कि टीपू के विजेता वेल्लस्ली से भी राजा साहब नहीं डरते और अंग्रेजों के इन्तजाम को देखकर नहीं बल्कि डटकर लड़ने के लिए वे जंगल में चले गए हैं। लोग बड़े उत्कण्ठित थे कि अब क्या होगा।

सब जानते थे कि राजा साहब के आदमी देश में भ्रमण करके जनता को उत्तेजित करते हैं। इसके लिए उनके कार्यकर्त्ताओं में कैतेरी का अम्पू नायर

तथा पयमम घर का चन्तू नायर नियुक्त हो गए थे। इनके अलावा गूढ़ रूप से राजा साहब की मदद करने वाले कुछ दूसरे अमीर भी थे।

देश का ज्यादातर अमीर वर्ग मन से राजा साहब का पक्षपाती था, फिर भी अंग्रेजों के भय से कुछ प्रकट नहीं करता था। उन्होंने सुना कि वे अंग्रेजों से सीधे ढंग से लड़ने निकले हैं, तो उन्हें भी खुशी हुई। राजा साहब की मदद करने वाले कुछ अन्य व्यक्ति भी थे। उण्णिमूप्पन नामक एक मुसलमान सरदार ने टीपू के विमुक्त सैनिकों को इकट्ठा करके एक छोटी सेना तैयार की थी। उसने मुरिङ्ङोडी के पास वाले प्रदेशों पर बार-बार आक्रमण करके वहाँ पड़ाव डाला था। वह भी वेल्लस्ली के डर से राजा साहब की शरण में आया। मानंचेरी अत्तन कुरुक्कल उनसे जाकर मिलने को तैयार रहता है, ऐसी वार्ता भी प्रचलित थी।

कुट्टियाडी की घाटी पार करते समय राजा साहब के साथ दो सौ नायर और डेढ़ सौ भील थे। इतनी छोटी सेना लेकर मणत्तना की अंग्रेजी सेना से मुठभेड़ करने का उनका उद्देश्य नहीं था। उनको समाचार मिला था कि उत्तरी प्रदेशों से अंग्रेजी सेना के लिए बहुत रसद आती रहती है और उनकी रक्षा के लिए केवल एक सौ सैनिक तैयार रहते हैं। इसलिए उन्होंने ऐसा उद्यम किया था।

राजा साहब के आने की बात सबसे पहले गुप्तचर द्वारा तलश्शेरी में पहुँच गई। सहायता के लिए मेजर होम्स के नतृत्व में तीन दिन के अन्दर एक सेना आयगी—तलश्शेरी से एक दूत ने आकर मणत्तना की सेना के नेता कप्तान स्टूवर्ट को संदेश दिया। तब तक स्टूवर्ट को इस बात का कुछ पता नहीं था। कर्नाटकीय सेना का एक दल, जो अनेक युद्ध-क्षेत्रों में लड़कर जीत गया था, सब प्रकार की शस्त्र-सामग्रियों के साथ उसके वश में था, फिर भी यह समाचार सुनकर उसका कलेजा मुँह को आ गया। उसने निश्चय किया की मणत्तना की सेना को रवाना करके मेजर होम्स से मिलकर राजासाहब का सामना करना ही उचित होगा।

यह बात गुप्तचर द्वारा राजा साहब को मालूम हो गई। ऐसी अवस्था में उन्होंने उण्णिमूप्पन को आज्ञा दी कि रास्ते में ही रसद लाने वालों पर

आक्रमण करना चाहिए। उसके बाद वे मणत्तना की तरफ रवाना हुए। उस युद्ध-प्रवीण का खयाल था कि मेजर होम्स की सेना के आने के पहले इन लोगों के दाँत खट्टे करने चाहिए।

पहले-पहल उन्होंने पहाड़ के ऊपर के किसी लघु-मार्ग से भीलों को गुप्त रूप से मणत्तना भेजने की आज्ञा दी। उन्होंने एक अफवाह भी फैलाई कि सेना के साथ वे उण्णिमूप्पन से मिलने मुरिङ्ङोड जा रहे हैं। उन्होंने प्रकट रूप से कहा कि होम्स की सेना आ रही है, अतः अब मणत्तना पर हमला करने से कुछ लाभ नहीं होगा। स्टूवर्ट के गुप्तचरों ने राजा साहब का उद्देश्य समझने की कोशिश की थी। उसके फलस्वरूप उन्हें खबर मिली कि राजा साहब ने भीलों को पहाड़ की ओर लौटा दिया और अंग्रेजी सेना से डरकर मणत्तना न आकर मुरिङ्ङोड चले गए।

"चाहे जो हो, दुगुने पहरे की व्यवस्था कर दी जाय। मुझे पहले ही मालूम था कि वह नहीं आयगा।"—स्टूवर्ट ने लम्बी-चौड़ी हाँकी।

उस दिन रात को जंगल में या बस्ती में कुछ न घटी। सवेरे के दस घड़ी पहले चन्द्रमा डूब गया था। खाना खाने के बाद स्टूवर्ट ने ह्विस्की पी, जिसे वह स्वदेश में अमृत-सा मानता था। फिर सुख-निद्रा में तल्लीन हो गया। पहरेदार डेरे के चारों तरफ सावधानी से पहरा दे रहे थे। उस रात को कोई अवाञ्छित घटना नहीं घटी।

प्रातःकाल उठकर सैनिक नित्य-प्रति के काम में लग गए। कृत्य-निष्ठा को अपने जीवन का परम लक्ष्य मानने वाला स्टूवर्ट भी अपने पलंग पर बैठकर चाय पीने लगा, जो उसकी दिनचर्या की पहली परिपाटी थी।

कुछ आवाज सुनकर वह खाट से उठा। न मालूम कहाँ से पड़ाव में तीर आकर गिर रहे थे। उसने देखा, कुछ पहरेदार मौत के हवाले हो रहे हैं। उसने पास का सैनिक-डंका लेकर जोर से बजाया। उस समय जब कि ऐसे आह्वान की परीक्षा नहीं की जा सकती थी सिपाही विस्मित हो गए और पड़ाव के चारों ओर से अपने शस्त्र लेकर तैयार होने के लिए दौड़ने लगे। अपने प्रवृत्त नियमित कर्मों को पूरा न करके वे तालाब के घाटों और बागों से आ रहे थे, अतः पड़ाव में बड़ी गड़बड़ी हो रही थी। निरन्तर आने वाले

तीर लगकर अनेक लोग मर गये। कप्तान स्टूवर्ट पर भी तीर लगा। अपनी जाँघ में लगे उस तीर को उसने उखाड़ लिया। घाव से खून बह रहा था, फिर भी वह अपनी जगह पर खड़े होकर आज्ञाएँ देता तथा युद्ध क प्रबन्ध करता रहा।

भीलों के आक्रमण से गोल-माल बढ़ रहा था कि एकाएक तीरों की वर्षा रुक गई। उसका कारण समझने के पहले ही पहाड़ के एक ओर से बन्दूकों का गर्जन सुनाई पड़ा। स्टूवर्ट को मालूम हुआ कि दुश्मन सैनिक बल से खुले तौर पर हमला कर रहे हैं। उसके सैनिकों को शस्त्र लेकर पंक्तिबद्ध होने का समय भी नहीं मिला। पड़ाव की गड़बड़ी भी कम नहीं थी। ऐसी दशा में उसने सोचा कि खुले तौर पर आक्रमण करने वाले दुश्मन का सामना करना इस अंग्रेजी सेना की शक्ति के बाहर की बात है।

घाव से निरन्तर खून बह जाने के कारण उस विदेशी सेनापति की थकावट पल-पल में बढ़ती जा रही थी, परन्तु फिर भी वह अपने सैनिकों को सचेत करता रहा। थोड़ी देर में उसने इतनी कमजोरी अनुभव की कि मुँह से आवाज निकलना भी कठिन हो गया और वहीं गिर पड़ा। अपने सेनापति को गिरते देखकर सैनिकों की घबराहट बढ़ गई। उनमें कुछ लोग युद्ध-क्षेत्र से हवा होने लगे। भागने वालों पर भीलों के अचूक वाण जा लगते थे। सामने से भिड़ने वाले सैनिकों द्वारा भी गोली की वर्षा हो रही थी, वे भी पड़ाव में पहुँच चुके थे। उनका सञ्चालन करते हुए सबसे आगे राजा साहब भी थे।

पहले तो अनेक अंग्रेजी सैनिक धीरता से लड़ते रहे, पर नेता के अभाव से उनमें से बहुत-से लोग लड़ाई का मैदान छोड़कर इधर-उधर दौड़ने लगे। दम लेने की फुरसत नहीं थी कि लड़ने वाले शत्रुओं से घिर गए। शत्रु-व्यूह में फँसे वे सैनिक जान की परवाह न करके लड़े, लेकिन अन्त में जब कोई उपाय न सूझा तो उन्हें शस्त्र रखकर पराजय माननी पड़ी।

सूर्योदय के बाद दो घड़ी बीत गईं। मणंत्तना की सेना का अन्त हो गया था। अंग्रेजी सेना का नामो-निशान तक नहीं था। राजा साहब ने घायल स्टूवर्ट की प्रारम्भिक शुश्रूषा की आज्ञा दी। मरे हुए सैनिकों को दफनाने तथा जलाने के लिए कर्मचारी नियुक्त हुए। इधर-उधर भागकर बचे हुओं को

ढूँढ़ निकालकर उनके शस्त्र लेने और उन्हें कैद करने के लिए एक छोटे सैनिक-दल की नियुक्ति हुई।

मणत्तना की विजय से पाँच सौ बन्दूकें और उनके उपकरण, सेना के लिए एकत्रित रसद, तीन हजार रुपये—ये सब राजा साहब को मिल गए। विशेषत: उन्होंने अंग्रेजी सेना की पोशाक और पगड़ी बड़ी सतर्कता से एकत्रित कर रखी थीं। दोपहर के पहले ही उस जगह पर शांति छा गई थी, मानो वहाँ कोई लड़ाई ही न हुई हो। राजा साहब ने स्नान करके वहाँ के मन्दिर में जाकर देवी की पूजा की। फिर शान्तिमय देश के राजा की तरह प्रसन्न-चित्त होकर राज-काज के लिए एक पीपल के मण्डप पर विराजमान हो गए। उस मंडप पर कम्बल बिछाकर उसे तात्कालिक राज-मंडप बनाया था। कुछ अंग्रेजी सैनिक कैदियों के रूप में राजा साहब के सामने हाजिर कर दिए गए। वे मैसूर के रहने वाले थे, अत: स्वयं राजा साहब ने उनसे कन्नड़ भाषा में प्रश्न करके अंग्रेजों की मन्त्रणाएँ समझ लेने की कोशिश की। उनसे मालूम हो गया कि उनमें विदेशी कम्पनी वालों से भक्ति या प्रेम नहीं, वे तो सिर्फ पैसे के लिए सेना में भर्ती हुए हैं। राजा ने तब पूछा कि अच्छा वेतन देने पर राजकीय सेना में भरती होने को वे तैयार हैं कि नहीं? उन सैनिकों ने आपस में कुछ परामर्श किया और उसके बाद उनके नेता ने उनकी सम्मति प्रकट की। राजा साहब ने पुरस्कार देकर उनका आदर किया। वे मैसूरी सैनिक बहुत जल्दी राजा के सेवक बन गए।

कुछ देशी मुख्य भी राजा साहब के दर्शन करने आए थे। वे बहुत दिन से उनकी मदद करते रहते थे, अत: उन्हें उचित पुरस्कार देने की आज्ञा दी गई। फसल, महसूल, देशवासियों की तकलीफ आदि के बारे में राजा साहब ने उनसे बातचीत की। ''ईश्वर की कृपा से सब ठीक हो जायगा।'' कहकर उन्होंने सबको विदा किया।

फिर भीलों के सरदार तलक्कल चन्तू को हाजिर करने का हुक्म हुआ। कहते थे कि राजा साहब और चन्तू में श्री रामचन्द्रजी और गुह के बीच का नाता है। चन्तू एक नीच जाति वाला था, उसमें प्रभुता, विद्या या वाक्पटुता नहीं था। पर राजा साहबक हते थे कि इतनी स्वामि-भक्ति, बुद्धिमत्ता, दृढ़

प्रतिज्ञा और मनोगुण केरल में किसी दूसरे व्यक्ति में सम्भव नहीं। किसी भी खतरे में चन्तू से परामर्श लिये बिना वे कुछ नहीं करते थे। उसका एक-मात्र विचार था कि सब प्रकार के संकटों को सहन करके सदा राजा साहब की सहायता करना अपने जीवन का ध्येय है। भीलों के लिए वह एक नेता ही नहीं बल्कि आराध्य देवता भी था। चन्तू का कहना उनके लिए नियम और धर्म थे। राजा साहब कहते थे कि चाहे सभी नायर मुझे छोड़ दें, फिर भी अगर ये भील मेरे साथ होंगे तो मैं अंग्रेजों से लड़ता रहूँगा।

चन्तू आया और हाथ जोड़कर कुछ हटकर खड़ा हो गया।

"चन्तू की सहायता से हमारी पूरी विजय हुई। अब क्या करना चाहिए ?"

"दास ने कौन-सी सहायता की है ?" चन्तू ने कहा—"आपकी ही महत्ता से तो यह सब हो रहा है। चन्तू और इन भीलों से क्या हो सकता है ?"

"अच्छा, हमें आपस के धन्यवाद की जरूरत नही। आगे चलकर क्या करना चाहिए, इसका विचार करें। देश से कौन-सा समाचार आया है ?" राजा साहब ने पूछा।

राजा साहब के ज्यादातर गुप्तचर भील थे। जहाँ चाहे वहाँ जाने में उन्हें कोई रोक-टोक न होने के कारण राजा साहब के लिए जरूरी बातों का पता लगाने में उन्हें कोई तकलीफ नहीं थी।

"एक दूसरी सेना इस ओर आ रही है।" चन्तू ने कहा—"वह अब कूत्तुपरम्प से निकलेगी। आज की बातें मालूम होने पर क्या परिणाम होगा, यह दास को ज्ञात नहीं। लेकिन—"

"क्यों, लेकिन क्यों कहा ?" राजा साहब ने पूछा।

"आज पता लग गया है कि रास्ते में ही उसका सामना करने के लिए कैतेरी के बाबू साहब ने आदमी तैयार किये हैं। एक सौ भीलों को भेज देने को भी कहा है।"

"मालूम नहीं कि अम्पू कौन-कौन-सी आपत्तियाँ सिर पर मढ़ेगा।" राजा साहब ने कुछ चिंतित होकर कहा—"तलश्शेरी से निकली हुई सेना बिलकुल नगण्य नहीं होगी। कहते हैं कि उसके साथ दो-तीन तोपें भी हैं। अम्पू उससे

जाकर भिड़कर किसी खतरे में कूद पड़े तो हानि होगी। उसे वापस बुलाना जरूरी है।"

"इसके बाद एक जरूरी कार्य के लिए हुजूर के सामने फौरन हाजिर होने की विशेष सूचना भी दी है।"

"अच्छा, चन्तू को तुरन्त एक काम करना है। आज यहाँ से मिले धन, वस्त्र, युद्ध-सामग्री आदि अभी उठाकर पहाड़ पर पहुँचा देना चाहिए। यहाँ रखना ठीक नहीं। उसके लिए चन्तू ही कुछ भीलों के साथ रवाना हो जाय। एडच्चेन कुंकन से भी कहना कि उन्हें तहखानों में ध्यान से रखना चाहिए।"

"वापस पधारने के पहले दास का चला जाना ठीक होगा?"

"मेरा खयाल है कि यहाँ आने वाले मेजर होम्स से वहाँ जाकर मिलना अच्छा है। कल सबेरे कूच करूँ तो शाम को कण्णवत पहुँच जाऊँगा। फिर देखूँ कि अम्मू क्या करता है। चार दिन के अन्दर मैं भी वापस आऊँगा।"

राजा साहब की आज्ञा मानकर वह विश्वास-पात्र नौकर वहाँ से चला गया। फिर राजा साहब ने निश्चय किया कि कौन-सी कथा खेलनी चाहिए। हर रात को कम-से-कम दो घंटे तक नृत्त-नृत्य न हो तो उस कलावन्त को तृप्ति न होती थी। ऐसे अवसरों पर अपने अनुयायियों से नाट्य कराकर वे 'कथकली' का मजा उठाते थे।

राजा साहब के नाट्य-संघ का नेता उनके सेनापतियों में एक ही था। उन्होंने उससे परामर्श किया कि उस दिन किस कथा का संविधान हो। मुख्य व्यक्तियों ने उस परामर्श में भाग लिया। कुछ लोगों की राय में 'कालकेय-वध' नामक कथा, जिसकी रचना स्वयं राजा साहब ने की थी, इस अवसर के लिए उपयुक्त थी। लेकिन राजा साहब ने कहा कि तिरूवितांकूर युवराज की रचना 'पूतना-मोक्ष' खेला जाय। अन्त में नाटय-संघ के नेता ने फैसला किया—'दखिनी देशों में प्रचलित एक कथा का नाटय आजकल इस संघ के अभिनेताओं को आता है। 'नल-चरित' नामक वह कथा लगातार चार दिनों में खेली जाती है। उसमें तीसरे दिन की कथा बड़ी रोचक है।"

राजा साहब ने कहा—"अच्छा, मैंने वह रचना पढ़ी है। तिरुवनंतपुरम् के राजा ने मेरे नाम एक ग्रन्थ भेजा था। पहली श्रेणी की कविता है।

लेकिन इसमें सन्देह है कि रंगमंच पर वह सफल निकले। जो हो, नई है अतः एक बार देख लूँ।"

युद्ध-क्षेत्र को खेल-तमाशे की रंग-भूमि बनाने की समचित्तता राजा साहब का एक विशेष गुण था। उनके सेनापतियों को उनके ऐसे काम-काज में आश्चर्य नहीं हुआ, क्योंकि बहुत दिनों से वे राजा साहब के स्वभाव से परिचित थे। केरल-भर में प्रसिद्ध था कि जय-भेरी के बाद खेल का वाद्य-घोष हो, उनका ऐसा नियम था। वे कहते—"वाद्य-घोष सुनकर प्रतिद्वंद्वी समझें कि मैं कहाँ हूँ। वे ऐसा न समझें कि मैं उनके डर से छिप बैठा हूँ।"

राज-काज और 'कथकली' में लगे रहने पर भी राजा साहब ने घायल स्टूवर्ट को भुलाया नहीं। उस सेनापति को कैद में रखने के लिए उण्णिमूप्पन के पास भेज दिया।

: ९ :

माक्कम महादेवी ने सोचा कि अपने जीवन से आनन्द-सूर्य अस्त हो गया है। दुसह बिछोह; अनुदिन अपने प्राण प्यारे पर पड़ने वाली आपत्तियों की चिन्ता करने से उत्पन्न उत्कट उद्विग्नता; वे कहाँ हैं, क्या कर रहे हैं, शत्रु किस प्रकार उनको तंग कर रहे हैं आदि विचार-परम्परा से होने वाली आकुलता; इन सबके कारण माक्कम को अपने सामने लहराते हुए अपार दुःख-सागर के सिवा और कुछ भी दिखाई न देता था। वह जानती थी कि अपने पति की विजय और जिन्दगी पर कौन-कौन महान् कार्य अवलम्बित हैं। तो भी अपने संकटों के सामने ऐसी बातें उसे अच्छी नहीं लगती थीं।

अपने स्वाभाविक मनोधैर्य और एक वीर पुरुष की पत्नी की हैसियत से अपनी व्याकुलता को प्रकट न करने के परिश्रम में उसने किसी-न-किसी प्रकार दिन बिताने की चेष्टा की। लेकिन उण्णिअम्मा की शत्रुता ने उसके जीवन को असह्य बना दिया। जब माक्कम पयशी से लौट आई थी तब से

उसके प्रति उण्णिअम्मा का मनमुटाव बढ़ता गया। वह हमेशा कर्ण-कठोर शब्दों का प्रयोग करती थी। उस प्रयोग में वह सव्यसाची के समान थी। महादेवी कुछ करे या न करे, उसकी चुभने वाली बातें बे-रोक-टोक निकलती ही रहती थीं। अगर वह घर के काम-काज करने लगती तो उण्णिअम्मा कहती—"साज-शृंगार करके बैठने के अलावा महादेवी जी एक दमड़ी का काम कर सकती हैं क्या? देखूँ कि कितने दिनों तक यह पदवी बनाये रख सकेगी।" अगर बड़ी बहन की गालियाँ सुन न सकने के कारण लौट पड़ती तो उण्णिअम्मा की वाद-गति बदल जाती—"ओः उसका हाथ तो मक्खन है, काम करने से पिघल जायगा, ऐसा हो तो कैसे दिन काटे?" आदि। अगर महादेवी साफ-सुथरे कपड़े पहनती तो वह शिकायत करती—'वेश्या का वेश धारण कर बैठी है। न जाने किसकी प्रतीक्षा में है? इस घर का अपमान न करे तो अच्छा।"

बड़ी बहन की ऐसी गालियाँ माक्कम को बड़े दुःख का कारण होती, तो भी वह जवाब में एक शब्द भी न कहती। आजकल इसमें कुछ परिवर्तन-सा हो गया था। पहले तो राजा साहब उण्णिअम्मा के लिए भी ईश्वर के समान थे। लेकिन आजकल उसने राजा साहब को भी अपने दुर्वचनों से छूट न दी।

पहले तो माक्कम ने विनीत होकर इसके सम्बन्ध में दो-तीन बार कहा भी था—"उन्होंने क्या अपराध किया है? आप ऐसी बातें न करें। यदि कोई सुन लेगा तो हमारा भी अपमान होगा।"

"पूछती हो कि उन्होंने क्या अपराध किया है? यदि कोई सुने, तो सुन ले। मेरा क्या बिगड़ेगा? खा डालेंगे? जल्दी देख लूँ तेरा और उनका बड़प्पन!"

नाम-जप की तरह ऐसी बातें करना उण्णिअम्मा का नियम हो गया था। माक्कम ने भी निश्चय किया था कि राजा साहब की बातें करते समय कान बन्द करके वहाँ से चले जाने के सिवा कोई दूसरा चारा नहीं।

अपने प्रति चाहे जो हो, पर राजा साहब के प्रति ऐसे द्वेष का कारण खूब सोचने पर भी उसकी समझ में नहीं आया।

दो हफ्ते से कम्मू कैतेरी में रहता था। जब से उसने अखाड़े में सिखाना

शुरू किया था तब से उस घर में छोटे-छोटे परिवर्तन होने लगे थे। वे लोग, जिनकी शस्त्र-शिक्षा पूरी न हुई थी, तलवार और ढाल लेकर फिर अभ्यास करने लगे थे। उनको नई-नई प्रणालियाँ सिखाने में कम्मू दत्तचित्त रहता था। बीस-पच्चीस युवक दिन-भर अखाड़े में अभ्यास करते और कूदते-दौड़ते थे, अतः वहाँ एक नया जीवन-सा आ गया था।

उत्तरी घर के इक्कंटन नायर को यह सब अच्छा नहीं लगता था। कैतेरी के पुरुष वहाँ नहीं थे, ऐसी परिस्थिति में उसकी राय थी कि अपनी अनुमति के बिना इस प्रकार का प्रबन्ध करना अनुचित हो गया है। दो-तीन बार आदमी भेजकर उसने अपनी राय की सूचना माक्कम और उण्णिअम्मा को दी भी थी। अपने कुटुम्ब के मामलों में उत्तरी घर के लोगों का हस्तक्षेप दोनों बहनों को अच्छा नहीं लगता था। इस बात में वे एकमत थीं। उण्णि-अम्मा ने कहला भेजा—"इस घर के कार्यान्वेषण के लिए यहाँ पुरुष होते हैं। उनकी इच्छा के अनुसार यहाँ काम चलता है।" इससे खुश न होकर इक्कंटन नायर उन्हें मजबूर कर ठीक करने को भी एक बार प्रस्तुत हो गया था। अपनी बातों को प्रभावोत्पादक बनाने के लिए तलश्शेरी से नई आई हुई एक बोतल खोलकर सोडा पीने के बाद वह रवाना हो गया था। हो सकता है कि उस बोतल का द्रव कम जोरदार होने के कारण, उण्णिअम्मा का जवाब सुनकर भी इक्कंटन नायर कुछ बोल न सका।

अखाड़े की शिक्षा में माक्कम ने भाग नहीं लिया, तो भी उसका विचार था कि नीलिक्कुट्टी को कुछ शिक्षा देना आवश्यक है, इसलिए तलवार और ढाल का प्रयोग सिखाने के लिए उसने उसे कम्मू को सौंप दिया था। बालकों के साथ कुमारावस्था में पहुँची हुई उस लड़की का अखाड़े में अभ्यास करना ठीक न लगने के कारण सवेरे और शाम को प्रासाद के आँगन में ही कम्मू उसे शस्त्र-शिक्षा देता था। उस समय सम्भवतः माक्कम भी चबूतरे पर बैठती। कभी-कभी अपनी बन्दूक लेकर उसका प्रयोग करती।

मणत्तना की लड़ाई के दिन सवेरे ही यह खबर फैल गई कि राजा साहब ने अंग्रेजी सेना पर हमला किया है। प्रातःकाल म स्नान करके देवी की आराधना करने के बाद जब महादेवी घर के आँगन में घुसी तो कम्मू ने उसे

यह खबर दी । जब उसे मालूम हुआ कि स्वयं राजा साहब सेना का संचालन कर रहे हैं तो उसके मुँह से एकाएक निकल पड़ा—"देवी श्री पोर्कली उनकी रक्षा करना !" बचपन से ही युद्ध-क्षेत्र में जीवन बिताने वाले राजा साहब लड़ने गए हैं—यह बात उस धीर नारी को डरा न सकी । वह जानती थी कि विजयी होकर जब तक देश में शान्ति विराजमान न होगी तब तक अपने सैनिकों को वे स्वयं सम्भालेंगे ।

"कुछ सुनने पर फौरन सूचना देना ।" केवल इतना कह कर महादेवी अंदर चली गई ।

सन्ध्या होने पर भी लड़ाई का कुछ समाचार नहीं मिला । कुछ आदमियों को भेजकर कम्मू ने आस-पास के प्रदेशों में तलाशी कराई, फिर भी लड़ाई का परिणाम किसी को मालूम न था । माक्कम की घबराहट अपार थी । "क्या वे किसी आफत में पड़ गए होंगे ? युद्ध में हार गए होंगे ?" ऐसे विचारों से वह व्याकुल हो उठी । उण्णिअम्मा खुश थी । "तेरे राजा साहब को कुछ हुआ होगा । घमंड का ऐसा ही नतीजा होता है ।"

उस दिन रात को माक्कम ने कुछ नहीं खाया । असह्य सिर-दर्द का बहाना करके उसने कमरे में जाकर दरवाजा बन्द किया । व्याकुल मन कैसे सो सकता है ? बहुत कोशिश करने पर भी वह मन से युद्ध की चिन्ता हटा न सकी । आँखें मुँद जाने पर युद्ध-क्षेत्र में वीरभद्र की तरह हाथ में नंगी तलवार लिये खड़े होने वाले राजा साहब की मूर्ति उसे दिखाई पड़ती । करवटें बदलने से कुछ फायदा न हुआ ।

करीब आधी रात का समय था । उण्णिअम्मा के कमरे का दरवाजा खुला । थोड़ी देर में पययम घर के चन्तू नायर की आवाज सुनाई देने लगी ।

माक्कम को चन्तू नायर के स्वर और बातचीत की रीति में कुछ परिवर्तन-सा लगा । उसके असाधारण अट्टहास और अस्पष्ट बोली से माक्कम ने अनुमान किया कि वह मदिरा की तीक्ष्णता में दब गया है । उसकी बातचीत साफ-साफ सुनाई न पड़ती थी । चन्तू नायर की आवाज बुलन्द होने पर उण्णि-अम्मा उससे कहती—"धीरे से बोलो । वह डायन सुन लेगी ।" कभी-कभी ये शब्द महादेवी के कानों में पड़ जाते । पति-पत्नि की प्रेम-लीला पर कान

लगाने की इच्छा उसे नहीं थी। लेकिन बार-बार राजा साहब का नाम सुनाई पड़ने के कारण वह पति-परायणा कुछ ध्यान से सुनने लगी। या तो सम्भाषण में तल्लीन होने के कारण या मदिरा की तीक्ष्णता की वजह से चन्तू नायर उच्च स्वर में ही कहने लगा था।

धीरे-धीरे माक्कम ने सब-कुछ समझ लिया।

"उसकी प्रतिष्ठा और अहंकार अब देखूँगी। महादेवी है। मुझे केवल एक दासी समझती है। मैं दिखा दूँगी कि मैं कौन हूँ।" उण्णिअम्मा क्रुद्ध होकर कह रही थी।

"अगर चन्तू पुरुष है तो देख ले कि दो दिन के अन्दर क्या होने वाला है। तब निश्चित होगा कि प्रतिष्ठा किसकी है। अब हमें दूसरों के मुँह ताकते फिरने की आवश्यकता नहीं। चन्तू की चतुराई तभी देखना।"

इस प्रकार उनकी बातचीत गंधर्व-नगरी का निर्माण करके खत्म हो गई।

माक्कम कान लगाकर सुन रही थी। थोड़ी देर में चन्तू नायर सुख-निद्रा लीन हो गया। वह खुर्राटे ले रहा था। उण्णिअम्मा भी अपनी भावी पदवी और श्रेय का विचार करके निद्रा देवी की गोद में आराम करने लगी।

माक्कम को अभी तक नींद नहीं आई। पहले उसका कारण मन की व्यथा थी। चन्तू की बातें सुनने के बाद उसे जागरित रहने की उत्कट इच्छा होने लगी। सो जाने से वह डरती थी। अब क्या करना चाहिए—यह निश्चित करने में अधिक देर नहीं लगी। उसका एक-मात्र विचार था कि रात किसी-न-किसी तरह बीत जाय। उससे रहा नहीं गया। धीरे-धीरे वह अपने कमरे का दरवाजा खोलकर दालान में आई और वहाँ पर सोए हुए कम्मू को जगा दिया। उसने उस युवक से कहा कि "प्रातःकाल से चार घड़ी पूर्व मुझे यहाँ से रवाना होना है, अतः इसके लिए एक शिविका और सात-आठ अनुचरों की आवश्यकता है। दूसरों की जानकारी के बिना जरूरी प्रबन्ध करना चाहिए।"

अपनी स्वामिनी की आज्ञा का पालन करने के लिए दत्तचित्त हो वह युवक अखाड़े के किवाड़ पर सोने वाले शिष्यों को जगाने चल दिया। नक्षत्रों को देखकर उसने अनुमान किया कि सवेरा होने में अभी दस घड़ी बाकी है।

बिना किसी तकलीफ के उसने यात्रा की तैयारी की। अखाड़े में अभ्यास करने वाले युवक उसी देश के रहने वाले थे, अतः शिविका-वाहक भी गुप्त रूप से जल्दी बुलाए गए। सबेरा होने के एक घड़ी पूर्व ही कम्मू और अन्य छः नायरों के साथ माक्कम महादेवी रवाना हो गई।

माक्कम की आज्ञा थी कि सवेरे के पहले कारेट्टम पहुँचना चाहिए। कम्मू या दूसरे लोग नहीं जानते थे कि वे किस उद्देश्य के लिए कहाँ जा रहे हैं।

पयम घर का चन्तू भी सूरज निकलने के पूर्व ही पत्नी-गृह से रवाना हुआ। वह दूसरे लोगों की आँख बचाकर निकल जाना चाहता था और सवेरे कूत्तुपरम्प पहुँच जाने का वायदा भी किया था, इसलिए वह सवेरे ही निकल पड़ा। पति के चले जाने के बाद उण्णिअम्मा अपनी शारीरिक दुर्बलता के कारण फिर भी सो गई।

नित्य-कर्मानुष्ठान के बाद प्रासाद में घुसने पर मालूम हुआ कि माक्कम महादेवी गायब है। दासी ने खबर दी कि अखाड़े के गुरु कम्मू का भी कहीं नामो-निशान नहीं।

"कैसी अपमान की बात है। किसने सोचा था कि इस घर-द्वार में ऐसा भी होगा? उसमें आँख चुराकर पराये के साथ चले जाने की हिम्मत भी थी, आश्चर्य की बात है।"

उण्णिअम्मा को कुछ सन्देह न था। माक्कम के सम्बन्ध में सभी प्रकार की बुराइयाँ मानने को वह सदा तैयार थी। जब से कम्मू वहाँ रहने लगा था तब से वह उसके और माक्कम के नाम जोड़कर कुछ-न-कुछ कहती और दासियाँ भी यह सुनतीं। सबको माक्कम पर प्रेम था, अतः उण्णिअम्मा की बातों पर उन्हें तनिक भी विश्वास नहीं था। पर अब जब कि इस बात में कुछ सन्देह नहीं रहा कि महादेवी उस युवक के साथ असमय पर निकल गईं तो वे भी उण्णिअम्मा की बातों पर आईं।

महादेवी गुरु के साथ घर से निकल गई है, यह खबर जल्दी देश-भर में फैल गई। इससे उत्तरी घर के लोग बड़े खुश हुए। इक्कण्टन नायर पूछ-ताछ के लिए कैतेरी आ पहुँचा।

"स्त्रियों को स्वतन्त्रता देने का यह परिणाम है।" उसने कहा—"घर-द्वार

में यदि पुरुष न हो तो मान-प्रतिष्ठा खोनी ही पड़ेगी। अम्पू तो अपने राजा साहब के पीछे पागल है। घर की स्त्रियाँ मनमानी करे तो देखने वाला कौन ?"

"मैने तो कहा था उससे !" अन्दर खड़ी होकर उण्णिअम्मा ने कहा—"वह तो महादेवी है ! बड़ी बहन हूँ तो क्या ? मेरा कहना वह क्यों माने ? हाय, कैसी बेइज्जती !"

इस सम्भाषण का अन्त होते-होते उण्णिअम्मा ने सोचा कि इक्कण्टन नायर का कहना सही है और इक्कण्टन नायर ने निश्चय किया कि उण्णि-अम्मा का मिजाज अच्छा है तथा उसमे दक्षिणी घर के लोगों के नैसर्गिक दोष नही ! नायर ने कहा—"यह सब तो राजा साहब के दोषों और अम्पू की गुरुत्व-हीनता का नतीजा है।" उण्णिअम्मा भी इस बात से सहमत थी। नायर सन्तुष्ट होकर अपने घर वापस गया।

उस समय जब कि इक्कण्टन नायर उण्णिअम्मा से घर-सम्बन्धी बातें कर रहा था तो माक्कम और उसके अनुचर कारेट्टम का गाँव पार कर चुके थे। फिर उनको विजन वन से जाना था। पहले वहाँ लोग बसते थे, पर हैदर के आक्रमण के बाद सब बोरिया बाँधकर चले गए। झाड़-झंखाड़ से वहाँ के मैदान भरे पड़े थे। इधर-उधर कुछ खण्डहर, कुएँ, तालाब आदि भी दिखाई पड़ते थे। इससे अनुमान किया जा सकता था कि उस प्रदेश में पहले लोग रहते थे।

टीपू के समय वहाँ डाकुओ का निवास-स्थान था। इसलिए लोग उस प्रदेश को छोड़ चले थे। टीपू की मृत्यु के बाद भी ग्राम-प्रदेशों मे राज-शासन पुनः स्थापित न होने के कारण डकैती और गुलामी बढ़ गई। इस जंगल स्थान पर ऐसे कई भयकर व्यक्ति अपना अड्डा जमाए थे; पर चोरों के सरदार कुञ्जाली मायदीन से लोग सबसे अधिक डरते थे। अतः कोई भी इधर से होकर यात्रा नही करते थे।

जब शिविका-वाहकों को मालूम हो गया कि उन्हें इसी जंगल से होकर जाना है, तो वे कुछ असमञ्जस मे पड़ गए। उन्हें अपनी जान का डर न था, बल्कि उन्होंने व्यक्त किया कि महादेवी की सुरक्षा का ध्यान करके ही

इस घोर जंगल से जाने से इन्कार करते हैं। कञ्जाली मोयदीन के डेढ़ सौ अनुचर हैं। उनके पास काफी शस्त्र भी हैं। तब ये लोग क्या कर सकते हैं ?

कम्मू इसका जवाब नहीं दे सका। शिविका के अन्दर बैठकर ही माक्कम ने जवाब दिया—"क्या मोयदीन राजा साहब के आदमियों को सताएगा ? ऐसा करे तो वह कितने दिन तक इस जंगल में रह सकता है ? तुम में से एक जाकर उससे कहो कि मैं इधर से होकर जा रही हूँ। वह हमारी सेवा में प्रस्तुत हो जायगा।"

शिविका को जंगल में उतारकर कम्मू ही मोयदीन के पड़ाव की खोज में निकला। उसके जाने पर थोड़ा समय बीत गया होगा कि इतने में कुछ शस्त्रधारी उस तरफ आते दिखाई दिये। एक प्रचण्ड शरीर वाला व्यक्ति हाथ में नंगी तलवार लिये आगे चला आ रहा था। उसकी दाढ़ी-मूँछें, लाल-लाल आँखें और टोपी देखकर माक्कम ने अनुमान किया कि वह मुसलमान होगा और शायद मोयदीन ही हो सकता है। उसका हाथ तुरन्त कमर में बँधी हुई बन्दूक की ओर बढ़ा।

चोरों के सरदार की आकृति और तीक्ष्ण दृष्टि तथा उसके अनुचरों के मुख पर झलकते हुए जंगलीपन को देखकर माक्कम भी तनिक घबरा गई। मन को मजबूत करके उसने सबके सामने बन्दूक सँभाली। शिविका-वाहक चारों तरफ भाग गए, जैसे भेड़िये को देखकर भेड़ें भाग जाती हैं। केवल छः अपूर्ण शिक्षित नायर युवक उसकी सहायता के लिए थे। उनकी दशा को देखकर मालूम पड़ता था कि उनमें भी डर समा गया है।

शिविका-वाहकों की भगदड़, नायर युवकों की दशा तथा हाथ में बन्दूक लिये खड़ी होने वाली माक्कम का कोप और धैर्य देखकर व्यंग्य-पूर्ण भाव से चोरों का वह सरदार जोर से हँस पड़ा। उस सुनसान जंगल म उसका अट्टहास भयंकर शैतान की डरावनी चिल्लाहट के समान गूँज उठा। लेकिन उसका गुञ्जन खत्म नहीं हो पाया था कि दुराचारियों के सम्राट् के चेहरे का रंग बदल गया। एकाएक एक बाण उसके सामने एक कदम की दूरी पर आ गिरा। दाएँ-बाएँ ओर भी इसी दूरी पर एक-एक बाण आ चुभा। उस

मुसलमान ने घबराकर चारों ओर देखा, लेकिन आस-पास कहीं कोई दिखाई न पड़ता था।

दोनों को उन अस्त्रों का सन्देश मालूम हो गया। पीछे न हटे तो अगला बाण प्राण लेगा, यह बात निश्चित थी। मोयदीन समझ गया, क्योंकि वह ऐसी बातों से खूब परिचित था।

माक्कम ने भी समझ लिया कि तीर भेजने वाले भील होते हैं। "अगर कीचक की ही मृत्यु हुई तो उसका घातक मारुत-पुत्र ही है।" इस सिद्धान्त के अनुसार यदि भील सहायता करने के लिए यहाँ साथ हों तो वह राजा साहब की आज्ञा के अनुसार होगा, महादेवी को यह विचार आया। उसकी रक्षा के लिए उनके किये-कराए प्रबन्धों की पूर्णता देखकर आश्चर्य-चकित हो गई।

मोयदीन को भी इस बात में सन्देह नहीं था। वह जानता था कि इस जंगल में, जहाँ उसका निवास-स्थान है, इतनी धीरता से उसे रोकने की शक्ति सिर्फ भीलों में है। राजा साहब की आज्ञा से भील ऐसा करते होंगे; इसलिए ये मुसाफिर उन्हींके आदमी हो सकते हैं। फिर उसने आगे की कारंवाई निश्चित की। एक ही इशारे से अपने साथियों को लौट जाने की आज्ञा दी। सामने का अस्त्र उखाड़ फेंककर उसने दो-तीन कदम धीरे-धीरे आगे बढ़ाये, देखा कि अब बाण नहीं आता तो आदर के साथ माक्कम का अभिवादन करके कहा—"इस दास के स्थानों पर राजा साहब के आदमियों को कुछ तकलीफ तो नहीं? मोयदीन भी उन्हींका दास है न? इसलिए थोड़ा आराम करके चली जाइयेगा।"

माक्कम के अनुचरों में एक ने जवाब दिया—"महादेवी किसी जरूरी कार्य के लिए जा रही हैं।"

महादेवी का नाम सुनकर मोयदीन ने हाथ जोड़कर सिर नवाया। "अम्पू बाबू इस दास के मालिक हैं।" उसने कहा—"मोयदीन क्या कर सकता है? केवल कहने की देरी है; खुदा के हुक्म के समान पालन करने को प्रस्तुत है।"

"तुम्हारे बारे में मैंने भी सुना है।" महादेवी ने कहा—"अच्छा हुआ

कि तुमसे भेंट भी हुई। मुझे तुरन्त पति के सामने पहुँच जाना चाहिए। उसके लिए कुछ लोगों को मेरे साथ भेज दो तो अच्छा होगा।"

"इस जंगल के उस पार पहाड़ की तलहटी तक पहुँचा दूँ।" मोयदीन ने कहा—"उसके बाद का रास्ता मुझे मालूम नहीं; केवल भील लोग जानते हैं।"

"तब मैं आज ही वहाँ कैसे पहुँच सकती हूँ?"

कुछ सोचने के बाद मोयदीन ने जवाब दिया—"पहाड़ की तलहटी का पहरा देने वाले भीलों के सरदार के पास मैं आदमी भेजूँ। आपके आने का समाचार पाकर क्या वह जरूरी प्रबन्ध न करेगा?"

"अच्छा" महादेवी ने कहा।

इतने में कम्मू भी आ गया। तब तक मोयदीन के आदमी विविध प्रकार के कंद और फल लाए थे, उसने उन्हें आदर के साथ महादेवी के सामने रखा। भोजन के बाद माक्कम पहाड़ की ओर रवाना हो गई।

: १० :

अविञ्जिक्काड की महादेवी भोजन करके चाँदी के ताम्बूल-पात्र से पान खाने बैठी थी। नहा-धोकर आँखों में काजल और माथे पर बिंदी लगाने के बाद उसने शुभ्र वस्त्र और आभूषण पहने। मानो वह जंगल में नहीं बल्कि अपने प्रासाद में ही दिन बिता रही हो। पहले कुछ लोगों ने इसके संबंध में शिकायत भी की थी। इसके जवाब में महादेवी कहती—"जहाँ मेरे नाथ हैं, वहीं मेरा राजमहल है। मेरे लिए वन और घर में कौन-सा अन्तर है? चाहे वे इधर रहें या पयशी में, मेरे लिए दोनों बराबर हैं।" इसके विपरीत कुछ कहने का धैर्य किसी में न था। राजा साहब ने तो महादेवी के इस निश्चय का अभिनन्दन किया।

अब महादेवी कुञ्जानी की उम्र चालीस वर्ष से अधिक हो गई थी।

पन्द्रह वर्ष की उम्र में महादेवी बनकर वह पयशी आई थी। उसके बाद अभी तक राजमहल में रहने की सुविधा उसे बहुत ही कम मिली थी। पूर्ण युवावस्था पर पहुँचने के पहले, विवाह के बाद दो महीने बीतने पर ही उसे अपने पति की सहचारिणी बनकर जंगल में जाना पड़ा। जब अन्य राजा और महादेवियाँ तिरुवितांकूर के महराजा का आतिथ्य स्वीकार करने वञ्ची देश की ओर रवाना हो गए तो महादेवी कुञ्जानी चौथे राजकुमार केरल-वर्मा के साथ पुरली पहाड़ पर ही चढ़ी। पिछले पच्चीस वर्षों से वन में ही उसका निवास हो गया था। अंग्रेजों के साथ समझौता करके जब राजा साहब कुछ दिन पयशी में रहे थे तो उसने राजमहल का सुख भी भोगा था। महाराजा नल के समान उसे भी वन का सुख राज-वैभव से कहीं अच्छा लगा।

चालीस बरस की होने पर भी उसके रूप-लावण्य में कुछ भी कमी नहीं हुई थी। सोने का-सा रंग उनके पल्लव के समान शरीर की असाधारण शोभा बढ़ा रहा था। लम्बे-लम्बे केशों का एक रोम भी सफेद नहीं हो गया था। स्नान के बाद उसने उस केश-राशि को सँवारकर उसका छोर बाँध दिया था। लम्बे विस्फारित नयन, मन को लुभाने वाली भौहें, रत्न-जटित कुण्डल से अलंकृत कान, ताम्बूल-चर्वण के बिना ही लालिमा-भरे तनिक मोटे होंठ, मुख-कमल पर विराजमान प्रसन्नता—यह सब महादेवी कुञ्जानी के सौभाग्य के लक्षण थे, जो राजा साहब-जैसे महान् व्यक्ति की सहधर्मिणी होने के योग्य थे। उसे भी सन्देह था कि वय की अधिकता से शरीर थोड़ा मांसल होता जा रहा है। इसी बात से लोग समझ सकते थे कि उसकी उम्र चालीस वर्ष के समीप पहुँच गई है।

बहुमुखी प्रतिभा वाले कलावन्त पति की संगति से महादेवी भी साहित्य और संगीत में प्रवीण हो गई थी। राजा साहब अपनी कथाओं के लिए गानों की रचना करते, मगर वे सबसे पहले महादेवी को पढ़-सुनाकर उसकी सलाह माँगते।

जिस प्रकार रामचन्द्र जी के साथ सीता देवी वनवास के लिए निकली थीं, उसी प्रकार महादेवी भी पति के साथ जंगल चली आई थीं। ऐसी नारी को देवी मानकर राजा के अनुचर उसका आदर करते थे। उनके पड़ाव

में महादेवी और उसकी एक दासी के सिवा कोई दूसरी स्त्री नहीं थी।

खाना खाकर पान पर चूना लगाने वाली महादेवी के विश्राम का एकदम भंग हुआ। एक नायर ने प्रवेश करके सूचना दी कि कैतेरी की महादेवी शिविका में वहाँ आ उतरी हैं। पान को उसी रूप में पान-पात्र में छोड़कर महादेवी कुञ्जानी तुरन्त बाहर आईं। उसने स्नेह भरी मुस्कान से शिविका से उतरकर आने वाली माक्कम का स्वागत किया। एक-दूसरे का अभिवादन करके हाथ-में-हाथ डालकर दोनों अन्दर चली गईं।

"वहाँ सब लोग सकुशल तो हैं न ? सूचना दिये बिना क्यों निकल आई ?" महादेवी कुञ्जानी ने पूछा।

"बड़ी जरूरी बात है। फौरन पतिदेव को खबर न दी तो आपत्ति आ जायगी, यह सोचकर एकदम चली आई।"

माक्कम के मुख पर घबराहट थी, अतः बड़ी महादेवी ने अनुमान किया था कि बात साधारण नहीं है।

"राजा साहब के कुट्टियाडी की घाटी उतरने पर चार दिन गुजर गए। कल मणत्तना में थे। खबर मिली है कि आज कण्णवत में होंगे। आखिर बात क्या है ?"

"ऐसी कौन-सी बात है जो आपसे कहना मना है ?" माक्कम ने कहा— "संक्षेप में कहूँ, अंग्रेजी सैनिकों का एक दल इस स्थान को काबू में लाने के लिए निकला है।"

"इस स्थान को ? यहाँ वे कैसे आ सकते हैं ? रास्ते में सब कहीं काफी पहरा होगा।"

"वे सीधे रास्ते से नहीं आते। उन्होंने पीछे के रहस्य-मार्ग से सुरंग में आकर वहाँ से सबकी आँख बचाकर यहाँ पहुँच आने का निश्चय किया है।"

बड़ी महादेवी दंग रह गईं। सुरंग का रहस्य-मार्ग राजा साहब के मुख्य कार्य-कर्त्ताओं को भी मालूम न था। ऐसे रास्ते और सुरंग की जानकारी रखने वाले केवल कण्णवत के नम्प्यार, ललक्कल चन्तू, अम्पू नायर, पयम्म घर का चन्तू आदि चार कर्मचारी तथा बड़ी महादेवी, राजा साहब और उनके भानजे थे।

कुछ सोचकर बड़ी महादेवी ने कहा—"उनको वह रास्ता मालूम नहीं हो सकता। चाहे वे एक ऐसे मार्ग का अनुमान करें फिर भी बहुत ढूँढ़ने पर भी वह न दीखेगा। हममें पतिदेव और उनके भतीजों को छोड़कर अधिक-से-अधिक चार व्यक्तियों को यह मार्ग मालूम है।"

"आपका कहना सही है। मगर उन चारों में से कोई अंग्रेजों को बता दे तो?"

"ऐसा कभी नहीं हो सकता। पतिदेव को धोखा देने वाला उनमें कोई भी नहीं।"

"तो मैं बता दूँ। हमारी दशा ऐसी है कि चारों तरफ आग लगी हुई है। पयम्म घर का चन्तू नायर अंग्रेजों का आदमी हो गया है। वही हमें धोखा देने लगता है।"

बड़ी महादेवी को विश्वास नहीं आया। चन्तू राजा साहब को धोखा देगा, यह कैसे विश्वास करें? जब आवारा बनकर वह घूमा करता था तो राजा साहब ने ही उसे इस पद पर पहुँचा दिया था। अब तक वह उनका दाहिना हाथ था। वह कितना ही दुष्ट क्यों न हो, पर इतना नमकहराम नहीं हो सकता। राजा साहब को अब भी उस पर बड़ा विश्वास है। उनके लिए वह पुत्र के समान है। क्या वह ऐसे व्यक्ति को धोखा देगा?

बड़ी महादेवी का मन ऐसे विचारों से भर गया। थोड़ी देर तक वह कुछ न बोली। उसे याद आया कि कुछ दिनों से चन्तू के बर्ताव में थोड़ा परिवर्तन-सा लगता था। उसके साथ के व्यवहार में भी तनिक व्यन्यास आ गया था। पर वह यह समझकर कि इसका कारण चन्तू की नादानी है, कुछ बोलती नहीं थी। चन्तू की लापरवाही को अधिक महत्त्व देने की जरूरत भी तब उसे अनुभव न होती थी। अब जब कि मन में सन्देह पैदा हो गया तो धीरे-धीरे सच्ची बातों की झलक दिखाई देने लगी। अन्त में उसने कहा—"अच्छा, तो तुम यह कैसे समझ सकीं?"

माक्कम ने गत रात की बातें उसे विस्तार से कह सुनाईं।

"अच्छा, बात तो खुल गई।" बड़ी महादेवी ने कहा—"अब इसका क्या उपाय है? आज रात होने के पहले वे पहाड़ की तलहटी तक पहुँच

नहीं सकेंगे। तुरन्त राजा साहब को सूचना देनी चाहिए। सैनिकों को रोकने के लिए उनकी भी आवश्यकता नहीं। तलक्कल चन्तू आ गया है न ?"

उसने फौरन तलक्कल चन्तू को बुलवाया। वनचरों के उस सरदार से उसने सभी बातें कहीं तो उन महादेवियों के समक्ष भी व्यंग्य-पूर्ण हँसी हँसे बिना उससे रहा न गया।

"बात खुल गई। कुछ दिनों से मुझे सन्देह हो रहा था। राजा साहब के प्रेम और विश्वास का खयाल करके मैंने अभी तक नहीं कहा। फिर भी मैं सतर्क था। वह और उसके कम्पनी वाले आयें तो एक भी जिन्दा न बचेगा।"

भील-सरदार विदा हो गया। राजा साहब को खबर देने के लिए तुरन्त आदमी भी भेजा गया। पड़ाव की तरफ के रहस्य-मार्ग की रक्षा के लिए चन्तू ही प्रस्तुत हुआ। सुरंग के उस तरफ बड़े-बड़े पत्थर रखकर बन्द करने के लिए उसी क्षण आदमी नियुक्त हो गए। फिर वह दो सौ भीलों को साथ लेकर बिना विलम्ब किये उन वनों में घुस गया।

अन्दर जाते समय महादेवियों का मन शान्त था, क्योंकि उन्होंने सोचा कि पययम घर के चन्तू की गूढ़ मन्त्रणा और धोखेबाजी हरा दी गई।

माक्कम ने जल्दी स्नान करके भोजन किया और फिर दोनों अपने देश और घर-बार की बातें करने लगी। बातचीत के केन्द्र-बिन्दु राजा साहब की दया, धैर्य और अन्य सद्गुण थे। अन्त में माक्कम ने पूछा—"क्या आजकल वे कुछ कविता नहीं लिखते ?"

"हाँ, लिखते हैं; 'कुमीर-वध' नामक एक नई कथा लिखने लगे हैं। पहला खण्ड तो लिख चुके।"

"जरा देखूँ। आपके पास होगा कि नहीं ?"

"हाँ, जरूर दिखा दूँगी। पर कहते हैं कि अर्ध-विद्या गुरु के सामने प्रकट नहीं करनी चाहिए। कविता के विषय में तुम तो एक अध्यापिका ही हो।"

"मैं कौन-सी अध्यापिका हूँ ? उनके रचे हुए गानों को, तान लय और लास्य से कौन उज्ज्वल बनाती है यह सबको विदित है।"

बड़ी महादेवी ने पेटी खोलकर धागे से बँधे चार-पाँच ताड़-पत्र बाहर निकाले और माक्कम को दे दिए।

माक्कम सादर दोनों हाथों से उन्हें लेकर पढ़ने लगी—

घन-तिमिर भरे वन के अन्दर,
जब आई प्रिया मेरी सुन्दर।
डोल रहा था मेरा दिल।

जब उसने ये पंक्तियाँ पढ़ीं तो बड़ी महादेवी ने देखा कि वह गद्‌गद् हो गई है। मन में उभरते विचारों को दबाकर माक्कम ने कहा—"अपने अनुभवों के वर्णन करने वाली कविताओं की रोचकता कुछ और है। निस्सन्देह ये शब्द आपको ही सम्बोधित करके लिखा होगा।"

"अरी पगली, चुप हो जा!" बड़ी महादेवी का स्वर स्नेहपूर्ण था।

"मुझे यह समझने की उत्कण्ठा है कि आप इस पद का क्या जवाब देती हैं? माक्कम ने कहा। उसने आगे पढ़ा—

"नाथ! कहीं इससे बढ़कर,
दुःख-भार कभी होगा खूँखार।"

पढ़ते-पढ़ते माक्कम की आँखें भर आईं। बड़ी महादेवी वनवास के दुःखों को भूल गई थीं; पर अब उसका हृदय भी विचार-विक्षुब्ध हो गया। थोड़ी देर तक दोनों खामोश-सी रहीं। आखिर माक्कम ने कहा—"यह गाना आपका लिखा हुआ ही होगा। इसमें स्त्री-हृदय की भावना प्रतिबिम्बित है।"

"क्या कहती है तू? उनकी रचना में मैं हाथ रखूँगी?"

"आप ऐसा कहें, पर मैं विश्वास न करूँगी।

'प्रिये! सुनो तो मेरी वाणी,'

का जवाब आप ही लिखें तभी ठीक होगा।"

"हँसी न उड़ाना। ऐसा हो तो मुझे भी कुछ कहना है। वे रात को बिस्तरे पर लेटे-लेटे किसके सम्बन्ध में श्लोक रटा करते हैं। दो दिन हुए, वह मेरे हाथ में आया है।

"वह क्या है बहन?"

"पूछती है कि वह क्या है? मैं दिखा दूँ।"

बड़ी महादेवी सावधानी से रखे हुए ताड़-पत्र का एक टुकड़ा उठा लाईं।" बताऊँ कि यह कहाँ से मिला है? उनके पलंग पर तकिये के नीचे यह

पड़ा था।"

"मुझे दे दें, मैं पढ़ लूँ।"

"नहीं-नहीं, मैं ही पढ़ सुनाऊँ।"

बड़ी महादेवी ने वह कविता पढ़ी जिसमें राजा साहब ने फूलों से प्रार्थना की थी कि जब माक्कम फूल पहनने लगेगी तो उसके कानों में उनके विरह-ताप का वर्णन कर देना चाहिए।

"स्वानुभूति से लिखी कविता की महत्ता देखो। लेकिन मुझे विश्वास नहीं होता कि इस विरहावस्था में तू इतने अधिक फूल पहनने वाली है।"

"कई महीने हुए, मैं अपने हाथ से एक फूल तक नहीं छूती।" माक्कम ने निवेदन किया—"फिर भी वे यों समझते हैं। इसीलिए तो उन्होंने फूलों को सम्बोधित किया था। अगर आपको मुझ पर जरा भी प्रेम है तो कृपा करके उस पत्र को फाड़ डालिए।"

"क्या मैं उनकी रचना फाड़ सकती हूँ? कवि लोग यों लिखेंगे, इसमें क्या? एक बात प्रमाणित हो गई, यहाँ तेरी शारीरिक अनुपस्थिति होने पर भी उनके मन में तू सदा मूर्तिमान रहती है। वाञ्छित वस्तु भी यही है न?"

"उसी तरह आपका प्रेम और कृपा मेरे लिए महत्त्वपूर्ण है। क्या मैं उस पत्र को देख सकती हूँ?"

"अगर तुम उसे फाड़ डालो तो मैं उनसे क्या कहूँगी? प्रतिज्ञा करो कि फाड़ोगी नहीं।"

"प्रतिज्ञा करती हूँ—फाड़ूँगी नहीं।"

"तुम फाड़ डालोगी तब भी मैं उस श्लोक को भूलूँगी नहीं। कोई भी उसका नाश नहीं कर सकता। वह उतना अच्छा बना है।"

माक्कम ने पत्र लेकर उलट-पुलटकर देखा, फिर शान्त मन से उसे पढ़ने लगी।

"जबानी याद कर रही हो क्या? पढ़ो-पढ़ो। जाकर फूल पहनो और जब पहनोगी तो देखना कि वे कुछ बोलते हैं कि नहीं।"

ऐसे वार्तालाप से वे समय बिताने लगीं।

तलक्कल चन्तू के भेजे भील सन्ध्या तक कण्णवत पहुँच गए। निश्चित समय पर ही एक छोटे सैनिक-दल के साथ राजा साहब भी वहाँ आ धमके थे। मेजर होम्स की सेना पर मणत्तन की ओर बढ़ने के पहले तीनों ओर से हमला करने का उनका विचार था। उनके भतीजे केरल वर्मा के सेनापतित्व में कई नायर और भील सैनिक मणत्तन से हटकर जंगलों में रहते थे। राजा साहब ने यह भी समझा था कि अम्पू नायर की इकट्ठी हुई सेना मानंचेरी से निकलकर पीछे से अंग्रेजी सेना पर आक्रमण करने को तैयार खड़ी है। इस प्रकार दोनों ओर से आक्रमण किये जाने पर जब अंग्रेज लोग असमञ्जस में पड़ जायँगे तो उनका मूलोच्छेद करने की ताक में राजा साहब ने अपनी सेना खड़ी की थी। इसकी तैयारियाँ कर चुकने के बाद अम्पू नायर राजा साहब के दर्शन के लिए कण्णवत में हाजिर हो गया।

अम्पू गम्भीर था। राजा ने समझा कि उसे कुछ महत्त्वपूर्ण बातें सुनानी हैं। इसलिए उन्होंने शान्त होकर बातचीत शुरू की—"क्यों अम्पू? तेरा उद्देश्य पूरा हो गया?"

"जी हुजूर! भगवती श्री पोर्कली की कृपा से सब मंगलमय हो गया। उत्तर के नायर भरसक सहायता करेंगे। कटत्तनाड के राजा परोक्ष रूप से हमारी सहायता करने को तैयार हैं। इरुव देश के सब नम्प्यारों की भी यही हालत है। चिरक्कल राजा अपनी शक्ति-भर सहायता करेंगे।"

"फिर तू क्यों इस तरह मन मारे खड़ा है?"

"दास बता देगा, हम पर बड़ी आपत्ति पड़ने वाली है।"

"कुछ न छिपाकर साफ-साफ कहो!"

"अब की बार अंग्रेजों का सेनापति साधारण आदमी नहीं। हमारा सामना करने के बदले वह हमारे सहायकों का सर्वनाश करना चाहता है। इसी उद्देश्य से वह इरुव देश में किला बना रहा है। एक आदमी कटत्तनाड राजा को धमकाने गया है। कहा जाता है कि दूसरों को भी निर्मूल करने का उनका विचार है।

"उन्हें क्या मालूम कि गूढ़ रूप से हमारी सहायता करने वाले कौन-कौन हैं? यह बात हमारे चुने हुए कर्मचारी ही जानते हैं।"

"एक ऐसा कर्मचारी उनके पक्ष में हो गया है।" अम्पू ने कहा।

"क्या कहा ? हमारा एक कर्मचारी।"

जिस प्रकार अम्पू तलश्शेरी में पयग्म-घर के चन्तू से मिला, अंग्रेजी सेना की सहायता से चन्तू ने उसे बन्दी बनाने का कौन-सा यत्न किया और संयोगवश उसकी रक्षा कैसे हुई आदि बातें उसने राजा को कह सुनाईं।

यह सब सुनकर वे धीरवर राजा भी आश्चर्य-चकित हो गए। उनके दुःख की सीमा न रही। चन्तू, जो उनका एक विश्वास-पात्र अनुचर है, अंग्रेजों से जा मिले ? गत पच्चीस वर्षों के अनुभव से यह असंभव-सा लगता था। कितने ही खतरों में चन्तू उनके साथ रहा था। कितनी ही बार अपनी जान की परवाह न करके उनकी रक्षा के लिए उसने अलौकिक धैर्य प्रकट किया था। पच्चीसों वर्ष पहले एक पान वाला छोकरा बनकर वह उनके साथ रहने लगा था। उसकी धीरता, चतुरता तथा विश्वसनीयता को देखकर उन्होंने उसे इस पद पर चढ़ा दिया। जब पयग्म-घर निस्सन्तान हो गया तो उस घर में स्थान और अधिकार दिलाकर उसे एक सामन्त बनाया, कैतेरी-घर के वैवाहिक नाते से उसका पद ऊँचा किया, कर्मचारी बनाकर सत्ताधारी बनाया। वह इन सबके लिए वफादार था और बेशक सब प्रकार से उन की सेवा भी करता था। पर अब कैसे विश्वास किया जा सकता था कि देश और राजा दोनों के शत्रु से मिलकर वह इस तरह नमकहरामी करेगा ?

राजा साहब का मन विविध चिन्ताओं से विक्षुब्ध हो गया, इसलिए वे कुछ बोल न सके। उन्हें ऐसा लगा कि जैसे वे कोई सपना देख रहे हैं।

अम्पू ने उस लम्बी निस्तब्धता को भंग किया—"पहाड़ पर पधारने के पहले ही दास को कुछ सन्देह पैदा हो गया था। आजकल वह उत्तरी घर के नायक के साथ बड़ी मित्रता में है, यह जानकर उस सम्बन्ध में मैंने कुछ छान-बीन की। कुछ साफ-साफ दिखाई न दिया। पता लग गया था कि नए कर्नल का दुभाषिया वेष बदलकर उस घर में आया करता है। आखिर जब तलश्शेरी में उससे मिला तो सारा रहस्य खुल गया।"

"हम अब क्या करें ?" राजा साहब ने पूछा।

"दास की राय में जहरीले हाथ को काट देना ही अच्छा है"

राजा साहब चुप थे।

अम्पू ने कहा—"इसमें सन्देह करना आपत्ति का कारण होगा। कर्नल उसके द्वारा हमारे सहायकों का नाश करेगा। मालूम नहीं, अब तक किन-किन लोगों के सिर पर बिजली गिरी है।"

"जिस हाथ से दूध दिया है उसीसे जहर कैसे दें?" राजा साहब के स्वर में हृदय की व्यथा गूँज रही थी—"उसे कैद नहीं कर सकते?"

"आप उसकी धीरता और युद्ध-निपुणता को तो जानते ही हैं। उस दुःशासन को कैद करना आसान बात नहीं। इसलिए आज्ञा दें।"

"उसने मेरे लिए क्या-क्या नहीं किया! एक बार गलती हुई इसलिए क्या अनेक बार की सेवाओं को भुला देना ठीक है?"

"दास का कहना केवल इतना है—इस समय दया नाश का कारण होगी। यदि आज्ञा न दें तो कम-से-कम विरोध तो न कीजिए।"

राजा साहब दुविधा में पड़ गए। थोड़ी देर तक वे सिर झुकाकर बैठे रहे। फिर कहा—"मुझे कुछ सुनना नहीं चाहिए। जैसी तेरी इच्छा।"

इतने में भील वहाँ आ पहुँचे! महादेवी के जल्दी वापस आने के सन्देश ने राजा साहब की घबराहट को और भी बढ़ा दिया। वे जानते थे कि लड़ाई के इन पच्चीसों वर्षों में महादेवी कुञ्जानी कभी घबराई नहीं थीं। उस वीर महिला के लिए लड़ाई साधारण-सी बात हो गई थी। इसलिए उन्होंने निश्चय किया कि महान् कार्य न हो तो युद्ध के मामलों में लगे रहने वाले अपने पति के नाम वह एक ऐसा सन्देश न भेजेगी। तुरन्त वहाँ पहुँच जाने के लिए उनका मन लालायित हो उठा। उन्होंने कहा—"अम्पू, कल की लड़ाई में मैं शामिल नहीं हो सकता। मुझे जल्दी ही पहाड़ पर जाना है। यहाँ की सेना तेरे सेनापतित्व में युद्ध करे। मानंचेरी वालों के लिए सरदार तो है ही।"

"जी हुजूर! दास यथाशक्ति कोशिश करेगा।"

"देखो, बेवकूफी न करना। खूब सोच-समझ कर काम करना।"

राजा साहब बिना विलम्ब के रवाना हो गए।

: ११ :

राजा साहब के अनुमान के अनुसार दूसरे दिन का युद्ध घटा। मेजर होम्स की सेना तीनों ओर की चढ़ाई से तितर-बितर होकर भाग चली। होम्स और उसके चार साथियों को शस्त्र रखकर अम्पू से हार माननी पड़ी। राजा साहब के अनुयायियों को कई बन्दूकें और अन्य सामग्री मिली। उन सबको लेकर अंग्रेज कैदियों के साथ अम्पू पहाड़ पर चला गया।

तलश्शेरी में यह बात पहुँची तो वहाँ बड़ा कोलाहल मच गया। प्रकृति से शान्त वेल्लस्ली भी कुपित होकर अपने दफ्तर में इधर-उधर चल रहे थे। वे कुछ कहते भी जाते थे। उसका सारांश था कि राजा को जीतना चाहें तो पहले-पहल तलश्शेरी दुर्ग के सभी अफसरों को फाँसी पर चढ़ाना चाहिए।

कप्तान स्टूवर्ट घायल होकर शत्रु के पंजे में फँस गया। उसकी सेना का नाश हुआ और पड़ाव में जितनी युद्ध-सामग्री थी, सब शत्रु को मिली। अब उनका दोस्त मेजर होम्स भी अपने मित्रों के साथ कैद हो गया है। उनकी निश्चित युद्ध-नीति में यह पराजय बाधा नहीं डालती। मगर उस राजनीतिज्ञ सेनापति ने अनुमान किया कि इस प्रकार बार-बार आती हुई आपत्तियों का कारण धोखेबाजी है। उनके अनुमान के पोषण के लिए और भी बातें थीं। शत्रु की सहायता करने के अपराध से उण्णिनङ्ङा नामक एक स्त्री को सैनिकों ने सिविल जेल में बन्द कर दिया। पर बेबर ने उनसे कहे बिना उसे छोड़ दिया। इसका कारण भी समझ लेना चाहिए। यह भी नहीं, राजा साहब की सहायता करने वाले सामन्तों को कैद करने के लिए उन्होंने जितने सैनिक-दलों को भेजा था, उनमें प्राय: सब पराजित होकर वापस लौट आए। केवल चुयली नम्प्यार पकड़ा गया, और वह भी अपनी शारीरिक दुर्बलता के कारण वयनाड के एमन नायर को धोखे से श्रीरंगपट्टन तक हटा देने में भी सफलता मिली। अंग्रेजों के आदमी अन्य सामन्तों के घर गए तो खबर मिली कि वे अमुक-अमुक काम के लिए दूसरी जगहों पर चले गए हैं। इससे कर्नल वेल्लस्ली ने समझ लिया कि उनकी मन्त्रणाओं को शत्रु के कानों तक पहुँचाते रहने के लिए एक प्रबल तथा चतुर संघ तलश्शेरी में ही काम कर रहा है। उस संघ को दबाने पर ही उनकी नीति पूर्णत: सफल हो सकती है।

सबसे पहले उन्होंने बेबर को बुलाया और उससे सब बातें कह सुनाईं। उसने कहा कि कर्नल उसके ऊपर यों ही विद्रोह का अपराध लगा रहे हैं, तलश्शेरी में ऐसा एक संघ भी नहीं, कर्नल तो उससे अपनी पराजयों का बदला लेना चाहते हैं आदि। कर्नल भी जानते थे कि सचमुच बेबर निरपराध है। उसकी सहायता के बिना वे शहर में कुछ नहीं कर सकते थे। इसलिए वे उसको धमकाने लगे—"तुम यह समझते ही नहीं कि मेरी बातें कितनी महत्त्व-पूर्ण हैं ? कलकत्ता में यदि इसकी सूचना मिल जाय तो बड़ा नुकसान होगा।"

बेबर ने इसका यही अर्थ लगाया कि कर्नल अपने भाई गवर्नर-जनरल द्वारा उसे दण्ड दिलाना चाहते हैं। इससे वह डरने वाला न था। वह जानता था कि गवर्नर-जनरल के खिलाफ एक दल भारत में ही काम कर रहा है। इंग्लैंड में कम्पनी का सर्वाधिपति डनडास उस दल का सहायक था तथा गवर्नर-जनरल को अनेक बार चेतावनी भी दी जा चुकी है, यह भी उसे मालूम था। कर्नल वेल्लस्ली तलश्शेरी में आकर जब से अपनी सत्ता स्थापित करने की कोशिश करने लगे थे तब से बेबर बम्बई के अपने कुछ ऊँचे अफसरों के साथ इस बात का परामर्श करने लगा था। उन्होंने कहा कि सिविल अफसरों को सेनापतियों के आज्ञाकारी होने की आवश्यकता नहीं और यदि वेल्लस्ली विवश भी करें तो वे लन्दन के अधिकारियों के नाम उचित सिफारिश के साथ पत्र भेजने को भी तैयार हैं। बेबर ने इसी बल के आधार पर जवाब दिया—

"अच्छा, तो तुम लिख भेजो। मुझे आज्ञा मिली है कि सिविल शासन के ऊपर सैनिकों का कुछ अधिकार नहीं होना चाहिए। मैं बम्बई के अधि-कारियों के नाम लिख भेजूँ कि तुम ऐसा भी करना चाहते हो।"

कर्नल वेल्लस्ली एक साधारण सेनापति नहीं थे। भविष्य में इंग्लैंड का प्रधान मन्त्री बनने योग्य राजनीतिज्ञता भी उनमें थी, अतः उन्होंने सोचा कि सुपरवाइजर के इस साहस के पीछे काफी बल है। इसलिए उन्होंने अपनी नीति बदली—"हमें आपस में नहीं झगड़ना चाहिए वह कम्पनी के लिए हानिकारक है। इस शहर में कुछ लोग हमारे विरुद्ध काम कर रहे हैं, इसका प्रमाण भी मिल गया है। मेरी प्रार्थना है कि उनको दबाने के लिए आवश्यक प्रबन्ध करें।"

"ऐसे विद्रोही संघ का पता लगने पर मैं उसका दमन कर दूँगा। मगर उसका क्या प्रमाण है ?"

"बता दूँ ?"—कर्नल ने कहा—"सिविल कैदखाने में सौंपी गई उस स्त्री को आपकी आज्ञा के अनुसार मुक्त कर दिया गया है न ? उसका कारण क्या है ? उस पर लगाया गया अपराध साधारण नहीं।"

उण्णिनङ्ङा को कैद से मुक्त करने का कारण यों था—उसे जेल में डालने के बाद दूसरे दिन सवेरे बेवर के सामने चन्त्रोत्त नम्प्यार हाजिर हो गए। मय्यषी के निवास के कारण नम्प्यार यूरोपीय रीति-रिवाज अच्छी तरह जानते थे। इसलिए यूरोपीय अफसर उनसे खुश भी थे। नम्प्यार कभी-कभी तलश्शेरी आकर उनका सत्कार करते और अच्छी-अच्छी वस्तुएँ उन्हें उपहार में देते। उन्होंने बेवर से शिकायत की कि उनकी रक्षा में रहने वाली एक लड़की को कम्पनी के सिपाही जबरदस्ती पकड़ ले गए। यह सुनकर बेवर ने भी समझा कि सचमुच ऐसा नहीं होना चाहिए था।

उसने कहा—"अच्छा, विचार किया जायगा।"

बेवर नहीं जानता था कि अम्पू नायर का खत लेकर नम्प्यार पहले ही चिरुतक्कुट्टी से मिले थे। अम्पू का खत पढ़ते ही वह बोली—"मैं उनके लिए सब-कुछ करने को तैयार हूँ। इसमें मुझे कुछ भी कष्ट न होगा।" फिर विनीत होकर उसने कहा—"मैं प्रसन्न हूँ कि मुझे आपसे मिलने का सौभाग्य मिला। थोड़े ही दिन हुए कि अम्पू बाबू द्वारा मुझे इसका आभास हो गया था कि मुझे कहाँ से आज्ञा मिलती है। मैं अपनी शक्ति-भर परिश्रम कर रही हूँ।"

चिरुता की विनय देखकर नम्प्यार के मन में उसके प्रति आदर पैदा हो गया। उसने कहा—"तुमसे परिचित होने का अवसर मिला, इस बात में मैं भी प्रसन्न हूँ। राजा साहब की रक्षा यहाँ की कार्यवाही समझ लेने पर निर्भर है।"

"मैं भी यही समझती हूँ। राजा साहब हम सबके हैं।"

यों कहकर वे विदा हो गए।

जब नम्प्यार और सुपरवाइजर में बातचीत हो रही थी तब चिरुतक्कुट्टी

अन्दर थी। अतिथि को विदा करके जब बेबर अन्दर आया तो उसने पूछा—"चन्त्रोत बाबू क्यों आये थे ?"

"वे कहते हैं कि उनके घर से एक लड़की को कुछ सैनिक पकड़ ले आए हैं।" बेबर ने कहा।

"यह कैसा अत्याचार है ! अगर सैनिक यों करने लगे तो स्त्रियों की क्या दशा होगी ? जनता कम्पनी की सहायता कैसे करेगी ?"

"सभी देशों के सैनिक ऐसे ही होते हैं। वे न्याय और अन्याय का कुछ भेद नहीं मानते। वेल्लस्ली के आने के बाद बात कुछ और भी बढ़ गई। सैनिक समझने लगे कि सर्वाधिकार उन्हीं के हाथ में है।"

"आखिर क्या निश्चय किया है आपने ?"

"अदालत में एक अर्जी पेश करने को कहा है। उस लड़की का वक्तव्य लेकर तो देखूँ।"

चिरुतक्कुट्टी ने भी सोचा कि अब इतना काफी है।

ग्यारह बजे अदालत में सुपरवाइजर के सामने उण्णिनङ्ङा हाजिर की गई। पिछले दिन के अनुभव और रात को बिना खाए कैदखाने में बिता देने के कारण उसका चेहरा पीला पड़ गया था, उसके कपड़े मलिन थे, बाल छिन्न-भिन्न तथा शोभाहीन हो गए थे; फिर भी अपनी नैसर्गिक सुन्दरता से उसने अदालत में इकट्ठे हुए लोगों का मन मोह लिया था। उसके मुख पर दुःख का कोई चिह्न नहीं था, बल्कि सब प्रकार की आपत्तियों का सामना करने की दृढ़ता झलक रही थी। एक पहरेदार के साथ उसने अदालत में प्रवेश किया था। वह सिर झुकाकर खड़ी रही थी। उसने वहाँ पर उपस्थित लोगों की ओर तनिक भी ध्यान नहीं दिया।

सुपरवाइजर ने सैनिकों का बयान पढ़ा। फिर दुभाषिये के द्वारा उण्णि-नङ्ङा से पूछा—"तुझे क्या कहना है ? इस बयान में लिखा गया है कि तूने एक विद्रोही को भगाने में सहायता की है। क्या यह सच है ?"

उण्णिनङ्ङा ने अपना सिर उठाकर देखा। सुपरवाइजर की कुरसी से कुछ हटकर चन्त्रोत बाबू खड़े हो गए थे। उसका उदास मुख खिल उठा। बाबूजी का मुख भी प्रसन्न था। इसलिए उसने सोचा कि अब कुछ आपत्ति

आने वाली नहीं।

दुभाषिये ने फिर से सुपरवाइजर का सवाल दुहराया। अब उसका पूरा-पूरा मतलब समझ सकी। बिना किसी संकोच के उसने साफ-साफ जवाब दिया—"मैंने किसी विद्रोही की सहायता नहीं की।"

"बतलाओ कि क्या हुआ था।" बेबर ने आज्ञा दी।

युवती ने कहा—"मैं गत शाम को तालाब से पानी लाने जा रही थी। उस समय एक आदमी को खेत से बाग में घुसते देखा। उसकी खोज में चार-पाँच व्यक्ति उधर आ पहुँचे और मुझसे बड़ी सख्ती से प्रश्न करने लगे। मैं डर गई और इसलिए कुछ बोल न सकी। उसी दशा में वे मुझे पकड़ लाए।"

उस कमसिन लड़की के कहने के ढंग की स्वाभाविकता तथा सैनिकों की क्रूरता का खयाल करके सुपरवाइजर ने उसे जल्दी ही कैद से मुक्त करने की आज्ञा दी। चन्त्रोत नम्प्यार उसे लेकर अदालत से बाहर आए।

चिरुतक्कुट्टी से मिलकर उसे धन्यवाद देने के लिए नम्प्यार उण्णिनङ्ङा के साथ उसके यहाँ आये। उस स्त्री ने बड़ी खुशी से उनका स्वागत किया। नम्प्यार ने उचित शब्दों से अपनी कृतज्ञता प्रकट की।

"अम्पू बाब के लिए शक्ति-भर काम करना मेरा कर्तव्य है। अब तो आपसे भी परिचित हो गई।" चिरुतक्कुट्टी ने जवाब दिया।

नम्प्यार ने कहा—"मेरी एक प्रार्थना है। तुमने न केवल इसकी जान और लज्जा की रक्षा की, बल्कि मेरे मान को भी बनाए रखा। उसके बदले में तुमको देने के लिए मेरे पास कुछ नहीं। तो भी अपनी कृतज्ञता के रूप में यह अँगूठी तुमको देता हूँ। कृपया स्वीकार करें।" नम्प्यार ने अपनी अँगुली से अँगूठी उतारकर चिरुतक्कुट्टी के सामने रखी।

"आप जो कुछ देते हैं, वह मेरे लिए आशीर्वाद के समान है।" चिरुता ने कहा।

इस प्रकार उण्णिनङ्ङा जेल से बाहर आई। यह समाचार पाकर वेल्लस्ली आग-बबूला हो गए। लेकिन अदालत के नियमों के खिलाफ वे आवाज नहीं उठा सकते थे। अब अन्य कई बातें एक साथ आईं, अतः उन्होंने इसकी चर्चा की।

जवाब में सुपरवाइजर ने कहा—"नियमानुसार उस स्त्री को कैद में कैसे रख सकते हैं ? अपने बयानों के कारण वह निरपराध सिद्ध हुई है।"

"आपका कहना ठीक होगा, न्यायानुसार होगा। मैं उसके सम्बन्ध में तर्क-वितर्क नहीं करना चाहता। पर कूत्तुपरम्प से मेजर होम्स के निकलने से पहले ही उसका मार्ग, उसके सैनिकों की संख्या आदि शत्रु कैसे समझ सके ?"

"इसका उत्तर देना मेरा काम नहीं। मेरी राय में इसका कारण सेना-पतियों में दीर्घ-दृष्टि की कमी तथा उनकी अल्पज्ञता है।"

कर्नल वेल्लस्ली का मुख तमतमा उठा। उनको मालूम हो गया कि बेबर उन्हींको लक्ष्य करके बोल रहा है। उनके मन में अनियन्त्रित क्रोध उत्पन्न हो गया। पर किसी प्रकार उसे प्रकट न करके कर्नल ने कहा—"मैं मानता हूँ कि मेरे प्रबन्धों में चतुराई की कमी है। भविष्य में ऐसा न होने का प्रयत्न करूँगा। परन्तु शत्रु की इन दुर्बलताओं का पता लगाने के लिए इसी शहर में उनके सहायक जरूर होंगे, मैं तो उन्हीं के सम्बन्ध में कह रहा हूँ। उनको दबाए बिना कुछ न चलेगा।"

"मैं थोड़ा-थोड़ा तुम्हारा मतलब समझ रहा हूँ। तुम तो सिविल अफ-सरों के ऊपर भी अधिकार जमाना चाहते हो न ? कई दिनों से मुझे सन्देह हो रहा था। नियम इस शहर को तुम्हारे हाथों में सौंप देने की अनुमति नहीं देते। जब तक मैं यहाँ का सुपरवाइजर हूँ, तब तक ऐसा नहीं हो सकेगा।"

'लड़ाई चलाने के लिए यदि सैनिक-नियमों को व्यवहार में लाना आव-श्यक हो जाय तो मैं ऐसा करने मे भी न हिचकूँगा। उसके लिए मैं किसी की अनुमति माँगने का कष्ट भी न उठाऊँगा।"

सुपरवाइजर सैनिक की यह स्वाभाविक गुस्ताखी मानने को तैयार नहीं था। उसने कहा—"ऐसा हो तो मैं अब कहे देता हूँ कि अपनी पूरी ताकत लगाकर मैं तुम्हारे उद्यम को रोकने की कोशिश करूँगा। समझ लो कि मैं बम्बई सरकार का नौकर हूँ। उसकी आज्ञा की अनुमति के बिना किसी को भी यहाँ का अधिकार नहीं सौंपूँगा।" इतना कहकर वह वहाँ से

चल दिया।

कर्नल आराम-कुर्सी पर बैठे तथा गहरी चिन्ता में डूब गए। छोटे-छोटे सैनिक-दलों का नाश करने में शत्रु सफल हुए, परन्तु उनकी नीति के खिलाफ वे क्या कर सकते हैं? उनका अनुमान था कि एमन नायर को श्रीरंगपट्टन भेजने तथा चुयली नम्प्यार को कैद करने से जनता घबरा गई होगी।

कुछ-कुछ दण्ड-नीति और कुछ-कुछ अनुनय-विनय से देश के प्रामाणिकों को राजा साहब से हटाकर क्रमशः उनका नाश करना वेल्लस्ली का उद्देश्य था। इसके लिए सिविल अधिकारियों की सहकारिता आवश्यक थी।

कर्नल ने देखा कि सुपरवाइजर उनकी बातों में नहीं आयगा। वे सोचने लगे कि अपनी नीति की सफलता के लिए अब क्या करना चाहिए। सुपरवाइजर को धमकाने के लिए उन्होंने कहा था कि सैनिक-नियम जारी रखकर वे पूरा अधिकार स्वयं ले लेंगे। मगर वे अच्छी तरह जानते भी थे कि यह बाएँ हाथ का खेल नहीं। गवर्नर-जनरल की आज्ञा के बिना कोई भी सेनापति ऐसा नहीं कर सकता था। गवर्नर-जनरल को तो बम्बई-सरकार से परामर्श करना चाहिए था, अतः अपने भाई और स्वेच्छाचारी होने पर भी, नीति-कुशल मार्क्विस वेल्लस्ली इस तरह का काम करने को तैयार न होंगे, यह कर्नल जानते थे। इसलिए उन्होंने अपने उद्यम की सफल समाप्ति के लिए बुद्धिमानी से काम करने का निश्चय किया। तलश्शेरी में राजा साहब की मदद करने वाली संस्था की जानकारी प्राप्त करना पहली आवश्यकता थी। एक ऐसी संस्था के अस्तित्व के सम्बन्ध में उन्हें सन्देह न था। उसका नेता कौन होगा? किसकी प्रेरणा से वह काम कर रही है? ये सब बातें समझकर उसके अनुकूल सबूत एकत्रित करने के लिए वेल्लस्ली तैयार हो गए।

मन में इस बात को दृढ़ करके कर्नल ने अपने उपदेशक दुभाषिये को बुलाने की आज्ञा दी। लोपो सिक्कुवेरा नामक उस व्यक्ति को कई भाषाएँ मालूम थीं। वह असाधारण अक्लमन्द और अनुभवी था। मैसूर की लड़ाई के पहले वह कर्नल का दुभाषिया बन गया था। उनकी संगति से उसी प्रकार राज्य-सम्बन्धी मामलों में उसका ज्ञान बढ़ गया था। वह कर्नल वेल्लस्ली

का बड़ा आदर करता था।

कुछ दिन पहले कर्नल ने सिक्कुवेरा से अपनी शंकाएँ प्रकट की थीं। तलश्शेरी में होने वाली बातों की तलाशी के लिए सिक्कुवेरा नियुक्त हो गया। दुभाषिये ने कहा—"जहाँ तक मेरी दृष्टि जाती है, उससे यह नहीं कहा जा सकता कि इस तलाशी का अन्त कैसा होगा। मैं अपनी शक्ति-भर कोशिश करूँगा कि उसका परिणाम आपको मालूम हो जाय।"

"राजा का वह कर्मचारी नायर कहाँ है ?" कर्नल ने कहा—"मालूम होता है कि इस बात में वह बड़ा उपयोगी होगा।"

"चन्तू नायर साधारण आदमी नहीं। केरल वर्मा के संघ में उसका बड़ा स्थान था। अब किसी कारण से उनसे रूठ गया है। अब वह राजा का पड़ाव काबू में लाने गया है। दो दिन के अन्दर वापस आ जायगा।"

"स्वजनों का बुरा चाहने वालों पर विश्वास न रखना। मेरी समझ में वह होशियार और अक्लमन्द है। उससे फायदा उठाना चाहिए, पर हमारी मन्त्रणाएँ उसे मालूम न हों।"

"अभी तक ऐसा ही हुआ है।

"लौट आने पर उसे मेरे पास भेजो। उससे कई बातें पूछनी हैं।"

दुभाषिया वापस गया। कर्नल ने सभी बातें विस्तार से लिखकर अपने बड़े भाई गवर्नर-जनरल के नाम एक खत भेजा। उन्होंने सूचना दी थी कि इस समय कुछ कार्रवाई करने की जरूरत नहीं है।

: १२ :

विविध प्रकार की व्यथाओं से पीड़ित होकर राजा साहब उस दिन रात को कण्णवत से लौटे। पयम-घर के चन्तू की नमकहरामी का खयाल आते समय वे और भी दुखी हो जाते थे। किसने सोचा था कि ऐसा समय भी आ जायगा ? पहले जब मैसूर में लड़ने निकले थे तो पान वाला बनकर चन्तू उनके

साथ था। उस बाल्यावस्था में भी उसकी स्वामि-भक्ति और होशियारी देखकर वे उसका अभिनन्दन करते थे। उन्होंने सोचा कि अपनी बदकिस्मती के कारण ही वह इस प्रकार आज धोखेबाज बन गया। कुछ दिनों से अंपू और चन्तू में मनमुटाव हो रहा था, यह बात उनसे छिपी न थी। उनका सन्देह था कि इसका कारण अम्पू की उद्दण्डता है। परन्तु राजा साहब को विश्वास नहीं आया कि अम्पू के प्रति उसका जो द्वेष है उसके परिणाम में वह उनको धोखा देगा। वे कभी-कभी शंका करते थे कि शायद अम्पू से भी कुछ-न-कुछ गलती हुई होगी।

वेल्लस्ली की युद्ध-नीति ने उस वीर पुरुष के मन में इससे भी अधिक आशंका पैदा कर दी। उन्होंने समझा कि उनके सहायकों का पता लगाकर यदि कम्पनी उन लोगों का प्रतिरोध करे तो जनता पर उनकी जंगल की कार्रवाई का कुछ प्रभाव न पड़ेगा। देश के प्रामाणिक व्यक्ति उनकी आज्ञा का पालन करते थे, इसीलिए वे अंग्रेजों से लड़ भी सकते थे। बस्ती से रसद मिलती है, बन्दूक और अन्य युद्ध-सामग्री भी वहीं से प्राप्त होती है। इसके लिए जनता की सहायता न मिली तो सारा काम बिगड़ जायगा। वेल्लस्ली लोगों को डराकर राजा साहब को सहायता देना बन्द करा देते हैं तो इधर-उधर के सैनिकों को पराजित करने से क्या लाभ ?

यह खयाल आते ही अंग्रेजों को अपने गुप्त सहायकों का पता बताने वाले चन्तू पर राजा साहब का क्रोध भभक उठा। उस दिन शिविर में उन्हें नींद नहीं आई। शिविका-वाहकों की 'होय-हाय-हूँ-हूँ' की आवाज भी उन्हें असह्य लगी। किसी प्रकार उस रात को एक लम्बे दुःस्वप्न के समान बना दिया।

दूसरे दिन सवेरे राजा साहब पड़ाव में आ पहुँचे। कुछ दूर से ही उन्हें मालूम हो गया कि वहाँ कुछ असाधारण कोलाहल हो रहा है। रास्ते में पहरा देने वाले भीलों की संख्या भी बढ़ गई थी। दूर से चिल्लाहट सुनाई पड़ती थी, वन में हलचल हो रही थी, पशु-पक्षियों के स्वर से दिशाएँ गूँज रही थीं। राजा साहब को आश्चर्य हुआ। इस शान्ति-भंग का क्या कारण होगा ? और वह भी इस असमय पर ! वे कहा करते थे कि संसार में सबसे

प्रशान्त राजमहल उनका वह निवास-स्थान है। वे चाहते थे कि 'कथकली' के वाद्य-घोष के सिवा किसी प्रकार का युद्ध-नाद सुनने न पाये। लेकिन अब इसी पुरली पहाड़ पर कोलाहल हो रहा है।

या तो कहे बिना ही राजा साहब का उद्देश्य समझकर या स्वयं समझ लेने की जल्दी से, किसी की परवाह न करके शिविका-वाहक शीघ्रता से चलने लगे। निवास-स्थान के पास के बाग में घुसते समय उन्होंने देखा कि दोनों महादेवियाँ स्वागत के लिए दालान में खड़ी हुई हैं। माक्कम को देखकर राजा का आश्चर्य और भी बढ़ गया। उनके निमन्त्रण और अम्पू की अनुमति के बिना वह इस प्रकार क्यों अकेली चली आई? जरूर कुछ महान् कार्य होगा। वह सन्देश और यह सब कोलाहल उसीसे सम्बद्ध होगा।

महादेवियों का अभिवादन स्वीकार करके उन्होंने पूछा—"क्यों कुञ्जानी, इतनी जल्दी से आदमी क्यों भेजा था?"

"उसका कारण माक्कम से ही मालूम होगा। उसीने हमारी रक्षा की है।"

बहुत दिनों की प्रतीक्षा के बाद पति से मुलाकात हो रही थी, उस समय सपत्नी की उपस्थिति के कारण माक्कम का मन जरा कुण्ठित हो उठा। राजा साहब उसका जवाब सुनने के लिए उसकी तरफ फिरे तो क्षिप्रोद्भवा तात्कालिक लज्जा के कारण उसका सिर झुक गया।

ठीक समय पर उचित कार्य करना महादेवी की विशेषता थी। उसने कहा—"मैं जाकर नहा आऊँ। बहन, तुझे जो कहना है, कह!" बड़ी महादेवी ने माक्कम की तरफ मुख फेरा और फिर मुस्कराकर चली गई।

राजा साहब पलंग पर बैठे और माक्कम को भी अपने पास बैठाया। पूछा—"कहो, सुख से हो न?"

"आपसे अलग रहने में कौन-सा सुख?"

"जरा बता दो कि किस जरूरी काम के लिए यहाँ आई हो?"

माक्कम ने निस्संकोच सब बातें बता दीं। जब उन्होंने सुना कि चन्तू अंग्रेजी सैनिकों को साथ लेकर गुप्त मार्ग से यहाँ पर आक्रमण करने निकला

है तो उनके चेहरे का रंग उड़ गया। क्रोध से आँखें लाल हो गईं, भौंहें चढ़ गईं। अपने शांत और दयामय पति को इस प्रकार भयंकर देखकर स्वयं माक्कम भी डर गई।

"भगवती श्री पोर्कली की कसम……"

"नहीं-नहीं! शांत हो जाइए? इस समय पर जब कि आप आपे से बाहर हो गए हैं कसम न खाएँ।" उनके चरणों पर प्रणाम करके दीनता के स्वर में उसने कहा।

उनका कोप अस्थायी था। उन्होंने क्षण-भर में अपने को सँभाला और भयाकुल महादेवी को सान्त्वना देते हुए कहा—"तूने मेरा एक नहीं, दो उपकार किये हैं। एक से चन्तू की नमकहरामी का पता लगा दिया और दूसरे से मेरे क्रोध को रोक दिया। इनमें से दूसरे के लिए मैं हमेशा तुम्हारा कृतज्ञ रहूँगा। निर्मोही होकर अब ईश्वर पर अर्पण करके काम करने वाले व्यक्ति का सबसेबड़ा दोष क्रोध है।"

"क्रोध आपके लिए नैसर्गिक नहीं। वह दुष्टों का निंद्य कर्म देखकर पैदा होने वाला तात्कालिक भाव था। मैं तो डर गई थी।"

"अच्छा, यहाँ कौन-सा प्रबन्ध किया है?

"बहन ने तत्वकल चन्तू को बुलाकर आवश्यक प्रबन्ध करने की आज्ञा दी है। आपको सन्देश भेजने के बाद चन्तू भीलों के साथ मार्ग की रक्षा करने गया।"

"अगर चन्तू गया है तो सारी अंग्रेजी सेना आए, तो भी घाटी पार करके हमारे गुप्त मार्ग में प्रवेश नहीं कर सकती। ऐसी अवस्था में मेरे पास आदमी क्यों भेजा?"

माक्कम एकदम विवर्ण हो गई। राजा समझ गए; उन्होंने कहा—"यहाँ आने के पहले मैंने कंतेरी जाने का विचार किया था।"

"हाँ-हाँ! पहाड़ पर पधारकर इतने दिन हुए और अब तक इस दासी को याद करने की कृपा कब हुई थी? कितने असह्य दुःखों का अनुभव हो रहा था!"

"यहाँ आने पर क्या-क्या तकलीफें होंगी, यह मैंने पहले ही कहा था।

वहाँ कौन-सा दुःख है ?"

माक्कम रो पड़ी।

"तू धैर्यवती है, रोना मत !" राजा साहब ने कहा—"भगवती श्री पोर्कली सब दुःखों को दूर करेंगी। जब पाण्डव लोग जंगल में चले गए थे तो सुभद्रा अपने गृह में ही रहती थी न ? उर्मिला लक्ष्मण के साथ वन नहीं गई थी। इसलिए............।"

"उण्णि-बहन के समान उनकी भी एक बहन थी ?"

"वह तेरे साथ कैसा व्यवहार करती है ?"

"मैं आपसे कैसे कहूँ ? मुँह खोलती हैं तो जबान से जहरीली बातें निकलती हैं। मेरा मुख देखना भी उनके लिए क्रोध का कारण बनता है। यह दासी आपकी पत्नी है, यह बात उनसे सही नहीं जाती।"

"चन्तू ने उसके कान भर दिए होंगे। नहीं तो यह बात न होती। अच्छा इसका उपाय अवश्य करूँगा। तू दुखी न हो।"

इतने में तलक्कल चन्तू और भीलों के कुछ सरदार बाग के बाहर आए। यह समझकर राजा बाहर निकल आए।

"क्यों चन्तू ? वह पकड़ा गया कि नहीं ?" उन्होंने पूछा।

"उसे देखा तक नहीं। रात को ही उसके साथ आए हुए सैनिकों को मार डाला है। सबेरा होने के पहले ही शेष सैनिकों को लेकर वह भाग गया।"

"अब वह मार्ग बन्द करना अच्छा है न ?"

"उसके लिए जरूरी इन्तजाम किया है। थोड़ा टेढ़ा है, फिर भी इस दास ने उससे भी दुर्गम मार्ग देख लिया है। आज्ञा हो तो उसे ठीक करूँ। अब सुरंग का द्वार पत्थर से बन्द किया हुआ है।"

"अच्छा किया। रात के समय उनको कैसे मिले ? क्या-क्या हुआ ? विस्तार से कहो !"

चन्तू मितभाषी था। अपने पराक्रम का वर्णन करना उसे पसन्द भी न था। उसने संक्षेप में जो कहा उसका सारांश यों था—

महादेवी से समाचार पाते ही चन्तू ने भीलों को इकट्ठा किया। उसने

उनको पड़ाव के पीछे, जहाँ सुरंग घाटी में आकर मिलती है, विविध स्थानों पर खड़ा किया। शत्रुओं का आगमन तथा उनका इन्तजाम समझने के लिए मार्ग के बीच में भील नियुक्त थे। शाम होते-होते पयग्म घर का चन्तू अंग्रेजी सेना के साथ घाटी के उस छोर पर आया। वह रात वहाँ बिताकर सबेरे घाटी से उतरकर सुरंग में घुसना उसका उद्देश्य था। युद्ध-सम्बन्धी बातों से सुपरिचित उस वीर ने गौर से आस-पास के पहाड़ों की परीक्षा की। जब उसने समझा कि वहाँ कोई भील नहीं है, तो वहाँ ही डेरा डालने का निश्चय किया। वह इससे सन्तुष्ट न हुआ। उसने आधे सशस्त्र सैनिकों को रात-भर सावधान रहने की आज्ञा दी, और स्वयं भी उनके साथ सतर्क रहा।

अँधेरी रात थी; पर चन्तू ने उस डेरे में दीपक जलाने की अनुमति न दी। उसको इस बात का भय था कि दीपक का प्रकाश भीलों को आर्कषित करेगा। भील-सरदार राजा साहब की सेवा में मणत्तना गया था। वह जानता था कि राजा और तलक्कल चन्तू के अभाव में भील कुछ बड़ा काम नहीं कर सकते। अतः भील आ जाँय तो भी कोई बड़ा नुकसान नहीं होगा।

अपने गुप्तचरों द्वारा कम्पनी वालों का प्रबन्ध समझकर भील-सरदार ने उसी रात को घाटी पार करने का निश्चय किया। उस दुर्गम घाटी को पार करना अपरिचित लोगों के लिए दिन में भी कष्टदायक था; रात की बात तो दूर रही। सिर्फ भील उसे पार कर सकते थे। उस गुप्त मार्ग का प्रधान गुण भी वही था। सरदार ने आगे-आगे चलकर अनुचरों को रास्ता दिखाया। हाथ-में-हाथ डालकर और पत्थर-से-पत्थर पर उतरकर पैर थामते हुए वे खतरे से बचकर घाटी की तलहटी में आ पहुँचे। वहाँ से ऊपर चढना भी उतना ही कठिन था। थोड़ा विश्राम करने के बाद चन्तू के ही नेतृत्व में वे चढ़ने लगे। रात का अन्तिम पहर था। दो मील और चलने से शत्रु का डेरा मिलेगा। भील-सरदार ने सोचा कि डेरे में सोने वाले सुख-निद्रा में तथा जागते रहने वाले खुमारी में होंगे; अतः उसने बिना विलम्ब किये उनको घेरकर आक्रमण करने का निश्चय किया।

आगे के कोलाहल का वर्णन करना सम्भव नहीं। पयग्म-घर का चन्तू और उसके कुछ साथी किसी प्रकार बच गए। डेरा लूटकर वहाँ से मिला

सामान लेकर भील राजा साहब के पड़ाव पर लौट आए।

"भगवती की कृपा से एक बड़ी आपत्ति से हम बच गए। आगे का काम सावधानी से करना चाहिए। एडच्चेन कुंकन कहाँ है ? उसे यहाँ बुला लाओ !'

कुंकन नायर नये सैनिकों को युद्ध का अभ्यास करा रहा था। वह तुरन्त राजा साहब के सामने आकर हाथ जोड़कर खड़ा हो गया।

"सब सुन लिया है न ? बता, अब क्या करना चाहिए ?" राजा साहब ने उससे पूछा।

"जी हुजूर !" कुंकन ने जवाब दिया—"खूब सोच-समझकर हमें आगे बढ़ना चाहिए। पयथम-घर का चन्तू विपक्ष में मिल गया, इसलिए यह स्थान सुरक्षित नहीं रह गया।"

"मेरा भी यही विचार है। मैं वेल्लस्ली के उद्देश्यों का सामान्य रूप समझ गया। वह हमसे खुले मैदान में लड़ना नहीं चाहता। उसका इरादा हमें घेरकर, हमारे सहायकों का नाश करके, हमारी रसद को रोकने तथा जंगल में पशुओं की तरह हमारी हत्या करने का है।"

"क्या यह सम्भव है ?"

"यदि देश में उन लोगों का शासन प्रबल हो जाय तो इसमें कोई सन्देह नहीं। इसी उद्देश्य से वेल्लस्ली देश-भर में छोटे-छोटे दुर्ग बनाता है। दुर्ग के पास रहने वाले हमारी सहायता करने में हिचकेंगे। इरुव देश के नम्प्यार की दशा हमसे छिपी नहीं।"

"सुना है कि चुयली नम्प्यार को कैद करके ले जाने के कारण वे सब डर गए हैं।"

"केवल बस्ती में उनका अधिकार चलेगा।" तलक्कल चन्तू ने कहा—"हम तो यहाँ से उनके ऊपर हमला कर सकते हैं।"

"ठीक है; परन्तु यदि हमारी रसद खत्म हो गई तो हम कितने दिन तक जिन्दा रह सकेंगे ? अतः आगे का कदम सावधानी से ही उठाना चाहिए। अच्छा, मणत्तना से चन्तू के साथ भेजे गए वे मैसूरी सिपाही कहाँ हैं ?" राजा साहब ने पूछा।

"वे मेरे साथ हैं; बड़े होशियार हैं। वे युद्ध-सम्बन्धी बातों की बड़ी जानकारी रखते हैं। विशेषतः उनमें एक सिपाही मैसूर राजा का रिश्तेदार भी है। दूसरे लोग बड़े आदर के साथ उससे व्यवहार करते हैं।" कुंकन नायर ने कहा।

"हम भी उसका आदर करें।" राजा ने कहा—"उसकी सेवा-शुश्रूषा के लिए दो नायरों को भी नियुक्त करना चाहिए। नहा-धोकर भोजन करने के बाद मैं स्वयं उससे बातचीत करूँगा।"

"उसे कन्नड़ मालूम है। कल हम दोनों ने बहुत देर तक बातचीत की। वह केरल की बातें खूब जानता है। बड़ी श्रद्धा से हुजूर को याद किया था।"

"दोपहर तक उसे मेरे पास ले आना।"

राजा साहब ने उनको विदा किया। माक्कम भी तालाब पर जा चुकी थी। राजा अर्लात नम्प्यार से कुछ कानाफूसी करने के बाद नहाने गए।

स्नान, जप और भोजन के बाद जब वे बाहर आये तो दोपहर होने वाला था। बड़ी महादेवी और माक्कम कमरे में चटाई बिछाकर बैठी थीं। राजा को अन्दर आते देखकर वे उठकर पलंग के पास खड़ी हो गईं।

"माक्कम दो दिन के बाद ही जायगी न ?" बड़ी महादेवी ने पूछा।

"नहीं, उसे आज ही जाना पड़ेगा। निकलने में देर न करना अच्छा होगा।" राजा साहब ने कहा।

"कैसी बातें करते हैं ? वियोगवस्था में फूलों द्वारा सन्देश भेजते रहते हैं। पर जब जल्दी करके मिलने आती है तो कहते हैं कि तुरन्त वापस चली जा !"

"अर्‌र्‌ ! तू यह क्या कहती है ?' उन्होंने मुस्कराकर पूछा।

माक्कम का मुख लज्जा से रक्तिम हो गया। आँखें नीची करके वह बोली—"बहन, आप उन्हें तंग न करें ! मैं अभी चली जाऊँगी।"

"हो-हो ! मैंने देख लिया।" व्यंग्यपूर्ण स्वर में बड़ी महादेवी ने कहा—"पत्र में श्लोक लिख रखा है। क्यों बहन, जरा पढ़कर सुना दे ! विविध बातों में लगे रहने के कारण ये भूल गए होंगे।"

राजा हँसकर बोले—"अच्छा, अच्छा, अब समझ गया। लिख चुकने के

बाद वह श्लोक फिर कभी न देखा था। मैंने बहुत ढूँढ़ा।"

"जिसको भेजने के लिए लिखा था उसीके हाथ में वह पहुँच गया। अब क्यों ढूँढ़कर परेशान होते हैं? बहन इतनी तकलीफ उठाकर यहाँ आई है, तब भी उसे तुरन्त लौटा देना मुझे अच्छा नहीं लगता। फिर आपकी जैसी इच्छा।"

"माक्कम यहाँ आकर मुझसे मिली है, अतः मैं कैतेरी जाकर उससे मिलूँ। आज से सातवें दिन मैं वहाँ पहुँच जाऊँगा।"

माक्कम फूली न समाई। बड़ी महादेवी ने सोचा कि अब और कहने की आवश्यकता नहीं। "तो मैं परिचारकों को भोजन करा दूँ। वे शिविका तैयार करें।" कहकर वह बाहर चली गई।

"माक्कम! रूठना मत! आज ही लौट जाना अच्छा है।"

"कुछ आपत्ति नहीं। तो भी शिकायत इस बात की है कि आपने इस दासी को गलत समझा।"

"माक्कम को? सो कैसे?" राजा को आश्चर्य हुआ।

"कम-से-कम क्या आपको सन्देह हुआ या नहीं कि जब आप घर छोड़कर जंगलों में रहते हैं तो दासी फूल पहनकर बड़ी महादेवी बन बैठी है? यह दासी के लिए बड़े दुःख की बात है।"

"ओः मुझसे गलती हो गई। उसकी पहली पंक्ति ठीक न हुई। उसे फाड़ डालो। मैं दूसरा श्लोक लिख दूँगा।"

"नहीं-नहीं, यही काफी है। फाड़ डालने से श्लोक का नाश होगा? देश-भर में आपका श्लोक रटा जायगा।"

इतने में बड़ी महादेवी वापस आईं। माक्कम के अंतिम शब्द सुनकर उसने कहा—"तू दुखी न हो! यद्यपि मैं सेवा-सुश्रूषा करके इनके साथ रहती हूँ, तथापि इनका मन तेरे साथ है।"

"सब आप ही की मेहरबानी है।" माक्कम ने विनीत होकर कहा।

इतने में शिविका-वाहक आए। माक्कम विदा लेकर कम्मू के साथ रवाना हो गई।

राजा फिर भी अपने कर्तव्यों में व्यस्त हो गए। कुंकन ने चोक्कराय

को उनके सामने पेश किया। उससे उन्होंने बहुत देर तक कन्नड़ में बातचीत की। टीपू की मृत्यु के बाद कृष्णराय अपने पैतृक राज्य का शासक हो गया था। राजा ने चोक्कराय से मैसूर के उस शासक, वहाँ की राजनैतिक तथा सामाजिक दशा, कन्नड़ साहित्य आदि विविध विषयों क सम्बंध में बातें कीं। उस सम्भाषण से राजा साहब ने समझ लिया कि वह कुलीन पण्डित और राजनीतिज्ञ हैं। चोक्कराय तो उनको पहले ही जानते थे। उस समय जब कि केरल के राजा टीपू से लड़ रहे थे पयशी राजा का नाम मैसूर में भी प्रसिद्ध था। वेल्लस्ली की सेना ने जब टीपू का सामना किया था तो कम्पनी वालों की सहायता के लिए एक सैनिक-दल उससे मिल गया था। चोक्कराय उस दल का एक उपसेनापति भी था। उसकी होशियारी देखकर वेल्लस्ली ने उसे अपनी सेना में नायक की पदवी प्रदान की। केरल में अंग्रेजों से लड़ाई करना उसे रुचिकर था। इस बातचीत के कारण उसकी वह अरुचि और भी बढ़ गई। उसने कहा—"सुना है कि अंग्रेजों और मराठों में बड़ी घमासान लड़ाई होने वाली है। उसमें विजित होना अंग्रेजों के लिए बाएँ हाथ का खेल न होगा।"

"मैंने भी सुना है कि उत्तर में युद्ध होने वाला है। मराठे बड़े प्रबल थे। अब उनकी दशा कैसी है?"

मराठों की तत्कालीन दशा, उनके नेताओं के आपसी मनमुटाव, मौका ताककर उनको दबाने के गवर्नर-जनरल के उद्देश्य आदि के सम्बन्ध में चोक्कराय और राजा साहब बहुत देर तक बातचीत करते रहे।

"ऐसा हो तो कर्नल वेल्लस्ली को यहाँ से वापस बुला लेंगे?" राजा ने पूछा।

"इसमें सन्देह नहीं। उनकी विजय का यह एक-मात्र उपाय है।"

राजा ने उस दिन के लिए चोक्कराय को विदा किया और गहरी चिंता में डूब गए।

: १३ :

चोक्कराय के साथ के उस सम्भाषण के बाद राजा साहब में कुछ परिवर्तन-सा आ गया था। लड़ाई की बातों में उनकी कुछ भी दिलचस्पी नहीं रह गई थी। वहाँ युद्ध का नाम तक सुनाई न पड़ता था। तलक्कल चन्तू और उसके भीलों में ज्यादातर लोग उस स्थान को छोड़कर कहीं चले गए थे। एडच्चेन कुंकन रोज सबेरे राजा के दर्शन करके विविध बातों के सम्बन्ध में गुप्त सम्भाषण करता; तो भी वहाँ युद्ध का कोई बन्दोबस्त दिखाई न देता। उसके साथ रहस्य-मन्त्रणा करने के बाद राजा स्नान करते। फिर भोजन के उपरान्त कविता करने बैठते। 'कृम्मीर-वध' के दो-तीन पद लिख चुकने पर महादेवी उन्हें पढ़ती जाती और राजा साहब सुनते रहत। उसके बाद अर्लात नम्पी के साथ कुछ शतरंज खेलते; फिर तनिक विश्राम करके सूर्यास्त के चार घड़ी पहले चोक्कराय के साथ कन्नड़ में बातचीत करते। रात को कथकली शुरू हो जाती। इस प्रकार वह स्थान युद्ध-क्षेत्र न रहकर कला का रंगमंच बन गया। इसका रहस्य किसी को मालूम भी न था।

कुंकन नायर के साथ राजा के गुप्त सम्भाषण, कण्णवत नम्प्यार से मिलने की उनकी उत्कण्ठा आदि से प्रकट हो रहा था कि वे राज-काल बिलकुल भूल नहीं गए थे। दो हफ्ते पहले कण्णवत नम्प्यार मन्चेरी के अत्तन कुरुक्कल से मिलने गया था। अभी तक उससे कुछ समाचार नहीं आया। उनका मन शंकाकुल हो जाता। शंकर अभी तक क्यों नहीं आया? क्या कुछ आपत्ति हुई होगी। केवल वेल्लूर एमन नायर से वे अपनी यह शंका प्रकट करते। एमन नायर सेनापतियों में एक था, कण्णवत नम्प्यार का घनिष्ठ मित्र भी था; इसीलिए उससे इस बात की चर्चा होती थी। एमन नायर भी उत्सुक था। किसी कार्य के लिए जाने पर शंकर नम्प्यार आदमी द्वारा राजा को समाचार पहुँचाता रहता था। अब जब इस नियम के विपरीत कुछ खबर न मिली तो दोनों बड़ी चिन्ता में पड़ गए।

राजा साहब ने अपनी उत्सुकता प्रकट नहीं की। एक हफ्ते से वे खेल-तमाशे और 'कथकली' में व्यस्त-जैसे हो गए थे। प्रतिज्ञा के अनुसार कैतेरी में माक्कम के पास जाने का दिन भी आया। लेकिन केवल बड़ी महादेवी

को यह बात मालूम थी। सबेरे भोजन करने के बाद महाराजा ने शिविका लाने की आज्ञा दी। तब तक वहाँ के लोग समझ नहीं पाए थे कि वे कहीं जाने वाले हैं। जाते समय उनकी शिविका के दाएँ-बाएँ केवल एक-एक परिचारक था। पहाड़ से उतरकर कुञ्जाली मोयदीन के पड़ाव पर पहुँचे। पूर्व निश्चय के अनुसार उपस्थित कुछ मुखियाओं से उन्होंने मंत्रणा की। उनमें उण्णि-मूप्पन कुंजिक्कोया आदि मुख्य मुसलमान भी थे। मंत्रणा देर तक होती रही।

राजा साहब के निकलने के उपरान्त थोड़ा समय बीत गया होगा कि चोक्कराय भी पड़ाव से चुपचाप गायब हो गया। यह बात एडच्चेन कुंकन और एमन नायर के सिवा और किसी को मालूम न थी। पहाड़ से निकलकर मुल्क न जाकर चोक्कराय सीधे वयनाड चला गया।

राजा साहब के आगमन का दिन आया तो माक्कम की खुशी की सीमा न थी। उस दिन राजा साहब से विदा लेने के बाद वह सन्ध्या होते-होते कँतेरी वापस आई थी। तब उण्णिअम्मा का कोप देखने लायक था। उसने गालियों की लगातार वर्षा करके माक्कम का स्वागत किया। उसके भाषण का सारांश था कि ऐसी स्वेच्छाचारिणियों को घर से बाहर निकालना चाहिए। "कौन जाने किसके साथ चली गई थी? अपरिचित पुरुष के पीछे भी पागल होने वाली यह कुलांगार इस कुलीन वंश में कैसे पैदा हो गई? ऐसी बेइज्जती की बात देखने-सुनने के पहले मर जाती तो अच्छा होता!" उण्णि-अम्मा ने दास-दासियों की उपस्थिति में ही यों कहा। उत्तरी घर का इक्कण्टन नायर भी उसकी मदद के लिए आ पहुँचा।

"तुम इतनी तकलीफ क्यों उठाती हो? अपना काम सँभालो, जो आज्ञाकारी नहीं, उससे क्यों झगड़ती हो? अगर माक्कम सदा के लिए इस घर से निकाली न जाय तो मेरे घर के लोग इस घर वालों को न छुएँगे और न उनका छुआ खाना खायँगे। हमारा नाता हमेशा के लिए टूट जायगा।" इक्कण्टन नायर ने गम्भीर होकर कहा।

"मामा ठीक कहते हैं। कौन जाने यह कुलांगार कहाँ गई थी? किस की खोज में यह निकल भागी थी? चाहे जो हो, अपने रसोई-घर में इसे घुसने न दूँगी।" उण्णिअम्मा ने दृढ़ता से कहा।

माक्कम ने यह सब अनसुनी करके शिविका से उतरते ही स्नान किया और देवी के दर्शन करके सीधी अपने कमरे में चली गई।

इक्कण्टन नायर केवल गालियाँ देने से सन्तुष्ट न हुआ। उसने उण्णिअम्मा को सलाह दी कि घर वालों से परामर्श करके माक्कम को सदा के लिए घर से निकालना चाहिए। उण्णिअम्मा भी इस सलाह से सहमत हो गई। मगर वह जानती थी कि अम्पू नायर इसके लिए अनुकूल न होगा और अगर यह बात उसके कानों में पड़े भी तो माक्कम की जगह स्वयं वह घर से बहिष्कृत हो जायगी।

"भैया हमेशा माक्कम का पक्ष लेते हैं; इसलिए उसे इतना अहंकार है। इसके अतिरिक्त उसे राजा का सहारा भी है। ऐसी परिस्थिति में मैं क्या करूँ?"

"राजा का सहारा जल्दी बन्द हो जायगा।" इक्कण्टन नायर ने कहा—"अम्पू भी फाँसी पर चढ़ेगा; इसलिए तू चिन्ता न कर!"

'हाय! भैया का क्या होगा?" उण्णिअम्मा का गला अवरुद्ध हो गया।

इक्कण्टन नायर ने समझा कि उसने वह बात भी कह डाली जो कहनी नहीं चाहिए थी। "इसके सम्बन्ध में फिर विचार किया जायगा," कहकर वह वहाँ से चल दिया।

चार-पाँच दिन गुजर गए। तो भी उण्णिअम्मा के कोप और उसकी गालियों की तीक्ष्णता में कुछ कमी न हुई। उसको उपदेश देने के लिए इक्कण्टन नायर रोज आता था। दोनों ने उण्णिअम्मा के पति को खबर देकर कुछ कार्रवाई करने का निश्चय किया। इसके लिए इक्कण्टन नायर ने एक आदमी को भी भेजा था।

माक्कम सब सुन लेती; न वह कभी विक्षुब्ध हो जाती और न किसी का परवाह करती। इसलिए उण्णिअम्मा का कोप और भी बढ़ जाता। माक्कम कहाँ चली गई थी, उसने यह समझने की बड़ी कोशिश की। उसने मीठे और कड़े वचन सुनाए। उत्तर में माक्कम ने केवल इतना ही कहा—"मुझे किसी जरूरी काम के लिए बाहर जाना था।"

आज राजा साहब अपनी प्रतिज्ञा के अनुसार आ जायँगे। सूर्यास्त होने में केवल सात-आठ घड़ी ही शेष थीं। एक अपरिचित मुसलमान ने आकर महादेवी से मिलने की इच्छा प्रकट की। वह राजा साहब का संदेश सुनाने आया था। माक्कम निस्संकोच फाटक पर गई और पति का सन्देश सुनकर वापस चली आई। वे मोयदीन के यहाँ पहुँच चुके थे और रात को कैतेरी आने वाले थे।

सन्ध्या हो रही थी। महादेवी का मन उछल रहा था। दासियाँ लोटा, पान-पात्र आदि को मल-मलकर साफ कर रही थीं। उन्होंने शाम के पहले ही झाड़-पोंछकर कमरा साफ किया और खुशबूदार धुएँ से उसे सुगन्धित कर दिया। पलंग सुन्दर मुलायम कपड़ों में सुसज्जित था। पान-पात्र म पान-सुपारी एकत्रित थीं। माक्कम ने स्नान करके कीमती वस्त्र, सुगन्धित फूल तथा रत्न-जटित आभूषण पहनकर अपने को अलंकृत कर लिया।

माक्कम को आँखों में काजल तथा माथे पर बिन्दी लगाते और केशों पर फूल पहनते देखकर उण्णिअम्मा के मन में विविध प्रकार के सन्देह पैदा हो गए। उसने सोचा कि उसकी छोटी बहन किसी साजन की प्रतीक्षा में यह सब साज-शृङ्गार कर रही है। जब उसने माक्कम को फाटक पर मुसलमान से बातें करते देखा तो उसका मन बुरे विचारों से भर गया। एक बार माक्कम एकाकी होकर घर से निकल गई थी; इस समय वह कुल का कैसा अपमान कर बैठेगी ?

उण्णिअम्मा ने उत्तरी घर जाकर इक्कण्टन नायर की पत्नी को सब कह सुनाया। इक्कण्टन नायर ने अपनी पत्नी के द्वारा उण्णिअम्मा को उपदेश दिया कि ठीक मौके पर माक्कम और उसके प्रेमी को जाल में फँसाना चाहिए। इस प्रकार फँस जाने पर वह रण्डी कहलायगी और फिर उसे घर से निकाल देने में कोई बाधा न रह जायगी। पययम-घर के चन्तू के पास तुरन्त आदमी भी भेजा गया। वह उस समय कूनुपरम्प पहुँच गया था।

उत्तरी-घर से लौटने के बाद उण्णिअम्मा के मुख पर असाधारण प्रसन्नता विराजमान थी। उसने न तो माक्कम से मुँह बनाया, न उसे गालियाँ सुनाईं। जल्दी ही खाना खाकर सिर-दर्द का बहाना करके वह सोने के कमरे

में चली गई।

माक्कम रात का भोजन करके रोज की तरह अपने कमरे में केरल वर्मा-रामायण पढ़ती रही। महादेवी की दृष्टि ग्रन्थ में लीन थी और उसकी सुरीली वाग्धारा मुँह से निकल रही थी, परन्तु उसके मन में कुछ विचार थे। वह अपने प्रियतम की प्रतीक्षा कर रही थी—उत्कण्ठाकुल किन्तु सुखद प्रतीक्षा ! सुन्दर स्वप्नों से उसका मन भर गया था। अपने महान् हृदयेश्वर का स्वागत कैसे करे, उनसे क्या-क्या वार्तालाप करे, उनको किस प्रकार सन्तुष्ट करे आदि विचारों ने उसके मन में अन्य चिन्ताओं को घुसने न दिया।

उण्णिअम्मा भी दरवाजा वन्द करके लेटी रही, पर सोने के लिए नहीं। माक्कम के प्रति असह्य ईर्ष्या के कारण उसका मन अशान्त था। महादेवी के कमरे का दरवाजा खोलने की आवाज सुनने के लिए वह व्याकुल हो रही थी।

प्रासाद के चबूतरे पर चटाई खोलकर कम्मू सुख से सो रहा था। रात के पहले पहर का अंत हो गया। एक-मात्र अनुचर के साथ राजा साहब कैतेरी घर के आँगन में आए। माक्कम का रामायण-वाचन उन्हें सुनाई दे रहा था। बाहर किसी की पद-चाप सुनकर माक्कम ने रामायण का पढ़ना बन्द किया। उसने सोचा कि राजा साहब आ गए हैं; अतः दरवाजा खोला। चप्पल चबूतरे पर रखकर वे अन्दर घुसे।

बाहर से किसी की आवाज तथा माक्कम का दरवाजा खुलने की आहट सुनकर उण्णिअम्मा पलंग से उठी। चुप-चाप अपना दरवाजा खोलकर उसने एक नौकर को बुलाया। उसने फिर इक्कण्टन नायर के नाम सन्देशा भेजा कि प्रतीक्षा सफल हो गई है। नौकर सन्देश लेकर नायर के घर पहुँचा तो वह पयग्रम-घर के चन्तू के साथ कुछ बलि-पूजा में लगा हुआ था।

"अच्छा, जल्दी आ जायँगे। तू जा।"

नौकर को भेजकर दोनों खुली बोतल होठों से लगाने लगे।

चन्तू के लिए यह अच्छा अवसर था। एक ऐसे अपराध पर लोगों की आँखों के सामने माक्कम को पकड़कर घर से बहिष्कृत करने से वह एक साथ अपने दोनों शत्रुओं का--अम्पू और राजा का—अपमान कर सकेगा।

दूसरे लोगों को साथ लेकर वहाँ जाना इक्कण्टन नायर को अच्छा न लगा। उसने इसका विरोध किया, क्योंकि उसने सोचा कि वह हमेशा के लिए उसके कुल की बेइज्जती का कारण हो जायगा। मगर उसकी पत्नी किसी-न-किसी प्रकार कैतेरी वालों के आभिजात्य का मूलच्छेद करना चाहती थी, अत: उसने चन्तू की राय पर जोर डाला। अन्त में इक्कण्टन नायर को उन दोनों की इच्छा के सामने सिर झुकाना पड़ा। गाँव से सात-आठ आदमियों को बुला लाने के लिए भी उसने आदमी भेजा। सब आ गए तो दीप-दण्ड लेकर चन्तू के नेतृत्व में वे निकले। तब करीब आधी रात हो गई थी। माक्कम और राजा साहब सुख की नींद सो रहे थे।

"इन लोगों के साथ किधर जा रहे हैं ?" उनमें किसी ने चन्तू से पूछा।

"जरा शान्त रहो ! जल्दी समझ जाओगे !" चन्तू ने जवाब दिया।

कम्मू जाग पड़ा, भीड़ तथा दीप-दण्ड को देखकर वह घबरा गया। चन्तू और इक्कण्टन नायर को देखकर उसने निश्चय किया कि अपनी स्वामिनी की कुछ हानि जरूर होने वाली है। म्यान से तलवार निकालकर वह धीरता से अपने स्थान पर डटा रहा।

चन्तू ने अपने साथियों को आँगन में खड़ा किया, उण्णिअम्मा ने उसके लिए द्वार खोल दिया। वह अन्दर घुसा और समाचार पाकर बाहर निकल आया। उसने गाँव वालों को समझाया कि माक्कम कुचाली हो गई है, एक सप्ताह पहले वह किसी से कहे बिना रात के समय घर से निकल गई थी, राजा तो पहाड़ पर हैं ऐसी दशा में उसके पास आज कोई आया है, यह गाँव वालों के लिए भी अपमान की बात है। इस समय जब कि घर में कोई पुरुष नहीं, एक सम्बन्धी की हैसियत से माक्कम को दण्ड देकर घर की इज्जत की रक्षा करना उसका कर्तव्य है आदि। गाँव वाले उसकी बातों में आ गए। चन्तू दालान में घुसा और माक्कम को दरवाजा खोलने की आज्ञा दी। दालान में घुसने पर कम्मू ने उसे अपने खंग से रोककर कहा—'अरे कहाँ जाते हो ?"

'हट जा, कुत्ते ! मुझे रोकने वाला तू कौन है ?" भयंकर अट्टहास करके चन्तू ने तलवार सँभाली।

दालान में खड़े होकर लड़ने की सुविधा न थी। इसलिए दोनों आँगन में आए। इस समय वह नायर भी, जो राजा साहब का अनुचर बनकर आया था यहाँ आ पहुँचा। बाहर का कोलाहल सुनकर राजा और माक्कम जाग पड़े। माक्कम बहुत घबरा गई थी। उसने स्वर से पहचान लिया कि भीड़ में इक्कण्टन नायर और चन्तू भी शामिल हैं। उसने सोचा कि राजा साहब की हत्या करने के लिए ये आदमियों को लेकर आये हैं। बाहर कम्मू और राजा साहब के उस अनुचर के सिवा दूसरा कोई न था। इसलिए महादेवी और भी व्याकुल हो उठी। उसे विश्वास था कि हाथ में आये राजा को वे जाने नहीं देंगे। वे लोग घर को आग लगाने में भी न हिचकेंगे। प्रार्थना के रूप में उसके मुँह से ये शब्द निकले—"भगवती श्री पोर्कली! उनको इस आपत्ति से बचाइये जो कि मेरे कारण उनके ऊपर आना चाहती है।"

राजा का मन अचञ्चल था। उनको अनुभव हुआ, शत्रुओं ने घर घेर लिया है और उनसे बच जाना आसान नहीं। उन्होंने सोचा कि उन्हींको पकड़ लेने के लिए ये लोग इकट्ठे हो गए हैं। तो भी घर के अन्दर छिपे रहने से कोई फायदा नहीं, इसलिए आराध्य देवी का ध्यान करके हाथ में नंगी तलवार लेकर वे दरवाजा खोलकर बाहर आए।

चन्तू और कम्मू में लड़ाई हो रही थी। तलवार चलाने में चन्तू की चतुराई सब जानते थे। अनागत श्मश्रु वाले कम्मू ने अखाड़े में शिक्षा-पूर्ति तो की थी, पर युद्ध-क्षेत्र में अनुभव न पाया था। उन दोनों में किसी बात की समानता न थी, तो भी मृत्यु की परवाह न करके वह धीरता से लड़ता रहा। चन्तू के लिए वह लड़ाई एक खेल के समान थी। इस समय राजा साहब बाहर आए।

"क्यों रे चन्तू?" गम्भीर स्वर में उन्होंने पूछा। उस परिचित स्वर की आज्ञा-शक्ति से प्रेरित होकर अनजान में "जी हुजूर!" कहकर वह स्तब्ध रह गया। उसका हाथ ढीला हो गया, उसी दम कम्मू ने उसकी तलवार दूर हटा दी।

"ये तो राजा साहब हैं!" गाँव वालों ने एक साथ कहा और प्रणाम करके आदर से पीछे हट गए। इक्कण्टन नायर वहाँ से चल दिया, मानो अब

उसकी उपस्थिति की आवश्यकता न रही हो।

गाँव वालों का आदर और चन्तू की दुविधा देखकर राजा साहब ने समझा कि इसमें कुछ धोखा जरूर है। वे आँगन में उतरे। चन्तू ने भी दाएँ, बाएँ और पीछे देखा; अब वहाँ से हट जाना लाभदायक समझकर उसने भाग जाने की कोशिश की, मगर "दुष्ट को मत जाने दो, यह हमें भी धोखा देने लगा," कहकर गाँव वालों में से एक ने उसे पकड़ लिया।

गाँव वालों की ओर घूमकर राजा साहब ने पूछा—"तुम सब दीप-दण्ड लेकर क्यों निकल पड़े?"

उनके नेता ने कहा—"हुजूर! इस दुष्ट ने हमको धोखा दिया।" संकोच के कारण वह आगे कह नहीं सका।

"क्या बात है? निस्संकोच कहो तो।"

"इसने हमसे कहा कि महादेवी आपसे विश्वास-घात करती है, वे आपका अपमान करना चाहती है, जिससे वंश और देश का भी अपमान हो जाय, अत: बातों की असलियत जानकर आपको सूचित करना चाहिए। इसके लिए यह हमको भी लिवा लाया।"

राजा साहब चन्तू की तरफ घूमे। उस समय उसकी दशा का वर्णन करना कठिन था। जब राजा ही माक्कम के कमरे से बाहर आए तो उसे सीमातीत आश्चर्य हुआ। उसने नहीं सोचा था कि वे निस्संकोच होकर यों विचरने वाले है। माक्कम को अपमानित करने की इच्छा तो विफल हो गई, इतना ही नहीं, वह राजा को ईश्वर मानकर पूजा करने वाले ग्रामीणों के पंजे में फँस गया। जान बचाने का कोई उपाय दिखाई न दिया। उसके अहंकार और उद्दण्डता का अन्त हुआ। अब राजा साहब की ही शरण में जाय या सब संकटों का सामना करे, इस दुविधात्मक चिन्ता में पड़कर वह थोड़ी देर तक मूर्ति की तरह खडा रहा, फिर नीच किन्तु धीर चन्तू हँस पड़ा, जैसे यह सब उसके लिए बाएँ हाथ का खेल है।

"मैं भाग जाना नहीं चाहता।" उसने कहा—"मुझे मृत्यु का भी भय नहीं। आज या कल देख लेंगे कौन फाँसी पर चढ़ने वाले है।" उसकी आवाज में धृष्टता थी। उसने अपने शरीर को सीधा किया मानो वह

सब आपत्तियों का सामना करने को तैयार खड़ा हो।

राजा साहब ने ये बातें अनसुनी कीं।

खंग के अभाव में ही नहीं, बल्कि शत्रुओं से घिरे रहने पर भी उस राजद्रोही की बेपरवाही तथा अहंकार देखकर कम्मू से रहा नहीं गया। उस युवक ने आगे बढ़कर चन्तू नायर का हाथ पकड़ लिया।

चन्तू फिर भी हँस पड़ा। एक धक्के से उसने उस युवक को दूर हटा दिया। कुछ फासले पर कम्मू जा गिरा।

चन्तू ने समझा कि इस उद्दण्डता से राजा का कोप भभक उठा है। अंगारे बरसाने वाली उन आँखों की तीक्ष्णता देखकर धीर चन्तू भी भयभीत हो गया।

"नीच-रक्त से मैं अपनी तलवार को अपवित्र नहीं करता।" उन्होंने कहा—"जिन हाथों से सृष्टि की, उन्हीं से संहार करना उचित नहीं; अतः तुझे छोड़ देता हूँ। फिर कभी यहाँ कदम न रखना!"

उण्णिअम्मा यह सब देख-सुन रही थी, वह बाहर आई।

"तो मैं भी चली जाती हूँ। माक्कम और उसके आदमी सुख से रहें। चाहे भीख माँगनी पड़े तो भी मैं इस घर में न रहूँगी।"

"यदि तुम्हारी यही इच्छा है, तो ऐसा ही हो। गाँव वाले इस घर-बार की देख-रेख करें।"

गाँव के मुखियाओं ने प्रतिज्ञा की कि वे अपनी जान पर खेलकर भी राजा साहब की आज्ञा का पालन करेंगे। चन्तू और उण्णिअम्मा को अब वहाँ से जाना ही उचित लगा। वे इक्कण्टन नायर के घर की तरफ चल दिए। दूसरे लोग भी अपने-अपने घर लौटे। राजा साहब माक्कम से विदा लेकर उसी क्षण वहाँ से निकल पड़े।

: १४ :

चन्त्रोत बाबू के साथ तलश्शेरी से निकली उण्णिनङ्ङा को एक नया जीवन-सा मिला। वह अम्पू नायर के लिए सब प्रकार के संकट सहने को तैयार थी, पर वह न जानती थी कि म्लेच्छों के हाथों में उसका क्या होगा। इस अनिश्चितता से उसका मन विक्षुब्ध था। जब चन्त्रोत बाबू ही आकर उसे कैद से विमुक्त करके चन्त्रोत ले आए तो उसने अपने पहले दुःखपूर्ण अनुभवों को स्वप्न के समान भुला दिया।

बाबू ने उससे कई बातें पूछ लीं। उण्णिनङ्ङा के सम्बन्ध में उन्होंने केवल इतना समझ रखा था कि इस नाम की एक लड़की अपने कारिन्दों में एक के यहाँ रहती है और अम्पू नायर ने उसे रास्ते में पाकर वहाँ पहुँचा दिया है। जब असली बात मालूम हो गई तो नम्प्यार ने स्नेहपूर्ण स्वर में कहा—"इन म्लेच्छों से तुमको मैंने नहीं, अम्पू ने ही बचाया। चिरुतक्कुट्टी ने उसीके लिए सुपरवाइजर को विवश किया था। हम दोनों की मित्रता के कारण मैंने यह काम अपने ऊपर ले लिया था।"

उण्णिनङ्ङा कुछ न बोली। अपने अनुभव से स्त्री-हृदय के रहस्यों की जानकारी रखने वाले नम्प्यार ने भी उस विषय में कुछ न कहा।

दोनों चन्त्रोत-घर के फाटक पर आए तो नम्प्यार बोले—"मैं अम्पू के पास आदमी भेजने वाला हूँ। वह जल्दी आ जायगा। जब चाहो तो यहाँ आती-जाती रहना।"

उन्होंने अपने घर वालों से कहा कि उण्णिनङ्ङा अपनी रक्षा में पलने वाली लड़की है और उसे अपनी इच्छानुसार उस घर में आने-जाने की आजादी है।

उस दिन से उण्णिनङ्ङा वहाँ सुख से रहने लगी। उसकी मामी भी उसका आदर करती थी। बाबूजी उस पर इतने सन्तुष्ट हैं तो वह क्यों पीछे पड़ जाय? कारिन्दा मामा भी उस पर वात्सल्य बरसाने लगा। उसको विविध प्रकार के पुरस्कार भी दिए, तब वहाँ के लोगों ने सोचा उण्णिनङ्ङा बड़ी पदप्राप्त सौभाग्यवती कन्या है।

मेजर होम्स से लड़ने के बाद अम्पू पूर्व निश्चय के अनुसार पहाड़ पर न जाकर वेष बदलकर ग्रामों में घूम रहा था। उस समय एक भयंकर बात उसके कानों में पड़ी। किम्वदन्ति प्रचलित थी कि राजा साहब के कर्मचारियों में उच्च पदाधिकारी कण्णवत शंकर नम्प्यार कम्पनी वालों के जाल में फँस गया है। कहते थे कि नम्प्यार प्रच्छन्न वेष में अत्तन कुरुक्कल से मिलने गया था; वहाँ से लौटते समय वह कोयिक्कोड के पास के गाँव में रात बिता रहा था कि कंपनी वालोंके जासूसों को यह बात मालूम हो गई; उन्होंने तुरन्त उस स्थान को घेर लिया, नम्प्यार और उनके दो भानजे धीरता से लड़े, लेकिन अंत में उनको पराजित होना पड़ा। इस बात की वास्तविकता जान लेना आवश्यक था। इसलिए अम्पू अपना स्थान छोड़कर कोयिक्कोड चला आया।

कण्णवत नम्प्यार का यह हाल सुनकर वेल्लस्ली बहुत प्रसन्न हुए। राजा साहब के एक प्रधान कर्मचारी की यह अवनति उनके लिए महान् कार्य था। उनकी नीति की सफलता दिखाई दे रही थी। राजा के दल के प्रामाणिकों में किसी को, मिल जाय तो, फाँसी पर चढ़ाकर उसकी सम्पत्ति जब्त करके सरकार की अधीनता में लाना उनका इरादा था। उस दूरदर्शी सेनापति का विश्वास था कि देश को अपनी जान से बढ़कर प्यार करने वाले नायर लोग केवल इसी कारंवाई से भयभीत हो जायँगे!

उन्होंने दुभाषिये और चन्तू के साथ इस बात का परामर्श किया।

"सामन्तों को फाँसी पर चढ़ाना इस देश के रीति-रिवाज के विरुद्ध है।" दुभाषिये ने कहा—"मेरा विचार है कि यह सुनकर नायर लोग विद्रोह करके हमसे लड़ने आयँगे।"

"ऐसा कुछ न होगा।" कर्नल ने कहा—"सब लोग वश में आ जायँगे। ऐसे प्रधान नेता को फाँसी का दण्ड दें तो बाकी लोग भयभीत हो जायँगे। फाँसी पर चढ़ाने के पहले किसी को भी कानों-कान खबर न मिले। पूछ लो कि इसकी क्या राय है।"

"चुयली नम्प्यार को कैद करने से लोग बहुत डर गए हैं।" चन्तू ने कहा—"कण्णवत नम्प्यार को फाँसी पर चढ़ाकर उसकी सम्पत्ति कम्पनी वालों के सहायकों में बाँट दी जाय तो फिर कोई भी राजा से न मिलेगा।"

कण्णवत नम्प्यार के प्रति चन्तू के मन में बड़ी ईर्ष्या थी और यह ईर्ष्या आज या कल की नहीं, वर्षों की पुरानी थी। महासामन्त नम्प्यार चन्तू की परवाह नहीं करते थे; इस बात ने उसकी शत्रुता की नींव डाली। अब कण्णावत की सम्पत्ति और पदवी अपनाने का मार्ग खुलते देखकर उसका कुटिल हृदय खुशी के मारे उछल पड़ा।

दुभाषिये के द्वारा वेल्लस्ली चन्तू का उद्देश्य समझ गए। उन्होंने कहा—"कण्णवत की सम्पत्ति हमारे सहायकों में बाँट देने के सम्बन्ध में विचार किया जायगा। तुरन्त सेना भेजकर सारी सम्पत्ति कब्जे में करनी चाहिए। इसके लिए गुप्त रूप से आज ही एक सैनिक-दल निकल जाय।"

इस प्रकार जरूरी आज्ञाएँ देने के बाद वेल्लस्ली चिन्ता में डूबकर बहुत देर तक बरामदे में टहलते रहे। उसी दिन कलकत्ता से गवर्नर-जनरल के दो खत आये थे—एक कम्पनी के महासेनापति की हैसियत से और दूसरा सहोदर के नाते से लिखा गया था। अपने सन्देश में महासेनापति ने कर्नल की युद्ध-नीति की प्रशंसा की थी। केरल देश में जो-जो प्रबन्ध उन्होंने किये थे, उनको उचित माना था और बहुत शीघ्र ही उनकी सफलता की आशा प्रकट की थी। पर मार्क्विस वेल्लस्ली के व्यक्तिगत पत्र का ढंग कुछ और था। लम्बे चार महीनों के अन्दर कर्नल एक अप्रधान प्रतिद्वन्द्वी को पराजित नहीं कर सके, अतः बम्बई और मद्रास में गवर्नर-जनरल के जितने विरोधी हैं, वे सब बुरा-भला कहने लगे हैं और लंदन से आने वाली आज्ञाओं का स्वर भी बदल रहा है, अतः दोनों भाइयों का यश बनाए रखने के लिए विजय की घोषणा होनी अनिवार्य हो गई है। उसमें सूचित किया था कि अंग्रेजों और मराठों में जो झगड़ा है यदि निकट भविष्य में उसके भयंकर युद्ध का रूप धारण करने की सम्भावना हो तो कर्नल को कम्पनी के सेनापति बनाने के लिए उचित सिफारिश के साथ लन्दन के अधिकारियों के नाम पत्र भेजा गया है, लेकिन लन्दन में उस सिफारिश के विरुद्ध काम करने वाले बहुत लोग हैं, इसलिए पयशी-राजा के नाश का वर्णन करते हुए एक विशेष सूचना देनी जरूरी है।

गवर्नरजनरल मार्क्विस वेल्लस्ली का यह दृढ़ विश्वास था कि ब्रिटिश

साम्राज्य का भविष्य अपने कुटुम्ब पर अवलम्बित है। वह अपने भाइयों और रिश्तेदारों को ऊँचे-ऊँचे पद प्रदान करने के लिए सब प्रकार के अन्याय और अत्याचार करने में तनिक भी संकोच नहीं करता था, यह ऐतिहासिक बात है। उसकी पूर्व निश्चित बात थी कि मराठों से लड़ाई हो तो उसका सेनापति अपना भाई वेल्लस्ली ही हो। वह अच्छी तरह जानता था कि सिन्धिया और होल्कर की नीति से युद्ध अनिवार्य है और लड़ाई शुरू हो जाय तो भारतीय साम्राज्य का भविष्य उसी पर निर्भर है। इसके पहले मराठों से लड़कर अंग्रेजों को हार खानी पड़ी थी। अब की बार विजय की असन्दिग्धता के लिए गवर्नर-जनरल ने जरूरी उपाय ढूँढ़ निकाला था। वह साम्राज्यपति पेशवा को महासामन्त सिन्धिया, होल्कर आदि से अलग करके समझौते द्वारा अपने पक्ष में लाया था। मराठा साम्राज्य के एक प्रधान स्थानीय शासक गायकवाड़ को भी रिश्वत तथा धमकियाँ देकर अपनी ओर आकर्षित कर चुके थे। सिर्फ सिन्धिया और होल्कर युद्ध की तैयारियाँ कर रहे थे। उनमें भी झगड़ा पैदा करने के लिए गवर्नर-जनरल ने कुटिल राजनीति का सहारा लिया था।

मार्क्विस वेल्लस्ली ने सोचा था कि केवल सिन्धिया से लड़ें तो कम्पनी वाले जीत जायँगे। यदि यह प्रमाणित हो कि उस विजय के कारण वह और उसका भाई हैं तो वे दोनों भारतीय साम्राज्य के संस्थापक कहलायँगे।

कर्नल वेल्लस्ली भी यही चाहते थे। पर इतने कम दिनों में अपने भाई की आज्ञा के अनुसार पयशी का नाश करके सूचना देने का कोई उपाय उसे दिखाई न पड़ा। ठीक इसी समय समाचार मिला कि कण्णवत नम्प्यार पकड़े गए हैं। अब राजा के एक प्रधान कर्मचारी को कैद करना एक भारी विजय मानकर भाई के नाम पत्र भेजना ही तत्कालीन एक-मात्र उपाय है। कण्णवत एक विद्रोही नेता का निवास-स्थान है; वहीं पर उस कर्मचारी को फाँसी पर चढ़ाएँ तो वह पयशी-राजा के शक्ति-दमन का एक अच्छा प्रमाण हो जायगा। राजा साहब की बड़ी क्षति होगी और इस घटना से जनता भयभीत हो जायगी।

वेल्लस्ली ने ये बातें तलदेशरी के अन्य लोगों से छिपा रखीं थीं। दो

दिन के बाद कैदी नम्प्यार बड़ी धूम-धाम के साथ तलश्शेरी लाये गए। इसके पहले बेबर को भी यह बात मालूम न थी। मूसा मरक्कार के एक बँगले में नम्प्यार को बड़े आदर के साथ ठहराया गया। दूसरे दिन वेल्लस्ली ने शत्रु-सेना के उस सेनापति का सादर स्वागत किया। कर्नल-पद का पूर्ण वेष, छाती पर चमकने वाले कई कीर्ति-चिन्ह, कमर में कम्पनी वालों से पुरस्कृत रत्न-जटित मूठ वाला खड्ग, दाएँ-बाएँ यूरोपीय अंगरक्षक, वेल्लस्ली ऐसे आडम्बर के साथ कण्णवत नम्प्यार से मिलने निकले थे। देश के तत्कालीन रस्म-रिवाज के अनुसार नम्प्यार ने भी वेष धारण किया था। उसने हजामत कराई, तेल लगाकर स्नान किया; शरीर और माथे पर चन्दन और इत्र लगाया, दोनों हाथों में वीर शृंखलाएँ पहनीं और छाती को आवरण करने वाला रेशमी कुर्ता तथा कमर में खड्ग धारण किया। एक अंगरक्षक उसे एक कमरे में लिवा लाया। थोड़ी देर में दो अंगरक्षकों से अनुगत होकर कर्नल वहाँ आ पहुँचे। नम्प्यार ने कुर्सी से उठकर उनका अभिवादन किया, फिर दोनों आमने-सामने बैठ गए।

कर्नल ने पूछा—"केरल वर्मा कुशल से तो हैं न ?"

"हाँ मेरी समझ में सकुशल हैं।" नम्प्यार ने कहा।

"मैं समझता हूँ कि वे बुद्धिमान, होशियार और युद्धवीर हैं। फिर वे इस तरह कम्पनी वालों का विरोध क्यों करते रहते हैं ? क्या कम्पनी की शक्ति उन्हें मालूम नहीं है ?"

"उन्हें अच्छी तरह मालूम है। उनको यह भी मालूम है कि कम्पनी वाले बड़े-बड़े सम्राटों और नवाबों को जीतकर भारतीय साम्राज्य को अपने काबू में लाए हैं। टीपू को पराजित करने वाले आपकी महत्ता भी उनसे छिपी नहीं।"

"फिर क्यों अविवेकियों की तरह असम्भव काम करने निकले हैं ? इससे यों ही देश का सत्यानाश होगा और जनता का संकट बढ़ जायगा।"

"सम्भव है, मगर देश के सत्यानाश में उनका हाथ नहीं।"

"फिर किसका हाथ है ? कम्पनी ने टीपू से लड़कर यह देश जीत लिया। इसका सर्वाधिकार कम्पनी में निक्षिप्त है। राजा साहब-जैसे व्यक्ति उसकी

सहायता करें तो क्या देश की भलाई न होगी ?"

"कम्पनी से मिलकर काम करने को वे तैयार हैं। मगर वे देश, स्वातंत्र्य और मान छोड़कर जिन्दा रहना नहीं चाहते।"

जरा विरस होकर कर्नल ने कहा—"जानते हो कि इसका परिणाम क्या होगा ? आज नहीं हो तो कल मैं जरूर ही राजा की शक्ति को चकनाचूर कर दूँगा। मैंने आगे चलकर प्रतिद्वन्द्वियों पर कृपा न करने का निश्चय किया है। पकड़े जाने वालों को फाँसी पर चढ़ाऊँगा, उनकी सम्पत्ति जब्त की जायगी, उनके बाल-बच्चों को भिखमंगे बनकर गली-कूचों में घूमना पड़ेगा। जंगल में रहने वालों को रसद न मिल सकेगी। इसलिए खूब सोच-विचार करो।"

"इसमें सोच-विचार करने की कोई बात नहीं। राजा साहब यह सब अच्छी तरह जानते हैं। वे और उनके साथी सब सहने को तैयार हैं। जब तक वे जीवित हैं, तब तक केरल की आजादी को वे खोने न देंगे। वे और किसी बात का विरोध न करेंगे। इसलिए पकड़े जाने वालों को फाँसी पर चढ़ाइये, उनकी सम्पत्ति जब्त करा दीजिए, कुछ भी कीजिए! अगर शेष लोगों को मनुष्य होकर जीवन बिताने के लिए इन सबकी जरूरत है, तो हम खुशी से सब सह लेंगे।"

यह साहसपूर्ण शब्द सुनकर कर्नल ने मन में अपने प्रतिद्वन्द्वी का आदर किया। उन्होंने सोचा कि एक समझौता करना उत्तम मार्ग है, जिससे प्रकट हो जाय कि राजा साहब वश में आ गए। एक-दो महीने के अन्दर कर्नल को लौट जाना पड़ेगा। उसके पहले राजा को जीतने या दबाने का कुछ उपाय नहीं दीखता था। नम्प्यार के द्वारा एक समझौता सम्भव हो जाय तो वे तुरन्त जय-भेरी के साथ लौट सकते हैं। नहीं तो नम्प्यार को फाँसी पर लटकाकर सूचना देंगे कि विद्रोहियों का मेरुदण्ड तोड़ दिया है।

उस साहसी पुरुष को मृत्यु-दण्ड देने को कर्नल का मन नहीं चाहता था; लेकिन उनकी भलाई के लिए वह जरूरी था।

दोनों सेनापतियों ने एक-दूसरे से विदा ली।

कण्णवत नम्प्यार जानता था कि उसे 'मृत्यु-भोजन' खिलाकर वापस

किया है। तो भी न उसके मुख पर विवर्णता थी, न काम में चंचलता। उसने वेल्लस्ली के इरादों पर ध्यान भी नहीं दिया। उसके सोचा, राजा साहब को कल सवेरे तक समाचार मिलेगा और वे किसी प्रकार उसकी रक्षा करने का उपाय करेंगे, वेल्लस्ली जल्दी में कुछ न करेंगे। कम-से-कम चार-पाँच दिन कैद में रखकर पूछ-ताछ करते रहेंगे और उसके बाद ही देश से निकाल देंगे या कर्नल की धमकी के अनुसार और कुछ करेंगे। तलश्शेरी के दूसरे लोगों का भी यही विश्वास था।

नम्प्यार के लिए एक सुसज्जित मकान छोड़ा गया था; स्वयं वेल्लस्ली ने उसका आदर-समन्वित स्वागत किया था; इसलिए तलश्शेरी के सिविल अफसरों और जनता ने भी ऐसा विश्वास किया था। शाम को तरह-तरह के फल और सामान नम्प्यार के पास आए तो उसने सोचा कि यह चिरुतक्कुट्टी की प्रेरणा से है। सामान लाने वाले को गिरफ्तार करके वहीं ठहराया है, यह किसी को मालूम नहीं था।

अपनी नीति दूसरों को मालूम न हो जाय इस उद्देश्य से वेल्लस्ली ने यह सब किया था। रात का भोजन करके नम्प्यार पान खाने बैठा था कि दुभाषिया कर्नल की आज्ञा लेकर आया—"आप उदास न हों, हम कण्णवत जा रहे हैं, आवश्यक अनुचरों के साथ!" नम्प्यार को यह शब्द अच्छे न लगे। तो भी उस साहसी ने कुछ बोले बिना ही उस दुभाषिये का अनुगमन किया।

× × ×

दूसरे दिन सूरज निकला तो लोगों ने एक भयंकर दृश्य देखा। कण्णवत-घर के आँगन में फाँसी पर तीन शरीर—शंकर नम्प्यार और उनके दो भानजे लटक रहे थे! कम्पनी के सैनिक हाथ में बन्दूक लिये देश के प्रधान स्थानों पर पहरा दे रहे थे।

: १५ :

कण्णवत नम्प्यार की गिरफ्तारी का समाचार लेकर तलश्शेरी से दूत आया। पर राजा साहब ठीक उसी दिन कैतेरी चले गए थे। दूत को आज्ञा मिली थी कि यह बात केवल राजा साहब को ही सुनाएँ। इसलिए वह बड़े असमञ्जस में पड़ गया। दूसरे दिन दोपहर को राजा कैतेरी से लौट आए। पड़ाव पर पहुँचते ही बड़ी महादेवी ने सूचना दी कि तलश्शेरी से एक प्रधान सन्देश लेकर चत्त्रोत नम्प्यार का आदमी आया है। दूत को बुलाकर पूछ-ताछ की तो वे मूर्तिवत् खड़े रह गए। किसी भी अवस्था में वे इस प्रकार दुखी न हुए थे, इसलिए महादेवी ने सोचा कि बड़ा खतरा हुआ होगा। पति का हाथ पकड़कर वह अन्दर ले गईं।

"क्या हुआ ? कुछ आपत्ति आई है क्या ?" उसने पूछा।

राजा साहब बोले नहीं। वे दुविधा में पड़कर बहुत देर तक बैठे रहे। फिर धीर-चित्त हो अपने मन में कुछ दृढ़ निश्चय करके उन्होंने लम्बी साँस छोड़ी। उन्होंने एडच्चेन कुंकन तथा तलक्कल चन्तू को बुलाने की आज्ञा दी। वे दोनों आए। महादेवी की उपस्थिति में ही उनकी बात-चीत हो रही थी। राजा ने किसी-न-किसी प्रकार नम्प्यार की रक्षा करने की मन में ठानी थी। पर उसके लिए क्या करना चाहिए ? कुंकन नायर ने कहा कि सीधे हमला करें। चन्तू ने सलाह दी कि भीलों को भेजकर नम्प्यार को पुनः प्राप्त करें।

"यह सब बेकार है।" राजा साहब ने कहा—"तलश्शेरी किले पर सीधा हमला करना सुल्तान से भी सम्भव नहीं हो रहा था। यहाँ कोई उपाय निकालने की आवश्यकता है। अन्तन कुरुक्कल या उण्णिमूप्पन के प्रयत्न से काम न चलेगा।

"ऐसा न कहिए।" शिकायत के स्वर में कुंकन नायर ने कहा—"जो काम हम नहीं कर सकते वह उण्णिमूप्पन कैसे कर सकता है ?"

"हम कम्पनी वालों के दुश्मन हैं; तलश्शेरी में हमारा प्रवेश भी मना है। मुसलमान लोग तो अंग्रेजों के पार्श्ववर्ती हैं। यद्यपि उण्णिमूप्पन उनके पास नहीं जा सकता फिर भी उसके संघ के कई व्यापारी बे-रोक-टोक वहाँ

जा सकते हैं। उनके अतिरिक्त दूसरे किसी से यह सम्भव नहीं। इसलिए तुरन्त उण्णिमूप्पन को बुलाना चाहिए।"

इतने में किसी ने आकर कहा कि कैतेरी का अम्पू नायर दर्शन करने आया है।

"कौन, अम्पू ? जल्दी बुला ला !" राजा ने आज्ञा दी।

उन लोगों को आशा थी कि अम्पू से और भी समाचार मिलेगा। उसने देश में रहकर आवश्यक काम करने की प्रतिज्ञा की थी। वह क्यों इतनी जल्दी से यहाँ चला आया ! जरूर कुछ हुआ होगा।

अम्पू ने आकर प्रणाम किया। वह कुछ बोल न सकता था।

उसकी विवशता और मुख की विवर्णता देखकर उपस्थित लोग भी घबरा गए। राजा साहब ने उस खामोशी को तोड़ा। "बोलो तो ! सनने पर ही कुछ उपाय निकाल सकते हैं।"

राजा की आज्ञा सुनकर भी अम्पू के मुख से कुछ देर तक शब्द नहीं निकले। उन्होंने समझा कि वह कुछ कहना चाहता है, पर आवाज नहीं निकलती, अतः वे भी अपनी व्यग्रता को दबाए बैठे थे।

अम्पू ने दबी जबान से गद्‌गद् होकर कहा—"कण्णवत बाबू को कम्पनी वालों ने.........।"

"क्या कहा ?" राजा ने व्यग्रतापूर्वक पूछा।

"वे लोग राक्षस हैं; उन्होंने एक भयंकर कार्य किया !"

"कौन-सा ? क्या उन्होंने जान ले ली ?"

"उन्होंने...उन्होंने कण्णवत में ही उन्हें फाँसी पर चढ़ा दिया !"

"बाबूजी को फाँसी पर चढ़ा दिया ?" एडच्चेन कुंकन ने दुःख और आश्चर्य-मिश्रित स्वर में पूछा—"केरल का गौरव अस्त हो गया !......... वहाँ के हमारे कर्मचारी क्या कर रहे थे ?"

कुंकन की ओर देखकर अम्पू ने कहा—"शायद मैं अपराधी था। जन-श्रुति थी कि अंग्रेजों ने बाबूजी को कैद किया है। ठीक-ठीक पता लगाने के लिए मैं भी तलश्शेरी की ओर गया। तब मैंने सुना, कर्नल वेल्लस्ली ने आदर के साथ उनका स्वागत किया था। उन दोनों की बात-चीत बड़ी आशा-

पूर्ण थी। एक बड़े अतिथि की तरह कर्नल ने उनका आदर-सत्कार किया था। मैंने कल रात को उनको छुड़ाने का तैयारियाँ कीं। लेकिन चतुर कर्नल कल रात को सब की आँख बचाकर उन्हें कण्णवत ले गया और फाँसी पर चढ़ा दिया। मुझे प्रातःकाल तक इसका पता न था। समाचार पाते ही हुजूर को सूचना देने आया हूँ।"

अम्पू की बातें सुनकर राजा साहब, कुंकन और चन्तू को अनुभव हुआ कि उसकी तरफ से कुछ गलता नहीं हुई।

"तूने कुछ गलती नहीं का, दुखी न हो।" राजा ने सान्त्वना दी।

लेकिन अर्लीत नम्पी का अम्पू की बातों पर परा विश्वास नहीं हुआ। उसने पूछा"—तुमने नम्प्यार को छुड़ाने का कौन-सा बन्दोबस्त किया था?"

अम्पू ने राजा साहब की तरफ दृष्टि फेरी, मानो यह प्रश्न जवाब के योग्य ही न हो। वे आँखें बन्द करके गहरी चिंता में डूबकर निश्चेष्ट बैठे थे। यह देखकर उसने कहा—"कम्पनी वालों के विश्वास-पात्र मुखिया ने यह कार्य करने का वादा किया था। वह प्रबल है और वहाँ उसका बड़ा हाथ है। इसलिए कुछ नुकसान होने की सम्भावना न थी। लेकिन जो हुआ उसकी तो स्वप्न में भी आशा नहीं थी।"

"परन्तु नम्प्यार के पास किसी को रखना चाहिए था?" नम्पी ने प्रश्न किया।

अम्पू इसका उत्तर देना चाहता था कि इतने में राजा साहब उठे और उन्होंने चारों ओर नजर दौड़ाई और फिर कुछ कहे बिना ही अन्दर चले गए।

कण्णवत नम्प्यार की हत्या का समाचार पाकर जनता में उथल-पुथल मच गई। चुयली नम्प्यार को कैद में डाला था, इसलिए धनी लोग भयभीत हो गए थे। एक प्रबल और धनी महा सामन्त की हत्या की बात सुनकर वे सब और भी घबरा गए। यदि कम्पनी वालों को उन पर सन्देह हो जाय तो सम्भव है कि उनकी भी यही दशा हो। उनको यों डराने के उद्देश्या की प्रेरणा से कर्नल ने सचमुच यह कठोर काम कराया था।

अमीर लोग डरकर निष्क्रिय हो जायँ, तो भी इस भयंकर कृत्य से राजा साहब के प्रति जनता की जो श्रद्धा और प्रेम है उसकी कमी या नाश नहीं हो सकता—यह बात कर्नल वेल्लस्ली, अलीत नम्पी आदि को मालूम नहीं थी। आश्चर्य की बात है, राजा साहब के दल के होने पर भी नम्पी की यह दशा हुई।

उस दिन राजा साहब बाहर नहीं आए। वे अपने मन्त्रियों से भी न मिले। दूसरे दिन सवेरे अम्पू को बुलाया गया। उसे आज्ञा मिली कि वह तुरन्त अपने स्थान पर लौटे, फिलहाल कुछ हलचल न मच जाय तथा तलश्शेरा में होने वाली बातों की खोज करके यथा-काल सूचना दे दे। राजा साहब की आज्ञा पाये बिना किसी से लड़ना भी मना था।

राजा की उत्थान-शक्ति की पूरी जानकारी रखने वाले अम्पू नायर को यह आज्ञा सुनकर आश्चर्य हुआ। वे इसके सम्बन्ध में और कुछ बोलने को तैयार न थे। इसलिए वह विदा लेकर चुपके से चला आया। उसने समझा कि वे किसी गहरी चिन्ता में डूब गए हैं, अतः ऐसी दशा में वे कुछ काम करने को तैयार नहीं होंगे। पहाड़ से उतरने के पहले वह एडच्चेन कुंकन से मिला और राजा का हुक्म सुनाया। उसने कहा—"चिंता न करो, समय आने पर वे जरूरी कार्रवाई करेंगे।"

कण्णवत नम्प्यार को फाँसी पर चढ़ाया, उसकी सम्पत्ति जब्त कर ली गई; इतने पर भी राजा साहब को निष्क्रिय देखकर लोग दुखी हुए। अलीत नम्पी आदि सेवक तथा कोट्टयम देश के नायर सामन्त ने राजा की इस अचं-चलता को कमजोरी माना। राजा साहब की दिनचर्या में भी कुछ अन्तर नहीं दीखता था। शाम को वे नियमानुसार नम्पी के साथ शतरंज खेलते, पर उस समय कुछ अन्यमनस्क-से दिखाई पड़ते, रात को 'कथकली' होती और वे उसका आस्वादन करने के लिए थोड़ा समय व्यतीत करते।

सीधे-सादे नम्पी को यह सब दुःखदायक लगा। वह सोचता, ये राजा-महाराजा प्रेम करना नहीं जानते। अपने घनिष्ठ मित्र के मर जाने पर भी राजा साहब पहले की तरह गाने-नाचने में समय बिता रहे हैं।

राजा के लोगों में दूसरी किम्वदंतियाँ भी चल रही थीं। पयम घर के चन्तू

की चालबाजी से लेकर कई शंकाएँ कुछ प्रधान व्यक्तियों के मन में उत्पन्न हो गईं। अम्पू और चन्तू में नाता होने के कारण अम्पू पर भी सन्देह होने लगा था। लोग कानाफूसी कर रहे थे कि तीन महीने से राजा पहाड़ पर रहते हैं, तो भी अम्पू देश में ही क्यों रहता है? उन्होंने उसे कर वसूल करने तथा देश के जरूरी काम चलाने के लिए नियुक्त किया था, यह बात साधारण जनता नहीं जानती थी। लोगों का विश्वास था कि अम्पू किसी कुटिल विचार से राजा के साथ जंगल नहीं जाता।

कण्णवत नम्प्यार की जान न बचाने के कारण जनता ने अम्पू को कोसा। यदि वह ठीक तरह से काम करता तो कण्णवत के लोग कम्पनी की सेना को वहाँ से मार भगाते। नहीं तो कण्णवत को ले जाते समय मार्ग में या तलश्शेरी में ही नम्प्यार की रक्षा कर सकता था। संक्षेप में लोग अम्पू पर दोष लगाने लगे थे।

नम्प्यार और चन्तू में मनमुटाव था यह सब जानते भी थे। नौजवानी से उत्पन्न अम्पू की उद्दंडता राजा के कुछ मन्त्रियों और सेनापतियों को असह्य लगती थी। राजा भी यह जानते थे, इसलिए उसे देश में ही काम के लिए नियुक्त किया।

अम्पू पर ही नहीं, प्रायः सभी कैतेरी वालों पर लोगों को संदेह होने लगा। राजा साहब के आगमन के समय कैतेरी में होने वाली वह घटना एक सप्ताह के अन्दर सब लोग जान चुके थे। वे कहने लगे थे कि राजा साहब को पकड़ लेने के लिए चन्तू और कुरुं प्रदेश के राजा के आदमियों ने घर को घेर लिया था, पर अपनी अमानुषिक शक्ति से वे बच गए थे, महादेवी माक्कम विरोधियों से मिलकर अपने पति को धोखा दे रही थीं, नहीं तो रात के समय गुप्त रूप से वहाँ पहुँचकर राजा को घेरने की पहले से तैयारियाँ करना सम्भव न था।

राजा साहब की उपस्थिति में भी अलीत नम्पी ने अम्पू की उदासीनता की ओर संकेत करके चार शब्द सुनाए थे, इससे अनुमान किया जा सकता था कि किस प्रकार की शंकाएँ प्रचलित थीं। सचमुच इक्कण्टन नायर ने सबसे पहले जनता के बीच में इस किम्वदन्ती का उद्घाटन किया था। जनता पर

अम्पू का जो प्रभाव है उसे दूर करने के लिए स सियार को ऐसी तरकीब सूझी थी। पप्रयम घर के चन्तू ने भी देखा कि अपने मार्ग का कांटा दूर करने के लिए यह अच्छा मौका है, अतः उसने भी इक्कण्टन नायर के स्वर-में-स्वर मिलाया।

ये लोग माक्कम पर भी कालिख लगाते रहे। उन्होंने कहा कि महादेवी वेश्या है, कुलांगार है, सबकी आँख बचाकर वह कहीं चली गई थी और तीन-चार दिन के बाद ही वापस आई, राजा को बुलाकर उसने उन्हें कम्पनी वालों को सौंप देने की कोशिश की आदि।

अम्पू को अनुभव हुआ कि जहाँ-जहाँ वह जाता है, वहाँ-वहाँ लोग उसे अविश्वास की दृष्टि से देखते हैं, पर खुले आम कुछ नहीं बोलते। किसी-किसी काम पर वह नियमानुसार बड़ों के घर जाता तो गृहपति से मिलना कठिन हो जाता, यदि मिलता तो राज्य-सम्बन्धी मामलों में दिलचस्पी प्रकट न करते, धन, आदमी या रसद माँगता तो आनाकानी करते—यों उसने देखा परिस्थिति बिलकुल बदल गई है।

गुप्त रूप से तलश्शेरी की बातें समझ लेने के लिए जब अम्पू चन्त्रोत गया तो उसे सच्ची बातें मालूम होने लगीं। चन्तू के आदमियों से बचने के लिए वहाँ पहुँचने के बाद अम्पू कण्णवत नम्प्यार को छुड़ाने का उपाय ढूँढ़ने पानूर गया था। लेकिन काम के धक्के के कारण थोड़ी देर के लिए वहाँ रह न पाया था। उण्णिनङ्ङा को आँख भरकर देखना भी सम्भव न हुआ। चन्त्रोत बाबू ने नियमानुसार अपने अभ्यागत का स्वागत किया। अम्पू से मिलकर वे बड़े खुश हुए और उसके साथ देर तक बातचीत करते रहे।

उण्णिनङ्ङा ने सुना कि अम्पू चन्त्रोत आया है, तो वह अपने हृदयेश्वर से मिलने की प्रतीक्षा में अन्तःपुर में खड़ी थी। शाम होने पर भी उसको आते न देखकर वह उत्कण्ठाकुल हो गई। अप्रगल्भा कन्याओं का हृदय अपने प्राण-प्यारे की याद आने पर हमेशा उत्कण्ठाकुल हो जाता है। चार घड़ी उसके लिए चार युग के समान थीं।

मकान से बाहर आए तो बाबूजी ने अम्पू से कहा—"वह लड़की तुम्हारा नाम जपकर दिन काट रही है। उससे बातें करके चले जाओगे न ? अन्तःपुर

में मिलोगी, वहाँ जा सकते हो।"

अम्पू के हृदय की गहराई में उण्णिनङ्ङा की याद अमर थी, पर समतल में अन्य कई बातें लहराती रहने के कारण वह ऊपर नहीं आ सकती थी। फिर चन्त्रोत नम्प्यार का वचन सुनते ही उसके स्मृति-पथ में उस कन्या का रूप साफ दिखाई दिया जो उसके कन्धे पर निर्मलता के प्रतीक के समान बहुत देर तक पड़ी रही थी। उसकी वीरता के स्मरण से अम्पू के रोंगटे खड़े हो गए। उण्णिनङ्ङा ने उसे बचाने के लिए अपने मान और प्राणों की परवाह तक नहीं की थी। कभी-कभी अम्पू के मन में अकारण उसका ध्यान हो आता था। अब वह समझने लगा कि वह प्रेम का अंकुर था। युवा-काल की प्रारम्भिक दशा में उसकी पत्नी की मृत्यु हो गई थी। उसके बाद अम्पू राजा के साथ जंगल चला गया था और फिर उसे गृह-जीवन का अवसर नहीं मिला था। हमेशा राजा साहब के कार्यों में लगा रहने के कारण उसके मन में ऐसा विचार भी उत्पन्न नहीं होता था।

अम्पू अन्तःपुर की ओर चला। उण्णिनङ्ङा ने कन्याओं की सहज मुस्कान से उसका स्वागत किया।

"सकुशल तो हो न?" अम्पू ने पूछा—"उस दिन कम्पनी वालों से तुमने मुझे बचाया था, उसके लिए मैं किस प्रकार आपका धन्यवाद करूँ?"

"आपने तो इस निराधार जीवन को सहारा दिया!" उण्णिनङ्ङा ने कहा—"इसके लिए मैं जीवन-भर आपकी कृतज्ञ रहूँगी।"

दोनों प्राणी एकाकी थे, पर सम्भाषण जारी रखने में उनको कठिनाई अनुभव हुई। उण्णिनङ्ङा की वाणी में मन की बात प्रकट करने की शक्ति नहीं थी। हाव-भाव से उसका दृढ़ अनुराग व्यजित था। युद्ध-क्षेत्र तथा राज-काज में अम्पू को खूब अनुभव प्राप्त हुआ था. पर इस प्रकार के प्रसंगों पर वह अपना कर्तव्य नहीं जानता था। दोनों मौन बैठे थे, फिर भी उस मूकता में वाक्पटुता से भी अधिक विचार-विन्यास की शक्ति थी।

आखिर अम्पू ने उस निस्तब्धता को भंग किया—"चिन्ता न करो! सब मंगलमय हो जायगा।"

यह शब्द उण्णिनङ्ङा के लिए एक आशीर्वाद ही नहीं बल्कि प्रणय-प्रतिज्ञा

भी थीं।

उत्तर में उसने केवल इतना ही कहा—"भगवती श्रीपोर्कली का आशीर्वाद साथ रहे।"

"तो जल्दी आकर मिलने की कोशिश करूँगा।" अम्पू यह कहकर विदा हो गया।

अपने तथा अपनी बहन के सम्बन्ध में प्रचलित जनश्रुति का संक्षिप्त रूप अम्पू को चन्त्रोत बाबू से मालूम हो गया था। उन्होंने संकेत किया था कि उसका आविर्भाव तलश्शेरी से ही हुआ है। राजा साहब के दल में झगड़ा पैदा करने के लिए अंग्रेजों के जासूस झूठी अफवाहें फैला रहे थे, यह चिरुतक्कुट्टी के जरिए बाबूजी ने समझ लिया था। अम्पू जानता था कि इक्कण्टन नायर तथा चन्तू का इसमें बड़ा हाथ है और अफवाहें फैलाने वाला चाहे कोई भी हो, पर कान लगाकर सुनने वालों की कभी कमी नहीं हो सकती।

यह सब सुनकर अम्पू का मन कुण्ठित हो गया। इस किम्वदन्ती से राजा साहब को होने वाले नुकसानों की चिन्ता ही सचमुच उस स्वामि-भक्त के खेद का कारण थी। अब वह अर्लात नम्पी की बातों का मतलब समझने लगा। मगर उसने देखा, राजा को अब भी उस पर बड़ा विश्वास है, अतः उसने इसके सम्बन्ध में कुछ भी न करने का निश्चय किया।

अम्पू और माक्कम के प्रति राजा के मन में अविश्वास उत्पन्न करने के लिए कुछ लोगों ने भरसक परिश्रम भी किया था। अर्लात नम्पी ने बड़ी महादेवी से एक-दो बार इसकी चर्चा भी की थी।

तब वह मनस्विनी कहती—"आप चुप रहें! माक्कम राजा साहब को कदापि धोखा नहीं देगी। ऐसी बातें न कीजिए।"

उस ओर अपना परिश्रम विफल देखकर भी नम्पी हार मानने वाला नहीं था। राजा से उसने सब विस्तार से कहा। सब सुनने के बाद मुहब्बत-भरे स्वर में वे बोले—"नम्पी, तुम सीधे-सादे हो! तुम्हें मालूम नहीं, शत्रु हमारे नाश के लिए क्या-क्या कर रहे हैं। निकटवर्ती लोगों में अविश्वास पैदा करना राजनीति में एक प्रधान कार्य है।"

नम्पी इस उत्तर से प्रसन्न हो गया।

: १६ :

कण्णवत नम्प्यार को फाँसी देने पर भी राजा साहब को इस प्रकार उदासीन देख कर कर्नल वेल्लस्ली को आश्चर्य हुआ। एक महीने से बिलकुल शान्ति थी। केवल वयनाड से समाचार आ रहा था कि वहाँ की दशा तनिक अस्थिर है। मणत्तना, मानंचेरी आदि स्थानों में शान्ति विराजमान थी। स्वयं राजा साहब भी शतरञ्ज, 'कथकली' आदि में अपना समय बिता रहे थे।

ऐसी असाधारण शान्ति भी पहले नीति-कुशल वेल्लस्ली के सन्देह का कारण बनी थी। परन्तु कण्णवत वाली भयंकर घटना के बाद एक महीना बीत गया, फिर भी राजा को कुछ करते न देखकर कर्नल ने सोचा कि वे भयभीत हो गए हैं तथा देश में शान्ति फैल गई है। उनके कलकत्ता जाने की खबर भी उन्हींके जरिए प्रचलित होने लगी।

उन्होंने गवर्नर-जनरल को सब शान्त होने की सूचना दी। अपने साप्ताहिक पत्रों में वे इसी बात की चर्चा करते थे। उन पत्रों का सारांश था : राजा साहब बदला लेने का परिश्रम नहीं करते, तो भी केरल में इधर-उधर दुर्ग बनाकर सेना खड़ी करनी चाहिए, नायर लोगों को निहत्था करना है घोषणा की जाय कि जंगलों में भटकने वाले राजा को कोई रसद न पहुँचाये, ऐसे बन्दोबस्त किये जाने पर केरल के शान्ति-भंग के लिए एक कुत्ता भी न भूँकेगा और कलकत्ता जाने के पहले ही स्वयं कर्नल ने जरूरी कार्यवाही करने का निश्चय किया है।

अपने को वापस बुला लेने की प्रतीक्षा में वे दिन बिताने लगे।

इधर-उधर छोटे-छोटे किले बनाए गए। कोयिक्कोड से लेकर उत्तर के प्रधान स्थानों में ये किले सिर उठाए खड़े थे। वहाँ बन्दूकें और सैनिक-दल एकत्रित थे, पर राजा से लड़ने के लिए नहीं, बल्कि मुख्य नागरिकों को डरा कर उन्हें राजा साहब के दल से अलग करने के लिए।

फिर उन्होंने घोषणा की कि छः महीने के अन्दर-अन्दर नायर लोगों के पास जितनी बन्दूकें और तलवारें हैं, सब कम्पनी वालों को सौंप देनी चाहिएँ और ऐसा न करें तो कड़ी सजा दी जायगी। कर्नल इसकी प्रतिक्रिया से पूर्णतया परिचित था। दूसरी घोषणा से उन्होंने राजा साहब और उनके अनु-

यायियों को रसद पहुँचाना भी रोक दिया।

उन्होंने खुशी से भाई को सूचना दी कि केवल राजा को ही पराजित नहीं किया बल्कि शान्ति के स्थायित्व का इन्तजाम भी किया है। उन्हें तुरन्त महासेनापति बनने का विचार था। मराठों से लड़ने की पूरी तैयारी हो चुकी थी। जैसी कि सम्भावना थी मार्क्विस वेल्लस्ली ने अपने भाई को भारत की अंग्रेजी सेना का सेनापति बनाने की आज्ञा जारी की।

कलकत्ता से भेजे हुए पत्रों को तलश्शेरी पहुँचने में दो हफ्ते से अधिक समय लगता था। कर्नल ने किसी-न-किसी प्रकार इतने दिन बिताए। वे अपनी यात्रा का प्रबन्ध कर चुके थे।

तलश्शेरी में राजा साहब के सहायकों को दबाने का यत्न भी सफल होने वाला था। यह सिद्ध नहीं हो पाया कि उनके संघ का नेता कौन है। केवल एक बात मालूम हो गई कि बेबर की प्रियतमा चिरुतक्कुट्टी के द्वारा यह सब हो रहा है। उन्होंने सोचा—यदि चिरुतक्कुट्टी को गिरफ्तार भी करें तो केरल से जाने के पहले वे उस मुकद्दमे का फैसला नहीं सुना सकेंगे। उनके जाने पर बेबर किसी तरह उसे छुड़ायगा, उन्हें यह शंका थी। सिविल अधिकारी उसको दण्ड नहीं देंगे। इस परिस्थिति में कर्नल ने अपने दुभाषिये को बुलाकर सलाह ली।

"केरल वर्मा के तलश्शेरी वाले सहायकों को निर्मूल न करके हम चले जायँ तो फिर भी यहाँ विद्रोह हो जायगा। यह हमारे लिए बड़े अपमान की बात होगी। तुम्हारी क्या राय है?"

"ठीक है।" सिक्कुवेरा ने कहा—"मगर समय की कमी है, अतः इस अवस्था में हम क्या कर सकते हैं?"

"किन-किन लोगों के विषय में पूर्ण प्रमाण मिल गए हैं? यदि उन प्रमाणों का खण्डन नहीं किया जा सकता तो बेबर माने या न माने सैनिक-नियम के अनुसार हम जरूरी कारंवाई कर सकते हैं।"

"सुपरवाइजर साहब के दुभाषिये लई पेरेरा के सम्बन्ध में आवश्यक प्रमाण मिल गए हैं। राजा के एक प्रधान सहायक उण्णिमूप्पन के नाम भेजे हुए उसके अनेक पत्र हमारे पास आये हैं। राजा के लिए मय्यपी से बन्दूकें,

बारूद आदि भी खरीदकर भेजी थीं, इसका भी प्रमाण है।"

"अब तो वह व्यापार रोक दिया गया है। केरल वर्मा बन्दूकें रखें। गोलियाँ आदि अब से नहीं मिलेंगी।"

"पेरेरा को गिरफ्तार करने का पूरा प्रमाण मिल चुका है। सैनिक नियम के अनुसार लड़ाई में शत्रुओं की सहायता करने के अपराध में दण्ड भी दिया जा सकता है।"

"क्या पेरेरा इन सबका नेता है?" कर्नल ने पूछा।

"जी नहीं, उनके संघ का नियन्त्रण राजा का कोई आदमी करता है। मेरा अनुमान है कि वह चिरुतक्कुट्टी द्वारा हो सकता है। चिरुतक्कुट्टी को इस संघ के साथ जोड़ने वाले तन्तु का पता अब तक नहीं लग पाया। उस नायर ने यहाँ सूचना दी थी कि एक दिन उसने अम्पू नायर को उसके बंगले से आते देखा था।"

"और कुछ प्रमाण? मेरी भी यही राय है कि उस स्त्री के द्वारा यह सब हो रहा है। पेरेरा केवल उसका एजेण्ट है। चिरुतक्कुट्टी को कहाँ से आज्ञा मिलती है, यह जानना चाहिए। राजा के आदमियों के साथ उसका सम्बन्ध स्थापित करना भी आवश्यक है। पेरेरा को पकड़ें तो वह सब अपराध स्वीकार करेगा कि नहीं?"

"स्वीकार कराने का उपाय होगा। तो भी वह सुपरवाइजर का दुभाषिया है। इसलिए सैनिक उसको गिरफ्तार नहीं कर सकते। बम्बई-सरकार झगड़ने आयगी। बम्बई कलकत्ता से बहुत नजदीक है न?"

कर्नल वेल्लस्ली ने सिक्कुवेरा का कहना सही समझा। तो भी एक स्त्री और नौकर को वे अपनी तैयारियाँ विफल नहीं करने देंगे। कुछ सोचकर उन्होंने कहा—"नियम के विरुद्ध मैं कुछ करना नहीं चाहता। तो भी इतनी बड़ी-बड़ी बातें उन पर अवलम्बित हैं तो हम दूसरा उपाय नहीं कर सकते?"

सिक्कुवेरा कर्नल का उद्देश्य समझ गया। कहा—"यदि कर्नल साहब की अनुमति हो तो······।"

कर्नल ने बात काटकर कहा—"किसी प्रकार चिरुतक्कुट्टी पर मुकद्दमा चलाना चाहिए। उसके लिए हमें पूर्ण प्रमाणों की आवश्यकता है।"

उस दिन शाम को लूई पेरेरा, जो तलश्शेरी के उपसम्राट् होने का दावा करता था, अपने घर से किसी तरह गायब हो गया।

इस बात ने तलश्शेरी के नागरिकों में बड़ी हलचल मचा दी। हर एक ने अपनी-अपनी इच्छा और प्रतिभा के अनुसार इसकी व्याख्या की। लोगों का विश्वास था कि कण्णवत नम्प्यार को फाँसी देने की प्रतिक्रिया में राजा के लोगों ने ऐसा किया है। जो पेरेरा सुपरवाइजर की परछाईं है, उसको सताने का साहस और किसमें होगा? बेंबर का भी यही विश्वास था। इस बात को फैलाने वाला सिक्कुवेरा ही था। "क्या पयशी के आदमी यहाँ आकर भी आक्रमण करने लगे?" उसने पूछा

सच्ची बात चिरुतक्कुट्टी और राजा के कुछ मित्र जानते थे। जब कण्णवत बाबू के पास फल आदि ले जाने वाले को वापस आता न देखा तो उसे चिरुतक्कुट्टी ने आपत्ति का चिन्ह माना। कई बातों से उसने समझ लिया था कि कर्नल और सिक्कुवेरा उससे वैर रखते हैं। वे उसके सबन्ध में गुप्त रूप से अन्वेषण कर रहे थे। अब कर्नल की आज्ञा से ही पेरेरा पकड़ा गया होगा। वह उनका उद्देश्य भी जानती थी। पेरेरा व्यापार-सबन्धी मामलों में चतुर था, पर राज-काज में वह उसके उपदेश के अनुसार काम करता था। कर्नल तो व्यापार-सम्बन्धी बातों में दिलचस्पी नहीं रखते थे। इसलिए चिरुतक्कुट्टी ने सोचा, राजनीति ही पेरेरा की गिरफ्तारी का कारण होगी और सचमुच यह शर स्वयं उसीको लक्ष्य करके छोड़ा गया होगा।

एक महीने में राजा उदासीन हो गए थे, यह बात भी उससे छिपी नहीं थी। वह जानती थी कि वह विचार में डूबे रहते हैं। तो भी उसके विचार में राजा साहब की निष्क्रियता बगावत करने वालों की कमजोरी का चिन्ह है। बेंबर ने भी ऐसा समझा। उसने कहा—"पयशी, जो अब तक चीता था, आगे चलकर केवल जंगली सियार बन जायगा।"

बहुत दिनों से अम्पू नायर भी कुछ संदेश नहीं भेजता था। चिरुतक्कुट्टी ने उसे भी राजा साहब की कमज़ोरी का एक और चिन्ह माना। कहीं शुभ-लक्षण दिखाई नहीं देता था, अतः वहाँ से हटकर किसी दूसरी जगह पर जा बसने की भी उसकी इच्छा थी।

मगर दो हफ्ते के अन्दर वेल्लस्ली कलकत्ता जाने वाले है, यह बात उसे आश्वासन दे रही थी। वेल्लस्ली चले जायँ तो फिर उसे डरने की कोई बात न थी। राजा साहब जरूर कुछ करेंगे और अम्पू के आदमी बेकार नहीं बैठेंगे। मगर अम्पू का पता नहीं था। इसलिए उसने चन्त्रोत नम्प्यार को सूचना देने का निश्चय करके वहाँ एक आदमी भेजा।

पेरेरा कर्नल के बँगले में लाया गया था। हथकड़ी-बेड़ियाँ पहनाकर वहाँ एक कमरे में उसे ठहराया। सिर्फ कर्नल, सिक्कुवेरा और कर्नल के कुछ ईमानदार नौकर उस कमरे मे प्रवेश कर सकते थे। एक दिन उसे भूखा रखने के बाद कर्नल ने उससे प्रश्न करना शुरू किया। आँखे लाल करके उन्होंने कहा —"राजा के दल के कई मुख्य व्यक्ति पराजित होकर हमारी शरण में आये हैं। उनसे हमें तेरी चाल मालूम हो गई। उण्णमूप्पन को तूने जितने पत्र भेजे सब-के-सब हमारे हाथ में आ गए है। इसके परिणाम में तुझे फाँसी पर तड़प-तड़पकर मृत्यु का आलिंगन करना पड़ेगा।" कुछ रुककर उन्होंने कहा— "मै तेरी सब सम्पत्ति जब्त करने का हुक्म दे चुका। यहाँ की ही नहीं, कोचीन, बम्बई आदि जगहों में तेरी जितनी सम्पत्ति है वह सब कम्पनी अपने अधिकार में ले लेगी। अपनी चालाकी के लिए तुझे प्राण-दंड मिलेगा।"

पेरेरा कर्नल को अच्छी तरह जानता था, इसलिए उसने इन शब्दों को निरी धमकी न समझा। महासामन्त कण्णवत नम्प्यार को भी उन्होंने फाँसी पर लटका दिया, तब एक साधारण नौकर को मृत्युदंड देना उनके लिए बड़ी बात है ही नही। उसने कल्पना मे अपने को फाँसी पर पैर पटकते देखा; जीवन और मृत्यु के बीच में घोर यातनाएँ सहते देखा—कैसा दारुण दृश्य था! उसका दृढ़ संकल्प था कि धन ही जीवन का ध्येय है, इसलिए अपनी संपत्ति के नाश का विचार भी उसके असह्य दुःख का कारण हो गया।

सिक्कुवेरा पेरेरा की विचार-गति समझ गया। पोर्चुगीज भाषा में उसने पेरेरा को सान्त्वना दी। सारा अपराध स्वीकार करके उसके प्रणेताओं के नाम और उद्देश्य बता दे तो वह कम-से-कम उसकी जान बचाने को तैयार था। पेरेरा उसके लिए तैयार हो गया। उसने कर्नल से कहा—"हुजूर! इस दास ने स्वेच्छा से कुछ नहीं किया, उस डायन की प्रेरणा से किया है। कृपा

करके मुझे बचाइये ! मैं कम्पनी का दास हूँ। उसके लिए काम करता हूँ और उसीका नमक खाता हूँ। दूसरों की प्रेरणा के कारण मुझसे गलती हो गई है।"

"मैं तेरी प्रार्थना पर विचार करूँगा।" कर्नल का स्वर व्यंग्यपूर्ण था —"सच्ची बातें विस्तार से लिख देने पर विचार करूँगा कि तुझे क्या दण्ड देना चाहिए।"

शेष बातें सिक्कुवेरा को सौंपकर कर्नल वापस चले गए।

लूई पेरेरा ने सब अपराध चिरुतक्कुट्टी पर लगाकर सफाई दी। —वह अत्यन्त चतुर थी, अतः उसके जाल में वह फँस गया था ! उसका आज्ञा-कारी-मात्र बन जाने के कारण सम्भव है कि अनजान में कुछ अपराध उससे भी हुआ हो ! मूसा सरकार द्वार राजा को बन्दूकें और रसद मिलती हैं।

पेरेरा से ये बातें समझ लेने के बाद सिक्कुवेरा ने उत्तर दिया—"ठीक होगा, पर मालूम नहीं यह कर्नल को स्वीकृत होगा या नहीं। स्वयं वे मूसा को पहचानते हैं। कहा जाता है चिरुतक्कुट्टी तुम्हारी एक सहकारिणी है।"

"सचमुच मैंने ही उसे इस पद पर पहुँचा दिया। लेकिन जब से वह सुपरवाइजर के साथ रहने लगी तभी से हम दोनों का नाता भी बदलने लगा। वह मुझे अपना नौकर समझती है। देखिए उसका अहंकार !"

"कौन उसको इस तरह के मामलों में सलाह देता है ? वह अपनी ही बुद्धि के बल से सब कार्य करती है, यह विश्वास करने योग्य नहीं।"

"मैं भी उसका रहस्य नहीं जानता।" पेरेरा ने कहा—"मेरा विश्वास है कि मूसा ही उसका उपदेशक है। यह भी नहीं कि मुझसे परिचित होने के पहले उसे राजा के आदमियों में किसी से प्रेम था। उसका नाम अम्पू नायर है। सुपरवाइजर के सामने वह सिंहनी होती तो अम्पू नायर के पास बिल्ली बनती। वह उसकी सभी आज्ञाओं का पालन करने को तैयार रहती है। मैंने आजकल ही यह सब समझ लिया। चिरुतक्कुट्टी ने एक बार मुझसे पचास हजार स्वर्ण-मुद्राएँ माँगी थीं। बहुत कोशिश करने पर मुझे केवल चालीस हजार मिलीं। अपने आभूषणों को गिरवी रखकर उसने शेष दस हजार स्वर्ण-मुद्राएँ जमा कीं। मैंने अपनी आँखों से देखा कि उसने सारे-का-

सारा पैसा अम्पू को सौंप दिया।"

"इसके लिए भी मेरे पास प्रमाण है ?" सिक्कुवेरा ने पूछा।

"यह मेरी आँखों-देखी बात है। यह कर्नल साहब के आगमन के बाद दो सप्ताह बीतने पर हुआ था। उस समय राजा के साथ पुनः झगड़ा प्रारम्भ नहीं हुआ था।"

"क्या इन दोनों के नाते के सम्बन्ध में कुछ नहीं जानते ? यों इच्छानुसार धन देने का कोई बड़ा कारण होगा।"

"मैंने इसके बारे में कई बार प्रश्न किया था, बहुत खोज भी की थी, मगर कुछ लाभ न हुआ। कोई उत्तर न देती थी। एक बार केवल इतना कहा था—'व मेरे लिए प्राणों से भी प्यारे हैं'।"

"उसका पूर्व-चरित क्या है ?" सिक्कुवेरा ने पूछा।

"विविध प्रकार की किम्वदन्तियाँ प्रचलित हैं, पर बहुत अन्वेषण करने पर भी उसके कुटुम्ब या सम्बन्धी का कोई पता नहीं मिला। कहते हैं कि किसी बड़े घर की युवती को टीपू के आदमियों ने गुलाम बना लिया था और जब उनसे छुटकारा पाया तो समाज-भ्रष्ट हो जाने के कारण वह निरवलम्ब होकर भटक रही थी कि......।"

"तभी तुम्हारे आदमियों ने उसे पकड़ लिया, क्यों ? अच्छा, अम्पू नायर से पूर्व परिचय होगा। वह साधारण स्त्री नहीं !"

सिक्कुवेरा ने आवश्यक बातें समझ लीं। अब दूसरे प्रकार की खोज करनी चाहिए। वह लौट गया।

: १७ :

अपने गृह से स्वयं बहिष्कृत होकर उण्णिअम्मा और चन्तू उस दिन रात को इक्कण्टन नायर के यहाँ आए। नायर ने खुशी से उनका स्वागत किया। उसका खयाल था कि कम्पनी वालों का शासन-काल आ जाने पर कैंतेरी

की सम्पत्ति वापस मिलने की सुविधा होगी। उस चतुर नायर ने सोचा कि अम्पू का वापस आना सम्भव नहीं, जरूरत पड़ने पर माक्कम पर कोई अपराध लगाकर उसे बाहर निकाला जा सकता है और ऐसी दशा में कँतेरी की सम्पत्ति की एक-मात्र अधिकारिणी उण्णिअम्मा हो जायगी। इस प्रकार परिस्थिति को अनुकूल देखकर उस कुलपति ने आज्ञा दी—"उण्णि भी हमारे यहाँ रहे।"

चन्तू नायर को उत्तरी घर का निवास संतोषजनक था। न केवल इक्कण्टन नायर के विलायती मद्य का मजा उसे यों आकर्षित करता था, बल्कि कुलपति की नवयुवती पत्नी चिन्नम्मालु का भी इसमे कुछ हाथ था। इक्कण्टन नायर अपने को वृद्ध नहीं मानता था, तो भी वह स्वस्थ युवती पत्नी उसकी परवाह नहीं करती। उसे दुःख होता कि बुद्धिमत्ता और रसिकता में किसी से पीछे न होने पर भी, एक प्रौढ़ा नायिका होने के सभी गुण मौजूद होने पर भी, उसे एक बूढ़े की सहधर्मिणी बनना पड़ा। यह भी नहीं, पति के 'पूजा-पाठ' मे वह भी भाग लेती, अतः विलायती मद्य का स्वाद लेने का अवसर उसे भी मिलता।

कुछ दिन हुए चन्तू और चिन्नम्मालु में प्रेम हो गया था। इक्कण्टन नायर अंग्रेजों के बल, कुरुंप्रदेश के राजा के गुण आदि के विषय में चन्तू से बढ़ा-चढ़ाकर व्याख्यान करने लगता तो चिन्नम्मालु भी वहाँ आती-जाती और पान खिलाती रहती। अन्त मे इक्कंटन नायर चन्तू को वश में ला सका। उसके फलस्वरूप कम्पनी वालों और कुरुं प्रदेश के राजा से चन्तू को जितने पुरस्कार मिले थे सब-के-सब चिन्नम्मालु की पेटी में आ गए।

उण्णिअम्मा को उत्तरी घर में ठहराकर दूसरे दिन सवेरे चन्तू और इक्कण्टन नायर तलश्शेरी की ओर चल दिए। अपनी इच्छाओं की सफलता पर उन्हें सन्देह नहीं था। उनको कृण्णवत नम्प्यार की हत्या की बात सिक्कुवेरा से मालूम हो गई। यह सुनकर इक्कण्टन नायर ने अपनी राय प्रकट की—"अब की बार राजा फाँसी पर लटका दिया जायगा।" चन्तू ने कर्नल से प्रार्थना की थी कि उसकी सेवाओं के बदले में कण्णवत की सम्पत्ति उसे सौंप देने की कृपा हो, अब इस बात की ओर उसने सिक्कुवेरा का ध्यान आकर्षित

किया ।

"शत्रु शस्त्र रखें । अपने सहायकों को कम्पनी कभी नहीं भूलेगी ।" सिक्कुवेरा ने कहा ।

सिक्कुवेरा को चन्तू की आवश्यकता थी । चिरुतक्कुट्टी के पूर्व चरित की खोज करके सात दिन के अन्दर सूचना देने की आज्ञा लेकर चन्तू तलश्शेरी से निकला । दुभाषिये ने इक्कण्टन नायर को एक दूसरी बात के लिए नियुक्त किया । उसके अनुसार इक्कण्टन नायर को घोषणा करनी पड़ती थी कि राजा साहब ने कम्पनी वालों का आधिपत्य स्वीकार करने का निश्चय किया है और पेंशन लेकर श्रीरंगपट्टन में रहने की अपनी इच्छा प्रकट करते हुए उन्होंने कर्नल के नाम प्रार्थना-पत्र भेजा है । यह कर्नल की कूटनीति थी । इसके दो प्रयोजन थे, इस जनश्रुति के फैल जाने से राजा साहब के सहायक सामन्त लोग कम्पनी की शरण और सेवा में आ जायँगे । छः हफ्ते से राजा साहब उदासीन थे, यह सामन्तों के भय और चिन्ता का कारण भी हुआ था । इसलिए अब इस किम्वदन्ति के लिए परिस्थिति अनुकूल थी ।

कर्नल की स्वार्थपरता दूसरे प्रयोजन का आधार था । उन्होंने गवर्नर-जनरल को सूचना दी थी कि सब शान्त हो गया है, पर बेबर ने बम्बई सरकार के नाम क्या लिखा है, यह उन्हें मालूम नहीं था । उन्होंने सोचा कि ऐसी किम्वदन्ति सुनने पर बेबर तुरन्त बम्बई-सरकार के नाम लिखेगा और यह उनकी सूचना के लिए लाभदायक बन जायगा ।

सिक्कुवेरा की आज्ञा सुनकर इक्कण्टन नायर फूला नहीं समाया । वह इतना सन्तुष्ट था मानो राजा साहब का काम तमाम हो गया हो । अब इस देश में उसका निरादर करने वाला कौन हो सकता है ?

सिक्कुवेरा से विदा लेकर चन्तू और इक्कण्टन नायर ने कर्तव्य-पालन के लिए अपनी-अपनी राह ली । तीसरे दिन कैतेरी में परस्पर मिलने का निश्चय भी हुआ था ।

राजा साहब के चले जाने के बाद माक्कम की दशा पहले से भिन्न हो गई । तब तक वह विरहिणी-जैसी थी, पर अब प्रसन्न तथा हँसमुख बन:

गई । नहाना-धोना, फूल पहनना, सुगन्धित वस्तुओं का लेपन करना आदि शारीरिक संस्कारों में वह ध्यान देती । जब राजा साहब उसे घर में छोड़कर जंगल चले गए थे तो वह अपने को प्रोषित-पतिका समझकर दुःख का अनुभव कर रही थी । "फिर कब पति-देव से मिल सकूँगी ?—क्या यह कभी संभव है ?" ऐसा विचार भी उसके मन में उदय होता था । पुरली पहाड़ की यात्रा ने उसके इन सन्देहों का मूलोच्छेदन कर दिया । राजा साहब उससे मिलने कैतेरी तक आये थे, रात के संकटों की परवाह न की थी और गाँव के प्रामाणिकों को यह बात प्रत्यक्ष रूप से मालूम भी हो गई थी—इसलिए उसे बड़ा आनन्द था । उसने-अपने आप कहा—"अब कौन कह सकता है कि राजा साहब मुझे छोड़कर चले गए हैं ।"

उण्णिअम्मा के से वियोग माक्कम व्याकुल थी । परन्तु बहन के उत्तारी घर के निवास ने उसे जरा आश्वासन दिया । आखिर वह अपने ही रिश्ते-दारों के यहाँ सुरक्षित है ।

घर में माक्कम की सहायता के लिए केवल नीलुक्कुट्टी बाकी थी । उसकी आयु लगभग चौदह साल की थी । उसे शस्त्र-शिक्षा में बड़ी रुचि थी । वह कुमारावस्था को पार कर रही थी; इसलिए उस कन्या को ऐसे पौरुष के कार्यों के लिए छोड़ना महादेवी को कभी-कभी अच्छा नहीं लगता था, तो भी कम्मारन नम्प्यार पर अपने विश्वास तथा नीलुक्कुट्टी की उत्कट इच्छा के कारण उसने अपनी उपस्थिति में अभ्यास-पूर्ति की अनुमति दी ।

वह मातृहीन लड़की सयानी होती जा रही थी, और उस समय के रीति-रिवाज के अनुसार उसका विवाह हो जाना अनिवार्य था, इसलिए माक्कम चिन्तित थी । अम्पू नायर तो घर आता ही नहीं था । कम्मू उस घर में रहने लगा तो उसकी विचार-धारा उस ओर फिर गई । कम्मू घर में कभी-कभी नीलुक्कुट्टी को शस्त्राभ्यास कराता था । माक्कम ने सोचा, यह उन दोनों के अनुराग में परिणत हो जायगा । ऐसा हुआ भी । उनके कटाक्ष और वाणी से उसने समझ लिया कि इन दोनों में प्रेम हो गया है । मगर विवाह के लिए अम्पू नायर की अनुमति की आवश्यकता थी, अतः वह उसके आगमन की प्रतीक्षा करती रही ।

माक्कम के सम्बन्ध में देश-भर में प्रचलित अपवाद उस गाँव में भी पहुँच चुके थे। उण्णिअम्मा निस्संकोच होकर सबसे कहती फिरती थी। एक दिन नीलुक्कुट्टी गाँव के तालाब में स्नान कर रही थी। उस समय उसने सुना कि स्त्रियों में इसी बात की चर्चा हो रही है।

"माक्कम ने राजा साहब को धोखा देने की कोशिश की!" अम्मिणी आँखें विस्फारित करके बोली।

"क्यों धोखा न देगी? उसने कम्पनी वालों से रिश्वत ली है।" कुञ्चुकुट्टी ने एक ही साँस में कह डाला।

"माक्कम ने राजा साहब को पकड़कर दुश्मन को सौंप देने के लिए आदमियों को बुलाया था!" अम्मिणी ने अपनी सर्वज्ञता प्रकट की।

"भगवती श्री पोर्कली ने उनको बचाया!" एक वृद्धा ने कहा।

इस विषय में उण्णिअम्मा की जबान कभी नहीं थकती थी। बोली—"जरा देखो तो उसका साज-शृंगार और चाल-चलन। अब समझ गई कि इन सबके लिए पैसा कहाँ से आता है। बेचारे राजा यह सब कैसे समझते? ऐसी डाइनों से पुरुष का सत्यानाश होता है।"

नीलुक्कुट्टी ने गद्गद् होकर अपने कानों सुनी बातें कम्मू से कहीं। कम्मू की त्योरियाँ चढ़ गईं। उसने कहा—"यह उस चन्तू की धोखेबाजी है। मुझे मिल जाय तो मैं ही उसका काम तमाम कर दूँगा।" इससे भी सान्त्वना पाकर उसने स्वयं महादेवी को यह बात सुनाने का परिश्रम किया। उसमें पूरी बात सुनाने का साहस भी नहीं था, अतः रुक-रुककर उसने उसका सारांश बता दिया।

नीलुक्कुट्टी की बातों से महादेवी समझ गई कि लोग उन दोनों भाई-बहनों के सम्बन्ध में अफवाह उड़ा रहे हैं। राजा को धोखा देने की बात सुनकर पहले वह हँस पड़ी। पर इस अफवाह पर लोगों का विश्वास जम जाने से होने वाला परिणाम सोचकर उसे निस्सीम कोप और दुःख हुआ।

× × ×

बहुत परिश्रम करने पर भी पययम-घर के चन्तू को चिरुतक्कुट्टी का पूर्वचरित मालूम नहीं हो सका। उसके किसी रिश्तेदार का नामो-निशान

भी न था। उसने कहीं से सुना कि वह लूई पेरेरा की क्रीत-गुलाम है। अन्त में यह सोचकर कि टीपू के आक्रमण के समय उसके घर का नाश होने के कारण उसके साथी-सम्बन्धियों का पता लगाना मुश्किल है, चन्तू को स्वयं सन्तृप्त होना पड़ा।

वायदे के अनुसार चन्तू तीसरे दिन इक्कण्टन नायर के यहाँ आया। कुलपति वापस नहीं आया था, फिर भी चिन्नम्मालु को उससे सूचना मिली कि रात की पूजा के लिए वह जरूर आने वाला है। इसलिए उस युवती ने चन्तू का स्वागत-सत्कार किया।

"सुना नहीं आपने ?" चिन्नम्मालु ने कहा—"दो दिन से इस गाँव में दूसरी चर्चा ही नही होती !"

"कौन-सी बात है वह ?"

"वह निकम्मी माक्कम राजा को धोखा देकर कम्पनी वालों से जा मिली है ! कैसी नालायक है वह औरत !"

"ऐसी ?" आश्चर्य-चकित-सा होकर चन्तू ने पूछा।

"बेशक ! कहते है अम्पू ने ही कण्णवत नम्प्यार की हत्या कराई ! सब कहीं यही बात सुनाई पड़ रही है। अब से उसका अहंकार और गुस्ताखी कुछ कम हो जायगी।"

"माक्कम की बात छोड़ दो, अब उसका क्या स्थान है, क्या पदवी है ? वह किसी खास व्यक्ति की न रहकर आने-जाने वालों की सम्पत्ति हो गई।"

"ओः समझ गई ! यहाँ बैठकर लम्बी-चौड़ी हाँक सकते हो ! इसके अलावा तुमसे और कुछ हो सकेगा ? उसके पास जाने पर कुत्ते की तरह पूँछ हिलाते रहोगे। आखिर उसमें हमसे बढ़कर क्या बड़प्पन है ?"

चन्तू के पौरुष को चोट लगी। उसे स्मरण आया कि कैतेरी आकर [illegible] गए, फिर भी माक्कम ने उसके मुख से हँसी की एक बात भी निकलने न दी थी। उसने सोचा—मेरे कारण ही वह इतनी बड़ी हो गई है, फिर भी······।

इसमें सच्चाई थी। चन्तू और उण्णिअम्मा के विवाह के बाद चन्तू की सिफारिश के अनुसार ही राजा साहब ने माक्कम को रेशमी कपड़ा तथा

कंकण देकर उसे अपनी महादेवी बनाया था। अब चन्तू का मन विक्षुब्ध हो उठा—उस औरत का घमण्ड और प्रताप! उसके लिए हम सब सारहीन हो गए हैं! अच्छा देखा जायगा!

"क्यों, माक्कम के बारे में सोच रहे हो? उसके पास जाने की आशा छोड़ दो। वह महाराजा की महादेवी है।"

"महादेवी! खूब! दिखा दूँगा। यदि मैं पुरुष हूँ, यदि मेरी नसों में गरम रक्त बह रहा है तो······"

"खैर!" चिन्नम्मालु ने चन्तू को अनियन्त्रित देखकर बात बदली—"उनके आने में समय लगेगा। कुछ खाओ-पियोगे?"

"दोगी तो जरूर लूँगा और तुम्हें भी मेरे साथ खाना-पीना पड़ेगा।"

चिन्नम्मालु का आतिथ्य स्वीकार करने के बाद चन्तू अन्दर जाकर उण्णि-अम्मा से मिला। उसने अपनी पत्नी को खुशखबरी सुनाई कि कम्पनी वालों ने उसे विराट् संम्पत्ति का अधिपति बनाने का निश्चय किया है, राजा अब अधिक समय तक जीवित न रहेंगे आदि। पर चिन्नम्मालु के साथ बहुत समय बिताने के कारण पति महाशय को उसने खरी-खोटी सुनाई।

चन्तू फिर भी चिन्नम्मालु के पास ही लौट आया।

माक्कम पर कालिख लगाने के लिए चिन्नम्मालु ने उसके मन में जिस दुर्विचार का बीज बोया था वह मद्य के प्रभाव से बहुत जल्दी उगकर पल्लवित हो चुका था। किसी प्रकार माक्कम का गर्व मिटाना उस दुष्ट का एक-मात्र विचार था। शाम हो गई। इक्कण्टन नायर नई-नई खबरें लेकर आ पहुँचा। तो भी चन्तू को न उसकी बातों में मजा आया और न उसका दिया मद्य मजेदार लगा। इक्कण्टन नायर को चन्तू के मन की अशान्ति अनुभव हुई। अतः उसने इस विषय में और अधिक न कहा।

उण्णिअम्मा के कोप को मानकर चन्तू बाहर चबूतरे में चटाई बिछाकर सोने लगा। जब घर के सब लोग सो गए तो कमर में तलवार बाँधकर बत्ती जलाता हुआ वह निकल पड़ा। वह सीधा कैतेरी जा रहा था। उस घर में निस्तब्धता छाई हुई थी। माक्कम और नीलुक्कुट्टी भोजन करके सुख की नींद सो रही थीं। चन्तू को बाहर चबूतरे पर सोने वाले कम्मू के खुर्राटे की

आवाज सुनाई दे रही थी। छलाँग मारकर ऊँचे प्राचीर के अन्दर घुसना सुशिक्षित चन्तू के लिए कोई कठिन काम नहीं था। अपने गृह में निरवलम्ब होकर पड़ी सोने वाली साध्वी नारी के चरित्र-भंग के लिए निकलने वाले दुष्ट से उस बेचारी को कौन बचायगा? चन्तू ने सोचा, अब कोई बाधा नहीं है। वह अभिमान के साथ स्वयं कहता था कि केरल के युद्ध-वीरों में उसका स्थान सबसे ऊँचा है। तब तलवार के एक वार से कम्मू का काम तमाम करना उसके लिए बहुत सरल बात थी। बस, फिर कुछ रोक-थाम नहीं, मार्ग का काँटा दूर? यदि खुशी के साथ माक्कम दरवाजा नहीं खोलती तो लात मारकर उसे तोड़ डालने को भी वह तैयार था।

आँगन में आकर चारों ओर देखा; सब शान्त था। वह दबे-पाँव चबूतरे पर आया जहाँ कम्मू सो रहा था। एक बार; मैं उसका सिर धड़ से अलग करने का खयाल करके चन्तू ने तलवार खींची तो उसके सामने एक तीर आ गिरा।

कैतेरी घर का पहरा देने के लिए राजा साहब ने भीलों को नियुक्त किया था, यह बात चन्तू को मालूम न थी। अब उसे मालूम हो गया कि भील पास ही रहकर उसके सारे काम को देख रहे हैं। वह बड़ी दुविधा में पड़ गया। उसकी उद्देश्य-पूर्ति की बात तो दूर रही, जान लेकर भाग सकने का भी उसे अवसर नहीं था। भीलों से बचने के लिए अन्धकार की आवश्यकता का अनुभव करके वह अपने हाथ की बत्ती नारियल के नये पत्तों से आच्छादित मकान के ऊपर फेंककर एकदम गायब हो गया। घर-द्वार के बाहर कुछ दूर खड़े हुए भील यह न देख सके।

घर को आग लग गई, अग्नि की भयङ्कर ज्वालाएँ ऊपर उठने लगीं।

अन्दर कमरे में सोने वाली माक्कम तथा बाहर चबूतरे पर लेटकर खुर्राटा लेने वाला कम्मू बहुत देर तक यह बात समझ न सके। जलकर गिरने वाली लकड़ी की आवाज सुनकर वह जाग पड़ा। देखा—घर का एक हिस्सा जल चुका है। आग की गर्मी तथा अन्दर घुसने वाले धुएँ के मारे, जागने पर भी, माक्कम और नीलक्कुट्टी प्रायः बेहोश हो गई थीं।

आग की लपटें देखकर चारों ओर से ग्रामीण आ पहुँचे; तो भी वे

उदास मन से दूर हटकर खड़े रहे। उनमें अधिकांश लोग बड़बड़ा रहे थे–"राजा साहब को धोखा देने का यही परिणाम होता है। जलकर खाक हो जाय!" कुछ लोगों ने आग बुझाने का परिश्रम तो किया, मगर दूसरों ने उनको रोककर कहा—"राजा साहब कुपित हो जायँगे।"

कम्मू ने कमरे के अन्दर से माक्कम और नीलुक्कुट्टी को बचाने का प्रयत्न किया। छत पर आग लगने लगी थी। द्वार पर भी आग का आक्रमण होने लगा। किसी प्रकार दरवाजा खोलकर माक्कम बाहर निकली तो धुएँ के धक्के के कारण बेहोश होकर गिर पड़ी। उसे गिरते देखकर 'हाय' करती हुई नीलुक्कुट्टी की आवाज सुनकर कम्मू अपनी जान की बाजी लगाने को तैयार हो गया। वह एकदम अन्दर घुसा और अचेत होकर जमीन पर पड़ी हुई माक्कम को कन्धे पर लेकर झट से बाहर आया। नीलुक्कुट्टी भी पीछे-पीछे आई। शरीर में इधर-उधर लपटें लग जाने के कारण जलन हो रही थी, अतः कठिन दर्द के मारे वह मूर्च्छा में ही पड़ी रही। कम्मू ने देखा कि ग्रामीण लोग कुछ सहायता करने वाले नहीं। इतने में कुछ भील आ पहुँचे। कम्मू ने उनके साथ आग बुझाने का कठिन परिश्रम किया और किसी प्रकार वे लोग अपने परिश्रम में सफल भी हुए।

फिर प्रश्न उठा : कम्मू नीलु और माक्कम को कहाँ ले जाय?

: १८ :

उस समय केरल के श्रेष्ठ व्यापारियों में धन-वैभव-प्रबलता तथा व्यापार की विपुलता में अली मूसा मरक्कार का स्थान निस्सन्देह सर्वप्रथम था। कोलच्चल से लेकर मंगलापुरम तक के बन्दरगाहों में विविध प्रकार के व्यापारों में मग्न कई कुबेर-तुल्य कोङ्किणी, गुजराती और मुसलमान थे, पर उन सबका नेता अली मूसा था। बम्बई, मद्रास, कलकत्ता आदि प्रधान बन्दरगाहों में सके दलाल, कारिन्दे, दूकानें और बड़ी-बड़ी व्यापार-शालाएँ होती थीं

इसके अतिरिक्त मूसा के जहाज मिस्र, अरब आदि देशों में आते-जाते थे। अंग्रेजी कम्पनी के साथ व्यापार करने में भी मूसा का स्थान महत्त्वपूर्ण था। वह गोआ, फ्रांसीसियों के व्यापार-केन्द्रों तथा मराठियों के साथ पूना आदि नगरों में व्यापार करता था। सचमुच मूसा दक्षिण भारत की व्यापार-शक्ति तथा धन-वैभव से भली-भाँति परिचित था।

अंग्रेजी कम्पनी वालों की रक्षा में मूसा के जहाज सात समुद्रों में विचरते रहते थे। उनके हिफाजतनामे की छाया में दक्षिण पथ की राजधानियों में उसके व्यापार की वृद्धि होने लगी। कम्पनी वालों के व्यापार के लिए आवश्यक सामान इकट्ठा करने में उसकी तत्परता तथा उनके मामलों में उसकी प्रकट दिलचस्पी देखकर उन्होंने दिल खोलकर उसका अभिवादन किया।

सभी लाभदायक व्यापारों में उसकी दृष्टि जाती थी।

मूसा तलश्शेरी शहर की प्रधान वीथियों और बाजारों की इमारतों और दूकानों का मालिक था; फिर भी वह राज-पथ से कुछ हटकर स्थित एक बड़े प्रासाद में रहता था। उसका निवास-स्थान केरल के धनी लोगों के समान नहीं था। मद्रास, अर्काट और श्रीरंगपट्टन के धनी मुसलमानों के मकान की तरह उसने अपना मकान बनवाया था। कारीगरी और सामग्री की विपुलता की दृष्टि से वह केरल के राजमहलों से कितनी ही ऊँची श्रेणी का था।

फाटक से निकलने पर एक सुन्दर फुलवारी मिलती है। विविध देशों से लाकर लगाए हुए फूल-पौधे, निराले ढंग से बढ़े-चढ़े तथा सुन्दर पुष्पों से भरे हुए लता-कुञ्ज, दोनों ओर गुलाब के पौधों से सज्जित पथ आदि उस उद्यान की शोभा बढ़ा रहे थे। सचमुच वह मूसा के वैभव तथा रसिकता का अच्छा उदाहरण था।

उस उद्यान के बीच में एक सुन्दर महल स्थित था, जो एक लोलुप महा-धनी के लिए समीचीन था। फारस के गलीचे, योरुप के सुन्दर दीपक, विविध देशों में एकत्रित घरेलू चीजों आदि से वह महल अलंकृत था। सामने अभ्यागतों के स्वागत के लिए एक विशाल अतिथि शाला थी और उसके पास

यूरोपीय ढंग की मेजों और कुरसियों से सुसज्जित कुछ कमरे भी थे। अन्तःपुर में उसने अनेक हूरों को बसाया हुआ था। हैदर के आक्रमणों के फलस्वरूप उत्पन्न हलचल में कई ऊँचे-ऊँचे घरानों से अनेक कन्याएँ गायब हो गई थीं। लोगों के अनुमान के अनुसार उनमें अधिकांश नवयुवतियाँ मूसा के मोतीमहल की शोभा बढ़ा रही हैं।

वेल्लस्ली तलश्शेरी आए तो सेनापति के आदर-सत्कार के लिए मूसा ने एक बड़ा प्रीतिभोज दिया। बहुत धन व्यय करके मनाए गए उस महोत्सव में केरल के सभी यूरोपीयों ने भाग लिया था। भोज के उपरान्त गान-मेला, नृत्त-नृत्य, आतिशबाजी आदि भी थे। इन सबका प्रबन्ध राजकीय ढंग से किया गया था।

कर्नल वेल्लस्ली के स्वागत-सत्कार करने वाले प्रबल और प्रतापी मूसा पर तलश्शेरी में किसी को सन्देह नहीं था। कोई शंकित न था कि मूसा द्वारा अम्पू नायर को इस शहर में आने-जाने की सुविधा होती है। तो भी कम्पनी वालों को सन्देह होने लगा था कि तलश्शेरी शहर के बाहर, मूसा के एक मकान में गुलामों का व्यापार आदि अविहित कार्य चल रहा है। परन्तु इतनी छोटी-सी बात पर कोई भी मूसा को रुष्ट करना नहीं चाहता था। उस जगह पर दिन में सब शान्त होता, पर रात होते ही बड़ी भीड़ लग जाती। वह स्थान मूसा के शस्त्रधारी पहरेदारों से सुरक्षित था और अनुमति पाए बिना कोई उसके अन्दर घुसने का उद्यम नहीं करता था।

सुपरवाइजर की आज्ञा के अनुसार वहाँ से मूसा के यहाँ आने वाले लोगों को कम्पनी के चौकीदार किसी भी कारण से नहीं रोकते थे। अम्पू नायर मूसा के एक कारिन्दे के बहाने से तलश्शेरी आया करता था।

लोगों का विश्वास था कि मूसा और चिरुता में कुछ व्यापार हो रहा है, इसलिए जानकारी रखने पर भी कम्पनी वाले गुलामों के व्यापार आदि को नहीं रोकते थे। लूई पेरेरा मूसा की व्यापारशाला में बहुत देर तक बैठता। केरलियों और मुसलमानों के त्योहारों के अवसर पर मूसा के घर से अनेक उपहार लेकर उसके नौकर चिरुतक्कुट्टी के बँगले की तरफ जाते।

देशी अमीर और सामन्त तलश्शेरी आते तो उनके आदर-सत्कार के

लिए मूसा हमेशा तैयार रहता। चन्त्रोत बाबू प्रति सप्ताह इस शहर में आते और मूसा से मिलकर देर तक बातें करने के बाद ही वापस जाते। दोनों अंग्रेजों के घनिष्ठ मित्र होने के कारण कोई इसे असाधारण नहीं समझता।

रमजान के समय कण्णवत नम्प्यार तलश्शेरी आया तो मूसा किसी से न मिलकर घर के अन्दर रोजे से रहता था। नम्प्यार के कैद हो जाने का समाचार सुनकर वह व्याकुल हो उठा। परन्तु उस महा सामंत के निवास के लिए सेना-पति ने जब एक घर माँगा तो यह सोचकर कि नम्प्यार पर अब कुछ आपत्ति नहीं आयगी, उसे कुछ सान्त्वना मिली। उसे किसी प्रकार शाम तक नम्प्यार को बचाने का सन्देश मिला था, पर उसका विचार था कि इसके लिए काफी समय है। उसने नौकर को दूसरे दिन सबेरे किये जाने वाले कामों की एक सूची दी।

दूसरे दिन सवेरे मूसा उद्यान में टहल रहा था। उस समय एक ईमान-दार नौकर ने आकर नम्प्यार की दारुण मृत्यु की वार्ता सुनाई। मूसा ने कर्नल के दृढ़ निश्चय और चतुराई की प्रशंसा की, मगर उसने इसे अपनी हार समझा। उसने सोचा कि नम्प्यार को बचाने के लिए उसने जो-जो बन्दोबस्त किये थे उनका पता वेल्लस्ली को नहीं लगा होगा, अतः अब की बार उसे कुछ नुकसान होने वाला नहीं। पर इसके बाद दूसरा समाचार भी आया। सामान के साथ चिरुतक्कुट्टी का भेजा हुआ आदमी गिरफ्तार हुआ और दूसरे दिन लूई पेरेरा भी गायब हो गया। यह सब सुनकर मरक्कार बहुत घबरा गया। ढूँढ़ने पर भी पेरेरा की हालत अज्ञात रही।

मूसा को कर्नल वेल्लस्ली की चतुरता और अधिकारियों के पास उसका ऊँचा स्थान अच्छी तरह मालूम था, इसलिए वह उनके साथ प्रेम-भाव से व्यवहार करने का निरन्तर परिश्रम करता था। वह जानता था कि वेल्लस्ली ने राज-काज में निष्ठुरता का व्रत लिया है, अतः यदि उन्हें उसके प्रबन्ध की तनिक भी सूचना मिल जाय तो चकनाचूर कर देंगे। इसलिए वह कर्नल के आगमन के बाद बहुत गुप्त रूप से काम करता था। उसकी जान खतरे में डालने के लिए पेरेरा के पास कोई प्रमाण नहीं था और इसके अभाव में वेल्लस्ली मूसा-जैसे एक व्यक्ति का कुछ भी नहीं बिगाड़ सकते थे।

पेरेरा की कैफियत में मूसा का नाम देखा तो वेल्लस्ली को विश्वास नहीं आया। कम्पनी उसको बड़ी सहायता दे रही थी, कम्पनी की ही रक्षा में वह बड़ा व्यापार कर रहा था, ऐसी दशा में उस पर सन्देह करना सम्भव नहीं था। यह पेरेरा की चालाकी होगी। वह चिरुतक्कुट्टी और स्वयं अपने को मूसा की आड़ में बचाना चाहता है। अपराध की स्थापना के लिए पेरेरा का कहना ही एक-मात्र प्रमाण है।—वेल्लस्ली की विचार-गति यों थी।

उन्होंने मूसा को बुलाकर पूछ-ताछ करने का निश्चय किया। सन्देश-वाहक को उससे जवाब मिला कि रोजे का समय है, इसलिए बाहर नहीं जाता, तो भी कर्नल को कोई जरूरी सलाह लेनी है तो सन्ध्या के बाद रोजे की समाप्ति होने पर उनके समक्ष आ जायगा।

मूसा मरक्कार बड़े-बड़े अमीरों, महा सामन्तों आदि के साथ बराबरी का व्यवहार करता था, अतः कर्नल से मुलाकात करने में उसे जरा भी डर नहीं लगता था। वह यह भी नहीं जानता था कि डर किस चिड़िया का नाम है। सन्ध्या के बाद भोजन करके लम्बा कुरता और टोपी पहनकर चार-पाँच अनुचरों के साथ मूसा वेल्लस्ली के बंगले में उपस्थित हुआ।

सेनापति के अंग-रक्षक ने आदर से उसका स्वागत किया। उसने इस ढंग से उसका अभिवादन किया मानो इस मिलन से वह बड़ा प्रसन्न हो! दोनों ने एक-दूसरे की कुशल पूछी। फिर वेल्लस्ली ने कहा—"मैं अच्छी तरह जानता हूँ कि आप कम्पनी के मित्र हैं और विविध प्रकार से हमारी सहायता करते हैं। इसलिए एक जरूरी काम के लिए आपको यहाँ बुला लिया।"

"अल्लाह की मेहरबानी और कम्पनी की निगरानी से मैं दिन बिता रहा हूँ। आप जानते ही हैं कम्पनी को हर तरह की मदद पहुँचाने के लिए मैं कमर बाँधे बैठा हूँ।"

"अच्छा, बहुत परिश्रम करने पर भी केरल में शान्ति नहीं होती। इस अशान्ति का कारण केरलवर्मा है। यहाँ से उसे आवश्यक सहायता मिलती होगी, नहीं तो वह कुछ भी नहीं कर सकता। मैंने पता लगा लिया है कि यहाँ, इसी तलश्शेरी में, केरलवर्मा के कुछ सहायक हैं।"

"तो उनका काम-तमाम करने में कौन-सी बड़ी तकलीफ है? वे कौन-

कौन है ?" मूसा ने पूछा।

"अभी तक ठीक पता नहीं मिला। मिल जाने पर, चाहे वह कोई भी हो, उसका स्थान फाँसी पर होगा।"

"इसमें सन्देह ही क्या है ? उनको ढूँढ़ निकालना चाहिए। इस प्रयत्न में मैं भी आपको अवश्य सहायता दूँगा। आपकी समझ में उन्होंने कौन-सी सहायता की थी ?"

"एक बात बता दूँ !" वेल्लस्ली ने कहा—"क्या मैंने आज्ञा नहीं निकाली थी कि केरलवर्मा को कोई भी रसद न पहुँचावे और ऐसा करने वालों को सख्त दंड दिया जायगा ? फिर भी मुझे हजार बोरे चावल उसके पड़ाव में पहुँच जाने की सूचना मिली है। अतः जानना अनिवार्य है कि यह कैसे हुआ ?"

"हजार बोरे चावल ? मेरा जानकारी के बिना इतना ज्यादा चावल इस मुल्क में आ ही नहीं सकता। आजकल कई जगहों पर चावल खूब मिलता है। किसी-किसी दलाल ने थोड़ा-थोड़ा करके खरीद भेजा होगा ?" मूसा ने अविश्वास का बहाना किया।

"यदि किसी ने जान-बूझकर केरलवर्मा को चावल बेचा है तो उसे निस्संदेह कठिन दंड दिया जायगा।" कर्नल का स्वर गंभीर हो गया।

"यही चाहिए। मैं भी देखूँ कि किसमें इतना साहस है। इस मामले में मैं दिलचस्पी रखता हूँ।"

मूसा का उत्तर सुनकर सचमुच कर्नल को संदेह हुआ। यदि हजार बोरे चावल राजा के पास पहुँच गया है, तो संभव है इसके लिए मूसा की अनुमति मिली होगी। कर्नल को केवल इस बात में संदेह था कि जान-बूझकर उसने राजा को चावल बेचा या किसी दूसरे से खरीदकर उन्हें भेजा ?

कर्नल से बातचीत करके अपने घर वापस आने पर सबसे पहले उसने वहाँ की अपनी सारी संपत्ति जहाज के द्वारा आलप्पुया को भेज देने का प्रबंध किया। दूसरे दिन मूसा का एक जहाज सामान लादकर आलप्पुया, तूत्तुक्कुडी आदि बन्दरगाहों की ओर जाने वाला था। उसमें उसने अपने ईमानदार नौकर के साथ बहुत-सा धन भेज दिया। उसने आज्ञा दी कि सामान लादने के लिए एक दूसरा जहाज बन्दरगाह में लाया जाय।

: १९ :

अब भी राजा साहब की उदासीनता बिलकुल दूर नहीं हुई थी, पर अलात नम्पी को भी साफ दिखाई पड़ रहा था कि उनके पड़ाव में कुछ तैयारियाँ हो रही हैं। वे कविता, गाने, शतरज तथा कभी-कभी कथकली में अपना समय बिता रहे थे। उस पड़ाव में लोगों का आना-जाना एकदम बढ़ गया था। एडच्चेन कुंकन से वे नियम से मंत्रणा करते थे, पर आजकल वह मंत्रणा घंटों तक लगातार होती जा रही थी। नम्पी जानता था, एडच्चेनकुंकन के नेतृत्व में नायरों का एक दल गुप्त रूप से अभ्यास कर रहा था। आजकल उसे मालूम हो गया कि वे कवायद भी करते हैं। यह देखने के लिए राजा साहब दो-तीन बार पधारे थे। अब नम्पी को उनकी चुप्पी का अर्थ समझ में आने लगा।

एक सप्ताह से तलक्कल चन्तू पड़ाव पर नहीं था। राजकुमार भी कहीं गये थे। पड़ाव पर केवल वेल्लूर एमन नायर, एडच्चेन कुंकन और नम्पी राजा साहब की सेवा में रहते थे।

कर्नल वेल्लस्ली पौष की सोलहवीं तारीख को तलश्शेरी से जाने वाले हैं, यह समाचार भी पड़ाव पर पहुँच चुका था। दो दिन पहले गवर्नर-जनरल का एक आज्ञापत्र तलश्शेरी आया था। उसके अनुसार मराठों के साथ होने वाले युद्ध में कर्नल सेनापति के पद पर नियुक्त किये गये थे। चंत्रोत नम्प्यार के आदमी से राजा साहब को यह मालूम हो गया था।

इस परिस्थिति में पौष की दूसरी तारीख को सवेरे चोक्कराय तलक्कल चन्तू के साथ पड़ाव पर वापस आये। चोक्कराय खाली हाथ गया था, पर वापस आते समय वह परिचारकों समेत एक सामन्तोचित वेश-भूषा में था। कई दास सामान ढो रहे थे। राजा साहब ने उसका आलिंगन करके सादर स्वागत किया और सबके सामने अर्धासन पर बिठाया। उसके नौकरों ने उनके समक्ष भेंटें रखीं; जिन्हें देखकर उन्होंने कहा—"मैं नहीं पूछता कि जिस उद्देश्य के लिए तुम गये थे वह सफल हुआ या नहीं। बाद में अवसर मिलने पर अपने पराक्रम का परिचय देते रहना।"

"हमारे उद्देश्य के अनुसार सब नहीं हो पाया, लेकिन कुछ प्रबन्ध करके ही चला आया हूँ।"

राजा साहब के संकेत का अर्थ समझकर उसने और अधिक नहीं कहा। क्योंकि दूसरों के सामने गुप्त समाचार प्रकट करना ठीक नहीं।

चोक्कराय ने क्या-क्या किया है यह जानने के लिए राजा साहब का मन ललक रहा था, लेकिन उन्होंने अपनी इच्छा को दबाकर बात बदली—"तुम समझ गए होगे कि कर्नल दो हफ्ते के अन्दर कलकत्ता जाने वाले हैं। तुम्हारा कहना ठीक निकला।"

"वेल्लस्ली को सेनापति बनाकर हुक्म निकालने की बात वहाँ भी पहुँच गई है। लेकिन निकलने की तारीख के सम्बन्ध में कुछ नहीं सुना था।"

"वेल्लस्ली के चले जाने पर भी तुम यहाँ रह नहीं सकते ? तुम्हें स्थान-पद की कमी नहीं; तो भी यदि हमारे कार्यकर्ता बनो तो हम तुम्हारी शान को बनाए रखेंगे।"

"आप-जैसे महात्माओं की सेवा करना मैं अपना परम भाग्य सौसमझता हूँ। वेल्लस्ली इस देश से जायँ तो मेरा आग्रह भी यही था। लेकिन खेद की बात है, अब यह असम्भव हो गया।"

"क्यों ?" राजा ने प्रश्न-भरे नेत्र चोक्कराय के नेत्रों में डाले।

अन्यमनस्क होकर चोक्कराय ने कहा—"मैसूर की महारानी तथा अपने अन्य सम्बन्धियों की प्रेमपूर्ण आज्ञा का पालन करने के लिए मैं मजबूर हो गया हूँ, इसीलिए यों कहना पड़ता है। वहाँ भी बड़ी कठिनाइयाँ हैं। कम्पनी वालों ने राजाधिकार को जड़ से उखाड़ दिया। प्रधान मंत्री पूर्णतया उनके अधीन हैं। महाराजा और जनता अधिकार-च्युत हैं। किसीमें राज-वंश की सहायता करते रहने का साहस भी नहीं। इसलिए तुरन्त वापस जाने की सम्मति देने पर ही महारानी ने मुझे यहाँ आने की अनुमति दी है।"

"अच्छा तुम्हारा पहला कर्तव्य वहीं पर है। अपने स्वामी की सेवा न करने वाला दूसरों की सेवा कैसे करेगा ? परन्तु एक काम करके जाना !"

"कौन-सा ?" चोक्कराय ने पूछा।

"अभी बता दूँ !" राजा साहब ने नेत्र-संकेत से दूसरों को वहाँ से हट जाने की आज्ञा दी। फिर उन्होंने कहा—"बोलो मित्र ! तुम क्या-क्या कर सके ?"

"पहले प्रतिकूल बातें बताऊँ। पूर्णय्या हमारी कुछ सहायता नहीं करेगा। वह अंग्रेजों का सेवक है। मन्त्रि-मण्डल उसका आज्ञाकारी होता है। अतः उससे भी कुछ सहायता नहीं मिलेगी। महादेवी को हमारी सहायता करने का बड़ा आग्रह तो है, पर अनुकूल अवसर नहीं।"

राजा साहब सब सुन रहे थे, पर बोले नहीं।

मैंने ही रसद और युद्ध-सामग्री यथा-समय वयनाड पहुँचा देने का प्रबन्ध किया है। गौड़ों के साथ जिस करार पर पहुँचा है वह इस कागज पर लिखा है। मेरी जमानत पर वे वयनाड की सीमा तक जरूरी सामान पहुँचा देंगे, वहाँ उनसे ले लेना चाहिए। लौट जाने की मेरी आवश्यकताओं में एक यह है।"

"भगवती श्री पोर्कली ने बचाया।" राजा का मन आनन्द से कल्लोलित हो उठा—"अब कम्पनी वाले जो चाहें करें, जिसे चाहें रोकें। हम वयनाड में प्रवेश करें तो फिर उनसे क्या हो सकेगा ? मित्र, आज से तुम कोट्टयम के केरलवर्मा के भाई हो, मुझे गले से लगा लो! तुमने मेरी बड़ी सहायता की है, मुझे बड़ी कठिनाई में उबारा है ! यह मैं कभी भूल नहीं सकता !"

"मुझे खेद है कि मैं आपके लिए इससे अधिक कुछ नहीं कर सका।"

"इससे अधिक क्या चाहिए भाई ? कल की रसद की चिन्ता से हम बच गये, क्या यह कम महत्त्व की बात है ?"

"इससे आप सन्तुष्ट हैं तो मुझे जाने दीजिए। मैं वचन के अनुसार गौड़ों से काम चलाने पर ध्यान रखूँगा।"

"तुमको जाने दूँगा, मगर एकदम नहीं। उसके लिए दो सप्ताह लगेंगे। अगले हफ्ते में कोट्टयम जाकर वहाँ अपने राजमहल में कुछ दिन ठहरना चाहता हूँ, तब तुम्हारी भी मौजूदगी मेरे लिए बड़ी आनन्दप्रद होगी।"

चोक्कराय के आश्चर्य का कोई आर-पार न था। राजा साहब की भाँति वह भी जानता था कि वहाँ कम्पनी वालों ने दुर्ग बनाकर गोरी सेना खड़ी की है। इतनी सौम्यता और ममता से राजा साहब ने जिस राजमहल में ठहरने का निमंत्रण दिया है वहाँ एक प्रबल सेनापति वास करता था।

"क्या कोट्टयम में……? वहाँ तो……।"

"हाँ, वहीं। मैं निश्चय कर चुका। यदि कुछ दिन तक कोट्टयम में न रहकर वयनाड चले जायँ तो लोग कहेंगे कि हम विरोधियों से डरकर जंगलों में छिप गए हैं तथा वेल्लस्ली ने हमको जीत लिया है। इसलिए वहाँ कम-से-कम एक महीना रहकर हमारी प्रजा को खुश करना चाहिए। मेरा यही विचार है।"

चोक्कराय को इस बात पर विश्वास न आया। दुर्ग कम्पनी की सेना की देख-रेख में है। हाथ बढ़ाने से क्या वह स्वाधीन हो जायगा? उसकी शंकाएँ मुख पर प्रकट थीं।

"मित्र!" राजा साहब ने सम्बोधन किया—"मैं तुम्हारी विचार-गति समझ रहा हूँ। मानता हूँ कि कोट्टयम को काबू में लाना बच्चों का खेल नहीं। मगर यदि तुम्हारी सहायता हो तो इसमें कुछ कठिनाई नहीं होगी।"

फिर राजा साहब और चोक्कराय में थोड़ी देर तक गुप्त सम्भाषण हुआ। उन्होंने पूर्ण रूप से अपना विचार चोक्कराय को बता दिया। उनकी उत्थान-शक्ति देखकर वह दंग रह गया।

"मैं निस्सन्देह आपकी आज्ञा के अनुसार काम करूँगा। आपका यह उद्देश्य और किसे मालूम है?"

"केवल एडच्चेन कुंकन को। अब तक हमारे भानजों को भी मालूम नहीं हुआ। जिस दिन हम यहाँ से निकल जायँगे उसी दिन यह सब उनसे कहने का विचार है।"

इस सम्भाषण के बाद राजा साहब बाहर निकले। फौरन वेल्लूर एमन नायर, अर्लात नम्पी आदि चार-पाँच नेताओं को बुलाकर उन्होंने कहा—"मैं तुमसे एक गोपनीय बात बताना चाहता हूँ। देखो, किसी को जानने न देना। अब हम मधर-व्रत्त का अनुष्ठान कर रहे हैं न? भगवती श्री पोर्कली का यह व्रत बहुत पसन्द है। मैं कोट्टयम में ही उसकी समाप्ति समारोह धूम-धाम से मनाना चाहता हूँ। तुम एक-एक करके बस्ती में जाओ और सामन्तों तथा स्थानिकों को वहाँ उपस्थित करने का बन्दोबस्त करो।"

यह सुनकर वे सब आश्चर्य-चकित हो इधर-उधर देखने लगे। उनको कुछ न बोलते देखकर राजा ने पूछा—"क्यों एमन नायर? चुप क्यों हो?"

"आपकी आज्ञा होगई है, फिर दास क्या कहे ? कब रवाना होना चाहिए इस विचार में है।"

"क्यों नम्पी ? तुम कुछ शंकित-से दीखते हो।"

"हुजूर के निश्चय पर शंका कैसी ?" तनिक घबराकर नम्पी ने कहा—"तो भी······इसमें जरा सन्देह तो है कि यह बुद्धिमानी का काम होगा या नहीं। वहाँ गोरी सेना पड़ी है, अतः खूब सोच-समझकर काम करना चाहिए। तो भी भगवती श्रीपोर्कली का कार्य है, सन्देह करने की आवश्यकता नहीं। फिर यहाँ यों ही बैठे-बैठे जी ऊब उठा।"

राजा साहब हँसकर बोले—"नम्पी को खुश करना कठिन है। मैं कुछ नहीं करता तो कहते कि मुझ में उत्थान-शक्ति की कमी है, उदासीन बैठा हूँ आदि। कुछ करने लगता तो शिकायत करते कि यह मेरी ज्यादती है। यहाँ रहना असम्भव हो गया। भण्डार-गृह का अध्यक्ष कहता है कि आवश्यक चीजों की कमी हो गई है। अनुयायियों को भोजन देना मुश्किल हो जाय तो कैसी शोचनीय अवस्था है। कोट्टयम में यह तकलीफ नहीं होगी, इसलिए वहाँ जाने का इरादा है।"

रसद की कमी की बात उन सबको मालूम थी। कोशिश करने पर भी बस्ती के रहने वाले धान या दूसरे सामान एकत्रित नहीं कर सके परन्तु जिन चीजों को उण्णिमूप्पन ने अंग्रेजी संघों से लूट लिया था उनसे वे अब प्रायः अपने दिन काट रहे थे।

"किसीको सन्देह न हो। व्रत के इकतालीसवें दिन सवेरे मैं कोट्टयम के राजमहल में पहुँच जाऊँगा जिससे व्रत के अंतिम दिन नहा-धोकर मन्दिर जाकर दर्शन कर सकूँ। यह बात किसी से न कहना। उनसे केवल इतना कहो कि राजा की इच्छा है, कोट्टयम देश के सामन्त और स्थानिक वहाँ आ जायँ। अपनी यात्रा की दिशा स्वयं निश्चित करो।"

इतने में एक दास ने आकर सूचना दी कि कैतेरी में पहरा देने वाला एक दूत राजा साहब से मिलना चाहता है। उसका सन्देश जानने के लिए ऐमन नायर नियुक्त हुआ। भील से उसे मालूम हो गया कि कैतेरी का घर जल गया है, इसके फलस्वरूप महादेवी के शरीर में जलन हो रही है, उसे भीलों की मदद

से कम्मू किसी चाण्डाल की कुटी में ले आया और फिर प्रातःकाल उसे शिविका में लेकर कहीं चला गया। एमन ने राजा के कानों में यह बात सुनाई।

यह घोर समाचार पाकर भी राजा साहब चंचल नहीं हुए। "अच्छा, तुम लोग जाओ, कोट्टयम में सबसे मिल आऊँगा।" उनको विदा करके राजा साहब ने तलक्कल चन्तू को बुलाया।

हाथ जोड़कर रामचन्द्र जी के सामने हनुमान की तरह खड़े होने वाले उस स्वामि-भक्त को देखकर उन्होंने कहा—"भील का लाया हुआ सन्देश समझ गया न ?"

"जी हुजूर !"

"मैं अभी निकलता हूँ। मालूम नहीं कि क्या होने वाला है। यहाँ की किसी बात पर विघ्न न होने दे। इसकी जिम्मेदारी चोक्कराय, कुंकन और तुम पर है। मैं यहाँ वापस आकर सब काम नहीं चला सकूँगा। अतः नेडुपरम्प के राजमहल में हमारी भेंट होगी।"

"जी हुजूर ! पर निकलने से पहले उनकी यात्रा का लक्ष्य मालूम होना है न ?"

"खैर, उसे कहाँ ले गए हैं, क्या यह बात कैतेरी के भील न जानते होंगे ?"

"हुजूर की आज्ञा के अनुसार यहाँ सब कार्य चलेगा।" चन्तू ने कहा।

अन्दर जाकर राजा साहब ने कुंकन और चोक्कराय को सभी बातें विस्तार से बता दीं, फिर उनको अपना-अपना कर्तव्य समझाया। बड़ी महादेवी से मिलने अन्दर जाने के पहले कुंकन को पास बुलाकर उन्होंने कहा—"कोट्टयम पहुँचते समय यदि कुञ्जानी हमारे साथ न हो तो उसे बड़ा दुःख होगा। सारी बात उसे समझाकर कल ही सुरक्षित रूप से गुप्त रूप से गुप्त मार्ग द्वारा वहाँ भेज देना चाहिए। उसे तुम्हारे साथ ले आओ तो ठीक न होगा।"

माक्कम पर पड़ी आपत्ति की सूचना पाकर बड़ी महादेवी तुरन्त जरूरी कार्रवाई करने के लिए राजा साहब को मजबूर करने लगीं। राजा ने कहा—"स्वयं मैं एक बार बस्ती में जाना चाहता हूँ। कुछ दिन तक

ठहरना पड़ेगा। तू भी भगवती श्री पोर्कली के दर्शन करके आना। इस के लिए आवश्यक इन्तजाम किया गया है।"

"भाग्य से बहन मृत्यु से बच गई। आप पधारें तो वह बड़ी खुश होगी। मगर देखिए, सावधान रहना।" फिर कपड़े से आच्छादित एक ताड़पत्र का टुकड़ा उन्हें सौंपकर वह बोली—"यह एक रक्षा-पात्र है, इसके बल से सब प्रकार की बीमारियाँ दूर हो जायँगी। उसीके हाथों में दे देना।"

"अच्छा।" राजा साहब ने उससे पत्र ले लिया।

: २० :

जैसे कि भील ने राजा साहब को खबर दी थी, कम्मू ने माक्कम और नीलुक्कुट्टी को भीलों की सहायता से एक चण्डाल-गृह पहुँचा दिया। किसी प्रकार रात काटकर कम्मू ने प्रातःकाल वहाँ से चले जाने का निश्चय किया। ग्रामीणों की प्रतिकूलता के कारण वहाँ रहना कठिन था। मगर कहाँ जायँ? राजा साहब के पास जाने की उसे आशा नहीं थी। दूसरी जगह ले जाय तो अम्पू नायर क्या कहेगा? ऐसी जगह पर जाना चाहिए जहाँ शत्रुओं का उपद्रव न हो। इस घोर करनी के प्रणेता प्रबल हैं, राजा साहब की आज्ञा का उल्लंघन करके उनकी प्राण-प्रिया को सताने लगे हैं। इस परिस्थिति मे वे निर्दयता से काम करेंगे। उसने थोड़े दिन के लिए नीलुक्कुट्टी और स्वामिनी को चन्त्रोत बाबू के हवाले कर देना ठीक समझा।

पहरा देने वाले भीलों के सरदार की भी यही राय थी। वह कहीं से एक शिविका लाया। भीलों ने ही शिविका उठाई और प्रातःकाल उस गाँव से चल दिए।

दोपहर को वे पानूर पहुँचे। शिविका को खेत के किनारे छोड़कर कम्मू अन्दर चला गया। उसने बाबू से मिलने की इच्छा प्रकट की। भोजन के

बाद वे आरामकुर्सी पर विश्राम कर रहे थे। छोटे-छोटे कार्यों के लिए नौकर उनको तंग नहीं करते थे, पर जब मालूम हुआ कि कैतेरी से आ रहा है तो कोई रुकावट न हुई। स्वयं बाबू जी प्रासाद से नीचे उतर आए।

नौकरों के जाने पर कम्मू ने उनसे सभी बातें विस्तार से कहीं।

"यह चन्तू का काम है, कुछ सन्देह नहीं।" बाबू ने कहा—"गाँव वालों ने मदद क्यों न दी, यह भी मुझे मालूम है। अच्छा, शिविका जल्दी अन्दर ले जाओ। मैं भी यहाँ जरूरी प्रबन्ध करूँ।"

"शिविका-वाहक भील हैं, इसलिए······।"

भीलों से शिविका लेकर अन्दर लाने के लिए उन्होंनें कम्मू के साथ कुछ नौकरों को भेजा, फिर अन्दर जाकर पत्नी को बुलाया और उसे ये बातें समझाईं। उनके परिश्रम से अन्तःपुर का एक कमरा महादेवी के लिए अलंकृत हो गया, उसकी बीमारी के सम्बन्ध में नौकरों को भी कानों-कान खबर न मिलने की आज्ञा हुई और उसकी सेवा-सुश्रूषा के लिए उण्णिनङ्ङा नियुक्त हो गई। वह पति-परायणा नारी भी बाबू की आज्ञा का पालन करने में हमेशा तत्पर रहती थी।

महादेवी शिविका से पलंग पर उतारी गई। शरीर में इधर-उधर चमड़ा झुलस गया था। वह बहुत थक गई थी, उसे थोड़ा बुखार भी आया था, अतः नम्पयार ने कहा कि शरीर को अचंचल रखना ही अच्छा है। महादेवी के बाद एक लड़की को भी शिविका से उतरते देखकर उन्होंने पूछा—"यह कौन है ?"

"अम्पू बाबू की भानजी है।"

"और तू ?"

'मैं······" उण्णिनङ्ङा की ओर इशारा करके उसने कहा—"वह मेरी बहन है।"

चन्त्रोत बाबू आयुर्वेद के पण्डित थे। उन्होंने सोचा कि महादेवी को अब विश्राम की आवश्यकता है और यदि किसी इलाज की जरूरत पड़े तो अगले दिन वैद्य बुलाया जाय। अपनी पत्नी को अभ्यागतों की सेवा-सुश्रूषा के लिए छोड़कर वे वापस आये और अम्पू को सूचना देने के लिए एक दूत

को भेज दिया।

अपने भाई से मिलकर उण्णिनङ्ङा बहुत प्रसन्न हुई। उसने इस मिलन की प्रतीक्षा नहीं की थी। उसे महादेवी की सुश्रूषा करने का अवसर भी मिला, इससे वह और भी प्रसन्न थी। राजा साहब की प्रियतमा माक्कम से मिलना ही उसने भाग्य की बात समझी थी। इसके अतिरिक्त माक्कम उसके हृदयेश्वर अम्पू नायर की बहन भी है, अतः उसकी सेवा करने का अवसर पाकर उस युवती का तन आनन्द के मारे उछल पड़ा। हमेशा वह पलंग के पास बैठी रहती, थोड़ी देर के लिए भी वह वहाँ से नहीं हटती, शान्त होकर सोने वाली महादेवी के पाँव सहलाती।

नीलुक्कुट्टी से भी वह परिचित हो गई। वह उण्णिनङ्ङा की भानजी थी, इसलिए उसे अपनी ही भानजी समझा। वह खतरे से बच गई थी। माँ के समान प्यार करने वाली माक्कम की सुश्रूषा करती हुई वह भी उण्णिनङ्ङा के पास बैठी थी और उन दोनों में कुछ बातचीत भी हो रही थी।

दोनों के सम्भाषण का विषय प्रायः कम्मू था। नीलू ने कहा कि उस दिन जबकि राजा साहब पधारे थे, कम्मू ने चन्तू नायर का सामना किया था और राजा साहब ने प्रसन्न होकर उसकी प्रशंसा की थी। उस लड़की के शील, संकोच और सम्भाषण के ढंग से उण्णिनङ्ङा को मालूम हो गई कि कम्मू पर उसकी आँख लग गई है।

महादेवी के चन्तोत आने के दूसरे दिन शाम को एक प्रसिद्ध 'कथकली-संघ' वहाँ आया। उस कला-प्रदर्शन में बाबूजी की कोई दिलचस्पी न थी, फिर भी उस समय अमीरों में प्रचलित रीति-रिवाज के अनुसार इस संघ को उन्होंने कला प्रकट करने की अनुमति दी। 'केलिक्कोट्टु'[1] के

---

१. 'कथकली के पहले होने वाला प्रारम्भिक वाद्य-घोष। सन्ध्या के समय 'केलिक्कोट्टु' सुनकर यह समझकर कि अमुक स्थान पर 'कथकली' होने वाली है, दूर-दूर से कला-प्रेमी आ जाते हैं। 'केलिक्कोट्टु' के बाद 'कथकली' शुरू होने में तीन-चार घण्टे लगते हैं। ताकि दर्शकों को सम्मिलित होने के लिए काफी समय मिलता है।

बाद अभिनेताओं के गुरु बुलाए गये।

"कौन-सी कथा खेलने वाले हैं ?" नम्प्यार ने पूछा।

"तिरुवनन्तपुरम के एक नायर ने चार खण्डों वाले 'नल-चरित' की रचना की है, बहुत अच्छा हुआ है और वह सफलता से खेला भी जा सकता है। उससे यहाँ तीसरे दिन (खण्ड) की कथा खेली जायगी। 'काला-नल' बनने के लिए हमारे संघ में एक अत्यन्त निपुण अभिनेता है, आप जरा उसका अभिनय देखें।"

"अच्छा ! मगर देखो, रात-भर का जागरण मुझसे नहीं हो सकता।"

"उसकी आवश्यकता नहीं। दो पदों का अभिनय देखना काफी है ! क्योंकि उसका गुण तभी मालूम हो जायगा।"

रात के भोजन के बाद 'दीपक रखकर' खेल शुरू हुआ तो नम्प्यार आकर अपने स्थान पर उपविष्ट हो गए।

अभिनय शुरू हुआ। प्रारम्भ में नल के अभिनय में नम्प्यार को कुछ विशेषता दिखाई न दी। उसमें साहित्य तो था, अभिनेता भी निकम्मा नहीं। अपने पास बैठने वाले एक नम्पूतिरी से उन्होंने केवल इतना कहा—"नगर-वास से बढ़कर कानन-वास की प्रशंसा करने वाला यह वर्णन बहुत अच्छा हुआ।"

कथा आगे बढ़ी। कार्कोटक-नाग के शाप के बाद रंगमंच पर 'काला-नल' आया तो नम्प्यार को जान पड़ा कि परिस्थिति में कुछ परिवर्तन-सा आ गया है। 'काला-नल' काद्रवेय-कुल-तिलक के पादों की वन्दना करके उससे आर्द्र होने की प्रार्थना कर रहा था। अभिनय की तन्मयता पर मुग्ध होकर अम्पूतिरी सिर हिलाकर कहने लगा—'शाबाश ! शाबाश ! अनुपम नाट्य है ! हाव-भाव, लास्य, अंग-विक्षेप सब ठीक हो गया !" नम्प्यार को भी यह नल निराला लगा, जैसे कि गुरु ने पहले ही सूचना दी थी। दोनों उस नल के मुख पर दृष्टि लगाए निश्चेष्ट होकर बड़ी दिलचस्पी से अभिनय देखते रहे। मगर इससे भी अधिक आकर्षक अभिनय अभी होने वाला था।

विजने बत महति विपिने—" भूत-काल के सम्बन्ध में नल की चिंताएँ फिर रही थीं। दुःख का बाँध टूट गया। कैसा करुण दृश्य था। आधी रात

के समय वह अपनी प्रियतमा को खूँखार जानवरों से भरे घोरकानन में अकेली छोड़कर चला आया है। अब उस युवती की क्या दशा होगी? जागने पर पति को न पाकर उसने क्या किया होगा? खूब रोती-पीटती होगी? और, और फिर··· ? ···किसी प्रकार बच गई होगी ?···निषध-पति के कई मित्र होते हैं, उसी प्रकार विदर्भ राजा के भी। वह उनमें किसीकी शरण में आई होगी। किसी महाशय के यहाँ पहुँच गई हो!—अभिनेता तन्मय होकर पूर्ण रूप से अपनी नाट्य-चतुरता प्रकट कर रहा था।

नम्प्यार ने घबराकर चारों ओर देखा, जैसे उनमें कुछ नया विचार आया हो। उन्होंने अभिनेता के मुख पर एक बार और नजर डाली। उन-से सहा नहीं गया। झट से उठकर नम्पूतिरी से कहा—"आप यहीं बैठकर आस्वादन करें। मैं अन्दर जाता हूँ। मेरी तबीयत ठीक नहीं।"

मकान पर पहुँचते ही उन्होंने उस अभिनेता को अपने पास लाने की आज्ञा दी। गुरु का अनुगमन करके वह नम्प्यार के सामने आया।

हाथ जोड़कर अभिनेता का अभिवादन करके नम्प्यार ने कहा—"आप सूचना दिये बिना पधारे! इसका मुझे खेद है!" नम्प्यार ने शिकायत-भरी आवाज में कहा।

बाहुक-वेषधारी राजा साहब ने आँख के संकेत से गुरु को बाहर भेजा और फिर कहा—"अच्छा, यह सब फिर कहूँगा। माक्कम कैसी हैं ?"

"भगवती श्री पोर्कली की कृपा से महादेवी आपत्ति से बच गई। चमड़ा इधर-उधर कुछ जल गया है, वहाँ दवा भी लगाई है। पहले कुछ बुखार था, अब वह प्रायः दूर हो गया।"

"कहाँ है वह ?"

"अन्तःपुर में।"

"अच्छा, जरा देख आऊँ।"

"मगर इस वेष में······।"

"तुम ठीक कहते हो।" राजा ने कहा।

"मुख धोकर कपड़े बदलिए! सब तैयार है।"

राजा साहब ने मन से नम्प्यार की प्रशंसा की।

थोड़ी देर में बाहुक का वेष बदलकर आने वाले राजा साहब के मुख पर असाधारण ज्योति प्रकट थी, मानो कार्कोटक-नाग का दिया वस्त्र-विशेष पहनकर स्वयं निषधेश्वर आ रहे हैं।

"तो अब पधारिये, इस मार्ग से ! नम्प्यार मार्ग दिखाते हुए आगे चले। अन्तःपुर के सामने आने पर उन्होंने कहा—"महादेवी उधर हैं। दास यहाँ आपकी प्रतीक्षा करेगा।"

राजा अन्दर घुसे।

कमरे में एक दीपक अपना स्वर्णिम प्रकाश फैला रहा था। उन्होंने देखा कि माक्कम सुख से सो रही है। उसके पास बैठकर एक युवती पंखा झल रही थी। अपरिचित पुरुष को अन्दर प्रवेश करते देखकर उसने आपत्ति की—"निकल जाओ यहाँ से ! यह राजा साहब की महादेवी का शयन-कक्ष है।"

"धीरे से बोलो ! वरना वह जाग पड़ेगी। डरना मत ! मैं केवल एक बार देखना चाहता हूँ।"

उण्णिनङ्ङा ने नीचे समीप सोने वाली नीलुक्कुट्टी को जगाया। जागने पर नीलू ने सबसे पहले पास ही खड़े हुए राजा साहब को देखा। घबराकर वह उठी और उनको प्रणाम किया। अब उण्णिनङ्ङा ने भी उन्हें पहचान लिया। दोनों वहाँ से हटकर दूर जाकर खड़ी हो गईं।

राजा साहब पलंग पर सोई हुई अपनी प्रियतमा के समीप बैठकर प्यार से उसके शरीर पर हाथ फेरने लगे। बुखार और नींद के कारण वह गहरी निद्रा में नहीं थी, इसलिए वह जाग गई, पर आँखें नहीं खोलीं। उसके मुख पर प्रसन्नता और मुस्कान फैल गई, जैसे वह स्वप्नावस्था में सम्भोग-सुख का अनुभव कर रही हो। राजा साहब के मुख से मानो आर्द्रता, ममता तथा सहानुभूति उमड़ रही थी। धीरे-धीरे अपनी प्राण-प्यारी के शरीर पर हाथ फेरकर उन्होंने आनन्द का अनुभव कराया। माक्कम की नींद नहीं टूटी। वह क्रमशः निद्रा और जागरण के बीच की दशा में आई। उसे जान पड़ा कि प्राणनाथ पास बैठकर सेवा-सुश्रूषा कर रहे हैं। उसे अकथनीय आनन्दानुभूति हो रही थी। राजा साहब ने उसके होठों को हिलते देखा—वह अव्यक्त शब्दों में कुछ बोल रही थी। सोचा कि स्वप्न देख रही होगी,

फिर भी वे कान लगाकर सुनने लगे। सब शब्द साफ सुनाई नहीं पड़ते थे, मगर जितना सुन सके उससे माक्कम के मन की बात व्यक्त थी। उसके कहने का मतलब यों था—

"दासी समीप नहीं है···तो भी आपके···मन में है। कभी मेरी याद भी करते हैं! मेरे लिए वह काफी है।···लोग चाहे मनमानी कहें···यदि आपके मन में···हाय! मरने से पहले आपसे एक बार मिल सकूँ तो मैं सन्तृप्त हो जाती!"

राजा साहब समझ गए कि उन्हींके बारे में वह कह रही है। उन्होंने कहा—"मेरी प्यारी माक्कम, तुझ सुचरिता के सम्बन्ध में कौन क्या कहता है? क्या उसका जवाब देने के लिए मैं नहीं हूँ? सच है, चाहे कहीं भी हूँ, तू सदा मेरे हृदय में विराजमान है।"

माक्कम न धीरे से नेत्र खोले। तब भी उसका विचार था कि यह सब सपना है। "पधारे हैं?" कहकर उसने पलंग से उठने की कोशिश की। वह बहुत घबरा गई थी।

"नहीं-नहीं, लेट जाओ!" राजा ने उसे उठने से रोका। अब उसे मालूम हो गया कि यह स्वप्न नहीं। लज्जा से उसकी आँखें झुक गई। उसके मुख से स्नेह-सिक्त वाणी निकली।—"इतना कष्ट उठाकर इस गरीब से मिलने के लिए यहाँ पधारने की कृपा हुई! मेरे कारण अपनों को क्या-क्या आपत्तियाँ नहीं होतीं! मगर भगवती श्री पोर्कली की कृपा से आपसे मिलने का सौभाग्य हुआ।"

"जरूरत पड़ने पर अपनी माक्कम के पास क्यों न पहुँच जाऊँ? जरा भी दुखी न हो! तीन-चार दिन के अन्दर सब ठीक हो जायगा। फिर हम एक साथ रहेंगे। एक दिन के लिए भी तुझे आँख से ओझल न होने दूँगा।"

इसके जवाब में माक्कम कुछ न बोली। राजा साहब ने फिर भी कहा—"अच्छा हो जाने पर यहाँ से कोट्टयम ले जाने का प्रबन्ध किया है।"

"तो क्या आप राजधानी में वापस चले जाते हैं? लोग क्या-क्या नहीं कहते! मगर मुझे विश्वास नहीं था कि इतने बड़े दुःख सहकर अन्त में इन

म्लेच्छों से हार मान बैठेंगे।"

"यह किसने कहा ?" उन्होंने उसको आश्वासन दिया—"यह केरलवर्मा अंग्रेजों का आधिपत्य मानकर कोट्टयम में नहीं रहेगा।"

"तो मुझे खेद नहीं। घर जल गया, इसमें भी दुखी नहीं होती। एक घर जल जाता है तो उसके स्थान पर एक महल बनवा देने वाले आप तो हैं ही ! फिर उसकी चिन्ता क्यों करूँ ?"

"तेरी बातें मुझे सान्त्वना देती हैं। जल्दी चंगी हो जा ! जब समाचार आया कि दुष्टों ने कतेरी घर को आग लगा दी तो मेरे मन में बिजली गिर गई। हृदय की गहराई से मेरी माक्कम की पुकार सुनाई दे रही थी। और आखिर तुझसे मिल सका। अब सो जा !"

"हाय ! अब जा रहे हैं आप ?" महादेवी ने करुण स्वर में पूछा।

"और एक बात : कुञ्ञानी ने तेरे लिए किसी मांत्रिक का लिखा रक्षक-पत्र भेज दिया है, हिफाजत से अपने पास रखो। उसने कहा है कि इसकी शक्ति से सारा रोग दूर हो जायगा !"

"बहन की मुझ पर बड़ी कृपा है, शायद आपको भी मुझ पर उनका-सा प्रेम नहीं। वह पत्र कहाँ है ? किस मांत्रिक का लिखा है ?"

राजा साहब ने कपड़े से आच्छादित उस ताड़-पत्र का टुकड़ा लेकर उसे दे दिया।

माक्कम ने उसे पहचान लिया। वह दर्द, बुखार आदि सब भूल गई। मुस्कराकर उसने कहा—"इसके लेखक बड़े चतुर मांत्रिक हैं। यह रक्षक-पत्र पाने पर मेरी बीमारी जरूर दूर हो जायगी।"

"इतना बड़ा मंत्र क्या है ?"

"मैं पढ़ूँ ?"

"तमाशा छोड़ दो ! इस मंद प्रकाश में कैसे पढ़ सकती हो ?"

"ऐसा न समझिए। यह मेरे लिए कंठस्थ है।"

वह मंद किन्तु सुन्दर स्वर में राजा साहब की वही कविता सुनाने लगी जिसे उन्होंने माक्कम के ही सम्बन्ध में लिखा था।

"बस-बस !" उन्होंने रोककर कहा—"कुञ्ञनी का भेजा मंत्र यही है ?

बीमारी जरूर दूर हो जायगी ! अब सो जाओ ! जरा मिलकर वापस जाने का इरादा था।" फिर नीलुक्कुट्टी की ओर घूमकर उन्होंने कहा—"देखो अच्छी तरह ध्यान रखना, समझीं ?"

नीलक्कुट्टी उण्णिनङ्ङा के साथ अंधकार से निकल आई—"जी हुजूर !" उसने नम्रता से कहा—"सब शुश्रूषा नम्पि बहन करती हैं। पल-भर के लिए भी ये यहाँ से नहीं हटतीं। रात-दिन पलंग के समीप बैठी रहती हैं।"

माक्कम ने हाथ के संकेत से उण्णिनङ्ङा को पास बुलाकर राजा साहब से कहा—"यह मेरी छोटी बहन है : कलंक-रहित स्वर्ण !"

उण्णिनङ्ङा सिर झुकाकर हाथ जोड़े खड़ी थी।

"ओः मैं जानता हूँ।" राजा ने कहा—"अम्पू को बचाना, उसके फल-स्वरूप तलश्शेरी वाली घटना आदि सब जानता हूँ। हम सदा तुम्हारे कृतज्ञ रहेंगे।"

उण्णिनङ्ङा चुप रही। उसमें जबान उठाने की शक्ति नहीं थी।

महादेवी ने पूछा—"वह क्या है ? क्या इसने भैया को भी बचाया ?"

"अच्छा हो जाने पर उससे ही पूछ लेना। जब तुम कोट्टयम आओगी तो इसे भी ले आना। उस समय केरल वर्मा अपनी कृतज्ञता प्रकट करेगा।"

× × ×

प्रासाद के आँगन में 'कथकली' जोर से हो रही थी। राजा साहब अंतःपुर से बाहर आये; नम्प्यार को ढूँढ़ा तो मालूम हो गया कि वे ऊपर के कमरे में विश्राम कर रहे हैं। वे वहाँ चले गए। नम्प्यार के साथ अम्पू भी वहाँ उपस्थित था।

"अम्पू कब आया ?"

"दास अभी आया। बाबूजी ने दूत भेजा था। आशा है कि कुछ आपत्ति न होगी।"

राजा साहब ने अनुमान किया कि अन्तिम वाक्य माक्कम के सम्बन्ध में है—"कुछ नहीं, जरा बुखार है। दो-तीन दिन के अन्दर सब ठीक हो जायगा। अम्प , तम अब कहाँ से आ रहे हो ?"

"तलश्शेरी से ही ।"

"क्या समाचार है वहाँ का ? कर्नल की यात्रा-सम्बन्धी बात में कुछ हेर-फेर तो नहीं हुआ ?"

"जी नहीं, तेजी से यात्रा की तैयारियाँ हो रही हैं, सभी सैनिक-दलों के नेता बुलाए गये हैं। कर्नल ने अपनी नीति उनको पूर्ण रूप से समझा दी है। यहाँ के शासन की व्यवस्था करने के लिए ही उन लोगों को बुलाया है।"

"यह सम्मेलन कब होगा ?"

"बारह तारीख को। फौज के यूरोपीय अफसरों को आज्ञा दी गई है कि वे ग्यारहवीं तारीख को ही तलश्शेरी में पहुँच जायँ।"

"अच्छा, कर्नल का विचार सही है ! नम्प्यार, क्या कहते हो ?"

"कर्नल की विदाई का निमन्त्रण यहाँ भी मिला है।" नम्प्यार ने कहा।

"बहुत अच्छा हुआ ! मुझे भी क्यों नहीं बुलाया ? इसके सम्बन्ध में गवर्नर-जनरल को सूचना देनी ही चाहिए।"

"और एक विशेषता भी है।" अम्पू ने कहा—"तलश्शेरी में बहुत लोगों को कैद में रखा है। सन्देह के आधार पर कि अमुक-अमुक आदमी हमारे सहायक हैं, वहाँ गिरफ्तारी हो रही है। चिरुतक्कुट्टी के सम्बन्ध में भी जाँच-पड़ताल चलती है। कर्नल ने जाने के पहले उसे फाँसी पर चढ़ाने का वादा किया है ?"

आश्चर्यचकित होकर राजा साहब ने पूछा—"क्या कहा ? स्त्रियों को फाँसी देगा ? कभी ऐसा हुआ है ?"

"यदि चिरुतक्कुट्टी को फाँसी देगा तो यह बड़े अफसोस की बात है।" नम्प्यार ने कहा—"उसने हमारी बड़ी सहायता की है। उण्णिनङ्ङा के विषय में......।"

"अच्छा, उसके लिए जरूरी कार्य करने पर ध्यान रखूँगा। मेरी यात्रा का समय हो रहा है। नम्प्यार ! तुमसे एक बात कहनी है।"

"आपकी आज्ञा सिर आँखों पर !" नम्र होकर नम्प्यार ने निवेदन किया।

"अम्पू ! तुम भी सुन लो ! इकतालीसवें दिन जब कि व्रत की समाप्ति

होती है, नियमानुसार मैं कोट्टयम पहुँच जाना चाहता हूँ। मेरी इच्छा है, देश के मुख्य-मुख्य लोग भी वहाँ उपस्थित हों। नम्प्यार को भी वहाँ आना पड़ेगा। मैंने निश्चय कर लिया है कि इस वर्ष पिछले वर्षों की अपेक्षा सब धूम-धाम से मनाना चाहिए।"

"जी हुजूर!" वे दोनों इससे अधिक कुछ न बोल सके।

: २१ :

कर्नल को विदा देने के लिए बड़ी तैयारियाँ हो रही थीं। वेल्लस्ली का विरह फौजी अफसरों के लिए दुखदायी था, तो दीवानी अफसरों को यह खुशखबरी थी। सुपरवाइजर ने अपना आह्लाद छिपाया भी नहीं। उसकी धारणा थी कि जब तक कर्नल वेल्लस्ली-जैसे अफसर तलश्शेरी में रहते हैं तब तक उसे दिन के दीपक के समान टिमटिमाता रहना पड़ेगा। यही था उसकी ईर्ष्या और विद्वेष का प्रधान कारण। वह बम्बई सरकार के द्वारा कर्नल को वापस बुलवाने का उपाय कर रहा था। वेल्लस्ली की यात्रा की बात पक्की हो गई तो बेबर उनको खुश करना लाभदायक समझकर विदाई का प्रबन्ध करने लगा।

बेबर ने सोचा कि पेरेरा के एकदम अप्रत्यक्ष होने में कर्नल की कुछ चालाकी है। चिरुतक्कुट्टी जो इस घटना से उत्कण्ठाकुल थी, साहब को छेड़ती रही। सुपरवाइजर कहता—"चिन्ता न करो! दो-चार दिन के अन्दर वह जायगा न? फिर देखा जायगा।" अपने जासूसों द्वारा वह समझ गया था कि विरुद्ध कर्नल सिक्कुवेरा के द्वारा चिरुतक्कुट्टी के काम करने में लगे रहते हैं। उसके विचार में यह सब वेल्लस्ली की कूटनीति थी। कुछ-न-कुछ कृत्रिम प्रमाण इकट्ठे करके वे उसका सत्यानाश करना चाहते होंगे। अतः उनके चले जाने के पहले कुछ न करना ही अच्छा है।

सिक्कुवेरा की खोज पूरी हुई। इसके लिए आवश्यक प्रमाण मिल गया

कि चिरुतक्कुट्टी पेरेरा द्वारा तलश्शेरी में होने वाली सब बातों का पता लगा लेती और फिर किसी गुप्त मार्ग से राजा साहब को सूचना देती। तलश्शेरी आकर चिरुतक्कुट्टी से मिलने वाले एक राजपुरुष के सम्बन्ध में खबर मिल गई! पयमम-घर के चन्तू ने शपथ लेकर कहा—"चिरुतक्कुट्टी के पास मैंने वही अँगूठी देखी जिसे केरल वर्मा की उँगली पर देखा था।"

चिरुतक्कुट्टी के ही नहीं, मूसा के सम्बन्ध में भी सिक्कुवेरा खोज कर रहा था। लेकिन उस तरफ उसे कुछ सफलता नहीं हुई। उन दोनों में व्यापार-सम्बन्धी कुछ लेन-देन अवश्य था, इससे अधिक कुछ नहीं निकला। पूरे प्रमाण मिल जाने पर सिक्कुवेरा कर्नल से मिला और उनसे इन बातों की चर्चा की। चिरुतक्कुट्टी से किस मार्ग द्वारा राजा को सूचना मिलती है, यह वे सिद्ध नहीं कर सके। उस स्त्री के आदमी तलश्शेरी के बाहर बहुत कम जाते थे। मगर कर्नल ने इस ओर ध्यान नहीं दिया कि वह उनके प्राप्त प्रमाणों की सर्वथा कमी है।

"तो देर न करो। उसे जल्दी गिरफ्तार करना है।" कर्नल ने कहा।

"इसमें कुछ कठिनाई है।" सिक्कुवेरा ने कर्नल को शान्त किया "उसे शीघ्र ही यह मालूम हो गया कि हमने खोज शुरू कर दी है। उस दिन से वह सुपरवाइजर के बंगले में रहती है। बेबर यह आपत्ति करेगा कि सैनिकों को वहाँ जाकर गिरफ्तार करने का अधिकार नहीं। इसके अतिरिक्त मुकदमा तभी सफल हो सकता है जब हम मूसा को भी उसमें घसीट लें।"

"ठीक है। यदि ऐसा हो गया तो बड़ा झगड़ा हो जायगा। हम मूसा पर आरोप नहीं लगा सके। वह हमारी सहायता भी कर रहा है। पूर्ण प्रमाणों के अभाव में मूसा का सामना करना ठीक नहीं।"

"गुप्त रूप से चिरुतक्कुट्टी को सुपरवाइजर के घर से बलात् हटाना अच्छा है जैसे कि परेरा को हटाया था।"

"सुपरवाइजर के बंगले में गुप्त रूप से जबरदस्ती कैसे कर सकते हैं? वह असम्भव-सा लगता है। अच्छा, मैं स्वयं बेबर से मिलूँ। जाकर उससे यहाँ आने की प्रार्थना करो।"

थोड़ी देर में सुपरवाइजर वेल्लस्ली के यहाँ आया। एक-दूसरे का अभि-

वादन करके दोनों बैठ गए।

कर्नल बोला—"मिस्टर बेबर! क्या कुछ विशेष समाचार है? सब अच्छे हैं न? मेरे जाने के पहले उस पयशी-राजा को दबाकर सूचना दे सका, यह अच्छा ही हुआ।"

"आप यहाँ से ऊँचे पद पर जा रहे हैं यह हमारे लिए खुशी की बात है। मुझ-जैसे व्यक्ति को इस बात का अभिमान है कि मराठों से होनेवाले युद्ध में महासेनापति के पद पर नियुक्त व्यक्ति हमारे परिचित हैं। पर यहाँ की शान्ति में मुझे सन्देह है।"

"ऐसा क्यों कहते हैं? यहाँ के सामन्तों ने पयशी-राजा से न मिलने तथा बगावत करने वालों की सहायता न करने का वादा किया है। कुछ भी रसद पहाड़ पर नहीं जाती। एक महीने से केरलवर्मा इधर-उधर आ-जा भी नहीं सकता। मेरी दृष्टि में बगावत का कोई चिन्ह दिखाई नहीं पड़ता।"

बेबर यह मानने को तैयार नहीं था। उसने कहा—"मेरी समझ में यह ठीक नहीं। पयशी शान्त रहता है यह सच है, मगर उसका उद्देश्य आप नहीं जानते होंगे। कैसे विश्वास करूँ कि इतने अधिक गुप्तचर रखने वाले सेनापति को यह बात मालूम नहीं?"

अन्तिम शब्दों में छिपा हुआ व्यंग कर्नल के मन में लग गया। उमड़ते हुए क्रोध को दबाकर उन्होंने कहा—"आपने क्या सुना? यदि वह देश की शान्ति के लिए हानिकारक है तो जल्दी बता देना।"

बेबर ने हँसकर कहा—"पिछला एक महीना पयशी ने शान्ति से बिताया, पर इसलिए नहीं कि वह उदासीन हो गया है। सारा वयनाड उसके काबू में हो गया है। उसने वहाँ स्थायी रूप से रहकर शासन करने का प्रबन्ध पूरा कर दिया है। मैसूर कोयम्बत्तूर आदि जगहों से उसे आवश्यक रसद मिलने का प्रबन्ध भी हो गया है। वयनाड को केन्द्र बनाकर इस स्थान पर चढ़ाई करने में क्या कठिनाई है?"

यह सुनकर कर्नल अवाक् रह गए। उन्होंने इस बात की कल्पना नहीं की थी कि केरलवर्मा ऐसे ब्रह्मास्त्र का प्रयोग करेंगे। वे जानते थे कि वयनाड के गिरि-शृङ्गों पर चढ़कर लड़ाई करना अंग्रेजी सेना की शक्ति से बाहर की

बात है। केरल के वे भयानक जंगल बाहर के लोगों के लिए यमपुरी के राज-पथ हैं। वहाँ से राजा को सहायता न मिले, इस उद्देश्य से एमन नायर को पकड़कर देश से वहिष्कृत किया था। वयनाड के ऊपर के राजा के आगमन पर कर्नल को जरा भी विश्वास नहीं हुआ। उनको और सैनिकों को रसद कहाँ से मिले, यही समस्या थी।

"तुम कुछ सुनते हो, और कुछ बोलते हो!"·· कर्नल ने कहा—"पयशी वयनाड पर चढ़ जायगा तो जाल में फँसी मछली की तरह मृत्यु का सामना करना पड़ेगा! हम वहाँ रसद और हथियार नहीं पहुँचने देंगे।"

"आप ऐसा विश्वास रखें, मगर मुझे दूसरे प्रकार की सूचना मिली है। पयशी रसद का ही नहीं अन्य सब सामग्री का भी प्रबन्ध कर चुका है। अब वहाँ जाकर रहने लग जाय तो हम पर आक्रमण करने में देर न लगेगी।"

"जब तक मैं इस देश में रहता हूँ, तब तक यह नहीं हो सकता। आगे चलकर जो होगा उसका उत्तरदायित्व मेरे ऊपर न होकर मेरे अनुगामियों पर होगा।"

व्यंगपूर्ण स्वर में बेबर ने उत्तर दिया—"अच्छा-अच्छा! अब मैं तुम्हारा उद्देश्य समझ गया। तुम केवल कृत्रिम विजय के नाम पर अधिकारियों की आँखों में धूल झोंककर पदवी और प्रतिष्ठा प्राप्त करना चाहते हो। मैंने पहले ही इसका अनुमान लगा लिया था। अब तुमसे भी मालूम हो गया।"

कर्नल को अपनी बातों पर पछतावा हुआ, उसे ऐसा नहीं कहना चाहिए था। तो भी बेबर की उपेक्षा देखकर असह्य क्रोध से उन्होंने कहा—"बस बस अधिक उद्दण्डता न करो! जानते हो अधिक बकने का क्या परिणाम होगा? तुम्हें यह मालूम है कि किससे बात कर रहे हो?"

बेबर ने देखा कि उसकी बातें कर्नल के मन में तीर की तरह चुभ गई हैं। उसने कहा—"ओ हो! मुझे अच्छी तरह मालूम है कि किससे बातें कर रहा हूँ। माननीय गवर्नर-जनरल के भाई से ही! उसी नाते तो तुम इतनी डींग मारते हो!!"

इस प्रकार किसी ने भी अब तक खुलम-खुल्ला वेल्लस्ली की उपेक्षा नहीं की थी। कुलीन, प्रतापी तथा अपने विश्वोत्तर भविष्य पर अटल विश्वास

रखने वाले उन महाशय को बेबर की इस उपेक्षा ने आग-बबूला कर दिया, जैसे भभकती हुई आग में डाला हो! लेकिन इतने छोटे जीव से विवाद करना उसने अपनी शान-शौकत के योग्य न समझकर शान्त स्वर में कहा—"सुपरवाइजर! मैं तुम्हारे इन धृष्टतापूर्ण शब्दों का उत्तर नहीं दे सकता। अच्छा, हम पयशी राजा के सम्बन्ध में बातें कर रहे थे। यदि वह इन्तजाम कर रहा है, जैसा कि तुमने अभी कहा है, उसका कारण तलश्शेरी के कुछ राजद्रोहियों की धोखेबाजी ही है, यह मैं अच्छी तरह जानता हूँ। मेरा विश्वास है कि उनके संघ से तुम्हारा कुछ सरोकार नहीं। पर तुम्हारे कुछ निकट सम्बन्धी केरलवर्मा और उसके आदमियों की सहायता कर रहे हैं। इसकी पुष्टि के लिए मेरे पास पूर्ण प्रमाण हैं। मैं उस विषय में कुछ कहना चाहता हूँ। इसीलिए तुमको यहाँ तक आने का कष्ट दिया है।"

"इसका क्या मतलब है? हमारे पास पयशी-राजा की मदद करने वाले होते हैं? मैं इसे अत्यन्त निन्दात्मक कूटनीति समझता हूँ। तुम्हारे प्रमाण के अनुसार यह काम कौन करता है?"

"जरा सँभल जाओ! जब प्रमाण मिल जाय तो समझोगे कि यह किसकी करतूत है। केरल वर्मा को यहाँ से गुप्त समाचार देने वाले होते हैं लुई पेरेरा और तुम्हारी वह सखी—क्या नाम है उस डाइन का?"

बेबर क्रुद्ध होकर उठ खड़ा हुआ। "तुम्हारे-जैसे कूटनीतिज्ञों को झूठे सबूत इकट्ठे करने में क्या कठिनाई है? तुमने झूठे प्रमाण बनाकर गवर्नर-जनरल के नाम लिखा कि तुम्हारे यत्न से पयशी-राजा दब गया है। तुमसे क्या कुछ असम्भव है? मैं इसका उद्देश्य जानता हूँ। मुझे गवर्नर-जनरल की दृष्टि में राजद्रोही बनाना चाहते हो न? तुम्हारी सब कूटनीतियों पर प्रकाश डालते हुए मैंने बम्बई सरकार के नाम पत्र लिख भेजा है। अब भी झूठे सबूतों का सहारा लेकर मुझे सताने का परिश्रम व्यर्थ है।"

कर्नल ने स्वप्न में भी नहीं सोचा था कि बेबर का व्यवहार ऐसा होगा। अब क्या उत्तर दें? वे दुविधा में पड़ गए। अन्त में कहा—"मित्र, मैं तुम्हें तंग करना या तुम पर दोष लगाना नहीं चाहता। मैं विश्वास करता हूँ कि तुम कभी विद्रोहियों के सहायक नहीं बनोगे। इसलिए तुमसे पेरेरा और उस

स्त्री को गिरफ्तार करके उन पर मुकदमा चलाने की प्रार्थना करता हूँ।"

"मेरे दुभाषिये को बलात् पकड़ ले जाकर तुमने उसको तंग किया है, तुम स्वयं यह स्वीकार भी करते हो। सिविल अफसरों को यों पकड़ ले जाने का तुम्हारा क्या अधिकार है ?"

"ठीक! मगर यह उसकी हस्तलिपि है, इस पर उसने अपने हस्ताक्षर भी किये हैं। जरा पढ़ लो। उसके बाद कहो कि मैंने न्याय किया है या अन्याय। मैं स्वयं इन पर मुकदमा नहीं चलाना चाहता। तुमको यह स्वीकार नहीं होगा। हम दोनों में इतना मतभेद है, अतः यह बात मध्यस्थों के निर्णय के लिए छोड़ दें।" कर्नल ने सोचा कि अब की बार बेबर मुट्ठी में आ जायगा।

मगर ईंट का जवाब पत्थर से देते हुए बेबर ने कहा—"असैनिक लोगों के ऊपर मेरा पूरा अधिकार है। किसी दूसरे को मुकदमा सुनने का अधिकार नहीं। कोई ऐसा करे तो उसे दण्ड भोगना पड़ेगा।"

"अच्छा, तो दूसरे लोग जाँच करके तसफिया करें कि मेरे पास के इन प्रमाणों के अनुसार उन दोनों को गिरफ्तार करना चाहिए या नहीं।"

'अच्छा, मगर यहाँ बीच-बचाव के लिए कौन है ?"

"एक व्यक्ति असिस्टेंट सुपरवाइजर हो, मंजूर है ? दूसरा परसों यहाँ आने वाले सैनिक अफसरों में से एक हो।"

"ठीक! यदि इन दोनों को अनुभव हो जाय कि वे प्रमाण, जिनके सम्बन्ध में तुम कहते हो, ठीक ही हैं, तो मैं जरूरी कार्यवाही करूँगा।"

बेबर अपने घर की तरफ लौटा। उसका विश्वास था कि चिरुतक्कुट्टी ऐसे मामलों में दखल नहीं देगी। वह उसका आदर करती है, उसे दिल से प्रेम करती है—चार साल के सहवास से बेबर इस निश्चय पर पहुँच चुका था। उसी प्रकार वह भी चिरुता को मुहब्बत करता था। उसके विरुद्ध वह कुछ नहीं करेगी। यह सोचकर कि यदि वह चिरुतक्कुट्टी को इसकी सूचना देगा तो वह कर्नल से विश्वास-घात करने के समान होगा, उसने कुछ नहीं कहा।

कर्नल ने चिरुतक्कुट्टी पर मुकदमा चलाने का निश्चय किया है—एक

हफ्ते से तलश्शेरी में इस बात की चर्चा हो रही थी। अपने नौकरों द्वारा चिरुतक्कुट्टी को भी यह पता लगा था। कर्नल और बेबर के बीच की शत्रुता उसे मालूम थी। इसलिए राजनीति में प्रवीणा उस नारी के मन में आया कि यदि उसने कर्नल के खिलाफ कुछ किया तो उससे अपने प्रियतम की भलाई होगी। इसके अतिरिक्त वह सोचती—राजा साहब उसके भी महाराजा हैं, उनकी आज्ञा का पालन करना उसका कर्तव्य है। कर्नल उनको दबाने आये थे, यही बात उसके मन में कर्नल के प्रति विरोध और घृणा पैदा करने के लिए पर्याप्त थी, इसके ऊपर बेबर और कर्नल का यह मन-मुटाव! जो कि जलते हृदय में घी का काम करने योग्य था।

दो-तीन दिन पहले छद्म वेश में अम्पू नायर तलश्शेरी आया था। उससे मिलने के बाद चिरुता के मन की शान्ति भंग हो गई। अम्पू नायर ने संक्षेप में सभी बातें उसे समझा दीं। यदि मुकदमा चलाकर उसका अपराध सिद्ध कर दिया जाय तो राज-द्रोह के लिए उसे दण्ड दिया जायगा, अतः अम्पू ने उससे तलश्शेरी को छोड़कर अपने साथ आने को कहा। मगर वह बेबर को छोड़कर भाग जाने को तैयार नहीं थी। दण्ड मिले, तो भी कुछ परवाह नहीं। अब तक बेबर ने उसकी देख-रेख की थी, उसकी बड़ी-बड़ी अभिलाषाओं को उसने अपूर्ण न रहने दिया था। ऐसे प्रियतम को वह कैसे छोड़ जाए? लेकिन अम्पू नायर ने बता दिया कि यदि वह तलश्शेरी में रहेगी तो सुपरवाइजर के लिए भी वह हानिकारक होगा। उस समय चिरुतक्कुट्टी को यह केवल तमाशा-मात्र लगा। मूसा सबकी आँख चुराकर जहाज द्वारा तलश्शेरी से विदा हो गया, यह भी उसे अम्पू से मालूम हो गया।

अम्पू नायर के चले जाने के बाद उसके मन में सन्देह पैदा होने लगा। क्या उसके अपराध से सुपरवाइजर की कुछ हानि होगी? अम्पू का कहना सही होगा? कर्नल प्रबल है, गवर्नर-जनरल उसका सहोदर है, विलायत में भी उसका बड़ा स्थान है—सुपरवाइजर से उसने यह सब समझ लिया था। तो वह इस बात पर अपने प्रियतम को सता सकता है! चिरुतक्कुट्टी की शंका बढ़ने लगी। खाने-पीने, सोने तथा आराम करने में उसका मन नहीं लगता था। अत्यन्त प्रेम आपत्तिदायक है! अपने मन से विविध प्रकार की

शंकाओं को वह दूर नहीं कर सकी। उसके कारण अपने प्राणों से भी प्यारे साहब की कुछ हानि हो जाय तो फिर वह क्यों जीवित रहे ?

बेवर को भी अनुभव हो रहा था कि कोई बड़ा दुःख चिरुतक्कुट्टी के हृदय को विदीर्ण कर रहा है। एक बार वह अन्तस्तल में चुभने वाली दर्दभरी आवाज में प्रियतम से बोली—"मेरा यह जीवन बेकार है ! मेरे कारण आपको कष्ठ उठाना पड़ता है ! मैं कहीं चली जाऊँ !"

सान्त्वना देते हुए बेवर ने कहा—"वे झूठे हैं, उन्हें बकने दो। मैं जानता हूँ, तू निर्दोष है। वेल्लस्ली किसी प्रकार मुझे सताकर चला जाना चाहता है और यह सब काम उसके लिए ही तो हो रहा है। वह जल्दी जाने वाले हैं, तो यह बला टल जायगी।"

"क्या वह आपका कुछ नुकसान भी कर सकता है ? सुपरवाइजर तो आप ही हैं न ?" चिरुतक्कुट्टी के मन में हुए सन्देहों का बाँध टूट गया।

"मेरी नादान चिरुता !" बेवर के स्वर में ग्लानि और प्रेम मिश्रित थे—"यदि वह चाहे तो मेरा सत्यानाश कर सकता है। मगर हमारे भी सहायक होते हैं। बम्बई सरकार मेरी सहायता करेगी। वह मेरा कहना ठीक समझेगी। मगर अन्तिम निर्णय करने का अधिकार-गवर्नर जनरल पर निर्भर है।"

"क्या गवर्नरजनरल इतना बड़ा आदमी है ?" निष्कलंक और नादान लड़की की तरह उसने प्रश्न किया। "क्या उसमें सुपरवाइजर को भी दण्ड देने की शक्ति है ?"—मानो सुपरवाइजर दुनिया-भर का छत्रपति हो और मानो उससे बढ़कर कोई शक्तिमान न हो !

चिरुतक्कुट्टी के अज्ञान पर बेवर को हँसी आ गई। उसने कहा—"गवर्नरजनरल सर्वोच्च अधिकारी हैं। उनका स्थान बड़े-बड़े राजा-महाराजाओं से भी ऊँचा है।"

चिरुतक्कुट्टी का मुँह मलिन हो गया, उस पर भय नग्ननृत्य कर रहा था। उसकी आँखों के सामने अन्धेरा छा गया। आँसू की दो बूँदें गालों से ढुलककर छाती पर गिर गईं।

गद्गद होकर उसने कहा- "मैं नहीं जानती थी, तब कर्नल······।"

मूर्च्छित होकर वह जमीन पर गिर पड़ी।

: २२ :

कोट्टयम शहर की अंग्रेजी सेना के नेता कप्तान स्मिथ को सूचना मिली कि उस शहर में कुछ असाधारण कोलाहल हो रहा है। सभी घर झाड़-पोंछ-कर अलंकृत किये गए थे। कई जगहों से बहुत-से लोग कोट्टयम और उसके आस-पास के प्रदेशों से आकर जुट रहे थे। कुछ प्रधान घरों में वन्दनवार, आँगन और सड़कों पर धवल रेत आदि आघोष के योग्य प्रवन्ध देखकर कप्तान स्मिथ ने नगर के मुख्य नायरों को बुलाकर इसका कारण पूछा। उन्होंने विनीत होकर उसको समझाया कि आज वर्ष का पहले व्रत का अन्तिम दिन है, राजाओं के शासन-काल में यह बड़े ठाट-वाट से मनाया जाता था, अब जनता की इच्छा है कि यह पहले की तरह ही धूम-धाम से मनाया जाय। कप्तान ने अपने पक्ष के कुरुप्रदेश के राजा के आदमियों से भी पूछ-ताछ की तो उनका जवाव भी यही था। उन्होंने कहा कि तवीयत अच्छी होती तो स्वयं बड़े राजा पधारते, तब स्मिथ शान्त हुआ। उसे कुछ कार्रवाई करने की जरूरत दिखाई न दी।

वेल्लस्ली की आज्ञा के अनुसार वह उस दिन शाम को तलश्शेरी जाने वाला था, वह उनसे विदा लेना चाहता था। यह भी नहीं, सेनापति से उसे यूरोपीय अफसरों की सभा में भाग लेने का निमंत्रण भी मिला था। स्मिथ के अनुचरों में सौंदर राज नायडू नामक एक देशी अफसर था। उसे बुलाकर कोट्टयम शहर की रक्षा के लिए जरूरी आज्ञाएँ देकर वह यात्रा की तैयारी करने लगा।

यात्रा की पूरी तैयारी हो गई थी। इतने में एक सिपाही ने आकर कहा—"तलश्शेरी की एक सेना इस तरफ आ रही है। वह करीव चार मील के फासले पर पहुँच चुकी।"

"कम्पनी की सेना? इस तरफ? कूत्तुपरम्प की ओर तो नहीं? यहाँ सेना भेजने की आवश्यकता? इस विषय में अभी तक तो कोई पत्र भी नहीं आया!"

"सेना कम्पनी की है। वह किसी को पड़ाव के पास नहीं आने देती। कुछ ठीक नहीं कि वह कहाँ जाती है। गुप्तचर कहते हैं, राजा से लड़ने कहीं

जा रही होगी ।"

स्मित ने सौंदर राज नायडू को बुलाकर कहा—"मैं अब जाने वाला हूँ । कंपनी की सेना कहीं जाने को निकली है, उसे आवश्यक सहायता पहुँचा देना । यदि वह कोट्टयम आ रही है तो उसके साथ कोई लड़ाई-भिड़ाई न हो, मगर उसी समय उसके नेता के वशवर्ती भी न बन जाना ।"

निश्चित समय पर स्मिथ तलश्शेरी की तरफ रवाना हो गया ।

सूबेदार सौंदर राज नायडू चतुर और नीतिकुशल अफसर था । उसन लश्शेतरी से आने वाले सैनिक-दल के पास दो दूत भेजे । वह जानना चाहता था कि वह दल कहाँ जा रहा है और दुर्ग से उसे कुछ मदद चाहिए या नहीं ।

कोट्टयम राजा का एक पुराना महल शहर से चार मील की दूरी पर पथ से कुछ हटकर स्थित था । पहरेदार शिरस्त्राण पहनकर तथा हाथ में बन्दूक लेकर सिपाही चारों ओर पहरा दे रहे थे, इसलिए किसी में भी वहाँ जाने का साहस नहीं था । सैनिकों के आगमन का समाचार पाते ही उस गाँव के लोग झुण्ड-के झुण्ड हो कोट्टयम की ओर निकलने लगे ।

ऐसी परिस्थिति में सन्ध्या होते-होते सूबेदार नायडू के दूत पड़ाव पर हाजिर हुए । वे सैनिक वेष में थे, अतः द्वार पर खड़े होने वाले पहरेदारों ने रोक दिया । दूतों ने कहा कि वे कौन हैं और कहाँ से आते हैं । एक पहरेदार ने जाकर अपने सरदार को सूचना दी । थोड़ी देर में दूत अन्दर बुलाए गये । उन्होंने देखा कि उस आँगन में कन्नड सैनिकों के कवच पहनकर हाथ में बन्दूक लिये करीब दो सौ सिपाही पंक्ति में खड़े हैं । राजमहल में, जहाँ सरदार बैठा था, वहाँ प्रवेश करने पर दूतों ने सूबेदार चोक्कराय को देखा ।

"हमारे मित्र सौंदर राज नायडू का सन्देश लेकर तुम आये हो न ? वे अच्छे हैं कि नहीं ?"

"सूबेदार साहब अच्छे हैं । वे जानना चाहते हैं कि आप उनसे कुछ मदद माँगते हैं या नहीं ।"

"इस समय कुछ नहीं माँगता । मैं स्वयं वहाँ आकर उनसे मिलना चाहता हूँ ।"

"तब यह सेना कोट्टयम नहीं आती ?" एक दूत ने पूछा ।

"हमारा लक्ष्य गूढ़ है। इसके सम्बन्ध में नायडू से बातचीत करूँगा। स्मिथ साहब अब कोट्टयम से निकल गए हैं न ?"

"जी हाँ !"

"तुम जरा ठहरो ? मैं अन्दर जाकर अभी आऊँ !"

चोक्कराय अन्दर गया। राजा साहब से उसने कहा—"स्मिथ तलश्शेरी की ओर निकल चुका है। कोट्टयम की सेना हम पर कुछ सन्देह नहीं रखती। अब जल्दी तैयार हो जायँ, समय बीत रहा है ! जल्दी-से-जल्दी कोट्टयम पहुँच जाना अच्छा है।"

राजा साहब को यह उचित लगा। उन्होंने तुरन्त आज्ञाएँ दीं।

चोक्कराय दूतों के पास वापस आया। गम्भीर होकर वह बोला—"तुमसे मिलकर मैं बहुत खुश हुआ। श्रीरंगपट्टन की लड़ाई में मैं और सौंदर राज दोनों कन्धे-से-कन्धा लगाकर लड़े थे। तुम तो उनके दूत बनकर आये हो, इसलिए स्वागत-सत्कार किये बिना तुमको वापस करना ठीक न होगा। तुम्हारा रात का भोजन यहाँ हो। प्रातःकाल हम एक साथ सौंदर राज के पास जा सकते हैं।"

"हम आपकी इस कृपा के लिए आभारी हैं, मगर आज्ञा के अनुसार हमें तुरन्त वापस जाना है।"

"यदि नायडू भी जानते कि इस सेना का सरदार मैं हूँ तो वे ऐसी आज्ञा कभी नहीं देते। जो हो, तुम भोजन किये विना नहीं जा सकते। समय भी बहुत हो गया।"

वे भोजन करके जाने को सहमत हुए। चोक्कराय के साथ वे और भी कई बातों के बारे में बात-चीत करते रहे।

इतने में वहाँ का सैनिक दल कोट्टयम की ओर निकल चुका था। केवल सूबेदार के द्वार पर पहरा देने वाले सिपाही बाकी रह गए थे। दोनों दूतों को सब बातें मालूम न थीं।

दूतों को भेजने के बाद सौंदर राज नायडू ने पड़ाव की जाँच की। देखा सब ठीक है। अब उसके बाद वह अपने खेमे में शान्त रहा। रात्रि-भोजन का समय हो रहा था। इतने में मन्दिर से वाद्य-घोष सुनाई दिया। उसे भी

वहाँ जाने की इच्छा हुई। नायडू देवी का बड़ा भक्त था। कप्तान की अनुपस्थिति में दुर्ग को छोड़कर बाहर जाना ठीक नहीं था इसलिए कर्तव्य-परायणता से प्रेरित होकर वह वहाँ के उत्सव में भाग लेने नहीं गया था। दूत भी अभी तक नही लौटे थे। उनकी देरी का कारण वह समझ नहीं पाया। इस समय एक सैनिक ने आकर कहा कि पययम-घर का चन्तू नायर मिलने आया है।

सूबेदार जानता था कि चन्तू नायर कम्पनी वालों का विश्वास-पात्र है, उसे कर्नल के पास जाने की भी स्वतन्त्रता है और वह कभी-कभी स्मिथ से मिलने आता है। इसलिए उसे तुरन्त ले आने की आज्ञा दी।

चन्तू ने प्रवेश करके अभिवादन किया और कहा—"राजा साहब यहाँ ही कहीं समीप हैं। तीन दिन पहले चन्ग्रोत आये थे, फिर पहाड़ पर वापस नहीं गये। दस-पचास सैनिकों को मेरे पास भेज दें तो राजा का पहाड़ पर लौटने का मार्ग अभी बन्द कर सकता हूँ।"

सूबेदार असमंजस में पड़ गया। अपनी छोटी-सी सेना में से पचास सैनिकों को भेज देने का साहस उसमें नहीं था। बोला—"कप्तान साहब की अनुपस्थिति में सैनिकों को दूसरे कार्य के लिए कोई नहीं भेज सकता। यह भी नहीं, यदि पयशी-राजा यहाँ हमला करे तो ?"

"मेरी समझ में राजा के साथ दूसरा कोई नहीं है। इसलिए यहाँ पर हमला करना सम्भव नहीं, चिन्ता न करो। ऐसा मौका फिर कभी न मिलेगा। अब मेरे साथ आदमी भेजें तो मैं इसका परिणाम दिखा दूँगा।"

'अच्छा, एक कार्य कर सकता हूँ, सुना है कि कम्पनी के एक सैनिक दल ने चार मील के फासले पर डेरा डाला है। मालूम नहीं कि वह कहाँ जा रहा है। यदि वह यहाँ आ जाय तो जरूरत भर के सैनिकों को आपके साथ भेज सकता हूँ।"

"क्या ? कम्पनी का सैनिक दल ? तलश्शेरी से ऐसी आज्ञा नहीं निकली है ! मैं कल भी कर्नल से मिला था।"

बाहर बन्दूक की आवाज सुनाई देने लगी। चन्तू ने समझा यह राजा साहब की युक्तियों में से एक है—"सूबेदार साहब ! फँस गये ! किसी प्रकार

मुझे बाहर निकाल दीजिए ।"

सूबेदार ने चन्तू की एक भी नहीं सुनी । बन्दूक की आवाज सुनते ही वह धीर योद्धा बाहर कूद पड़ा तथा सेना को सज्जित करने और दुर्ग की रक्षा करने की आज्ञाएँ देने लगा । धीरे-धीरे बन्दूक की आवाज नजदीक आती जा रही थी ।

दुर्ग के द्वार पर पहरा देने वाले सिपाही गोली लगने से गिर पड़े । सूबेदार महल से बाहर नहीं निकला था, इतने में राजा साहब सेना सहित दुर्ग के अन्दर घुस चुके थे । कम्पनी की सेना के पंक्तिवद्ध होने के पहले ही झट से उन पर हमला होने लगा । कप्तान स्मिथ की अनुपस्थिति के कारण कई सैनिक उत्सव देखने के लिए मन्दिर गये थे । शेष सैनिकों ने सोचा कि कन्नडी सेना का एक दल उन पर हमला कर रहा है । वेश कन्नडी सेना का था, युद्ध-रीति भी नायर-सैन्य की नहीं थी । मगर बन्दूकों के अट्टहास को पराजित करके सुनाई पड़ने वाले आज्ञा-शब्द कम्पनी के सैनिकों के अपने थे । उन्हें आश्चर्य हुआ कि कम्पनी की सेना इस प्रकार क्यों आक्रमण करने लगी ? सूबेदार ने बड़ी कोशिश की, फिर भी न उसके आदमी एकत्रित हुए और न राजा की सेना से वे बहादुरी से लड़े । सैनिकों को दिलासा देने के लिए नायडू इधर-उधर घूम रहा था । इस समय उसे भी एक गोली लगी । थोड़ी देर में राजा की सेना ने मैदान मार लिया—दुर्ग उसके हाथ में आ गया । उस युद्ध में कम्पनी के कई योद्धा मारे गए; शेष सैनिकों ने हथियार डालकर हार मान ली ।

बन्दूक की आवाज सुनते ही चन्तू परिस्थिति से परिचित हो गया था । वह आपत्ति से बच जाने का उपाय सोचने लगा । राजा साहब की नीति-कुशलता और समर-तत्व-विज्ञता चन्तू से छिपी न थी; अतः उसे इसकी कठिनाई अनुभव हुई ।

वह जानता था कि यदि राजा साहब किसी जगह पर आक्रमण करते हैं तो पीछे भील छिपे बैठे होंगे । उन भीलों से बच जाना सम्भव नहीं । सूबेदार के साथ युद्ध-क्षेत्र में उतर जाय तो भी वही परिणाम होगा । महल में छिपकर बैठना भी हानिकारक है, क्योंकि शुद्धि-कर्म के लिए राजा साहब

अपने निवास-स्थान की जाँच करेंगे, उस समय पकड़ा गया तो भी मृत्यु-दंड मिलेगा ।

वह जानता था कि राजमहल से बाहर जाने के लिए एक सुरंग है। लेकिन अन्धकार में उसे ढ़ूँढ़ निकालना आसान नहीं था । वह राजा साहब को जाल में फँसाने आया था, मगर इसके विपरीत उसे स्वयं फँसकर निरव-लम्ब होना पड़ा । अब महल में समय बिताना ठीक न समझकर वह बाहर निकला और उस अँधेरे में लुक-छिपकर किसी प्रकार प्राचीर तक आया। दुर्ग में तब भी लड़ाई चल रही थी। बन्दूक की आवाज धीरे-धीरे क्षीण होने लगी । उसने समझा कि अब युद्ध समाप्त होने वाला है । वह असमंजस में था कि ऊँचे प्राचीर को कैसे पार करे ? लेकिन उस सुशिक्षित युद्ध-वीर ने उसे बड़ी बाधा न समझा । समीप ही के एक सुपारी के पेड़ पर चढ़कर वह प्राचीर के ऊपर पहुँच गया । वहाँ खड़े होने पर उसे ध्यान आया कि नीचे एक भयानक खाई है । फिर भी वह निराश नहीं हुआ । साहस बाँधकर वह नीचे कूद पड़ा और खाई के उस पार जा गिरा। राजकीय सेना से दुर्ग घिरा था । एक सैनिक को किसी के गिरने की आवाज सुनाई पड़ी । अँधेरा होने पर भी उसने उस तरफ लक्ष्य करके गोली चलाई। चन्तू गोली से बच गया । तो भी उसे मालूम था कि शत्रु उसका पीछा करेगा । इसलिए भया-कुल होकर वह वहाँ से दौड़ने लगा ।

देवी-मन्दिर से वाद्य-घोष सुनाई दे रहा था । किसी प्रकार बच जाने के लिए वहाँ की भीड़ में घुस जाने के उद्देश्य से वह उस तरफ दौड़ा ।

मंदिर में जोरों से वाद्य-घोष हो रहा था, मानो वहाँ के एकत्रित लोग दुर्ग के अन्दर चलने वाले घमासान युद्ध से अनभिज्ञ हों ! उस समय धवल वस्त्रधारिणी युवतियाँ हाथ में अर्घ्य-पात्र लेकर वाद्य-घोष के साथ मन्दिर की परिक्रमा कर रही थीं । अन्दर कुछ लोग तुमुल नाद में देवी का कीर्तन कर रहे थे और बाहर भक्तजन यह सुनकर हाथ जोड़े खड़े थे ।

चन्तू देवी-मन्दिर की चहारदीवारी के बाहर की भीड़ में जा मिला । बत्तियों और दीप-दण्डों से वह मैदान दिन के समान प्रदीप्त था । कभी-कभी पीछे देखकर तथा शीघ्रता से दौड़कर वहाँ पहुँचे हुए श्रान्त चन्तू को भीड़ से

कुछ हटकर खड़े होने वाले कुछ नायर युवकों ने देखा। "लो! भगवती श्रीपोर्कली के चरणों पर बलि······।" उनमें से एक युवक आगे उछल पड़ा। वह अम्पू नायर के सिवा दूसरा कोई नहीं था।

गोंडों से शिक्षित सेना के साथ राजा साहब ने दुर्ग पर हमला किया था। उस समय उन्होंने अपने दल के नायरों को आज्ञा दी थी कि वे मन्दिर की भीड़ से हिल-मिल जायँ और जरूरत पड़ने पर सूचना मिलते ही एक-साथ मदद देने को तैयार खड़े रहें। उन नियुक्त नायरों का नेता था अम्पू नायर। इसीलिए वह वेष वदलकर कुछ प्रामाणिकों के साथ एक ओर खड़ा था, जहाँ से सारा दृश्य देख सकता था।

अम्पू ने दौड़कर भीड़ में घुसते चन्तू नायर को देखा। अब तक वह शांत होकर खड़ा था, परन्तु दुःशासन से मिले भीमसेन की तरह वह अब अशान्त हो गया। कम्मू भी वहाँ उसकी सेवा में था। अम्पू ने उससे कराल करवाल ले ली और बिजली की तरह आगे बढ़ा। पीछे-पीछे कम्मू भी था।

जब अम्पू पास आया तो चन्तू को परिस्थिति की भयानकता अनुभव हुई। उसने कहा—"मर जाऊँ तो भी क्या? पहले तुझे मार डालूँ!" उसने तलवार खींचकर एकाएक उस पर वार किया। चन्तू ने अम्पू को स्वयं सँभलने का मौका भी नहीं दिया था। मगर अम्पू झट-से हट गया। कम्मू पीछे खड़ा था, चन्तू का खंग उसकी ढाल से टकरा गया। कम्मू के कन्धे पर ज़रा चोट भी लग गई।

लोग दूर हट गए। दोनों एड़ी से चोटी तक का जोर लगाकर खंग-प्रयोग करने लगे। ऐसा लगता था कि तुल्य शिक्षित और तुल्य पौरुष के उन दोनों योद्धाओं में किसी एक की मृत्यु होने पर ही इस द्वन्द्व का अन्त सम्भव है। बाएँ हाथ में ढाल पकड़कर एक पाँव आगे बढ़ाकर, कमर झुकाए, पैशाचिक रौद्र रस छिटकाने वाली मुख-मुद्रा से चन्तू नायर को अपनी असि-लता आसानी से इधर-उधर घुमाते-फिराते देखकर दर्शक भय से विह्वल हो गए। अम्पू नायर तो अचंचल, शान्त और दृढ़व्रती-सा दिखाई दिया। दोनों के प्रयोगों में कुछ अपूर्णता न दीखी। चन्तू नायर की प्रयोग-चतुरता को अम्पू नायर के शीघ्र चलनों ने रोक दिया। सँभलकर हटने तथा दबकर थामने में उसकी निपुणता

देखकर सब लोग दंग रह गए। उन्होंने माना कि दोनों प्रतियोगी तुल्य पराक्रमी हैं।

सम्पूर्ण शक्ति लगाकर लड़ने वाला चन्तू थक गया था। यह देखकर अम्पू ने प्रत्याक्रमण करना शुरू कर दिया। फिर भी वह चन्तू के शरीर में एक छोटी-सी चोट भी न लगा सका। अम्पू नायर ने खड्ग-प्रयोग में कुछ उठा न रखा, तो भी कुछ लाभ न हुआ। अब वह तनिक घबरा गया। लोग चकित होकर एक-दूसरे को देखने लगे।

दोनों बहुत थक गए थे; फिर भी चन्तू अधिक मज़बूत दीखता था। अब अम्पू नायर को मार डालना सरल समझकर पूरी शक्ति लगाकर वह फिर भी आक्रमण करने लगा। अम्पू का प्रहार कम जोरदार होता जाता था और उसकी ढाल समय पर ठीक स्थान पर आने में असमर्थ होती। "यह ले, इस के साथ तुम्हारा गला भी!" अट्टहास के साथ वार करने का उद्यम करके चन्तू ने कदम आगे बढ़ाया। एक केले के छिलके पर पैर रखने के कारण फिसलकर वह जरा आगे झुका; इसलिए हाथ ढीला हो गया और उसका खंग ढाल से टकराकर ऊपर उड़ गया। मगर अम्पू का खंग भी दूर जा गिरा था। चन्तू ने कूदकर अपने प्रतियोगी का गला पकड़ लिया। आगे के द्वन्द्व में भी अम्पू की जीत की सम्भावना नहीं दीखी। बहुत कोशिश करने पर भी, अपनी जान के लिए लड़ने वाले चन्तू का पराक्रम मन्द होता नहीं दीखता था। चन्तू के पंजे में फँसे अम्पू ने बचने का यत्न किया। अपनी पूरी ताकत लगाकर उसने चन्तू से अपने को छुड़ाया। लेकिन उसकी जोरों की लात खाकर अम्पू दूर जा गिरा। उस समय कम्मू लपककर आगे आया। कैतेरी में वह अपमानित हो गया था; अब बदला लेने का अवसर पाकर उसने चन्तू का सामना किया। चन्तू जोर से हँस पड़ा। पर थके हुए चन्तू में अधिक देर तक युद्ध करते रहने की शक्ति नहीं थी। आखिर वह जमीन पर गिर पड़ा। छाती पर बैठकर उसका गला घोंटने वाला रौद्र-स्वरूपी कम्मू यों दीखता था कि दुःशासन के वक्षस्थल पर स्थित क्रुद्ध भीमसेन हो!

२३

मघर-व्रत-समाप्ति के शुभ दिन सबेरे सूरज कोट्टयम शहर में अपनी स्वर्ण किरण छिटका रहा था। कैसा मोहक दृश्य था! उस शहर के सभी घर अलंकृत थे। राज-पथ पर धवल-वस्त्र-धारी जन अत्यंत आनन्द के साथ इधर-उधर चल रहे थे। राजमहल के ऊपर अंग्रेजी झंडे की जगह कोट्टयम के राजाओं की विजय-पताका फहरा रही थी। रात में ही यह बात फैल गई थी कि राजा साहब ने कम्पनी की सेना को बिलकुल पराजित कर दिया है। उस दिन कोट्टयम की सारी जनता ने आँखों में रात बिताई। उसने राजमहल के द्वार तथा राज-पथ पर जुटकर अपने आराध्य-देव राजा साहब की महिमाओं का वर्णन करके ही प्रायः रात बिता दी।

सबेरा होने पर विविध स्थानों से कोट्टयम देश के सामन्त आने लगे। कूटाली नम्प्यार, कीयूर-सामन्त आदि माननीय व्यक्ति पहले आये। उसके बाद चार-पाँच घड़ी बीतने पर चन्त्रोत बाबू ने कोट्टयम नगर में प्रवेश किया। वे अपने परिवार तथा अनेक अनुचरों के साथ बड़ी धूम-धाम से आये थे। साथ ही दो अलंकृत और आच्छादित शिविकाओं को देखकर जन-समूह दंग रह गया। इनके अन्दर कौन होंगे? नगर-द्वार पर ही राजा साहब के कर्मचारियों ने उनका स्वागत किया तो उसका आश्चर्य और भी बढ़ गया। ये शिविकाएँ महल के समीप वाले अंतःपुर में उतारी गईं। बड़ी महादेवी ने ही दालान में आकर अभ्यागतों का स्वागत किया।

राज्योचित ठाट-बाट से केरलवर्मा उस दिन देवी के दर्शन के लिए मन्दिर की ओर जुलूस में निकले। हाथी-दाँत से निर्मित कमनीय शिविका में वे बैठे थे। उस विशाल जन-समुद्र में वह शिविका एक किश्ती के समान मंद गति से आगे बढ़ रही थी। वे दोनों हाथों पर वीर शृङ्खलाएँ तथा गले पर मरकत-माला पहने हुए थे। उनकी सेवा में श्रेष्ठ ब्राह्मण देश के सामन्त आदि शिविका के आगे-पीछे चल रहे थे। मार्ग के इस ओर से उस ओर तक फैला हुआ जन-समूह खुशी के मारे फूला न समाया; वह राज-भक्ति में निमग्न हो गया था। उसे मालूम हो गया था कि राजा साहब राज्य करने के लिए ही वापस आये हैं। गोरे लोग कोट्टयम में डेरा डालकर रहते थे,

यह उसके लिए एक दुःस्वप्न-मात्र रह गया। उसका विश्वास था कि अंग्रेजों को दूर करके राजा पहले की तरह सबको संतुष्ट करके राज सँभालेंगे।

देवी के दर्शन के बाद राजा साहब महल में वापस पहुँचे तो दोपहर हो गया था। उनके भोजन के बाद देशवासियों को एक शानदार दावत दी गई। विशाल भोज में वेल्लूर एमन नायर, अम्पू नायर आदि नेताओं की कार्य-कुशलता देखने योग्य थी। वे पंक्ति में बैठकर खाने वाले लोगों के पास जाकर परोसने वालों को "उन्हें खीर दो, इन्हें केले दो, इनको थोड़ा कालन[1] परोसो, इनको ओलन[2] और इनको अवियल[3] आदि कीआज्ञाएँ दे रहे थे। देखने वालों को सन्देह हुआ होगा कि ये ही पहाड़ों और जंगलों में घूम-फिरकर दुश्मन से लड़ते थे? युद्ध-क्षेत्र की तरह भोजनशाला में भी वे पहली पंक्ति में दिखाई दिये। उस दिन वहाँ इकट्ठे हुए लोगों का भोजन समाप्त होने के बाद ही राजा साहब के वे आठ कर्मचारी सामन्त खाने बैठे थे। उनको खिलाने के लिए चन्त्रोत नम्प्यार-जैसे व्यक्ति भी पास बैठे थे।

कहने की आवश्यकता नहीं कि उनके सम्भाषण का विषय राजा साहब ही थे। उनके पराक्रम, पाण्डित्य तथा ईश्वर-भक्ति की प्रशंसा होने लगी। किसी ने कहा कि आश्रितों को शरण देने में उनका कोई प्रतिद्वन्दी नहीं। अन्त में चन्त्रोत नम्प्यार, जिन्होंने अभी तक इस बातचीत में कुछ भाग नहीं लिया था, ने पूछा—"एक बात में मुझे बड़ा आश्चर्य हो रहा है, प्रबल अंग्रेजी सेना से सुरक्षित इस कोट्टयम पर राजा साहब ने थोड़ी ही देर के अन्दर इतनी आसानी से कैसे कब्जा कर लिया?"

वहाँ उपस्थित कई नेताओं को इसका रहस्य मालूम नहीं था। अपने सेनापतियों को किसी-किसी कार्य के लिए भेजने के बाद ही केरलवर्मा इस युद्ध में व्यस्त हुए थे। युद्ध-मंत्री एडच्चेन कुङ्ङन के सिवा इसका रहस्य और कोई नहीं जानता था। उसने उत्तर दिया:—"युद्ध में हमारी जीत हुई और यह जगह अब हमारी है; इसलिए अब भी इस बात को गोप्य रखने की आवश्यकता नहीं। मणत्तना के युद्ध को आप लोग भूल नहीं गए होंगे। वहाँ

१. २, ३. तरकारी विशेष।

कन्नडी सेना का एक संघ था। । उसके अधिकांश सैनिक लड़ाई के मैदान में मर मिटे। पर हमने आज्ञा के अनुसार उनके सभी शस्त्रों और पोशाकों पर कब्जा कर लिया। उस सेना के कुछ अनुभवी नौकर भी पकड़े गए। पिछले दो महीनों से इन कर्णाटक वालों के नेतृत्व में मैं अंग्रेजों की कवायद का ढंग हमारे आदमियों को गुप्त रूप से सिखा रहा था। इनके पास टोपी, बन्दूक आदि होने के कारण कम्पनी वालों के सैनिकों से इन्हें पहचानना कठिन था। राजा साहब ने चोक्कराय को उनका सरदार बनाया। उसके नेतृत्व में यह सेना यहाँ तक आई। दुर्ग के अन्दर के लोगों ने सोचा कि यह अंग्रेजों की सेना है। केवल युद्ध के समय राजा साहब ने उसका नेतृत्व ले लिया। शेष आप लोगों को मालूम है।"

सब लोगों ने राजा साहब की बुद्धिमत्ता की प्रशंसा की। चन्त्रोत नम्प्यार ने कहा—"उन्होंने एक महत्त्वपूर्ण काम किया है। कर्नल वेल्लस्ली के लिए इससे बड़ी कमजोरी नहीं हो सकती।"

उसी समय आज्ञा हुई कि नम्प्यार और अम्पू तुरन्त राजा साहब के सामने हाजिर हो जायँ। पल-भर में वे उनके सामने उपस्थित हो गए।

राजा साहब गंभीर थे। उन्होंने कहा—"तलश्शेरी से एक समाचार आया है। उसके लिए हमें फौरन कुछ-न-कुछ करना चाहिए।"

जवाब में दोनों ने कुछ नहीं कहा। वे सिर झुकाकर राजा साहब की आज्ञा की प्रतीक्षा में खड़े रहे।

"हमें यहाँ नम्प्यार की सहायता चाहिए।" राजा ने कहा।

"मेरे कहने की आवश्यकता नहीं, जैसी आपकी आज्ञा!" नम्प्यार ने जवाब दिया।

"कर्नल ने उस चिरुतक्कुट्टी को दंड देने का ही निश्चय किया है। वह बड़ा धृष्ट व्यक्ति है; स्त्री की हत्या करने में भी हिचकने वाला नहीं। उसको बचाना हमारा कर्तव्य है।"

"वह हठ करती है", अम्पू नायर ने कहा—"सुपरवाइजर को वह कभी छोड़ नहीं सकती। दास ने बड़ी कोशिश की। कहती है 'सब सहने को तैयार हूँ, मगर सुपरवाइजर को नहीं छोड़ूँगी।' "

"मैं इसे अपराध नहीं समझता।" राजा ने कहा—"उस गोरे के प्रति इतनी श्रद्धा है तो वह प्रशंसनीय है। लेकिन जानता हूँ कि वह इस विषय में कुछ नहीं कर सकता। कर्नल छोड़ने वाला नहीं।"

"जैसी आपकी आज्ञा," नम्प्यार ने निवेदन किया, "दास आज्ञा की प्रतीक्षा में है।"

"एक उपाय सूझा है। मेजर होम्स, जो अब उण्णिमूप्पन के डेरे में हमारा कैदी है, गोरों में बड़ा माननीय है। कप्तान स्टूवर्ट का भी उनमें बड़ा स्थान है। होम्स तो कर्नल वेल्लस्ली का मित्र भी है। इसलिए कर्नल को सूचना देनी चाहिए कि चिरुतक्कुट्टी को हमें सौंप दें तो हम इन दोनों को मुक्त करने को तैयार हैं। शायद इस उपाय से हमारी कार्य-सिद्धि होगी।"

यूरोपियों के स्वभाव से परिचित नम्प्यार को यह स्वीकृत हुआ। एक ग्रामीण नारी का जीवन उनके लिए तुच्छ है। मेजर होम्स-जैसे व्यक्ति के बदले में वे कितने ही ग्रामीणों को देने के लिए तैयार हैं।

"जान पड़ता है कि हुजूर का एक पत्र लेकर जाना उचित होगा। तभी कर्नल इस सन्देश पर विचार करेगा।" नम्प्यार ने निवेदन किया। उसके अनुसार राजा साहब ने ताड़-पत्र में यों लिखा :

"ॐ

कोट्टयल के राजमहल में पधारकर रहने वाले पुरलीश्वर, श्री वीर प्रतापी श्री केरल वर्मा, कम्पनी-सेना के सरदार कर्नल वेल्लस्ली को सूचना देते हैं कि—

श्री पोर्कली देवी की कृपा से यहाँ सब सुखी हैं। आशा है कि वहाँ भी उसी प्रकार हैं।

समाचार मिला है कि हमारी आश्रिता तथा प्रजा चिरुता नामक नारी को कर्नल की आज्ञा के मुताबिक कैद में रखा है और कर्नल की कुछ गलतफहमी के कारण उसे कड़ा दंड देने का निश्चय हो गया है। हमारा धर्म और इस देश के आचार-विचार स्त्री-हत्या के प्रतिकूल हैं। हमारे राज्य में ऐसा दण्ड दिया जाय तो उसका पाप हम पर भी लग जायगा। इसलिए कर्नल समझें कि यदि ऐसा दण्ड देने को ही तैयार हो जायं तो शत्रु-संहारिणी तलवार से

उसका बदला लेने के लिए हम लाचार हो जायँग ।

इसके अतिरिक्त, कर्नल भूले नहीं होंगे कि कम्पनी की सेना के होम्स, स्टूवर्ट-जैसे कुछ गोरे अफसर हमारे बन्धन में हैं । अपने आदमियों के साथ न्यायपूर्ण तथा देश के आचार के अनुकूल व्यवहार करने के लिए मैं उत्तर-दायी हूँ । शेष बातें यह सन्देश लाने वाला चन्त्रोत नम्प्यार कहेगा ।"

पत्र लिखने के बाद राजा ने उसे नम्प्यार को पढ़ सुनाया—"सब विस्तार से सुनाओ और कहो कि जंगल में फाँसी की विशेष आवश्यकता नहीं पड़ेगी । सहायता के लिए अम्पू भी साथ आयगा । आवश्यक अनुचर तथा राज-प्रणिधि के योग्य ठाट-बाट से जाना । आँख बचाकर तो नहीं जाते ।"

उनकी आज्ञा को सिर-आँखों पर लेकर नम्प्यार और अम्पू फौरन वहाँ से लौट पड़े ।

राजा फिर भी राज-काज में मग्न हो गए । विविध देशों से आये सामन्तों और स्थानिकों को दर्शन देना उन्होंने अपना कर्तव्य समझा । उनमें से एक-एक करके सबसे देश की दशा तथा अंग्रेजों के अत्याचारों से उत्पन्न उपद्रवों की पूछ-ताछ की । शोषितों के आँसू पोंछे; राज-भक्त सामन्तों को उचित उपहारों से सन्तुष्ट किया; उदासीन लोगों को अपनी कर्म-कुशलता से सचेत कर दिया । वेल्लूर बाबू, अर्लात नम्पी, एडच्चेन कुङ्कन आदि मन्त्रियों द्वारा प्रजा को उपदेश तथा सहायता देने का प्रबन्ध किया गया । इस प्रकार जनता और राजवंश में बलिष्ठ सम्बन्ध बनाए रखने की उपाधियाँ काम में लाई गईं ।

इस प्रकार पुरलीश्वर अपने महल में आकर रहने लगे । तब गोरों से पीड़ित जनता अपने दुःख भूल रही थी । उसने सोचा कि राजा साहब अब वहाँ से कहीं नहीं जायँगे ।

सन्ध्या से तीन-चार घड़ी पहले राजा को जरा विश्राम करने का अवसर मिला । तब उन्होंने अर्लात नम्पी, एमन नायर और कुङ्कन को अन्दर बुलाया ।

"क्यों नम्पी ! कैसी बात है ?"

"बहुत अच्छी ! हम लोगों के भाग्य से ऐसा नजारा देख सके !" नम्पी ने कहा ।

"कुछ दिनों से नम्पी शिकायत करने लगे थे कि मैं उदासीन हो गया हूँ, है कि नहीं ?"

"महात्माओं के मन की बातें कौन समझ सकता है ?"

"तुम्हें सिर्फ एक बात बताने को बुलाया है। अम्पू आदि के सम्बन्ध में एक बार हमसे कुछ शंका प्रकट की थी न ? क्या तुमने नहीं कहा था कि अम्पू कम्पनी वालों का आदमी है और कँतेरी के दूसरे लोगों की भी यही दशा है ?"

नम्पी दुविधा में पड़ गया। उस बेचारे का विश्वास ऐसा था। राजा के प्रति श्रद्धा के कारण उसने ऐसा कहा भी था।

राजा साहब फिर बोले—"यह नम्पी का दोष नहीं। ऐसी किम्वदन्ती देश-भर में प्रचलित थी, मैंने भी सुना थी, इन सबने भी सुना होगा।"

उनको अपनी ओर घूमते देखकर एमन नायर ने कहा—"मैंने भी यह बात सुनी थी। लोग विशेषतः महादेवी की सख्त आलोचना करते थे।"

"अच्छा, मावकम की आलोचना करने में भी उन्हें शंका नहीं थी !" राजा साहब ने कहा।

"सुना है कि उन लोगों को पयथम-घर के चन्तू ने अलग किया। इस समय यहाँ महादेवी की अनुपस्थिति के कारण भी लोगों को सन्देह हो रहा है। इस विषय में आज भी कुछ लोग रह-रहे थे।"

राजा ने दूर खड़े हुए सेवक को पास बुलाकर उसके कान में कुछ कहा। वह अन्दर गया। थोड़ी देर में महादेवी कुन्जानी के पीछे-पीछे स्वयं मावकम ने कमरे में प्रवेश किया।

महादेवियाँ राजा साहब को प्रणाम करके हाथ जोड़कर खड़ी हो गईं।

राजा साहब ने कहा—"क्या अब तुम तृप्त हुए ? मैं जानता हूँ कि उस अफवाह की जड़ कहाँ है। अच्छा, अब इसकी चर्चा से क्या लाभ ? उसके कर्मों का फल उसे मिल गया।"

"चन्तू की मृत्यु भयानक ही थी।" एमन नायर ने कहा।

"काम के धक्के के कारण मैं पूरा-पूरा समझ नहीं सका। क्या हुआ था ?" राजा साहब ने पूछा।

"कहते हैं कि जब हमने दुर्ग घेर लिया था तो वह वहाँ था। प्राचीर पार करके भीड़ में घुसकर बच जाने के इरादे से देवी मन्दिर की ओर दौड़ पड़ा। वहाँ अम्पू ने उसे देख लिया। फिर भीम-दुःशासनों का युद्ध हुआ। खड्ग-युद्ध में अम्पू जीत न सका। लेकिन पैर फिसलकर जब चन्तू गिर गया तो फिर कुश्ती शुरू हुई। आखिर अम्पू थक गया तो एक युवक ने, जो अम्पू के पास खड़ा था, चन्तू की तरफ लपककर उसे जीत लिया।"

राजा ने आश्चर्य से पूछा—"वह युवक कौन है, जिसने कुश्ती में चन्तूको मार डाला? उसका सामना करने वाला इस केरल में निःसंदेह कोई भी नहीं होगा।"

"आज सबेरे अम्पू ने सारी बात विस्तार से कह सुनाई।" एडच्चेन कुङ्कन ने जवाब दिया—"कैतेरी के रहने वाले कम्मू नामक युवक ने चन्तू को जीत लिया है। उसीने अम्पू को भी बचाया।"

"ओः अब समझा। हमारी उण्णिनङ्ङा का भाई! उसका पराक्रम मैंने इसके पहले भी एक बार देखा था। अच्छा, देखा जायगा।" फिर दोनों महादेवियों की ओर संकेत करके उन्होंने सम्बोधित किया—"नम्पी! आज ये दोनों देवी-दर्शन के लिये जाने वाली हैं। एमन और नम्पी दोनों को इनके साथ जाना पड़ेगा। अपश्रुति से डरना ही चाहिए। लोग देखें और समझें।"

२४ :

कर्नल वेल्लस्ली की विदाई का दिन समीप आ रहा था। तलश्शेरी की दशा भी बिलकुल बदल रही थी। वेबर साहब के दल के लोग, जो अब तक दबे रहते थे, सिर उठाने और खुले आम कर्नल की उपेक्षा करने लगे। तलश्शेरी में समाचार पहुँचा कि कम्पनी की सेना को हराकर राजा ने कोट्टयम दुर्ग पर कब्जा कर लिया है। अब कर्नल और सुपरवाइजर के विद्वेष ने अपना नग्न रूप धारण कर लिया।

"केरल वर्मा ने अनायास ही यह काम कर डाला !" बेबर ने व्यंग किया। सबने माना कि यह वेल्लस्ली के प्रति कही गई व्यंग्योक्ति थी। बेबर की यह वाणी कर्नल के कानों तक पहुँची। उन्होंने इसे अपनी ही नहीं, अपने भाई की भी उपेक्षा समझा।

कर्नल ने गवर्नर-जनरल को समझाया था कि केरल वर्मा पराजित हो गए, सभी विद्रोही दब गए हैं और इस प्रकार समस्त केरल में शान्ति फैला-कर हम वापस आ रहे हैं। इसी जय-घोषणा के आधार पर गवर्नर जनरल ने कर्नल वेल्लस्ली को मराठों से लड़ने के लिए सुसज्जित सेना का सेनापति बनाया था। पर अब केरल वर्मा की विदग्धता ने अनवसर पर इन उपायों के अन्तर्लीन छल को एक साथ प्रकट कर दिया। उससे यह निश्चय हो गया कि केरल वर्मा पराजित नहीं हुए हैं। बगावत का अंत होने की बात तो दूर रही, बल्कि वह और भी जोर पकड़ रही थी। गवर्नर-जनरल के विरोधियों को भी यह बात सहायक होगी। इसके पहले कर्नल को यों अपमानित होना नहीं पड़ा था। गवर्नर-जनरल के नाम उनके भेजे हुए सभी बयान झूठे निकले। केरल वर्मा की इस करतूत ने कर्नल के मुख पर कालिख पोत दी।

ज्यों-ज्यों कर्नल की व्याकुलता बढ़ रही थी, त्यों-त्यों बेबर के आनन्द की वृद्धि हो रही थी। बम्बई सरकार तथा सिविल अधिकारियों की परवाह न करने वाले कर्नल की इस पराजय को उसने अपनी ही विजय समझा। उसने सोचा अब वेल्लस्ली के अहंकार का शमन होगा।

इस व्याकुलतापूर्ण दशा में भी कर्नल विद्रोहियों के सहायक बनकर तल-श्शेरी में काम करने वाले दल का सत्यानाश करने के लिए दिल लगाकर काम करते रहे। पूर्व निश्चय के अनुसार दो मध्यस्थों ने चिरुतक्कुट्टी पर लगाये गए अपराधों के प्रमाणों की जाँच की। यह प्रमाणित हो गया कि मूसा, चिरुतक्कुट्टी और पेरेरा अपराधी हैं। मध्यस्थों ने कर्नल से अपराधियों को मृत्यु-दण्ड देने की सिफारिश की।

मूसा को गिरफ्तार करने के उद्देश्य से कर्नल ने उसे ढूँढ़ा। मगर उसके कारिन्दे से मालूम हुआ कि वह तीन-चार दिन पहले लंका चला गया है।

मध्यस्थों का निर्णय सुनाने के लिए कर्नल ने बेबर और अन्य सिविल

अफसरों को अपने दफ्तर में बुलाया। बेबर आदि को यह मालूम न था कि वेल्लस्ली ने किस कार्य के लिए उनको यों बुलाया है।

केरल के विविध स्थानों से आये हुए सेनापति, वेल्लस्ली के अंग-रक्षक आदि कई लोग वहाँ उपस्थित थे। जब सुपरवाइजर और अन्य अफसर आकर बैठ गए तो कर्नल ने कहा—"दो दिन के बाद मैं यहाँ से जाने वाला हूँ। माननीय गवर्नर-जनरल ने हमें आज्ञा दी है कि केरल के लिए एक नए सेनापति की नियुक्ति होगी, लेकिन तब तक यहाँ का कार्य बे-रोक-टोक चलने का प्रबन्ध होना चाहिए। अब हमें सूचना मिली है कि देश में पूर्ण शान्ति स्थापित नहीं हुई और केरल वर्मा को अब भी शरारत सूझ रही है। इसलिए मेरा उत्तरदायित्व बढ़ गया है। मैं सेना को तत्सम्बन्धी आज्ञाएँ दे चुका हूँ। मगर जय और पराजय केवल सेना पर अवलम्बित नहीं। यदि सिविल अधिकारियों की सहायता न मिले तो सेना दुर्बल हो जाती है। इसके अतिरिक्त इस शहर में हमारे विरुद्ध एक संघ काम कर रहा है, यह भी प्रमाणित हो गया है। उस संघ को निर्मूल करना बहुत आवश्यक है। इसके लिए सिविल अधिकारियों के साथ परामर्श किया। लेकिन हममें मत-भेद होने के कारण सारा निर्णय दो मध्यस्थों को सौंप देने को हम राजी हो गए। शर्त थी कि उनका निर्णय स्वीकार करने को हम बाध्य हैं। आज सबेरे वह निर्णय हमारे पास आया है। वे सिफारिश करते हैं कि उस संघ के नेता मूसा मरक्कार, चिरुतक्कुट्टी नामक स्त्री तथा पेरेरा नामक दुभाषिये को सैनिक नियम के अनुसार फाँसी पर चढ़ाना और दूसरे लोगों को देश से निर्वासित करके कैदखाने में डालना चाहिए। मिस्टर बेबर ! आपकी क्या राय है ?"

बेबर की आँखें लाल हो गई। आपे से बाहर हो जाने के कारण वह बहुत देर तक कुछ बोल नहीं सका।

"मुझे यह निर्णय ठीक नहीं लगता। जो प्रताप केरल वर्मा पर नहीं चल सका, क्या उसे एक अबला पर चलाना ठीक होगा ? अपने मित्र मूसा को पहले ही भेज दिया। अच्छा, बड़े न्यायी हैं ! परन्तु मैं इस निर्णय का विरोध करता हूँ। यह सिविल अधिकारियों का काम है। मैंने इसके संबंध

में बम्बई-सरकार के नाम लिखा है । मेरी सम्मति में जब तक उसका उत्तर न मिले तब तक कुछ नहीं करना चाहिए ।"

वहाँ की परिस्थिति बिगड़ गई । उस समय एक सिपाही ने आकर कहा कि केरल वर्मा का एक दूत-प्रणिधि एक अत्यन्त प्रधान संदेश लेकर आया है तथा कर्नल से मिलना चाहता है । सब आश्चर्य-चकित हो गए ।

"क्या ? दूत-प्रणिधि ? केरलवर्मा का ?" कर्नल ने पूछा ।

"जी हाँ ! वह सीधा कोट्टयम से आ रहा है, ऐसा कहता है ।"

"कर्नल साहब को विदा करने के लिए भेंटें भेज दी होंगी ।"—बेबर ने व्यंग किया—"जो भी हो, पयशी का यह प्रयास असामयिक है ।"

उमड़ते हुए क्रोध को स्वयं सँभालकर कर्नल ने आज्ञा दी—"दूत-प्रणिधि प्रवेश करे !"

अपने पद के उपयुक्त वेश-भूषा पहने हुए चन्त्रोत बाबू और अम्पू नायर उस सभा में प्रविष्ट हुए । वेल्लस्ली के अतिरिक्त वहाँ पर उपस्थित शेष सब लोग नम्प्यार को जानते थे । वेश-भूषा और शान-शौकत को देखकर बुद्धिमान कर्नल ने सोचा, यह दूत-प्रणिधि माननीय है । उन्होंने एक कुरसी की ओर संकेत करते हुए कहा—"बैठिए !"

नम्प्यार बैठ गए ।

"आप केरलवर्मा के यहाँ से आ रहे हैं ?" कर्नल ने पूछा ।

"हम महामान्य कोट्टयम राज्य की आज्ञा लेकर आये हैं ।"

"केरल वर्मा यहाँ क्या सूचना देना चाहते हैं ? समझौता करना चाहते हैं तो पहले कहे देता हूँ, उसका समय बीत गया !"

सहज मुस्कान के साथ नम्प्यार ने कहा—"मैं विजयी महाराजा को शान्ति-प्रिय कहने में नहीं हिचकता । वे अपने और अपने देश के गौरव को बनाए रखकर सदा सन्धि करने के लिए सन्नद्ध रहते हैं । लेकिन हमारे इस आगमन का कारण यह नहीं । उनका यह पत्र पढ़ने से पूरी बात समझ में आ जायगी है ।"

नम्प्यार ने अपने पास सुरक्षित रखा हुआ पत्र कर्नल को दे दिया । उसे उलट-पुलटकर देखने के बाद उन्होंने उसका अनुवाद करके सुनाने के लिए

सिक्कुवेरा को सौंपा। दुभाषिये ने पूरा पत्र पढ़ा, फिर उसका अर्थ जैसा-का-तैसा सभासदों को समझाया।

कर्नल का चेहरा तमतमा उठा—"इस गरीब राजा की धृष्टता! हमसे बराबरी का व्यवहार करना चाहता है! उससे जाकर कहो अतुल्य सत्ता-धारिणी कम्पनी अपराधियों को कभी नहीं छोड़ेगी। यदि वह एक भी गोरे सैनिक को सतायगा तो हम इस समस्त केरल देश को चकनाचूर कर देंगे।"

सिक्कूवेरा ने इस उत्तर का अनुवाद करके सुनाया। नम्प्यार ने कुछ सोचा, फिर शान्त होकर फरांसीसी भाषा में उत्तर दिया—"राजा साहब निरपराधियों का रक्त बहाना नहीं चाहते। वे समझते हैं कि मेजर होम्स एक माननीय सेनापति हैं तथा इंगलैंड में उनका स्थान प्रतिष्ठित कुलीनों में से है। मगर इस प्रार्थना की तनिक भी परवाह न करके यदि कर्नल उद्दण्डता करने लगे तो उनका कहना कोरी धमकी नहीं होगी। पुरली पहाड़ पर फाँसी की आवश्यकता नहीं, कर्नल इसका भी विचार करें!"

सेनापतियों ने प्रायः नम्प्यार का भाषण समझ लिया। वे परस्पर देखने लगे। एक ग्रामीण स्त्री तथा एक दुभाषिये के लिए उनके कुछ मुख्य नेताओं को फाँसी पर चढ़ना पड़े तो यह बड़े अफसोस की बात होगी। वे यह मानने को कदापि तैयार नहीं, क्योंकि यह उनकी ओर से घोर अपराध होगा। बेबर उनका विचार समझ गया। उपेक्षा भरे स्वर में उसने कहा—"मेजर होम्स महान् हैं, बड़े प्रतिष्ठित व्यक्ति हैं। इंगलैंड में उनका बड़ा स्थान है। कप्तान स्टूवर्ट की भी यही दशा है। मगर ब्रिटिश साम्राज्य की रक्षा के लिए यदि उनको अपना जीवन भी न्योछावर करना पड़े, यदि उनका मृत शरीर बाजों और कौओं की खुराक भी बन जाय तो उसमें कौन-सी बड़ी बात है? क्या हम इस पर अफसोस करने वाले मूर्ख हैं? 'एक स्त्री और दुभाषिये' को निस्सार न समझें! उनसे यदि कम्पनी का महत्त्व मन्द पड़ जाय तो?"

'क्या कहते हैं आप?" कुछ सेनापतियों ने एक साथ कहा—"क्या हम मेजर होम्स आदि को मृत्यु-दण्ड भोगने के लिए छोड़ देंगे? ऐसा कभी नहीं हो सकता! एक स्त्री को दण्ड देने के उद्देश्य से मेजर होम्स को मरने देना नहीं चाहिए। लोग हम पर दोष लगाएँगे।"

वेल्लस्ली ने सैनिक अफसरों की गति समझ ली। वे असमंजस में पड़ गए। उनके कहने में भी न्याय है। किसी दूसरी परिस्थिति में ऐसी शर्त स्वीकार करने को कर्नल प्रसन्नता से तैयार होते, लेकिन अब बेबर के सामने वे यह कैसे करें ? क्योंकि यह बेबर की विजय होगी ! ऐसा विचार उनके मन में शूल का काम करने लगा। मगर इसके अतिरिक्त दूसरा चारा भी न था। फरासीसी भाषा में उन्होंने नम्प्यार से कहा—

"मैं तुम्हारा मतलब समझ गया। एक कुलटा नारी तथा एक निकम्मे दुभाषिये के वध से हमारा कुछ लाभ नहीं हो सकता। इसलिए मेजर होम्स और कप्तान स्टूवर्ट को मुक्त करके हमें सौंप दें तो इनको छोड़ देने में मुझे कुछ आपत्ति नहीं। मगर कल शाम के पहले उन दोनों को यहाँ पहुँचाना चाहिए।"

नम्प्यार सहमत हो गए। उन्होंने कहा कि या तो इसके अनुसार एक प्रतिज्ञा-पत्र लिखना चाहिए, या चिरुतक्कुट्टी को तुरन्त तलश्शेरी से हटाकर कम्पनी की अधिकार-सीमा के बाहर ठहराना चाहिए।

बेबर ने कहा—"उसकी जरूरत नहीं। जब मेजर होम्स आदि यहाँ आ जायँगे तो तुम्हारे आदमियों को मैं छुड़ा दूँगा। लेकिन जानना यह चाहिए कि यह लेन-देन उन्हें स्वीकृत भी है या नहीं।"

मगर कर्नल की सम्मति में उसकी आवश्यकता नहीं थी। अंग्रेजी सैनिकों की जान से तुलना करते समय, उनके विचार में, इन्हें बिलकुल नगन्य समझना चाहिए था।

"जैसी आप लोगों की मर्जी !" अन्त में उन्होंने कहा। बेबर खुश हुआ।

"तो परसों प्रातःकाल हमारे आदमियों को यहाँ हाजिर करना चाहिए। आप और कुछ कहना चाहते हैं ?" वेल्लस्ली ने पूछा।

नम्प्यार ने मलयाली भाषा में जवाब दिया—"केवल यह कि आपको राजा साहब की बधाइयाँ हैं। आपकी यात्रा सुखद हो !"

भभकती हुई आग में घी डाला गया। वेल्लस्ली आग-बबूला हो उठे ! राजा की बधाइयाँ ! इन बधाइयों से उन्होंने उनका अपमान नहीं किया ? अनियंत्रित कोप से वे एकदम कुरसी से उठकर किसी से कुछ बोले बिना

ही अन्दर चले गए। सभा भंग हो गई।

जब बेबर बाहर निकला तो नम्प्यार को संकेत से अपने पास बुलाया और पूछा—"कम्पनी के हितैषी होकर भी आप इसमें कैसे फँस गए?"

"मैं कम्पनी का हितैषी हूँ, इसीलिए यह काम करने का साहस किया है। मैं जानता हूँ कि ईर्ष्यालु इसे गलत समझेंगे। मगर आशा है, आप-जैसे महाशय ऐसा न करेंगे। सच बताऊँ: एक अवसर पर चिरुतक्कुट्टी ने मेरी बड़ी सहायता की थी, इसलिए उन्हें इस आपत्ति से बचाना मेरा कर्तव्य है।"

"उसने आपकी कौन-सी सहायता की है?" बेबर ने पूछा।

"आपको स्मरण न होगा। उस दिन मेरे आश्रय में रहने वाली एक लड़की को कुछ सिपाही पकड़ ले गये थे। तब आपने मेरी प्रार्थना स्वीकार करके उसे छुड़ाया था। इस विषय में.........।"

"आपने उचित ही किया। नहीं तो यह दुष्ट उस छोकरी को फाँसी पर चढ़ाकर ही छोड़ता। चिरुता निरपराध है, इसमें मुझे सन्देह नहीं। कहते हैं कि केरल वर्मा की एक अँगूठी उसके पास देखी है और उसको बड़ा प्रमाण मानते हैं! दो व्यक्तियों के पास एक ही प्रकार की अँगूठियाँ नहीं हो सकतीं? इन बातों पर मुझे विश्वास नहीं आता। चिरुतक्कुट्टी कभी दोषी नहीं हो सकती।"

"अंगूठी के बारे में आप सन्देह न करें। किसी समय राजा साहब ने वह मुझे भेंट की थी। मैंने अपनी कृतज्ञता प्रकट करने के लिए वह अँगूठी चिरुतक्कुट्टी को दी थी।"

बेबर प्रसन्न हुआ और बोला—"अब मेरे मन से एक बड़ा बोझ दूर हो गया।"

इतने में वे तीनों बेबर के बँगले पर पहुँच चुके थे। अन्दर पहुँचते ही एक नौकर ने आकर भयाकुल हो बेबर से कुछ कानाफूसी की। कमरे का दरवाजा खोलकर अन्दर झाँका तो वहाँ के दृश्य ने उनको स्तब्ध कर दिया। चिरुतक्कुट्टी की मृत-देह वहाँ पड़ी थी। अम्पू नायर ने जो अब तक चुप था, जल्दी अन्दर घुसकर उस युवती का सिर अपनी गोद में उठा लिया। उसकी

आँखों से आँसुओं की झड़ी लग रही थी। नम्प्यार चकित रह गए।

दोनों अविलम्ब वहाँ से लौटे। चलते समय अम्पू ने चिरुतक्कुट्टी की कहानी सुनाई। उसकी पत्नी और चिरुतक्कुट्टी बड़ी सहेली थीं। टीपू की चढ़ाइयों के समय दोनों एक मुसलमान सेनापति के हाथ में फँस गईं। उसकी पत्नी ने तो आत्म-हत्या करके अपनी लाज की रक्षा की, मगर अविवाहिता युवती चिरुतक्कुट्टी गुलाम बनाई गई। एक कोङिङ्णी ने उसे खरीद लिया। फिर वह पेरेरा के वश में आ गई। अम्पू नायर ने अपनी पत्नी को विविध देशों में ढूँढ़ा था। उस समय किसी-किसी ने कहा था कि चिरुता अब भी जिन्दा है। कोङिङ्णी से खरीदकर जब पेरेरा उसे तलश्शेरी में लाया तो उससे बचाने के लिए अम्पू वहाँ कुछ दिन रहा था। उस समय उसे सारी बात मालूम हो गई थी। उसने चिरुतक्कुट्टी से भेंट की तो उस युवती ने बेबर के साथ रहने का अपना आग्रह प्रकट किया। इसके अतिरिक्त वह समाज से बहिष्कृत थी, उसे घर ले-आकर क्या करता? उसने बड़ी-बड़ी तकलीफें सह-कर भी अन्त में अनुरागमय जीवन में प्रवेश किया था। चिरुता और बेबर दोनों एक-दूसरे को बहुत चाहते थे। इसलिए अम्पू ने उनके प्रेम में बाधा डालना ठीक नहीं समझा।

सब सुनकर नम्प्यार के मुँह से यही निकला—"ईश्वर की मर्जी!"

: २५ :

केरलियों की पुरानी राजधानी अंग्रेजों की सेना से छीन ली गई; इस घटना ने केरल को पुलकित कर दिया। कोयिक्कोड शहर से पुर्तगालियों को हराकर भगा देने के बाद केरल के राजाओं ने यूरोपीयों के विरुद्ध इतनी महत्त्वपूर्ण विजय प्राप्त नहीं की थी। कन्याकुमारी से लेकर गोकर्णम तक की जनता न इस पर राजा साहब का अभिनन्दन किया। उद्दण्ड शास्त्री ने कोट्ट-

यम के महाराजाओं की प्रशंसा करके कहा था—"युद्धे येषामहितहतये चण्डिकासन्निधत्ते।" अब भी पण्डित कहने लगे कि शास्त्रीजी की यह प्रशंसा सत्य ही होगी और स्वयं भगवती श्री पोर्कली ने इस विजय के लिए आगे आकर युद्ध किया होगा।

केरलियों ने कोट्टयम की पुनः प्राप्ति से उत्पन्न बड़प्पन और प्रताप अनुभव किया। जनता ने केरल वर्मा की प्रशंसा करके कहा कि ये ही केरल-केसरी हो सकते हैं।

राजा साहब अपने महल में दिन बिता रहे थे। ऐसा मालूम होता था कि उनके लिए कुछ असाधारण घटना नहीं है। पहले की तरह सब कार्य चलाने में उनके कर्मचारी व्यस्त दीखते थे।

विविध स्थानों से सामन्त और स्थानीय व्यक्ति भेंटें लेकर राजा साहब से मिलने आए। राजा उनको दर्शन देते और उनका आदर-सत्कार करके वापस करते। उनके व्यवहार से लोग समझते थे कि आगे चलकर वे कोट्टयम में ही रहना चाहते हैं। एक बात में उन्हें विशेष प्रसन्नता थी। महादेवी माक्कम के सम्बन्ध में विरोधियों ने जो निन्दात्मक बातें प्रचलित की थीं, दूर की गईं। यद्यपि माक्कम पूरी तरह से स्वस्थ नहीं हो पाई थी, तो भी लोग उसे बड़ी महादेवी और परिचारकों के साथ देवी-दर्शन के लिए जाते देखते थे।

तलश्शेरी से चन्त्रोत बाबू और अम्पू वापस आये और राजा साहब से सब बातें कह सुनाईं। उनकी यह राय थी कि चिरुतक्कुट्टी की मृत्यु हो जाने के कारण अब वेल्लस्ली के साथ किये गए समझौते का मूल्य नहीं रह गया है। लेकिन राजा साहब की राय इसके विपरीत थी। प्रतिज्ञा के अनुसार उन्होंने मेजर होम्स और कप्तान स्टूवर्ट को मुक्त करने का निश्चय किया। चोक्कराय ने भी इसका समर्थन करके कहा—"इनको कैद में रखने से हमारी हानि होती है। यदि उनको छोड़ दें और उसके बदले में कुछ न माँगें तो यह हमारी विशाल-हृदयता का अच्छा नमूना होगा। वेल्लस्ली भी इसका अभिनन्दन करेगा इससे यह भी सिद्ध होगा कि उन लोगों के भय से हम कुछ नहीं करते।"

राजा केरलवर्मा ने चोक्कराय की राय स्वीकार की। उन्होंने नम्प्यार को ही आज्ञा दी—"इन दोनों अफसरों को तलश्शेरी ले जाकर कर्नल को सौंप दो।"

जाने के पहले राजा साहब ने नम्प्यार को पुरस्कार के रूप में दो वीर शृंखलाएँ और अन्य भाँति-भाँति के उपहार दिए। फिर विदा करते समय उन्होंने कहा—"थोड़े दिन में हम वयनाड जाकर रहने वाले हैं। यह मैंने तुमसे पहले कहा भी था। इसलिए अब यह नहीं कहा जा सकता कि फिर कब मिलेंगे। आशा है, तुम यथा-शक्ति हमारी सहायता करते रहोगे।"

नम्प्यार का कण्ठ अवरुद्ध हो गया—"आप चाहे कहीं भी हों, हमारे मूर्तिमान ईश्वर हैं। भगवती की कृपा से सब मंगलमय हो जायगा।"

नम्प्यार विदा हो गए तो अम्पू अन्त:पुर की तरफ चला गया। उसे मालूम हुआ था कि माक्कम के पीछे-पीछे उण्णिनङ्ङा भी वहाँ आ पहुँची है। परन्तु अब तक उससे मिलने का अवसर नहीं मिला था। अम्पू के आने का समाचार पाकर बड़ी महादेवी उसका स्वागत करने के लिए आईं। उसके पीछे उण्णिनङ्ङा भी थी। अम्पू नायर ने समझ लिया कि उस-के आगमन का उद्देश्य बड़ी महादेवी को मालूम हो गया है।

"बहन के शरीर का चमड़ा इधर-उधर कुछ जल गया था। अब धीरे-धीरे अच्छी हो रही है, भय की कोई बात नहीं।" बड़ी महादेवी ने कहा।

"सेवा-सुश्रूषा के लिए जब आप हैं तो हमें क्या चिन्ता ?"

"सेवा-सुश्रूषा करने वाली मैं नहीं, यह है। मैंने ऐसा प्रेम और किसी में नहीं देखा, ऐसी श्रद्धा भी दूसरों में मिलनी सम्भव नहीं। यह कभी माक्कम से नहीं बिछुड़ती।"

यह प्रशंसा सुनकर उण्णिनङ्ङा शर्मिन्दा हो गई। महादेवी ने फिर कहा—"अम्पू नायर! तुम बड़े भाग्यवान् हो! इस मातृहीन लड़की को मैं तुम्हें ही सौंप दूँगी।"

"क्यों कुञ्जानी ? मुझसे पूछना भी नहीं चाहिए ?" यह सुनकर सब घबरा गए—राजा साहब आ रहे थे! "घबराना मत!" उन्होंने कहा—"मैं कुञ्जानी की बात पूरी तरह नहीं मानता। मातृहीन और पितृहीन

लड़के-लड़कियों के अभिभावक राजा होते हैं। इसलिए कन्या-दान का हक मेरा है ।"

लज्जा के मारे और अधिक सुनने की शक्ति उण्णिनङ्ङा में नहीं थी; वह वहाँ से चली गई और माक्कम के पास जा पहुँची।

"क्या यह दासी राजा के अधिकारों में हाथ डालेगी ?" महादेवी कुञ्जानी ने कहा—"सुना है 'कङ्कणम् राजहस्तेन' मगर यहाँ 'कन्यका राजहस्तेन' हो जाय !"

"समय आने पर सब ठीक हो जायगा। क्यों अम्पू ? मैंने तेरी कुश्ती की बात सुन ली।"

"उसमें दास पराजित हो गया।" विनीत होकर अम्पू ने निवेदन किया।

"आखिर कम-से-कम एक बार अम्पू ने पराजय मानी। मैंने कई बार कहा था कि चन्तू का सामना करते समय सावधान रहना चाहिए। यदि वह कम्मू न होता······।"

"जी हुजूर ! वह न होता तो मैं न बचता ! स्वयं चोट खाकर भी उसने मेरी जान बचाई। उस युवक की बहादुरी असाधारण है।"

"मैंने एक बार उसे कैतेरी में देखा था। अच्छा, आशा है उसके घाव गहरे नहीं होंगे। कल सबेरे उसे मेरे सामने हाजिर करना, उसे मैं अपना अङ्ग-रक्षक बनाऊँगा।"

"तो कन्या-दान का यह कर्म भी होने दीजिए। मालूम होता है कि आप सबको सन्तुष्ट करने को तैयार हो गये हैं।"

"वह क्या है ?" राजा साहब ने पूछा।

महादेवी ने धीमी आवाज में नीलुक्कुट्टी और कम्मू के प्रेम की कहानी सुनाई।

"ऐसी बात है ! तो ऐसा ही होवे !" राजा साहब ने कहा।

"शुभस्य शीघ्रम् ! वस्त्र-दान[1] का मुहूर्त ठीक करना ही अब बाकी है।"

१. नायर-समाज में वस्त्र-दान विवाह-कर्म का प्रधान कार्यक्रम है। वर-वधू के हाथों में वस्त्र देकर उसे अपनी सहधर्मिणी बनाता।

शीघ्र ही दोनों विवाह राजा साहब की उपस्थिति में सम्पन्न किये गए। माक्कम के आनन्द की सीमा न थी। शायद इन विवाहों में वह दम्पतियों से भी अधिक प्रसन्न थी।

उण्णिनङ्ङा और माक्कम बिलकुल गहरी सहेलियाँ हो गई थीं। माक्कम कहती थी कि उण्णिनङ्ङा की सेवा-शुश्रूषा से वह बच गई। वह कहती—"अब समझ गई कि इनके प्यार का क्या कारण था!" यह सुनकर उण्णिनङ्ङा कोप का बहाना करती।

× × ×

कैदी होम्स और स्टूवर्ट उण्णिमूप्पन की आज्ञा से चन्त्रोत लाए गए थे। पूर्व निश्चय के अनुसार नम्प्यार उनको लेकर तलश्शेरी पहुँचे तो वेल्लस्ली यात्रा की तैयारी करके बन्दरगाह की तरफ रवाना हो गए थे। वहाँ उनकी सेवा में विविध श्रेणी के अफसर उपस्थित थे। उनमें बेबर भी था। कर्नल वेल्लस्ली का मुख मलिन था तो भी उन्होंने प्यार के साथ सबसे विदा ली। अन्त में सुपरवाइजर की ओर लक्ष्य करके वे यों बोले—

"मिस्टर बेबर, मैं केरल छोड़ रहा हूँ। मैं केरलवर्मा को दबाकर यहाँ शान्ति की स्थापना करके जाना चाहता था। संयोगवश मेरे उद्देश्यों की पूर्ण सफलता नहीं हुई; यह मान लेने को मैं तैयार हूँ। कप्तान स्टूवर्ट और मेजर होम्स अब भी शत्रु के कैदखाने में हैं! लज्जा और अपमान से मेरा सिर झुक गया है! मगर जरूरत पड़ने पर मैं निस्सन्देह फिर भी केरल आकर अपना काम करके लौट जाऊँगा। जब तक केरलवर्मा पराजित नहीं हो जायगा तब तक मैं अपने को पराजित मानूँगा।"

"आप परेशान न हों।" बेबर ने सान्त्वना दी—"यहाँ की हलचलों को दबाने के लिये आप-जैसे महारथियों की आवश्यकता नहीं। सब धीरे-धीरे दब जायँगे।"

इस समय एक सिपाही ने आकर कहा कि केरल वर्मा का एक दूत दो कैदियों को लेकर आया है।

आज्ञा मिली तो नम्प्यार सभा में प्रविष्ट हुए। वे फरासीसी भाषा में

बोले—"ईश्वर ने हमारा उद्देश्य सफल नहीं होने दिया; तो भी महात्मा राजा साहब ने आपकी इच्छा की परवाह करके इन दोनों कैदियों को पुरस्कार के रूप में भेज दिया है। वे चाहते हैं, कर्नल खुशी के साथ यह देश छोड़ जायँ।"

वेल्लस्ली का म्लान वदन खिल उठा। फरासीसी भाषा में ही उन्होंने जवाब दिया—"राजा से कहिए: मणत्तना में सिपाहियों का नाश करने तथा कोट्टयम पर कब्जा कर लेने से वेल्लस्ली पराजित नहीं हो गया था; पर इस उचित कर्म से पराजित कर दिया गया। कम्पनी को ऐसे महात्मा से लड़ना पड़ा, इसमें मुझे खेद है। मैं स्वयं गवर्नर-जनरल से उनकी महत्ता का वर्णन करूँगा।"

महाराजा के लिए नम्प्यार ने कर्नल से कृतज्ञता प्रकट की। कैद से मुक्त होम्स और स्टूवर्ट ने वहाँ एकत्रित अफसरों का अभिनन्दन स्वीकार किया। उन्हें फिर कर्नल के साथ जहाज पर आने की आज्ञा मिली। वहाँ इकट्ठे लोगों की जय-ध्वनि के बीच कर्नल और उसके अनुचर जहाज पर चढ़े। लोग अपनी-अपनी राह लेने लगे। तब बेबर ने नम्प्यार से कहा—"देखिए, इस कर्नल ने क्या-क्या चालाकियाँ न कीं। यहाँ राजा का कोई गुप्तचर था तो वह मूसा मरक्कार के सिवा दूसरा कोई नहीं। उसे पहले ही यहाँ से भेज दिया।"

नम्प्यार ने हँसकर कहा—"यहाँ भी गुप्तचर? मुझे तो विश्वास नहीं होता।"

"आज तुमने कम्पनी की एक बड़ी सेवा की, मैं यह भूल नहीं सकता। कर्नल के जाने के बाद अगर ये अफसर बन्धन में होते तो उसकी जिम्मेदारी मेरे ऊपर होती।"

"मैं खुश हूँ कि मैं इतना कर सका। हम तो कम्पनी की सहायता से दिन काट रहे हैं। कर्नल की विदाई के अवसर पर यहाँ आने का निमन्त्रण भी स्वीकार कर सका।"

"अच्छा-अच्छा, आइए! काफी पीने के बाद हम बँगले पर जायँ।"

× × ×

दो दिन बीत गए। राजा साहब अपने सचिवों के साथ मन्त्रणा कर-रहे थे। उस समय चोक्कराय राजा के दर्शन करने आया। उन्होंने उठकर उसका स्वागत किया, फिर अर्धासन देकर कहा—"भाई, मुझे खेद है कि आप मेरे साथ रहने की प्रार्थना स्वीकार नहीं करते।"

"आपकी सेवा में रहना मैं अपना भाग्य समझता। लेकिन आप मेरी बातों से अनभिज्ञ नहीं। मेरे स्वामी और देश मुझे पुकार रहे हैं। उनकी सेवा करना मेरा कर्त्तव्य है।"

"इस बात में मैं आपको कभी नहीं रोकूँगा। आज निस्सन्देह मैसूर देश में आपकी उपस्थिति अनिवार्य है। आपके युवराज और स्वामिनी को मेरी बधाइयाँ! अपने प्रेम और आदर के प्रमाण-स्वरूप मैं आपके साथ जो भेंट भेज रहा हूँ, कृपया उन्हें उनको पहुँचा दें।"

"वहाँ के सब लोग आपका पावन चरित जानते हैं, अतः पुनः कहने की आवश्यकता नहीं। चण्डीदेवी के अनुग्रह से मैं यहाँ आपके साथ इतने दिनों तक रह सका। मेरे भाग्य से आपको मेरे ऊपर प्रेम और विश्वास उत्पन्न हो गया।"

"ऐसा न कहिए; आपने मेरी बड़ी सहायता की है, उसके लिए मैं जीवन-भर आपका कृतज्ञ रहूँगा। आप ही के कारण अब मैं यहाँ इस राज-महल में अभिमान समेत बैठ सका। कोट्टयम शहर का विजेता मैं नहीं, चोक्कराय हैं।"

"विनय महात्माओं का सबसे बड़ा गुण है।" राय ने कहा—"इसलिए आपकी इस वाणी से मुझे आश्चर्य नहीं होता। पर इस विजय में मेरा हिस्सा बहुत तुच्छ है।"

"वयनाड के प्रबन्ध इससे श्रेष्ठ हैं। जब तक आपके उन प्रबन्धों में विघ्न न हों तब तक यदि सैकड़ों वेल्लस्ली हजारों बन्दूकें लेकर आ जायँ तो भी हमारा वयनाड सुरक्षित रहेगा।"

"भगवान् से मेरी प्रार्थना है कि आपको वयनाड की ओर जाने की आवश्यकता ही न पड़े!"

"फिलहाल मैंने यहीं रहने का निश्चय किया है। तलक्कल चन्तू कहता

है कि वयनाड में सब तैयार हो गया है। देखूँ उसकी आवश्यकता होती है या नहीं। वेल्लस्ली की जगह आने वाले सेनापति को भी जरा देख लूँ।"

"तो मुझे जाने दीजिए !" चोक्कराय ने कहा।

राजा साहब ने उठकर चोक्कराय को गले से लगा लिया। वयनाड से होकर जाने वाले चोक्कराय का अनुगमन करने के लिए एमन नायर को आज्ञा मिली। वह वयनाड का कारिन्दा भी बनाया गया।

राय को विदा करने के बाद राजा साहब अन्तःपुर चले गए। माक्कम अन्तःपुर के पीछे के उद्यान में एक झूले पर बैठ रही थी। उसके साथ उण्णिनङ्ङा और नीलुक्कुट्टी भी थी। राजा को आते देखकर वे जल्दी वहाँ से चली गईं।

"राज-काज से इतनी जल्दी छुटकारा पाकर यहाँ आने की कृपा क्यों की ?" महादेवी ने पूछा।

"क्यों ? मैं असमय पर आया ?"

"असमय पर ! आप तो ईद के चाँद हो गए हैं !"

"ऐसा क्यों कहती हो ? अभी कुछ दिन यहीं रहने का विचार है।"

"हाँ-हाँ, मुझे मालूम है; बहन ने सब बता दिया था। मेरी एक-मात्र यही प्रार्थना है कि पहाड़ पर जाते समय मुझे भी ले जाने की कृपा कीजिएगा ! घर में रहने के कारण लोग मेरे सम्बन्ध में क्या-क्या न कहते ! आप भी कहते हैं कि मै फूल पहनकर बैठा करती हूँ। जब पति दूर के जंगलों म रहते हैं तो पत्नी फूल पहनकर खुशियाँ मनाती हैं !—इससे बड़ी बदनामी हो सकती है ?"

"मैं जानता हूँ, गलती मेरी थी। फिर यों न लिखूँगा। उस श्लोक के खयाल से तुम्हें गुस्सा आता है ! अच्छा, मैं शपथ लेने को तैयार हूँ।"

"नहीं-नहीं," माक्कम ने कहा—"मैं उस फूल से अपनी कृतज्ञता कैसे प्रकट करूँ ? वह श्लोक रट-रटकर मैं अपना दुःख भूल जाती थी। बहन ने मन की प्रसन्नता ही के लिए मुझे वह मन्त्र रटने का उपदेश दिया था !"

"देखो तो स्त्रियों की विपरीत-बुद्धि !"

